स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम

सभी के लिए धर्म या आस्था की आजादी के बारे में जानने, उसका मूल्य समझने और उसे बढ़ावा देने में स्थानीय समुदायों की सहायता के लिए नौ कार्यशालाओं की श्रृंखला की सुविधादाता गाइड.

FORB Learning Platform

“प्रत्येक व्यक्ति को विचारों की आजादी, अंतःकरण और धर्म की आजादी का अधिकार है. इस अधिकार के अन्तर्गत अपना धर्म या आस्था बदलने और अकेले या दूसरों के साथ मिलकर तथा सार्वजनिक रूप में अथवा निजी तौर पर अपने धर्म या आस्था को शिक्षा, अभ्यास, उपासना, तथा व्यवहार के द्वारा प्रकट करने की स्वतन्त्रता है.”

मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा,
अनुच्छेद 18

विषय वस्तु

सुविधादाता गाइड

धन्यवाद एवं स्वीकृतियाँ 5
हमें स्थानीय चेंजमेकर्स की जरूरत क्यों है 6
स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम के पीछे कौन है? 7
हमारे सहयोगियों के संदेश 8

भाग A — इन संसाधनों का उपयोग कैसे करें

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम का परिचय 11
संसाधनों का उपयोग कैसे करें 13
प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें 15
सुविधा प्रदान करने हेतु टिप्स 17
मुश्किल सवालों के जवाब देना 21
प्रतिक्रिया व अनुमतियाँ 29

भाग B — पाठ्यक्रम सामग्री

सत्र 1 **मानवीय ज़रूरतें - मानव अधिकार - मानवीय जिम्मेदारियाँ**
सत्र अवलोकन 32
विस्तृत सत्र योजना 35
प्रस्तुति स्क्रिप्ट में चेंजमेकर कहानियाँ शामिल की गई हैं 41

सत्र 2 **विचारों, अंतःकरण, धर्म या आस्था की आजादी (FORB) का परिचय**
सत्र अवलोकन 46
विस्तृत सत्र योजना 49
बांसुरी और नगाड़े के गीत - धर्म या आस्था की आजादी से संबंधित कहानी 56
प्रस्तुति स्क्रिप्ट 60
चेंजमेकर कहानियाँ: पीटर की कहानी, पाकिस्तान 64

सत्र 3 **हमारी कई पहचानें**
सत्र अवलोकन 65
विस्तृत सत्र योजना 68
प्रस्तुति स्क्रिप्ट, जिसमें समेह और हन्ना की कहानी शामिल है, मिस्र 75

सत्र 4 **धर्म या आस्था की आजादी के उल्लंघन**
सत्र अवलोकन 78
विस्तृत सत्र योजना 80
प्रस्तुति स्क्रिप्ट 85
दो मिनट के लघु नाटक परिदृश्य: टीका सहित संस्करण 92
चेंजमेकर कहानियाँ: पादरी जेम्स और इमाम अशफा की कहानी 95

सत्र 5 **हमारे समुदाय में धर्म या आस्था की आजादी**
सत्र अवलोकन 96
विस्तृत सत्र योजना 99
प्रस्तुति स्क्रिप्ट 107
चेंजमेकर कहानियाँ: एमीना की कहानी, बोस्निया हर्जेगोविना 109

सत्र 6 **कहानियों से प्रेरित - रणनीतियों से सशक्त**
सत्र अवलोकन 111
विस्तृत सत्र योजना 114
प्रस्तुति स्क्रिप्ट 121
भारत, डेनमार्क और किर्गिज़स्तान से चेंजमेकर कहानियाँ 124

सत्र 7 **रणनीतियों पर चर्चा**
सत्र अवलोकन 126
विस्तृत सत्र योजना 128

सत्र 8 **हमारी बदलाव की यात्रा**
सत्र अवलोकन 132
विस्तृत सत्र योजना 135
प्रस्तुति स्क्रिप्ट 140

सत्र 9 **हमारी बदलाव की यात्रा (जारी)**
सत्र अवलोकन 144
विस्तृत सत्र योजना 146

भाग C **संदर्भ सामग्री**

FORB से संबंधित प्रमुख मानव अधिकारों की प्रतिबद्धताएँ 151
अपने देश में FORB बारे में जानकारी पाएं 153
सीखते रहें: अन्य स्रोत और ऑनलाइन पाठ्यक्रम 155
अभ्यासों की अनुक्रमणिका 159

इस सत्र के लिए सहायक संसाधन

दायीं ओर मौजूद लिंक पर आपको वह सब कुछ मिल जाएगा जो आपको पाठ्यक्रम चलाने के लिए चाहिए, जैसे:

- प्रत्येक सत्र के लिए पावरपॉइंट प्रस्तुतिकरण
- प्रस्तुति के लिए Word में स्क्रिप्ट्स, जिन्हें आप अपनी परिस्थिति और अपने लक्ष्य-वर्ग के अनुसार संपादित कर सकते हैं
- हैंडआउट
- अभ्यास में उपयोग के लिए गेम कार्ड और पोस्टर

www.forb-learning.org/hi/changemakers/course-materials/

सम्बद्ध संसाधनों को खोजें.

अन्य भाषाओं के संस्करण

यह सुविधादाता गाइड और सभी साथ जुड़े संसाधन अनेक भाषाओं में उपलब्ध हैं. यहां देखें कि स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम आपकी भाषा में उपलब्ध है या नहीं.

www.forb-learning.org/hi/changemakers/languages/

अन्य भाषा के संस्करणों को खोजें.

धन्यवाद एवं स्वीकृतियाँ

पाठ्यक्रम हेतु संसाधनों को विकसित करने और परीक्षण की प्रक्रिया में समर्पित सहयोग के लिए स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम रिफरेन्स ग्रुप के हम विशेष रूप से आभारी हैं.

- गैलिना कोलोडज़िंस्काया, इंटरफेथ कौंसिल, किर्गिस्तान
- हाला फरीद फारिस, मिस्त्र
- हम्माम हद्दाद, तकारोब फॉर सिविल सोसाइटी डेवलपमेंट, जॉर्डन
- हिदाया मौलिदी दूदे, ज़ंज़ीबार इंटरफेथ सेंटर, तंजानिया
- इरफ़ान इंजीनियर, सेंटर फॉर स्टडी ऑफ़ सोसाइटी एंड सेकुलरिज्म, भारत
- रेवरेंड जिमी एम.आई. सोर्मिन, कम्यूनियन ऑफ़ चर्चेस इन इंडोनेशिया
- मेलिसा नोवेन, वियतनाम फ्रीडम ऑफ़ रिलिजन ऑर बिलीफ राउंडटेबल
- माइक गेब्रियल, नेशनल क्रिस्चियन इवैंजेलिकल अलायन्स ऑफ़ श्रीलंका (National Christian Evangelical Alliance of Sri Lanka, NCEASL)
- तहमीना काज़ी, स्वतंत्र FORB परामर्शदाता व प्रशिक्षक, यूके
- श्रद्धेय उकोहा एन्वोबिया, द प्रेसबिटेरियन चर्च ऑफ़ नाइजीरिया

अपने योगदान व टिप्पणियों के लिए निम्न व्यक्ति भी धन्यवाद के पात्र हैं: लिसा विन्थर, क्रिस्टिन टीवियेट एवं अलेक्जेंडर बोरेलो क्रॉस्बी (स्टेफेनस एलायन्स इंटरनेशनल), क्रिस्टीना पैट्रिग एवं निकलस एकलोव (SMC फेथ इन डेवलपमेंट), तबीथा इस्कोहा-कनुसन, अहदी एइश्मी एवं फिलिप बफ़-पेडर्सन (CKU), लेन यू टेन एवं सिसु-मागई विन्था प्राग (FABO) व चियान यू लिम एवं मिशेल वायना (UN OHCHR).

उन सभी को विशेष धन्यवाद जिन्होंने अपनी चेंजमेकर कहानियाँ हमसे साझा कीं, और राजकुमार पीटर, शूमाकर सेंटर तथा TRANSPERFECT को भी विशेष धन्यवाद जिन्होंने पाठ्यक्रम का हिंदी संस्करण तैयार करने में सहायता की.

यह प्रकाशन नॉर्वे और स्वीडिश इंटरनेशनल डिवेलपमेंट एजेंसी (Swedish International Development Agency, SIDA) के वित्तीय सहयोग से निर्मित है. इस प्रकाशन की विषय-वस्तु की ज़िम्मेदारी सिर्फ़ और सिर्फ़ FORB सीखने का प्लेटफार्म की है और इसे किसी भी प्रकार से नॉर्वे सरकार या SIDA के नज़रिये के प्रतिबिंब के रूप में नहीं देखा सकता है.

Norway

Sweden
Sverige

हमें स्थानीय चेंजमेकर्स की जरूरत क्यों है

पूरी दुनिया में, सभी धर्मों और आस्थाओं को मानने वाले लोग धर्म या आस्था की आजादी (फ़्रीडम ऑफ़ रिलीजन ऑर बिलीफ़, FORB) के मानव अधिकार के उल्लंघनों से प्रभावित होते हैं और कुछ जगहों पर ये उल्लंघन बदतर होते जा रहे हैं. इन समस्याओं की प्रकृति, गंभीरता और पैमाने काफ़ी अलग-अलग हैं, लेकिन भेदभाव, घृणास्पद भाषण, घृणा अपराध और हिंसा पूरी दुनिया में आम हैं.

सरकारों द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से अपनी आस्थाओं की अभिव्यक्ति व आचरण पर लगाई जा रहीं रोकें एक बड़ी समस्या हैं और यह स्थिति पूरी दुनिया में नागरिक समाज के लिए स्थान के सिकुड़ने की वैश्विक प्रवृत्ति से जुड़ी हुई है. कई परिस्थितियों में COVID महामारी ने घृणा और कानूनी प्रतिबंधों के मौजूदा पैटर्नों को और बल दिया है.

FORB के उल्लंघन पुरुषों और महिलाओं को अलग-अलग ढंग से प्रभावित करते हैं. महिलाएँ विशेष रूप से धर्म-आधारित व्यक्तिगत स्थिति कानूनों और लैंगिक हिंसा के माध्यम से भेदभाव के प्रति संवेदनशील होती हैं.

धर्म या आस्था की आजादी के कई और अलग-अलग प्रकार के उल्लंघन अत्यधिक व्यक्तिगत कष्टों का कारण बनते हैं और समाजों को अस्थिर करते हैं. बदलाव अविलंब अत्यावश्यक है और यह बदलाव ऊपर से नीचे तथा नीचे से ऊपर, दोनों प्रकार से आना चाहिए.

समानता, शांति और न्याय की विशेषताओं से युक्त समाज तब तक संभव नहीं हैं जब तक कानूनों के निर्माता और अधिकारीगण कानूनों में सुधार करने तथा उनके कार्यान्वयन और प्रवर्तन में शून्य भेदभाव सुनिश्चित करने के दृढ़-संकल्पी प्रयास न करें. यह ऊपर से किया गया संकल्पित प्रयास तब तक संभव नहीं होगा जब तक नीचे से परिवर्तन के लिए समर्थन और दबाव न आए. साथ ही, लोग रोज़मर्रा की ज़िंदगी में जिन उल्लंघनों का अनुभव करते हैं उनमें से कई उल्लंघन समुदाय के ही अन्य सदस्यों द्वारा - कार्यस्थलों पर, स्कूलों में और घरों में - किए जाते हैं. बदलाव नीचे से भी आना चाहिए.

कई लोग अपने समुदाय में FORB उल्लंघनों को लेकर चिंतित हैं पर वे इस बारे में निश्चित नहीं हैं कि बदलाव कैसे लाया जाए. वे बदलाव की दिशा में व्यावहारिक कदम उठाने हेतु खुद को सक्षम बनाने के लिए ज्ञान और कौशलों की ज़रूरत महसूस करते हैं. स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम उन्हें सशक्त करने में योगदान देने का प्रयास है. इसका फोकस जानकारियां देने और मानसकिता में बदलाव लाने के अलावा, अंतआस्था समझ और अधिकार-आधारित दृष्टिकोण से प्रेरित काम करने की रणनीतियों पर भी है.

हमें उम्मीद है कि आप अपने-अपने संदर्भों में बदलाव लाने के इस अभियान में शामिल होना चाहेंगे. हमें यह भी उम्मीद है कि स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम इसमें आपकी मदद करेगा.

केथरीन कैश
धर्म या आस्था की आजादी सीखने का प्लेटफार्म

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम के पीछे कौन है?

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम का विकास धर्म या आस्था की आजादी सीखने का प्लेटफार्म के द्वारा, सभी के लिए धर्म या आस्था की आजादी (FORB, Freedom of Religion or Belief) के प्रति प्रतिबद्ध अनेक व्यक्तियों व संस्थाओं के साथ मिलकर किया गया है.

FORB सीखने का प्लेटफार्म, व्यक्तियों, समुदायों और निर्णय लेने वालों को धर्म या आस्था की आजादी के बारे में जानने, विचार करने और उसे बढ़ावा देने के लिए शिक्षण सामग्री, पाठ्यक्रम व नेटवर्क बनाने के अवसर उपलब्ध करवाता है. यह नॉर्डिक इकॉमेनिकल नेटवर्क ऑन फ्रीडम ऑफ रिलिजन ऑर बिलीफ (Nordic Ecumenical Network on Freedom of Religion or Belief, NORFORB) की परियोजना है, जिसे संपूर्ण विश्व के विभिन्न धार्मिक और आस्था-आधारित समुदायों, मानव अधिकार व विकास संस्थाओं और शैक्षणिक संस्थानों के साथ संवाद व उनके सहयोग से संचालित किया जाता है.

और जानें
हमारी वेबसाइट पर:
forb-learning.org

FORB सीखने का प्लेटफार्म पर उपलब्ध अन्य सामग्री व पाठ्यक्रमों में शामिल हैं, आठ फिल्मों का एक सेट, जो यह बताती हैं कि FORB में क्या-क्या शामिल है और कब उसे सीमित किया जा सकता है (कई भाषाओं में उपलब्ध); एक ऑनलाइन, सुविधादाता प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, FORB व लिंग पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम, जो मांग करने पर उपलब्ध हैं, व FORB सुविधादाता के लिए अभ्यासों का टूलकिट.

पाठ्यक्रम कैसे विकसित किया गया

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम का विकास FORB सीखने का प्लेटफार्म ने एक संदर्भ समूह की सहायता से 2020-2021 में किया था; यह संदर्भ समूह अफ्रीका, एशिया, MENA (मध्य-पूर्व तथा उत्तरी अफ्रीका) क्षेत्र और यूरोप के दस देशों के नागरिक समाज संगठनों तथा आस्था समुदायों से बनाया गया था. इस संदर्भ समूह में ईसाई, मुसलमान, बौद्ध और नास्तिक पृष्ठभूमियों के लोग थे.

हमारा लक्ष्य एक ऐसा पाठ्यक्रम बनाना था, जो पर्याप्त रूप से सुरक्षित किसी भी परिस्थिति में जमीनी स्तर पर प्रासंगिक, सुलभ और प्रदान किए जाने योग्य हो. इसका अर्थ था एक ऐसा पाठ्यक्रम बनाना जिसे किसी भी सक्षम सुविधादाता (उसे मानव अधिकार के बारे में चाहे जितना भी कम या अधिक ज्ञान हो) द्वारा किसी भी लक्ष्य-वर्ग (उसका शैक्षिक स्तर चाहे जो हो) को इस प्रकार से प्रदान किया जा सके, जो स्वाभाविक तरीके से परिस्थिति अनुसार अनुकूलन को संभव बनाता हो.

इसलिए हमने इन तीन चीज़ों पर फ़ोकस किया:

- एक क्रियापद्धति जो वहाँ शुरू होती है जहाँ लोग हैं - अवधारणाएँ प्रस्तुत करने और उनके बारे में जानने के लिए सैद्धांतिक और पाठ्य-आधारित पद्धतियों की बजाए चीज़ें साझा करने, कहानी कहने की कला, अनुभव से सीखने और दृश्य संचार का उपयोग साधनों के रूप में करना.
- स्थानीय समुदाय में बदलाव लाने के लिए लोगों हेतु व्यावहारिक तरीके.
- पाठ्यक्रम संचालन अधिकतम संभव आसान बनाना - सुविधादाता की ज़रूरत की हर चीज़ का विकास करना.

विकास और डिज़ाइन के बाद, भारत, जॉर्डन, नाइजीरिया और तंज़ानिया के संदर्भ समूह सदस्यों ने स्थानीय समुदायों के 12-25 लोगों के समूहों के साथ पाठ्यक्रम को परखा. सहभागियों में शामिल थे टैक्सी चालक, दुकानदार, दर्ज़ी, अध्यापक, समाजसेवी, कुरान के उस्ताद, चर्च सदस्य, युवा समूह नेता और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी. सहभागियों और सुविधादाताओं से अत्यधिक सकारात्मक फ़ीडबैक मिला और उनकी राय के आधार पर पाठ्यक्रम में फेर-बदल किए गए.

Nordic Ecumenical Network on Freedom of Religion or Belief
NORFORB

FORB Learning Platform

हमारे भागीदारों से संदेश

वर्ल्ड काउंसिल ऑफ़ चर्चेज़ की ओर से प्राक्कथन

"1948 में मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा द्वारा विवेक, धर्म, अंत:करण और विचारों की आजादी के हमारे अविच्छेद्य अधिकार की उद्घोषणा किए जाने के बाद से ही, राष्ट्रों ने इस अधिकार में निहित अवधारणाओं को समझने और उसकी व्याख्या करने की कोशिशें की हैं. दुनिया भर में ढेरों कानूनों, मानकों और नीतियों पर बहस और विवाद हुए हैं और उनको अपनाया गया है, हालाँकि दुख की बात है कि वे लोगों को इस अधिकार का पूरा उपभोग देने में अक्सर नाकाफ़ी साबित होते हैं. लेकिन सारे कानूनों, ढाँचों और घोषणाओं का तब तक कोई मूल्य नहीं है जब तक कि राष्ट्र की आम जनता उनके सिद्धांतों को जानती और समझती न हो. सभी मानव अधिकार के प्रोत्साहन और संरक्षण की शुरुआत घरों में, परिवारों में, पड़ोसियों के साथ और समुदायों में होती है.

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम ऐसे समुदायों पर लक्षित है जिनके पास संभव है कि मानव अधिकार और कानूनी मानकों का अग्रिम ज्ञान बहुत कम या शून्य हो, और यह पाठ्यक्रम इस तरह डिज़ाइन किया गया है कि इसमें, कहानी कहने और विज़ुअल क्रियापद्धतियों के ज़रिए, रवैयों को चुनौती देने तथा बदलने में, और अलग आस्था वाले लोगों के डर से जीतने में मदद मिलेगी. यह पाठ्यक्रम स्थानीय चेंजमेकर्स को धर्म या आस्था की आजादी का समर्थन करने के लिए भी सशक्त करेगा.

धर्म या आस्था की आजादी का सिद्धांत सभी लोगों पर लागू होता है चाहे उनकी आस्था या उनका विश्वास कुछ भी हो, इस रूप में इस सिद्धांत की समझ और स्वीकार्यता को बढ़ावा देने का प्रयास हम कर रहे हैं और ऐसे में वर्ल्ड काउंसिल ऑफ़ चर्चेज़ के सदस्य चर्चों और अन्य भागीदारों के लिए यह पाठ्यक्रम एक मूल्यवान टूल सिद्ध होगा."

"अंतर अलग-थलग करने, दूर करने के लिए नहीं होते हैं. हम अलग हैं ही इसीलिए कि हम एक-दूसरे की ज़रूरत महसूस कर सकें"

आर्चबिशप डेस्मंड टूटू

जेनिफ़र फिलपोट-निसेन, कार्यक्रम कार्यकारी - मानव अधिकार और नि:शस्त्रीकरण
वर्ल्ड काउंसिल ऑफ़ चर्चेज़

"जमीनी स्तर पर FoRB को बढ़ावा देना दक्षिण एशिया क्षेत्र में FoRB का सम्मान सुनिश्चित करने का एक बेहद अहम पहलू है. स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम ऐसा करना चाहने वाले हर व्यक्ति को मदद का एक मज़बूत हाथ बढ़ाता है. SAFFoRB नेटवर्क संसाधनों का उपयोग करने को उत्साहित है और आशा करता है कि क्षेत्र के विभिन्न प्रकार के शैक्षिक, शांतिस्थापना और अंतरधार्मिक कार्यकर्ता भी ऐसा ही करेंगे, ताकि हम रवैये बदलने और समुदायों को बदलाव के कदम उठाने हेतु सशक्त बनाने का काम और ज़ोरों से आगे बढ़ा सकें."

सैम्युएल जयकुमार, संयोजक, साउथ एशियन फ़ोरम फ़ॉर फ़्रीडम ऑफ़ रिलीजन ऑर बिलीफ़
(SOUTH ASIAN FORUM FOR FREEDOM OF RELIGION OR BELIEF, SAFFORB)

"कहानी कहना एक सच्ची कला है - इसके लिए कौशल और कल्पना, दोनों चाहिए. हर कोई इसे अच्छे से नहीं कर सकता, पर जब इसे अच्छे से किया जाता है तो यह अलग-अलग पृष्ठभूमियों के लोगों से जुड़ने का एक ताकतवर रास्ता बन जाती है. भारत में मूल्यों और सिद्धांतों को साझा करने के लिए कहानियों का उपयोग करने की समृद्ध परंपरा है, जैसी शाश्वत पंचतंत्र में देखने को मिलती है. स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम अपनी सीखने की पद्धति में कहानियाँ बुनकर इसी परंपरा को खूबसूरती से जारी रखता है और यही कारण है कि इसे लोगों ने इतने अच्छे से अपनाया है. सदाबहार पसंदीदा कहानी बाँसुरी और नगाड़े के गीत हमें याद दिलाती है कि भले ही बाँसुरी और नगाड़े एक-दूसरे से बहुत अलग हों, पर साथ मिलकर वे सद्भावपूर्ण और प्रेरक संगीत बनाते हैं."

सूज़न चेरियन, निदेशक, शूमाकर सेंटर, भारत

"सेंटर फ़ॉर स्टडी ऑफ़ सोसायटी एंड सेकुलरिज़्म ने स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम का उपयोग कई बार किया है. यह पाठ्यक्रम बहुत सहभागितापूर्ण है और सहभागियों को गतिविधियों में आनंद आता है. गतिविधियों में खेल, नाटक और कहानी-कहना शामिल हैं. गतिविधियों के क्रम में, वे खुलते हैं, अपनी हिचक तोड़ते हैं और धर्म या आस्था की आजादी से संबंधित जो मुद्दे उनके और समुदायों के सामने खड़े हैं उन पर चर्चा करते हैं. अगर सहभागी अलग-अलग धार्मिक, नृजातीय और लैंगिक पृष्ठभूमियों से हों तो वे एक-दूसरे से सीखते हैं और एक-दूसरे के नज़रियों को भी समझते हैं. यह पाठ्यक्रम आनंदपूर्ण तरीके से सीखना सुनिश्चित करता है. कुछ सहभागी उनके इलाकों में विविध धर्मों का शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व सुनिश्चित करने के लिए चेंजमेकर्स बन गए हैं."

इरफ़ान इंजीनियर, निदेशक
सेंटर फॉर स्टडी ऑफ़ सोसाइटी एंड सेकुलरिज्म, भारत

"भारत के विविध समुदायों के बीच बढ़ते तनाव पर नज़र रखने वाले एक पत्रकार के रूप में, मैंने देखा है कि कैसे दुष्प्रचार और रोज़मर्रा के पूर्वग्रह हमारी बहुवादी आत्मा के टुकड़े कर रहे हैं. ऐसे समय में, स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम का हिंदी संस्करण उम्मीद की एक किरण बनकर आया है. यह कार्यक्रम आम लोगों को धर्म या आस्था की आजादी (FORB) को बढ़ावा देने की व्यावहारिक रणनीतियों से लैस करता है और मूकदर्शकों को समानुभूति तथा एकता के स्थापकों में बदलता है. यह पाठ्यक्रम 'बाँसुरी और नगाड़े के गीत' जैसी कहानियों का संसाधन के रूप में उपयोग करता है; ये कहानियाँ भारत की ग्रामीण और जनजातीय संस्कृतियों से व्यक्तिगत और भावनात्मक संबंध बना लेती हैं क्योंकि उनमें संगीत और कहानी-कहना रोज़मर्रा की ज़िंदगी में शामिल हैं, इसलिए सुविधादाता FORB के मुख्य सिद्धांतों - सोचने, विश्वास करने, अपना मानने, अभ्यास करने, प्रश्न करने, बदलने और इंकार करने के अधिकारों - को दमदार ढंग से लोगों तक पहुँचा पाते हैं. अगर आप जमीनी काम से विभाजन से लड़ने को तैयार हैं, तो यह पाठ्यक्रम आपका एक अत्यावश्यक मित्र है."

ब्लेसी प्रसाद, स्वतंत्र पत्रकार और FORB कार्यकर्ता

"स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम श्री लंका में FoRB साक्षरता बढ़ाने के हमारे काम में हमारे लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है. हम अब तक पाठ्यक्रम के विभिन्न मॉड्यूल का उपयोग युवा शांतिस्थापकों, स्कूली बच्चों और अध्यापकों के FoRB के ज्ञान को बेहतर बनाने के लिए उनके प्रशिक्षण में कर चुके हैं. यह पाठ्यक्रम स्थानीय भाषाओं, नामतः सिंहला और तमिल, में पेश किया जाता है और इसे FoRB से अनजान लोगों के लिए रचनात्मक ढंग से डिज़ाइन किया गया है; इसलिए इसने ज्ञान को पूरे देश के जमीनी समुदायों तक आसानी से पहुँचाने में हमारी मदद की है. हम बहुत खुश हैं कि हमारे पास ऐसे बेहतरीन संसाधन हैं जो हमारे संदर्भों में FoRB को बढ़ावा देने के काम में लगे संगठन के रूप में हमारे काम को आसान बनाते हैं. हम इस पाठ्यक्रम की पुरज़ोर सिफ़ारिश करते हैं!"

माइक गेब्रियल, नेशनल क्रिस्चियन इवैंजेलिकल अलायन्स ऑफ़ श्रीलंका
(NATIONAL CHRISTIAN EVANGELICAL ALLIANCE OF SRI LANKA, NCEASL)

"दिसंबर 2019 में दुनिया के वरिष्ठतम धार्मिक नेताओं ने साथ आकर एक 50-वर्ष-पुराने वैश्विक अंतरधार्मिक आंदोलन - रिलीजन्स फ़ॉर पीस - के लिए एक नई रणनीतिक दिशा तैयार की. इसके तहत, अंतःकरण, आस्था और विचारों की आजादी उनकी उन केंद्रीय प्रतिबद्धताओं में से एक थी जिनका उन्हें जमीनी स्तर समेत सभी स्तरों पर साथ मिलकर समर्थन करना था. उनकी समझ यह कहती है कि किसी भी आस्था का पालन करने की आजादी सभी संस्थानों को, और खुद हमें, सभ्यता, मानव अधिकार और समग्र रूप से लोकतंत्र के प्रति जवाबदेह ठहराने का भी एक साधन है. ये संसाधन आवश्यक संवादों और शांतिस्थापना के साधनों को साकार करने की सभी कोशिशों के लिए मूल्यवान हैं और अधिकार-आधारित दृष्टिकोण इनके केंद्र में है."

अज़ा करम, महासचिव, रिलीजन्स फ़ॉर पीस

भाग A

इन संसाधनों का उपयोग कैसे करें

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम का परिचय

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम, दो-दो घंटे की नौ कार्यशालाओं की श्रृंखला है, जिसे वयस्कों और युवाओं के समूहों को सभी के लिए धर्म या आस्था की आजादी (FORB) के बारे में जानने और अपने समुदायों में उसे बढ़ावा देने के लिए बनाया गया है.

यह सुविधादाता गाइड और साथ में मौजूद सारे संसाधन आपके लिए मुफ़्त उपलब्ध हैं; आप इनका उपयोग कर सकते हैं और आप जैसे सही समझें वैसे अपनी परिस्थितियों के अनुसार इन्हें अनुकूलित कर सकते हैं. वे इस लिंक पर कई भाषाओं में उपलब्ध हैं.

सम्बद्ध संसाधनों को यहां देखें.

पाठ्यक्रम के उद्देश्य क्या हैं?

पाठ्यक्रम के चार मुख्य उद्देश्य हैं:

- समुदायों के भीतर और उनके बीच विभिन्नताओं को पहचानने और स्वीकार करने में हमारी मदद करना
- हमारे मानव अधिकार को समझने एवं उनकी कद्र करने में हमारी मदद करना जिसमें धर्म या आस्था की आजादी का अधिकार भी सम्मिलित है
- हमारे समुदायों में धर्म या आस्था की आजादी से संबंधित समस्याओं की पहचान करना
- एवं, एक साथ मिलकर इन समस्याओं से निपटने के तरीके तलाश करना.

यह पाठ्यक्रम किसके लिए तैयार किया गया है?

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम जमीनी स्तर के लोगों के लिए बनाया गया है - उनके लिए जिनका उनके समुदायों में धर्म या आस्था की आजादी के अधिकार से सम्बंधित समस्याओं से सरोकार है और जो बदलाव लाने के रास्ते तलाश करना चाहते हैं.

इस पाठ्यक्रम के लिए सहभागियों की ओर से मानव अधिकार के किसी भी पूर्व ज्ञान, अनुभव या यहाँ तक कि स्वीकार्यता की भी आवश्यकता नहीं है. इसके लिए चाहिए एक खुले विचारों वाला मन, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और समानता की विशेषताओं से युक्त समुदाय बनाने में मदद करने में रुचि और मिल-जुलकर व एक-दूसरे के बारे में सीखने और सोच-विचार करने की पारस्परिक प्रक्रिया में जुड़ने की इच्छा.

यह पाठ्यक्रम 12-24 व्यक्तियों के समूहों के लिए बनाया गया है परन्तु उसे इससे बड़े या छोटे समूहों के लिए अनुकूलित किया जा सकता है.

यद्यपि पाठ्यक्रम को अफ्रीकी, मध्यपूर्वी और एशियाई देशों के सन्दर्भों को विशेष रूप से ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है तथापि हमारी मान्यता है कि इसकी सामग्री किसी भी सन्दर्भ में उपयोगी है.

"पाठ्यक्रम की सबसे अच्छी बात यह थी कि वह न केवल बहुत आकर्षक और लोगों की चिंताओं के साथ प्रासंगिक था, बल्कि संचालन में आसान और काफ़ी मज़ेदार भी था. यह एक शानदार अनुभव था!"
हिदाया दूदी, सुविधादाता, तंज़ानिया

"पाठ्यक्रम नाटकीय रूप से परिवर्तनकारी था - जैसे-जैसे सत्र आगे बढ़े, मुझे रवैयों में बदलाव दिखा. हम जल्द ही इसका दोबारा संचालन करेंगे."
इरफ़ान इंजीनियर, सुविधादाता, भारत

"पाठ्यक्रम ने सहभागियों को दिखाया कि वे किन-किन विभिन्न तरीकों से मानव अधिकार के उल्लंघनों पर प्रतिक्रिया कर सकते हैं. इसने कार्य योजना में उनके कौशलों को धार देने में उनकी मदद की. नतीजतन वे अपने समुदायों में अधिक प्रभावी चेंजमेकर्स बनेंगे."
हम्माम हद्दाद, सुविधादाता, जॉर्डन

पाठ्यक्रम का सुविधादाता कौन हो सकता है?

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम पारस्परिक है - इसमें सामूहिक अभ्यास, खेल, कहानियाँ, चर्चाएँ, नाटक और प्रस्तुतियाँ हैं. जिस किसी के भी पास वयस्कों और किशोरों के साथ पारस्परिक लर्निंग प्रक्रियाओं का नेतृत्व करने का अनुभव है वह इस पाठ्यक्रम का नेतृत्व कर सकता है. यह सुविधादाता गाइड और साथ दिए गए संसाधन हर सत्र के संचालन के तरीके के बारे में विस्तृत मार्गदर्शन देते हैं.

सुझाव! आपके फ़ेसिलिटेशन कौशलों के विकास में मददगार सुझाव पेज 17-20 पर हैं.
पेज 15 पर आपको हर सत्र की तैयारी के तरीके पर मार्गदर्शन मिलेगा.

पाठ्यक्रम को आसान करने के लिए आपका मानव अधिकार अथवा धर्म या आस्था की आजादी का अनुभवी या ज्ञानी होना ज़रूरी नहीं है. आपकी ज़रूरत की सारी जानकारी, जिसमें मुद्दों के बारे में प्रस्तुतियों के लिए स्क्रिप्ट और पावरपॉइंट्स प्रेज़ेंटेशन्स शामिल हैं, यहाँ दी गई है. सुविधादाता की भूमिका विशेषज्ञ होने की नहीं होती, बल्कि पारस्परिक लर्निंग की प्रक्रिया में शुरू से आखिर तक सहभागियों का मार्गदर्शन करने की होती है.

सुविधादाता के लिए जो सबसे ज़रूरी होगा वह है सन्दर्भों के संबंध में संवेदनशीलता - यह आंकलन करने की क्षमता कि क्या कोई मुद्दा इतना संवेदनशील या खतरनाक है कि उस पर चर्चा नहीं की जानी चाहिए; और फिर अपने आंकलन के अनुरूप, प्रक्रिया को मोड़ देने की क्षमता. सुविधादाता में यह क्षमता भी होनी चाहिए कि अगर कभी किसी मुद्दे से किसी की संवेदनाओं को चोट पहुंचे या तनाव उत्पन्न हो तो वह स्थिति को सम्हाल सके.

पाठ्यक्रम में कौन-से विषय शामिल हैं और उसका ढांचा कैसा है?

इस पाठ्यक्रम में दो-दो घंटों के नौ रू-ब-रू सत्र हैं. इसे दो भागों में बनाया गया है.

पाठ्यक्रम का भाग 1 (सत्र 1-5) ज्ञान और रवैये विकसित करने पर फ़ोकस करता है ताकि हम दिल-ओ-दिमाग से चेंजमेकर्स बनने को तैयार हो जाएँ. सहभागी मानव अधिकार और धर्म या आस्था की आजादी के बारे में जानते हैं, उनके प्रति अपने-अपने रवैये की छानबीन करते हैं और खुद से अलग पहचान वाले लोगों के प्रति अपने-अपने रवैयों पर सोच-विचार करते हैं. सहभागी संदर्भ विश्लेषण का कौशल भी हासिल करते हैं.

पाठ्यक्रम के भाग 2 (सत्र 6-9) में प्रतिभागी FORB व अन्य अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए उपयोगी रणनीतियों (या तरीकों) के बारे में जानेंगे और उनके द्वारा चिन्हित एक FORB समस्या के लिए कार्य योजना बनाने के प्रक्रिया के बारे में उन्हें मार्गनिर्देशन दिया जायेगा. ये सत्र कौशलों और कार्रवाइयों पर फ़ोकस करते हैं.

और विवरण जानने के लिए, पाठ्यक्रम की सामग्री देखें.

"गतिविधियाँ रोचक थीं, कहानियाँ शानदार थीं और सहभागी बोलने को आतुर थे. मेरे विचार से यह पाठ्यक्रम, ज़मीनी स्तर पर मौजूद लोगों से लेकर मानव अधिकार का मध्यम-स्तरीय ज्ञान रखने वाले लोगों तक, मुद्दों में रुचि रखने वाले हर व्यक्ति के काम आएगा. एक सुविधादाता के रूप में मेरे लिए यह एक रोमांचक अनुभव था."
उकोहा न्वोबिया, सुविधादाता, नाइजीरिया

"पाठ्यक्रम अनूठा था - इसने न जाने कितनी चर्चाओं को उत्साहित किया! समूह सच में विविध था - मुसलमान, ईसाई, बहाई और दूज़. साझा आधार ढूँढ पाना हमेशा तो आसान नहीं रहा, पर चर्चाएँ बहुत अच्छी रहीं."
हम्माम हद्दाद, सुविधादाता, जॉर्डन

संसाधनों का उपयोग कैसे करें

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम को एक नौ सत्रों वाली सीखने की प्रक्रिया के रूप में डिज़ाइन किया गया है जिसमें 18-20 घंटे लगेंगे. ये सत्र तीन दिनों के दौरान, दो वीकेंड के दौरान या उससे भी लंबी अवधि, जैसे एक सत्र प्रति सप्ताह, के दौरान भी संचालित किए जा सकते हैं.

पाठ्यक्रम के संचालन के काम को यथासंभव आसान बनाने के लिए हम सत्रों के संचालन के लिए आवश्यक सभी संसाधन आपको उपलब्ध करवा रहे हैं.

हर सत्र के लिए बनी-बनाई सत्र योजना उपलब्ध है और साथ में दी जाने वाली संसाधन में शामिल हैं प्रस्तुतिकरण हेतु पहले से तैयार स्क्रिप्ट, पावरपॉइंट्स, हैंडआउट और अभ्यास हेतु संसाधन जैसे कार्ड और पोस्टर.

इनमें से अधिकांश सामग्री वर्ड डॉक्यूमेंट्स के रूप में है, जिन्हें आप आसानी से डाउनलोड कर अपने सन्दर्भों व आपके समूह के ज़रूरतों के हिसाब से सम्पादित कर सकते हैं. अगर आप चाहें तो आप पावरपॉइंट स्लाइड्स और हैंडआउट के मज़मून का अनुवाद भी कर सकते हैं.

सम्बद्ध संसाधनों को यहां देखें.

सु झाव! सारी पाठ्यक्रम सामग्री कई भाषाओं में उपलब्ध है! अन्य भाषा संस्करण यहाँ हैं.

– – – – – जोखिम एवं सुरक्षा संबंधी चिंताएं – – – – –

कुछ परिस्थितियों में, मानव अधिकार और FORB मुद्दों पर खुलकर चर्चा करने में कुछ जोखिम और खतरे होते हैं. कृपया इस बारे में सावधानी से सोचें कि क्या इस पाठ्यक्रम का संचालन आपको या आपके सहभागियों को खतरे में डाल सकता है या टकरावों और असुरक्षाओं को और भड़का सकता है. किन चीज़ों की चर्चा, किनसे, कहाँ और कैसे करना संभव है? आप जोखिम कैसे घटा सकते हैं - जैसे विषय-वस्तुओं को अनुकूलित या सीमित करके? आप अपनी सुरक्षा और मज़बूत कैसे कर सकते हैं, जैसे स्थानीय नेताओं को शामिल करके और उनका समर्थन लेकर? लोगों से सलाह माँगें और पाठ्यक्रम पहले एक 'सुरक्षित' लक्ष्य-वर्ग के साथ संचालित करके देखें. पाठ्यक्रम संचालन केवल तब करें यदि ऐसा करना सुरक्षित हो.

पाठ्यक्रम को संचालित करने के लिए मुझे क्या तकनीकी व अन्य साधन चाहिए होंगें?

संसाधन

- संसाधनों का उपयोग सबसे आसानी से करने के लिए आपको प्रिंटर या फोटोकॉपियर की ज़रूरत होगी. यदि यह संभव न हो तो आप आम तौर पर फ्लिप चार्ट और कलम से काम चला सकते हैं, या फिर रेत और छड़ी से भी.
- पावरपॉइंट प्रस्तुतिकरण के लिए अगर आपको एक कंप्यूटर और प्रोजेक्टर उपलब्ध हो सके तो बहुत अच्छा होगा परन्तु यह ज़रूरी नहीं है.
- आपको कार्यशालाओं में प्रयुक्त होने वाली मूलभूत सामग्री उपलब्ध करवानी होगी जैसे फ्लिप चार्ट, पेन और पोस्ट-इट नोट्स और कुछ रोजाना उपयोग आने वाली चीज़ें जैसे सॉफ्ट बॉल या ऊन का गोला. ज़रूरी संसाधनों की सूची हर सत्र योजना में और पेज 15 (हर सत्र की तैयारी कैसे करें) पर दी गई है.

क्या मैं मेरे मन से गतिविधियाँ चुनकर मिला सकता/ती हूँ? क्या मुझे सभी नौ सत्र संचालित करने ही होंगे?

शायद आप उन अंतरधार्मिक संवाद या जागरूकता प्रसार गतिविधियों जिनमें आप पहले से शामिल हैं, में जोड़ने के लिए नए विचार ढूँढना चाहेंगे. आप इस पाठ्यक्रम से जैसे चाहें वैसे गतिविधियाँ चुनकर मिला सकते हैं, और अपनी खुद की डिज़ाइन की लर्निंग प्रक्रियाओं में उन्हें शामिल कर सकते हैं.

पाठ्यक्रम के नौ सत्र एक तर्कसंगत क्रम में हैं. हालाँकि, यदि आप पूरा पाठ्यक्रम संचालित करना नहीं चाहते तो भाग 1 (सत्र 5) के बाद रुका जा सकता है. इसका नुकसान यह है कि सहभागी मानव अधिकार से संबंधित समस्याओं को जान तो लेंगे, लेकिन उन्हें समस्याओं के समाधान के साधन नहीं मिलेंगे जिससे वे हताश महसूस कर सकते हैं.

भाग 1 के अन्य सत्रों के प्रवाह को प्रभावित किए बिना सत्र 3 (हमारी कई पहचान) को काटा भी जा सकता है. हालाँकि, सत्र 3 'दूसरों' की परिस्थिति के प्रति हमारे रवैयों और जागरूकतापर - यानी विभाजक रेखाओं के दोनों ओर की रुढीबद्ध धारणाओं और समानताओं पर - फ़ोकस करता है. इसे तब तक न छोड़ें जब तक आपको यह पूरा विश्वास न हो कि 'दूसरों' के प्रति आपके सहभागियों का रवैया सकारात्मक है.

अगर आपका समूह ऐसा है जो पहले से मानव अधिकारों के बारे में जानता है और FORB से संरक्षित अधिकारों के महत्व को समझता है तो प्रक्रिया की शुरुआत सत्र 5 से की जा सकती है.

"सामग्री समझने और उपयोग करने में सच में आसान है, सुविधादाता फ्रेंडली है, लर्नर फ्रेंडली है और डिज़ाइन भी खूबसूरत ढंग से की गई है. मेरी एक सहभागी, एक युवा नेत्री, अपने युवा समूह में यह पाठ्यक्रम संचालित करना चाहती है - इससे पता चलता है कि यह पाठ्यक्रम कितना सुलभ है और इसका संचालन कितना आसान है."
हिदाया दूदी, सुविधादाता, तंज़ानिया

"आपको ज़रूरत की हर चीज़ संसाधनों में मिल जाएगी - उनका उपयोग आसान है. लेकिन, एक को-सुविधादाता का होना अच्छा रहेगा. तब, आपमें से एक लर्निंग प्रक्रिया में समूह का नेतृत्व करने पर फ़ोकस कर पाएगा और दूसरा टेक्नॉलजी संभाल पाएगा तथा अतिरिक्त सहायता की ज़रूरत वाले सहभागियों की मदद कर पाएगा."
इरफ़ान इंजीनियर, सुविधादाता, भारत

प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें

सत्र योजनाओं में सत्र का संचालन करने के बारे में विस्तृत विवरण उपलब्ध है. प्रत्येक सत्र की तैयारी के लिए निम्न कदम उठाएं:

1. सत्र के लिए सहायक संसाधन खोजें

प्रत्येक सत्र योजना में आपको उस सत्र के साथ में दिए गए संसाधनों का एक लिंक मिलेगा. इस फोल्डर में निम्न सामग्री होगी:

- सत्र का पावरपॉइंट
- किसी भी प्रस्तुतिकरणों या कहानियों का स्क्रिप्ट, और
- अभ्यासों में उपयोग के लिए संसाधन जैसे कार्ड, पोस्टर और हैंडआउट जिन्हें प्रिंट किया जा सकता है.

सम्बद्ध संसाधनों को यहां देखें.

2. पढ़ें, सोचें, अनुकूलित करें!

पढ़ें सत्र योजना को ध्यान से.

सोचें इस बारे में कि इस सत्र में दिए गए अभ्यास आपके समूह के साथ कैसे काम करेंगे. क्या कुछ ऐसा है जिसे आपको अनुकूलित या बदलने की ज़रूरत है?

तदानुसार, सत्र योजना, अभ्यासों और पावरपॉइंट (अगर उपयोग कर रहे हों तो) को **रूपांतरित करें.**

सुझाव! अनुवाद करें आप चाहें तो पावरपॉइंट प्रस्तुतियाँ और पर्चों के अंग्रेज़ी पाठ्य को अपने सहभागियों की भाषा से बदल सकते हैं.

3. प्रस्तुतियाँ तैयार करें और उनका अभ्यास करें!

सात सत्रों में प्रस्तुतियाँ हैं. इन प्रस्तुतिकरणों के लिए स्क्रिप्ट और पावरपॉइंट आपको उपलब्ध करवा दिए गए हैं. (अगर आप मानव अधिकार व धर्म या आस्था की आजादी के संबंध में अपने ज्ञान के बारे में आश्वस्त हैं तो आप स्वयं अपने प्रस्तुतिकरण तैयार कर सकतें हैं - परन्तु यह सुनिश्चित कर लें कि स्क्रिप्ट के मुख्य बिंदु उसमें शामिल हों!)

प्रस्तुतिकरण देने के लिए निम्नानुसार तैयारी करें:

स्क्रिप्ट को पढ़ें और सम्पादित करें
स्क्रिप्ट कुछ बार पढ़ें और विषय-वस्तु के बारे में सोचें. क्या कुछ ऐसा है जिसे आप संपादित करना, अनुकूलित करना या जोड़ना चाहेंगे - जैसे, अपने देश से जानकारी या उदाहरण जोड़ना? अपने बदलाव करें. (स्क्रिप्ट का संपादन योग्य वर्ड संस्करण संलग्न संसाधनों में उपलब्ध है.)

पावरपॉइंट का संपादन करें/ फ्लिप चार्ट शीट बनाएं
स्क्रिप्ट में जो भी बदलाव किए हों उनके अनुसार पावरपॉइंट प्रस्तुतियाँ संपादित करें. यदि आप पावरपॉइंट का उपयोग नहीं कर रहे हैं तो आप स्लाइड्स से मुख्य बिंदु लेकर फ्लिप चार्ट शीट तैयार करना चाह सकते हैं.

प्रस्तुतिकरण देने का अभ्यास करें
आवश्यक तकनीकी संसाधनों को लगाने और पावरपॉइंट स्लाइड्स या फ्लिप चार्ट शीटों की मदद से अपना प्रस्तुतिकरण देने का अभ्यास करें.

सोचें कि प्रतिभागियों की क्या प्रतिक्रिया होगी
प्रतिभागी क्या प्रश्न पूछ सकते हैं या प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं? आपके उत्तर क्या होंगे? पृष्ठ 21 पर 'मुश्किल सवालों के जवाब' खंड पढ़ें ताकि आपको तैयारी करने में मदद मिल सके. याद रखें कि सहभागियों के प्रश्नों के उत्तर में 'मुझे नहीं पता' कहने में कोई बुराई नहीं है! आपसे यह अपेक्षित नहीं हैं कि आप एक विशेषज्ञ हों - आपके भी प्रश्न हो सकते हैं, इसमें कोई बुराई नहीं है.

वैकल्पिक अतिरिक्त: अपना आत्मविश्वास बढ़ाएं
कुछ सत्र योजनाओं में लघु फिल्मों और पठन सामग्री की लिंक उपलब्ध हैं. इनकी सहायता से आपके आत्मविश्वास को बढ़ाने और आपकी तैयारी बेहतर करने में मदद मिल सकती है.

4. अपना टूलकिट तैयार करें!

सत्र का संचालन करने के लिए आपको जिस-जिस सामग्री कि ज़रूरत है उसे बनाएं या इकठ्ठा करें. सभी सत्रों में उपयोग के लिए मानक संसाधनों की एक सूची नीचे दी गई है. प्रत्येक सत्र योजना के 'तैयारी करें' खंड में आपको उस सत्र के लिए आवश्यक अतिरिक्त संसाधनों की सूची मिलेगी - उदाहरण के लिए हैंडआउट या खेलों के लिए आवश्यक चीज़ें जैसे सूप पात्र या ऊन का गोला.

संसाधनों की मानक टूलकिट

आपको सभी सत्रों के लिए निम्न सामग्री की ज़रुरत पड़ेगी:

- फ्लिप चार्ट और फ्लिप चार्ट पेन
- सामान्य पेन और कागज़
- पोस्ट-इट नोट्स
- पोस्टरों, फ्लिप चार्ट शीटों आदि को चिपकाने के लिए टेप या अन्य कोई वस्तु
- पावरपॉइंट स्लाइड्स का प्रदर्शन करने के लिए एक कंप्यूटर और प्रोजेक्टर (ऐच्छिक)

5. कक्ष तैयार करना!

प्रत्येक सत्र योजना के 'तैयारी करें' खंड में आपको कक्ष को तैयार करने के बारे में निर्देश मिलेंगे (जैसे कुर्सियां किस प्रकार जमाएं, दीवारों पर क्या चिपकाएं आदि).

टिप्पणी

सत्र योजनाओं की अवधियाँ दो-दो घंटों के मानक सत्रों के अनुसार रखी गई हैं. परीक्षण प्रक्रिया से मिला अनुभव यह बताता है कि कुछ समूहों को दो घंटे आवश्यक से अधिक लगते हैं, वहीं कुछ अन्य समूह चाहते हैं कि सत्र अधिक लंबे हों ताकि चर्चा के लिए अधिक समय मिल सके. आप चाहें तो आप अपने कार्यक्रम में थोड़े 'लचीले-समय' की योजना बना सकते हैं ताकि यदि चर्चाएँ जारी रखने की ज़रूरत पड़े तो काम आए.

"पाठ्यक्रम की तैयारी में समय लगता है. पढ़ने-समझने के लिए काफ़ी सारी सामग्री है, पर यदि आप तैयारी कर लें तो पाठ्यक्रम प्रस्तुत करना आसान हो जाता है. हर चीज़ साफ़-साफ़ समझाई गई है. और जब आप दूसरी बार पाठ्यक्रम संचालन करेंगे तो तैयारी में अधिक समय नहीं लगेगा."
हम्माम हद्दाद, सुविधादाता, जॉर्डन

"आपको सबसे पहले सुविधादाता गाइड पूरी पढ़नी चाहिए और उसके बाद हर सत्र की तैयारी में समय लगाना चाहिए. हर सत्र की कल्पना करना और हर अभ्यास कैसे काम करेगा इस पर सोच-विचार करना अच्छा रहेगा. यदि आप अनिश्चित हैं कि कोई सत्र कैसे काम करेगा, तो अपने को-सुविधादाता के साथ एक अभ्यास-सत्र संचालित करना अच्छा रहेगा."
उकोहा न्वोबिया, सुविधादाता, नाइजीरिया

सुविधा प्रदान करने हेतु टिप्स

सुविधादाता क्या होता है?

परिभाषा

सुविधा प्रदान करने के लिए: किसी कार्य या प्रक्रिया को आसान, अधिक आसान या संभव बनाना
सुविधादाता शिक्षण, दृष्टिकोण की पड़ताल और प्रतिभागियों में नए कौशलों के विकास की प्रक्रिया को आसान बनाने में मदद करता है.

सुविधादाता:

- सहभागिता पर आधारित पद्धतियों का प्रयोग करते हुए, प्रतिभागियों के बीच मज़ेदार, गंभीर और प्रेरक विचार-विनिमय संभव बनाता है.
- भरोसे, खुलेपन और एक-दूसरे से सीखने का एक ऐसा माहौल बनाता है जहाँ मतभेदों का सम्मान किया जाता है, जैसे आधारभूत नियम स्थापित करने में समूह की मदद करना.
- समूह में शक्ति असंतुलनों की पहचान करता है और उन्हें ध्यान में रखते हुए यह सुनिश्चित करता है कि सभी को चर्चा में भागीदारी का अवसर मिले और सभी को लगे कि वे चर्चा का हिस्सा हैं.
- सीखने की प्रक्रिया को एक संरचनात्मक स्वरुप देता है और प्रतिभागियों का नेतृत्व करता है.
- यह सुनिश्चित करता है कि विचार-विनिमय के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध हों जैसे सत्र की पूर्व तैयारी, बैठक के लिए उपयुक्त जमावट, प्रतिभागियों को सूचना देना आदि.

यह मार्गदर्शिका आपको यह सब करने में मदद करने हेतु तैयार की गई है. विस्तृत सत्र योजनाओं में अनेक सहभागी अभ्यास दिए गए हैं, सीखने की प्रक्रिया का स्पष्ट ढांचा उपलब्ध करवाया गया है और सत्रों की तैयारी के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गई है.

सुविधादाता यह नहीं होता:

- शिक्षक या व्याख्याता - सहभागी शिक्षण प्रक्रिया में सुविधादाता, प्रतिभागियों का साथी होता है और सीखने की प्रक्रिया, जिसमें सभी अपना योगदान देते हैं, का मार्गनिर्देशन करता है.
- आवश्यक रूप से विशेषज्ञ - यद्यपि सुविधादाता प्रत्येक सत्र को तैयार करता है परन्तु यह भी हो सकता है कि कुछ प्रतिभागी विषय के संबंध में सुविधादाता से ज्यादा जानते हों! सभी के ज्ञान का उपयोग किया जाता है.
- आकर्षण का केंद्र - एक अच्छा सुविधादाता, अन्य प्रतिभागियों की अपेक्षा कम बोलता है और प्रतिभागियों को चर्चा में शामिल करने का ज्यादा से ज्यादा प्रयास करता है.

क्या आप FORB के विषय पर मानव अधिकार शिक्षण को आसान करने के बारे में और जानना चाहते हैं? हमारे मुफ़्त ऑनलाइन FORB ट्रेनिंग ऑफ़ द ट्रेनर्स पाठ्यक्रम के लिए आवेदन करें. उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी जो गंभीर उल्लंघनों वाली परिस्थितियों में FORB के विषय पर मानव अधिकार शिक्षण प्रदान करने में सक्रिय रूप से शामिल हैं.

FORB ट्रेनर्स पाठ्यक्रम

हमारे ऑनलाइन TOT पाठ्यक्रम के बारे में यहाँ पढ़ें.

सुविधा हेतु टिप्स

सत्रों की बढ़िया तैयारी करें और लचीला दृष्टिकोण अपनाएं!
आप जितने बेहतर तैयार होंगे, आपका आत्मविश्वास उतना ही अधिक होगा. गतिविधियों को अपने समूह के अनुसार पहले से अनुकूलित कर लें और सत्रों के दौरान जैसे-जैसे आपको दिखे कि किन गतिविधियों को अधिक या कम समय चाहिए वैसे-वैसे समय बढ़ाएँ/घटाएँ.

खुले विचारों वाला मंच उपलब्ध करवाएं
रवैये उन प्रक्रियाओं में पूरी तरह बदल जाते हैं जहाँ हमारे पास दूसरों की बातें सुनने की जगह होती है और जहाँ हम, जो नज़रिया हम अपनाना नहीं चाहते उसे अपनाने की मज़बूरी महसूस किए बिना, सोचते और विकसित होते हैं. सहभागियों को असहमत होने के और आपसे अलग नज़रियों पर पहुँचने के मौके दें. विजेता और पराजित स्थापित करने का लक्ष्य रखने वाली बहस से बचें.

जटिल प्रश्नों के सरलीकृत उत्तरों से बचें
अधिकारों के उल्लंघनों के कारण आम तौर पर जटिल होते हैं और उनमें कई कारक, जैसे सांस्कृतिक मानक और सत्ता संरचनाएँ, शामिल होते हैं. अत्यधिक सरलीकरण के प्रति सावधान रहें, विशेष रूप से अधिकारों की अस्वीकृति की ज़िम्मेदारी मात्र एक या दो कारणों, जैसे धार्मिक पहचान, पर थोपने के संबंध में. सहभागियों को उनके अनुभवों में योगदान देने वाले विभिन्न कारकों के विश्लेषण के लिए प्रोत्साहित करें.

भाषा की सुस्पष्टता और शुद्धता पर ध्यान दें और रूढ़ीबद्ध धारणाओं को हतोत्साहित करें
सामान्यीकरण की इच्छा का दमन करें और सहभागियों को सामान्यीकरण, जैसे "मुसलमान... होते हैं", "हिंदुओं को लगता है कि..." या "महिलाएँ... नहीं कर सकतीं", से बचने में मदद दें. सहभागियों को याद दिलाएँ कि यदि किसी समूह के कई सदस्यों के अनुभव या आस्थाएं समान हैं तो भी, सामान्यीकरणों की शक्ति घटाना आवश्यक है (जैसे, "कभी-कभी", "कई मामलों में").

वेदना की तुलना से बचें
किसे सबसे ज्यादा तकलीफ भोगनी पड़ रही है इसकी तुलना, इस पर बहस या इसका मुकाबला करने की बजाय व्यक्तियों और समूहों के बीच एकजुटता और परस्पर सहानुभूति को प्रोत्साहित करें.

मुझे नहीं मालूम कहने में सकुचाएं नहीं
याद रखिये कि सुविधादाता भी शिक्षार्थी है! अगर आप किसी प्रश्न का उत्तर न दे पा रहे हों तो पूछें कि क्या कोई और उसका उत्तर दे सकता है. सभी प्रश्नों का उत्तर स्वयं देने की इच्छा न रखें, विशेषकर तब जब उत्तर में कोई राय देना शामिल हो (जैसे, "नफरत फैलाने वाली बातों पर प्रतिक्रिया देने का सबसे अच्छा तरीका क्या है?"). इसकी बजाय, समूह से पूछें कि वे इस प्रश्न का क्या उत्तर देंगें और एक-दूसरे से भिन्न विचारों का स्वागत करें.

टीम में काम करें और रिकॉर्ड रखें
सुविधादाता अनुभव से और एक-दूसरे से सीखते हैं! 2-3 सुविधादाताओं की टीम में काम करने की कोशिश करें और साथ मिलकर पाठ्यक्रम की योजना बनाएँ तथा उसका संचालन व मूल्यांकन करें. हर सत्र में जो कुछ हुआ उसे नोट करें, इसमें योजना में किए गए अनुकूलन और बदलाव, नए विचार, सफलताएँ और कठिनाइयाँ शामिल हैं. इससे आपको भावी वर्कशॉप की योजना बनाने में मदद मिलेगी.

सुविधादाताओं को पेश आने वाली सामान्य चुनौतियाँ

सुविधा प्रदान करने में चुनौती: शक्ति संबंध
समाज में - पुरुषों और महिलाओं के बीच; नस्लीय, नृजातीय या धार्मिक समूहों के बीच; वयस्कों और बच्चों/किशोरों के बीच; शारीरिक रूप से शक्त लोगों और अशक्तताओं से ग्रस्त लोगों के बीच; शिक्षित और अशिक्षित लोगों के बीच - सुव्यवस्थित शक्ति असंतुलन मौजूद हैं. ये असंतुलन इस बात को प्रभावित करते हैं कि सहभागी अन्य सहभागियों को और सुविधादाता को कितना अपना-सा मानते हैं. FORB प्रशिक्षणों में धार्मिक नेताओं की सहभागिता समूह के परस्पर व्यवहार को प्रभावित करती है; ठीक वैसे ही जैसे उन मुद्दों पर चर्चा जिन पर, स्थानीय सांस्कृतिक मानकों के अनुसार, महिलाओं का कोई मत होना अनपेक्षित है (जैसे, धर्मशास्त्र). शक्ति संबंध अक्सर छिपे होते हैं, और सुविधादाताओं को सीखने हेतु एक सकारात्मक स्थान सुनिश्चित करने के लिए उन पर नज़र रखने और उन्हें संभालने की ज़रूरत होती है.

शक्ति समीकरणों के प्रबंधन हेतु कुछ टिप्स:

- चौकस रहें! इस बात पर ध्यान दें कि क्या कुछ प्रतिभागी चर्चा पर हावी होने की कोशिश कर रहे हैं या कुछ चुपचाप हैं, वे कहाँ बैठे हैं, उनकी भाव-भंगिमा क्या है और वे एक-दूसरे से किस तरह जुड़ रहे हैं.
- सुविधादाता बतौर अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए नकारात्मक शक्ति समीकरणों को चुनौती दें और उन्हें परिवर्तित करें, उदाहरण के लिए, आधारभूत नियम का हवाला देकर या इस बात पर जोर देकर कि आप सभी प्रतिभागियों की राय और विचारों का स्वागत करेंगे.
- सहभागियों को सक्रिय और संलग्न रखने के लिए सहभागिता वाले अभ्यासों और छोटे-छोटे समूहों का उपयोग करें. यह सुनिश्चित करने की कोशिश करें कि वही कुछ लोग हमेशा साथ काम न कर रहे हों.

- चर्चा का नेतृत्व करें, व्यवस्थित ढंग से सभी को बोलने के लिए आमंत्रित करें और सुनिश्चित करें कि सभी की बात सुनी जाए.
- संकोची सहभागियों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करें, विशेष रूप से तब जब वे कुछ कहने को तैयार-से दिखें (जैसे, हाथ अंदाज़न उठाना या सिर हिलाना). अपने खुद के शरीर की भाषा का उपयोग करें, जैसे उनके करीब जाना या नज़रें मिलाकर उन्हें प्रोत्साहित करना.
- तारीफ करने में कंजूसी न करें परन्तु कृपा या दया का भाव दिखाने से बचें.
- जिनकी आवाज़ नहीं सुनी जा रही हो उन्हें कोई ज़िम्मेदारी दे दें - जैसे, समूह के काम की रिपोर्ट देना.
- ऐसी टिप्पणियों को अनुमति कभी न दें जो दूसरों को नीचा दिखाती हों, जिनमें श्रेष्ठता या अहंकार का पुट हो, या जिन्हें निर्विरोध छोड़ना हानिकारक, क्रूर या भेदभावपूर्ण हो, विशेष रूप से तब जब उनके ज़रिए अन्य सहभागियों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से निशाना बनाया गया हो. आधारभूत नियम का हवाला दें या "दोषी" सहभागी(गियों) से यह स्पष्ट करने को कहें कि उन्होंने जो कहा वह क्यों कहा और इस परिस्थिति पर अन्य सहभागियों को अपने-अपने मत रखने के लिए बुलाएँ.
- परिस्थिति के आधार पर, लड़कियों व महिलाओं के लिए और लड़कों व पुरुषों के लिए यह आसान हो सकता है (और कुछ मामलों में आवश्यक भी) कि वे अपने मत पूरे समूह के भीतर साझा करने से पहले उन पर अलग से बात कर लें. यह बात अलग-अलग आयु वर्गों, धार्मिक समूहों या सांस्कृतिक समूहों पर भी लागू होती है.

सुविधा प्रदान करने में चुनौती: संवेदनशील मुद्दे

मानव अधिकार हमारी मान्यताओं, एहसासों और मतों से संबंध रखते हैं और वे दुनिया के प्रति हमारे नज़रियों और पूर्वधारणाओं को चुनौती दे सकते हैं. कुछ सहभागियों को लग सकता है कि विषय-वस्तु उनकी मान्यताओं, आस्थाओं और रीतियों के विरुद्ध है या उन्हें खतरे में डालती है, और मानवाधिकार का उल्लंघन का अनुभव कर चुके सहभागियों का सदमा उनकी प्रतिक्रियाओं को प्रभावित कर सकता है.

यदि सहभागी चिड़चिड़े हो जाएँ, खुद को चर्चा से अलग कर लें, चर्चाओं को नुकसान पहुँचाएँ या आक्रामक हो जाएँ, तो यह इस बात का संकेत हो सकता है कि वे संवेदनशील मुद्दों से खतरा महसूस कर रहे हैं.

सुविधादाता के तौर पर आपकी भूमिका स्वयं समेत सभी के लिए सुरक्षित वातावरण बनाए रखकर चर्चा का प्रबंधन करना एवं समूह की गतिशीलता कायम रखना है - एक गैर-निर्णायक मंच उपलब्ध करवाना जिसमें सभी को मिलकर कुछ सीखने का अवसर मिले एवं चर्चा को मानव अधिकार/FORB के लिए प्रासंगिक बनाये रखना.

यहां तनावों और संवेदनशील मुद्दों से निपटने के लिए कुछ सामान्य टिप्स दी जा रही हैं:

- सत्र की विषयवस्तु पर पहले से ही विचार कर लें. संवेदनशील मुद्दों की पहचान कर यह तय कर लें कि जो स्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं, उन्हें आप कैसे संभालेंगे.
- विवादास्पद चर्चाओं से बचने के लिए प्रक्रिया को समाप्ति तक पहुँचाने में जल्दबाज़ी न करें. लोगों को नाजुक प्रश्न पूछने दें.
- बहस में न फँसें. आप सुविधादाता हैं, कोई बहस के साथी नहीं.
- याद रखें मानव अधिकारों के शिक्षण में उन मुद्दों पर चर्चा का कौशल विकसित करना सम्मिलित है जिन पर हम असहमत हैं. यह जरूरी नहीं है कि सभी बातों पर समूह की एक राय हो!
- जमीन तैयार करें - आधारभूत नियम विकसित करने एवं ऐसे अभ्यास करने में समय लगाएं जिनसे सहानुभूति एवं विश्वास बढ़े.
- अपने स्वयं के अनुभवों की चर्चा करें ताकि प्रतिभागी खुलकर बात करने को प्रोत्साहित हों एवं पूर्ण भागीदारी करें.

- यदि तनाव उत्पन्न हो, तो आधारभूत नियमों का हवाला दें और प्रतिभागियों को याद दिलाएं कि विभिन्न विचारों को सुनना और उनका सम्मान करना महत्वपूर्ण है.
- मानव अधिकारों के संबंध में आपत्तियों को स्वीकार करें. यह समझाएं कि मूल्यों और विचारों संबंधी टकरावों को समझना एवं उन पर विचार करना सभी के लिए लाभप्रद होता है.
- प्रतिरोध का स्वागत करें! इसका उपयोग संवाद सुगम बनाने के साधन के रूप में करें, समूह के सदस्यों से कहें कि वे मुद्दे के बारे में अपने विचार, अपनी प्रतिक्रियाएँ या चिंताएँ साझा करें. नज़रिया पलटने वाली लर्निंग को संभव बनाने के लिए, नकारात्मक रवैयों पर समूह में खुलकर बात करने की ज़रूरत होती है.
- तनावों का होना स्वीकारें और उन्हें हल करें. प्रक्रिया को कुछ देर रोकें, कहें कि आपको कमरे में तनाव महसूस हो रहा है, सहभागियों से कहें कि वे मतभेदों की पहचान करें और पूछें कि क्या असहमत होना ठीक है. इस बारे में समूह का मत पूछें कि वे विषय को किस प्रकार संभालना चाहते हैं. जैसे, संभव है कि वे छोटे-छोटे समूहों में या किसी अलग सत्र में मुद्दे पर चर्चा करना चाहें, या वे चर्चा रोकना चाहें. आपकी जो भी व्यक्तिगत शंकाएँ हों उन्हें ज़ाहिर करें. जैसे, आप किसी विषय विशेष को तब तक टालने का सुझाव दे सकते हैं जब तक समूह के सदस्य एक-दूसरे को बेहतर ढंग से न जान लें और परस्पर विश्वास तथा समझ न विकसित कर लें.
- यदि मतभेद के कारण सत्र के पटरी से उतरने और आपसी संबंधों के बिगड़ने का खतरा हो तो बातचीत को 'पार्क' कर दें और उन विषयों पर ध्यान केन्द्रित करें जिन पर सर्वसम्मति स्थापित की जा सकती हो. यह पाठ्यक्रम कोई बहस का मंच नहीं है.
- बहुत अधिक की अपेक्षा न करें! असहमति के मुद्दों पर संवाद रचना के लिए सौम्यता से काम करें. गहरी जड़ें जमाए बैठी रुढीबद्ध धारणाएं और मानदंडों के संबंध में लोग तुरंत और सबके सामने अपने विचार बदल लें इस बात की संभावना न के बराबर होती है. हालाँकि, वैकल्पिक नज़रिये सामने आने और समानुभूति के संबंध स्थापित करने से सहभागियों द्वारा समय के साथ अपने नज़रियों पर पुनर्विचार करने की संभावना अधिक हो जाती है.

सुविधा प्रदान करने में चुनौती: कठिन व्यक्ति

कई बार कोई व्यक्ति जानबूझकर या अनजाने में समूह की एकजुटता एवं प्रभावशीलता में बाधा डाल सकता है, जैसे चर्चा पर हावी होना या अपने फोन पर ध्यान केन्द्रित करना. इसका हल व्यक्तियों व स्थितियों पर निर्भर करेगा किंतु निम्न रणनीतियां सहायक हो सकती हैं.

- जब कोई सहभागी बहुत लंबे समय तक बोल चुका हो तो युक्ति और हास्य का उपयोग करें. जैसे, बिंदुओं के बीच उन्हें संक्षेप में ऐसी किसी टिप्पणी से टोकें: "यह एक अच्छा बिंदु है, धन्यवाद! दूसरे क्या सोचते हैं?" या अपनी घड़ी की ओर इशारा करके मुस्कुराएँ.
- हावी होने का प्रयास करने वाले प्रतिभागी को कोई कार्य सौंपें, जैसे, फ्लिप चार्ट पर समूह के सुझावों को लिखना. इससे दूसरों पर हावी होने की उसकी इच्छा कम हो जाएगी.
- यदि समूह की गतिशीलता असंतोषजनक हो तो इसे स्वीकार करें. लोगों को आधारभूत नियम याद दिलाएं. यह सुनिश्चित करें कि किसी के बोलने के बीच टोका-टाकी न करना, समस्त चर्चा का गोपनीय होना, फोन का इस्तेमाल न करना और सभी के विचारों का सम्मान करना - ये बिंदु आधारभूत नियमों में हों. इस बात पर जोर दें कि आधारभूत नियमों का पालन सुनिश्चित करना सभी की जिम्मेदारी है और समस्या का हल सामूहिक दबाव के माध्यम से निकलने दें.
- यदि आवश्यक हो तो, जो सहभागी अत्यधिक हावी हो रहा है या दूसरों का अपमान कर रहा है उससे अकेले आमने-सामने, जैसे किसी ब्रेक के दौरान, बात करें. यह बताएँ कि आप उसकी सहभागिता को महत्व देते हैं, चुनौतियों/मुश्किलों के बारे में बताएँ, समाधान माँगें और इस बात पर चर्चा करें कि लर्निंग के माहौल को और बेहतर बनाने में वह किस प्रकार मदद कर सकता है.
- अंतिम उपाय है ऐसे प्रतिभागी को समूह छोड़ने के लिए कहना. परंतु ऐसे करने से इस कदम से उत्पन्न होने वाली दुर्भावना और उस प्रतिभागी के कारण समूह में उत्पन्न होने वाली दुर्भावना की परस्पर तुलना करना आवश्यक होगा.

स्रोत: 'सुविधा प्रदान करने के लिए सुझाव' अनुभाग नैन्सी फ़्लावर्स एवं अन्य द्वारा लिखित 'द ह्यूमन राइट्स एजुकेशन हैंडबुक' पर आधारित है जिसे द ह्यूमन राइट्स रिसोर्सेज़ सेंटर और द स्टैनली फ़ाउंडेशन ने प्रकाशित किया है. अनुमति के साथ इस्तेमाल किया गया.

मुश्किल सवालों के जवाब देना

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम के संचालन के दौरान सहभागी आपसे मानव अधिकार के बारे में मुश्किल प्रश्न पूछ सकते हैं. यहाँ हमने आपके सामने रखे जा सकने वाले कुछ संभावित प्रश्न और आपत्तियाँ दी हैं तथा उनके उत्तर देने के विचार भी दिए हैं. हर लक्ष्य-वर्ग और परिस्थिति अलग होते हैं, इसलिए आवश्यक नहीं कि हर आपत्ति या उत्तर आपके लिए काम का हो. बहरहाल, हमें आशा है कि यह संकलन आपको कठिन बातचीतों की तैयारी में मदद देगा.

आपत्तियों पर उत्तर देते समय, आपत्ति में जो भी सच्चाई ज्ञात हो उसे स्वीकार करना तथा वह आपत्ति जिस भी व्यक्तिगत अनुभव को दर्शाती हो उसे स्वीकार करना न भूलें. याद रखें कि उत्तर में यह कहने में कोई बुराई नहीं है कि आपको उत्तर नहीं पता और यह भी याद रखें कि आशा यही है कि यह पाठ्यक्रम आपको साथ मिलकर उत्तर खोजने में मदद देगा! रवैया बदलने की प्रक्रियाएँ आम तौर पर धीमी और क्रमिक होती हैं. मतों में तत्काल बदलाव की अपेक्षा करने की बजाए बदलाव के बीज सौम्यता से बोने और उन्हें पानी देने का लक्ष्य रखें.

तथ्यात्मक प्रश्नों, जैसे FORB में क्या-क्या शामिल है और इसे कब सीमित किया जा सकता है, के उत्तरों लिए कृपया इस विषय पर हमारी लघु फ़िल्मों की श्रृंखला देखें.

कई मुश्किल सवाल, FORB के लिए किसी समस्या विशेष को 'कैसे' संभालें और बदलाव लाएँ से संबंध रखते हैं. ऐसे प्रश्नों के उत्तर खोजने में समूहों की मदद के लिए कृपया सत्र 6-9 (जो युक्तियों और कार्य योजना पर फ़ोकस करते हैं) के संसाधनों का उपयोग करें.

ये फ़िल्में देखें FORB से जुड़े तथ्यात्मक प्रश्नों के उत्तरों में मदद के लिए.

– – – – – जोखिम एवं सुरक्षा संबंधी चिंताएं – – – – –

मानव अधिकार पर प्रबल आपत्तियाँ, विशेष रूप से धार्मिक आपत्तियाँ, जोखिम का चेतावनी संकेत हो सकती हैं. कठिन परिस्थितियों में, अधिकारों और उल्लंघनों पर खरी-खरी चर्चाएँ समूह के भीतर मौजूद तनावों को और भड़का सकती हैं, या आपकी या आपके सहभागियों की सुरक्षा के लिए जोखिम पैदा कर सकती हैं. यदि चर्चाएँ जोखिम पैदा कर सकने की दिशा में जाने लगें, तो विषय की संवेदनशीलता स्वीकार करते हुए चर्चा बाधित कर दें. चर्चा को परस्पर सहमति वाले क्षेत्रों की ओर मोड़ दें और समूह के भीतर संबंध बनाने तथा विश्वास जमाने वाले अभ्यासों पर फ़ोकस करने में थोड़ा समय बिताएँ.

टिप्पणी

चुनौती देना या सुनना?

कुछ कथनों के उत्तर में लोगों को चुनौती देना और यह कहना लुभावना लग सकता है कि 'आपका रवैया बुरा है' या 'आपकी समझ गलत है'. कुछ चर्चाओं को रोकना और लोगों को आधारभूत नियम याद दिलाना सच में ज़रूरी हो सकता है, विशेष रूप से तब यदि समूह में अन्य लोगों को ऐसा महसूस हो कि उन पर हमला किया गया है या उन्हें नीचा दिखाया गया है. हालाँकि, सोच बदलने के लिए अक्सर दूसरों की बात सुनने और सराहनापूर्ण ढंग से तर्क-वितर्क करने की, यानी एक ऐसी संवेदनशील बातचीत की ज़रूरत होती है जिसमें सुविधादाता और आपत्ति उठाने वाला व्यक्ति, दोनों ही मतैक्य ढूँढने की कोशिश करें, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो. ब्रेक में या सत्रों के बाद आमने-सामने की चर्चा एक उपयोगी पद्धति हो सकती है, विशेष रूप से तब यदि आपत्ति उठाने वाला व्यक्ति चर्चाओं पर हावी हो रहा है या समूह में नकारात्मक माहौल बनाने में योगदान दे रहा है.

विषय - बहुसंख्यक बनाम अल्पसंख्यक

आपत्ति: बहुसंख्यकों को अधिक अधिकार मिलने चाहिए! लोकतंत्र में फैसला लेने का अधिकार उन्हें ही होता है.
आपत्ति: अल्पसंख्यक यदि यहां रहना चाहते हैं तो उन्हें हमारी आस्थाओं और जीवनशैली को अपनाना होगा. आखिर यह हमारा देश है.

संभावित उत्तर:

- लोकतांत्रिक व्यवस्था में जिस राजनैतिक दल को सबसे ज्यादा मत हासिल होते हैं, उसे सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया जाता है. लेकिन एक स्वस्थ एवं टिकाऊ लोकतंत्र के लिए आवश्यक है कि सरकार सभी के हितों का संरक्षण करे. सभी नागरिकों के समान अधिकारों के बिना लोकतंत्र, बहुसंख्यकों के निरंकुश शासन में बदल सकता है - दो भेड़ियों और एक भेड़ द्वारा इस बात पर मतदान करने में कि रात के भोजन में क्या खाया जाए!
- यदि आपकी सरकार अल्पसंख्यक को उनके अधिकारों से वंचित कर सकती है और अल्पसंख्यक को बहुसंख्यकों की आस्थाओं एवं जीवनशैली का अनुरूप रहना पड़ सकता है - तो इसके आपके धर्म या आस्था के उन लोगों के लिए क्या मायने होंगे जो दूसरे देशों में अल्पसंख्यक हैं? क्या वहां की सरकारों द्वारा ऐसा ही करना और उन्हें अधिकारों से वंचित करना उचित होगा?
- लोकतंत्र मानव अधिकार पर निर्भर होता है. बोलने की स्वतंत्रता, सूचना की स्वतंत्रता, सभा करने और संघ बनाने की स्वतंत्रता और प्रेस की स्वतंत्रता तथा सार्वभौमिक मताधिकार जैसे अधिकारों के बिना मुक्त और निष्पक्ष चुनाव असंभव होते हैं. इन अधिकारों के बिना नागरिक राजनीतिक दल नहीं बना सकते हैं, किसे मत दें इस बारे में जानकार निर्णय नहीं ले सकते हैं या सुरक्षित ढंग से मतदान नहीं कर सकते हैं.
- सांस्कृतिक विविधता एवं रीति-रिवाज समाज को कई प्रकार से समृद्ध करते हैं, जैसे कला एवं भोजन की दृष्टि से.

आपत्ति: मानव अधिकार केवल अल्पसंख्यक के लिए महत्वपूर्ण हैं.

संभावित उत्तर:

- सभी प्रकार के अल्पसंख्यक समूहों के लोगों के लिए मानव अधिकार महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि वे अक्सर अधिक जोखिमों का, जैसे भेदभाव का, सामना करते हैं. बहरहाल, मानव अधिकार हर किसी के लिए होते हैं. मानव अधिकार हर किसी को शक्ति के दुरुपयोग से बचाने और हर किसी के कल्याण को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं. कोई भी नहीं चाहता कि उसे अकारण गिरफ़्तार किया जाए, प्रताड़ना दी जाए, उससे भेदभाव किया जाए या उसके बच्चों को शिक्षा से वंचित किया जाए. हम चाहे बहुसंख्यक हों या अल्पसंख्यक, हम सभी ऐसे समाजों में रहना चाहते हैं जहाँ हमें इन चीज़ों से सुरक्षा मिले - यानी ऐसे समाजों में जहाँ हमें हमारे मानव सम्मान की सुरक्षा का अधिकार हो.
- हमारी कई पहचान होती हैं. मैं धार्मिक या जातीय बहुसंख्यक का हिस्सा हो सकता हूँ लेकिन किसी अन्य प्रकार के अल्पसंख्यक से संबंधित हो सकता हूँ - उदाहरण के लिए विकलांगता के कारण.

विषय - पश्चिमी मूल्य एवं षड़यंत्र

आपत्ति: पश्चिमी देश स्वयं मानव अधिकारों के मानदंडों का पालन नहीं करते परन्तु वे मानव अधिकारों के नाम पर अन्य देशों को नीचा दिखाते हैं और उनकी प्रतिष्ठा को कम करते हैं. मानव अधिकार केवल राजनैतिक खेल के औजार हैं.

संभावित उत्तर:

- किसी भी साधन, चाहे वह कितना भी अच्छा हो, का दुरुपयोग हो सकता है. कभी-कभी राजनीतिक सत्ता के खेलों में मानव अधिकार का उपयोग होता है. यह भी सच है कि मानव अधिकार के मामले में किसी भी देश का रिकॉर्ड बेदाग नहीं है (हालाँकि कुछ के रिकॉर्ड औरों से बेहतर हैं). कुछ सरकारें खुल्लम-खुल्ला अधिकारों के उल्लंघन करती हैं और दूसरी सरकारों पर ऐसा करने के आरोप लगाती हैं. पर इसका यह अर्थ नहीं कि मानव अधिकार हमारे लिए, यानी अधिकारधारकों के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं. वे हमारी स्वतंत्रता, सुरक्षा और कुशलक्षेम से सरोकार रखते हैं.

- समुदायों में मानव अधिकार से अनेक दुर्व्यवहार होते हैं - जैसे भेदभाव और घृणा अपराधों के ज़रिए. यदि सरकारें विफल रहें तो भी, नागरिकों के रूप में हम हमारे समुदायों में मानव अधिकार को वास्तविकता बनाने में योगदान दे सकते हैं. साथ ही, हम साथ मिलकर एक-दूसरे के अधिकारों के लिए खड़े भी हो सकते हैं और सरकार द्वारा अधिकारों का सम्मान नहीं किए जाने को चुनौती भी दे सकते हैं. जब हम ऐसा करते हैं, तो सरकारों (चाहे पश्चिमी हों या कहीं और की) के लिए मानवाधिकार का उल्लंघन जारी रखना मुश्किल हो जाता है. प्रश्न यह नहीं है कि सरकारें राजनीतिक खेल खेलती हैं या नहीं, बल्कि यह है कि हम हमारे लिए और हमारे समुदायों के लिए मानव अधिकार को एक वास्तविकता बनाने हेतु क्या कर सकते हैं.

आपत्ति: मानव अधिकार विदेशी अवधारणा, पश्चिमी मूल्य और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद हैं.

संभावित उत्तर:

- मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा दुनिया के विभिन्न भागों के प्रतिनिधियों द्वारा तैयार की गई थी और उन प्रतिनिधियों के धर्म तथा विश्वास अलग-अलग थे. उन प्रतिनिधियों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि मानव अधिकार मानव सम्मान से और हमारे दैनिक जीवन की ज़रूरतों से सरोकार रखते हैं. दुनिया के लगभग सभी देशों ने मानव अधिकार पर हस्ताक्षर किए हैं और उनका सम्मान व संरक्षण करने तथा उन्हें बढ़ावा देने पर सहमत हुए हैं.

- मानव अधिकार का संबंध स्कूलों, खेतों, कार्यस्थलों व घरों व मोहल्लों में हमारे साथ होने वाले व्यवहार और हम दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करें, इससे है. इनका उद्देश्य उन लोगों के दुर्व्यवहार से हमारी रक्षा करना है जो हमसे अधिक शक्तिशाली हैं - जमींदार, नियोक्ता, अध्यापक या परिवार के सदस्य भी - और प्राधिकारियों के दुर्व्यवहार से भी. मानव अधिकार हम सब के लिए महत्वपूर्ण हैं.

- मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा में सूत्रबद्ध अधिकारों पर नज़र डालें और प्रश्न रखें. क्या उनमें से कोई उन चीज़ों से संबंधित है जिन्हें हम मानवीय ज़रूरतें मानते हैं? कौनसे अधिकार विशेष आपके विचार में 'विदेशी' हैं? क्या ऐसा कोई अधिकार है जिसे हम खुद के लिए नहीं चाहते?

आपत्ति: मानव अधिकार व्यक्तिवादी होते हैं. हमारी संस्कृति में सामूहिक कर्तव्य और संबंध वैयक्तिक अधिकारों से अधिक महत्वपूर्ण हैं. यदि हर व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारियों की परवाह किए बिना अपने-अपने अधिकारों का दावा करने लगे तो समाज का ताना-बाना छिन्न-भिन्न हो जाएगा.

संभावित उत्तर:

- यह सही है कि मानव अधिकार, व्यक्तियों के अधिकार हैं. हर व्यक्ति के अधिकार होना महत्वपूर्ण है क्योंकि एक व्यक्ति के रूप में हम आसानी से दुर्व्यवहार या ज्यादती के शिकार बन सकते हैं - उदाहरण के लिए, भ्रष्ट अधिकारियों के द्वारा या दुर्व्यवहार करने वाले परिवारजनों के हाथों. जब ऐसा हो, तब हमारी न्याय तक पहुँच होनी चाहिए और हमें मदद मिलनी चाहिए.

- भले ही मानव अधिकार का आरंभ बिंदु व्यक्ति में हो, पर ऐसे कई मानव अधिकार हैं जो ऐसी चीज़ों का संरक्षण करते हैं जिन्हें हम साथ मिलकर करते हैं. जैसे, हमारे पास परिवार बनाने का अधिकार है, सभा करने का अधिकार हमें समूहों में मिलने का अधिकार देता है, और धर्म या आस्था की आजादी आस्तिकों के किसी समुदाय का होने, धार्मिक संगठन बनाने और साथ मिलकर पूजा करने के हमारे अधिकार की सुरक्षा करती है. ऐसे कुछ सामूहिक अधिकार भी हैं जो मूल निवासियों और अल्पसंख्यक की सुरक्षा करते हैं.
- मानव अधिकार में ज़िम्मेदारियाँ भी शामिल होती हैं. हर व्यक्ति की यह ज़िम्मेदारी है कि वह दूसरों के अधिकारों को स्वीकार करे और उनका सम्मान करे - लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करे और ऐसा समाज बनाए जहाँ कोई भी सत्ता के दुर्व्यवहार का शिकार न हो. यदि समाज का हर व्यक्ति उसका सदस्य होने के नाते इस ज़िम्मेदारी को संभाले तो समाज का ताना-बाना और मज़बूत हो जाएगा.

थीम - एक दंतहीन साधन और अप्रासंगिकता

आपत्ति: राज्य बार-बार मानव अधिकार का उल्लंघन करते हैं और उन्हें कोई नहीं रोकता. मानव अधिकार लोगों की रक्षा करने में असफल हैं. तब इनका मतलब क्या है? मानव अधिकार केवल कागज़ी हैं.
आपत्ति: हो सकता है कि मानव अधिकार पश्चिम के लोगों या शहरों में रहने वालों के लिए उपयोगी हों - परन्तु गांवों की ज़िन्दगी पर उनका कोई असर नहीं पड़ता.

संभावित उत्तर:

- मानव अधिकार का उल्लंघन करने वाली सरकारों को रोकने के लिए कोई अंतरराष्ट्रीय पुलिस बल नहीं है. गंभीर मानवाधिकार के उल्लंघनों को रोकने में अंतरराष्ट्रीय समुदाय अक्सर विफल होता है. और जब सरकारें मानव अधिकार की स्थापना के लिए कानून और नीतियाँ बनाती हैं तो कभी-कभी उनका जमीनी स्तर पर बहुत कम प्रभाव होता है. बहरहाल, मानव अधिकार बेमतलब नहीं हैं.
- मानव अधिकार बाहर से हासिल नहीं किए जा सकते हैं. आम लोगों के लिए मानव अधिकार को एक जीती-जागती वास्तविकता बनाना एक प्रक्रिया है जिसे हम हमारे समुदायों और राष्ट्रों के भीतर रचते हैं. यह प्रक्रिया अक्सर कष्टदायी ढंग से धीमी होती है और धैर्य, साहस तथा अच्छी रणनीतियाँ माँगती है - विशेष रूप से तब जब सत्ताधारी चीज़ों को बदलना नहीं चाहते हैं. बदलाव की यात्रा अक्सर लंबी होती है और छोटे-छोटे कदमों को मिलाकर बनी होती है. कई चीज़ें अल्पावधि में संभव नहीं लगतीं, पर यह यात्रा इस लायक होती है कि इसे किया जाए.
- अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय और स्थानीय स्तरों पर अच्छे कानूनों, विनियमों और नीतियों का होना महत्वपूर्ण है, लेकिन अगला कदम - काम करने वाले संस्थान बनाना - भी अत्यंत महत्वपूर्ण है. यानी, ऐसे संस्थान जो यह सुनिश्चित करें कि जिन किन्हीं पर नियमों की ज़िम्मेदारी है वे नियमों को भली-भांति जानते हों और उनका पालन करते हों. इसमें, गाँव से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक, हर स्तर पर जागरूकता फैलाना, कौशल वर्धन करना और जवाबदेही के तंत्र बनाना शामिल है.
- अधिकारों के उल्लंघन के कई मामले समुदाय के अन्दर होते हैं. अतः मानव अधिकारों को साकार करने के लिए ज़रूरी है ज़मीनी स्तर पर आम लोगों में अधिकारों के प्रति जागरूकता और लोगों की मानसिकता, मूल्यों और व्यवहार में बदलाव.
- इस सिलसिले में अनेक उपलब्धियां हासिल की गईं हैं! इनमें शामिल हैं वे अभियान जो गुलाम प्रथा को समाप्त करने, सभी को मताधिकार दिलवाने, महिलाओं को घरेलू हिंसा से बचाने और हाशियाकृत क्षेत्रों में रहने वालों को सार्वजनिक सेवाओं जैसे स्वास्थ्य की देखभाल और बिजली प्रदाय तक पहुँच दिलवाने के लिए चलाये गए. ये केवल इस बात के कुछ उदाहरण हैं कि मानव अधिकारों के क्षेत्र में काम करने से पूरी दुनिया में आम इंसानों की ज़िन्दगी किस तरह बेहतर हुई है. यह भूल जाना आसान है कि पिछली पीढ़ियों के संघर्ष से हमें कितने अधिकार मिले हैं.

विषय - मानव अधिकार के संबंध में धार्मिक आपत्तियां

टिप्पणी

धार्मिक आपत्तियाँ जटिल और संवेदनशील मुद्दों से संबंध रखती हैं और धार्मिक व्याख्याएँ तथा तर्क-वितर्क परिस्थितियों के अनुसार काफ़ी अलग-अलग होते हैं. नीचे सुझाए गए उत्तर बुनियादी व सामान्य सलाह प्रदान करते हैं और उनमें धर्म विशेष के उपदेशों की चर्चाएँ शामिल नहीं हैं.

अगर आपको लगता है कि आपके समूह में इन मुद्दों पर चर्चा को सम्हालना आपके लिए कठिन होगा तो आप ऐसे किसी विशेषज्ञ को आमंत्रित करने पर विचार कर सकते हैं जिसकी धार्मिक आस्थाएं वहीं हों जो आपत्ति उठाने वालों की हैं ताकि सत्र का संचालन करने में वे आपकी मदद कर सकें. क्या आपके सन्दर्भों में ऐसे धार्मिक संगठन या धार्मिक नेता हैं जो मानव अधिकार के लिए काम करते हों?

जोखिम का आंकलन करने के लिए प्रश्न करने वाले/आपत्ति उठाने वाले व्यक्ति के असली प्रयोजन को भांपना भी महत्वपूर्ण है - क्या वह सचमुच जिज्ञासु है और यह समझना चाहता है कि अपने धर्म में सच्ची आस्था रखते हुए भी वह मानव अधिकार के लिए काम कर सकता है या नहीं; या वह लोगों में फूट डालना चाहता है?

याद रखें कि यह कहने में कोई समस्या नहीं है कि किसी प्रश्न का उत्तर आपको नहीं मालूम और यह कि प्रतिभागी पाठ्यक्रम के अध्ययन के दौरान इस बारे में विचार करते रह सकते हैं कि जिस बारे में हम बात कर रहे हैं, वे उनके धर्म या आस्था से कैसे जुड़ते हैं.

FORB और धर्मशास्त्र

कई धर्मों के संसाधन यहाँ हैं.

आपत्ति: मानव अधिकार का निर्माण मनुष्य ने किया है. हम ईश्वर की इच्छा और उसी के विधान का पालन करते हैं. हमारी ज़रूरत के सारे उत्तर हमारे धर्म में हैं - हमें मानव अधिकार नहीं चाहिए!

संभावित उत्तर:

- मानव अधिकार का निर्माण मनुष्य ने किया है. परन्तु हर धार्मिक परंपरा में ऐसे अनेक विद्वान, अगुआ और सदस्य हैं जो यह मानते हैं कि मानव अधिकार में जो कुछ शामिल है वह मोटे तौर पर उनके धर्म की मानव सम्मान, न्याय और हमारे उत्तरदायित्वों से सम्बंधित मूल शिक्षाओं को प्रतिबिंबित करता है. जैसे-जैसे हम मानव अधिकारों के बारे में जानेंगे, संभवतः हमें यह पता चलेगा कि हमारी धार्मिक परम्पराओं और मानव अधिकारों में क्या समानता है.
- मानव अधिकार, धार्मिक शिक्षाओं से भिन्न कार्य करते हैं. एक ऐसी दुनिया में जहाँ विभिन्न आस्थाओं वाले लोग, और जिनकी कोई भी आस्था नहीं है वे भी, अगल-बगल रहते हैं, मानव अधिकार हमें वह साझा भाषा देते हैं जिसमें हम यह बात कर सकते हैं कि हमें किस प्रकार का समाज चाहिए. वे हमें एक ऐसा कानूनी ढांचा भी उपलब्ध करवाते हैं जिसका प्रयोग कर हम सरकारों को जवाबदेह बना सकते हैं - यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे मानव सम्मान और न्याय का सम्मान करें.
- मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा तैयार करने में कई धर्मों और आस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल थे और घोषणा के मसौदों पर संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्यों ने गहन बहस की थी. इनमें से कुछ बहसें इस बारे में थीं कि प्रस्तावित अधिकार किस प्रकार धार्मिक और मानववादी मान्यताओं से संबंधित हैं. इनके पीछे का लक्ष्य था एक ऐसी घोषणा विकसित करना जो सच में सार्वभौमिक हो - ऐसे अधिकार परिभाषित करना जिन पर हर व्यक्ति सहमत हो सके, चाहे वह किसी भी धर्म या विचारधारा का हो.

आपत्ति: मैं मानव अधिकार और/या FORB के लिए काम नहीं कर सकता/ती हूँ क्योंकि मेरे धर्म में वे स्वीकार्य नहीं हैं.

जिन अधिकारों से लोग असहमत हैं उन पर या उनके कार्यान्वयन पर की जाने वाली चर्चाएँ सत्रों को आसानी से बेपटरी कर सकती हैं. पूछें कि आपत्तिकर्ता किन विशिष्ट अधिकारों को लेकर चिंतित है. जब तक कि उस अधिकार विशेष पर सहमति, पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति की कुंजी न हो, तब तक ध्यान उन मुद्दों पर केन्द्रित करें जिन पर सहमति है और फिर सहमति के क्षेत्र का विस्तार करने का प्रयास करें.

संभावित उत्तर:

- पूछें कि क्या ऐसे मानव अधिकार/FORB के पहलू हैं जो आपत्तिकर्ता की आस्था परंपरा की मान्यताओं को दर्शाते हैं और क्या ऐसी कोई मानव अधिकार संबंधी समस्याएँ हैं जिन्हें वे निपटती देखना चाहेंगे. इस ओर संकेत करें कि इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य यह नहीं है कि हमें हर चीज़ पर सहमत होना चाहिए, बल्कि यह है कि हमें शक्तिशाली चेंजमेकर बनकर हमारे समुदायों में मौजूद समस्याओं से निपटना है.

- सम्बंधित अधिकार के उल्लंघन से व्यक्तियों, समूहों और समाज पर क्या ठोस प्रभाव पड़ता है, इसके उदाहरण देने का प्रयास करें. यह भी बताएं कि वह प्रभाव किस तरह से हमारे धर्मों में निहित मानव सम्मान और प्रेम की शिक्षा से सम्बद्ध है?
- अधिकारों को कानूनों द्वारा सीमित करना, शायद नैतिकता और सदाचरण को बढ़ावा देने का सर्वश्रेष्ठ तरीका नहीं है.
- समूह से पूछें कि उन्हें जिस अधिकार पर आपत्ति है उसके बारे में उनका धर्म क्या कहता है/उनके धर्म क्या कहते हैं और उसका उपयोग करने वाले लोगों के साथ क्या होना चाहिए. क्या केवल एक ही प्रासंगिक पाठ्य/ग्रंथ या व्याख्या है? क्या ऐसे पाठ्य/ग्रंथ, मान्यताएँ या व्याख्याएँ हैं जो किसी प्रकार से अधिकार का समर्थन करती हैं? क्या समय के साथ उपदेशों में बदलाव हुए हैं?
- समान प्रकार के धार्मिक बहुसंख्यकों वाले देश मानव अधिकार और FORB को काफ़ी अलग ढंग से संभालते हैं. मानव अधिकार पर कानून बनाने का कोई एक मुसलमान, बौद्ध या ईसाई तरीका नहीं है.

सुझाव! मानव अधिकारों के प्रति प्रतिबद्ध किसी धार्मिक नेता या धर्मशास्त्री से अनुरोध करें कि वे इस तरह के विचार-विमर्श का नेतृत्व करें!

प्रश्न: क्या अन्य धर्मों के लिए समान अधिकार स्वीकार करने का यह अर्थ नहीं कि मेरा विचार है कि सभी धर्म समान रूप से सत्य हैं? सभी के लिए FORB हेतु काम करने के लिए क्या मुझे यह विचार त्यागना ही होगा कि केवल मेरा धर्म ही एकमात्र सत्य धर्म है?
आपत्ति: हमें सभी को बराबर अधिकार क्यों देने चाहिए जबकि मेरा धर्म श्रेष्ठ है?

संभावित उत्तर:

- धर्म या आस्था की आजादी आपके यह मानने के अधिकार की सुरक्षा करती है कि केवल आपका धर्म ही एकमात्र सत्य मार्ग है. यह अन्य लोगों के यह मानने के अधिकार की भी सुरक्षा करती है कि उनका धर्म या आस्था ही एकमात्र सत्य धर्म या मत है. मानव अधिकार या अंतरराष्ट्रीय कानूनों को धार्मिक सत्य के प्रश्नों पर निर्णय देने का अधिकार नहीं है. मानव अधिकार मानव सम्मान की नैतिकता पर आधारित होते हैं और लोगों पर केंद्रित होते हैं. हमें एक-दूसरे से सम्मान और गरिमा के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए इस बारे में न्यूनतम मानक स्थापित करके वे एक ऐसे सुरक्षित स्थान की रचना करते हैं जहाँ हम सभी लोग हमारे सारे अंतरों के साथ एक-दूसरे के साथ-साथ रह सकते हैं.
- अधिकांश धर्म मानव सम्मान के महत्व पर प्रकाश डालते हैं और उनमें यह सुनहरा नियम किसी-न-किसी रूप में होता ही है - कि हमें दूसरों से वैसा व्यवहार करना चाहिए जैसा हम खुद से चाहते हैं. सहभागियों से पूछें कि क्या उनके धर्म में ऐसा सुनहरा नियम है और उनसे इस नियम से संबंधित उपदेश साझा करने को कहें. पूछें कि यदि लोगों के पास समान अधिकार न हों तो क्या उस सुनहरे नियम पर खरा उतरना संभव है?
- मानव अधिकार के न्यूनतम मानकों के संबंध में लोगों से समानता का व्यवहार करना और यह कहना कि हम उनकी आस्था को स्वीकृति देते हैं, ये दोनों अलग-अलग बातें हैं. हम भेदभाव का, हिंसा का या अधिकारों से इंकार करने का सहारा लिए बिना लोगों की आस्था से आधारभूत रूप से असहमत हो सकते हैं. धर्मपालन के अधिकार पर सीमाबंधनों की अनुमति केवल तब होती है जब उक्त पालन अन्य लोगों के अधिकारों और स्वतंत्रताओं तथा लोकस्वास्थ्य इत्यादि को खतरे में डालता हो.
- क्या ऐसे अधिकार हैं जो हम खुद के लिए तो चाहते हैं, पर हमें लगता है कि दूसरों को वे नहीं दिए जाने चाहिए? यदि हम दूसरों को इन अधिकारों से वंचित करते हैं, तो हम कैसे इस बारे में निश्चित हो सकते हैं कि ऐसा समय कभी नहीं आएगा जब सरकार को लगेगा कि हमें हमारे अधिकारों से वंचित कर देना ठीक है? यदि एक के पास अधिकार नहीं हैं, तो किसी के भी पास अधिकार नहीं हैं. उसके बाद हमारे पास हैं कुछ कानूनी विशेषाधिकार जो राज्य ने हमें अस्थायी तौर पर दिए हैं और जब भी राज्य के उद्देश्यों के लिए उपयुक्त हो तब वह इन्हें वापस ले सकता है.
- मानव अधिकार हमारी आस्था के उन लोगों की रक्षा करेंगे जो अन्य देशों में अल्पसंख्यक हैं. जब हम यह कहते हैं कि हमारे देश में बहुसंख्यक समुदाय को यह तय करने का अधिकार है कि किसके पास अधिकार होंगें और किसके पास नहीं तो हम यह भी कह रहे होते हैं कि अगर दूसरे राज्य/बहुसंख्यक समुदाय, हमारे धर्म या आस्था के लोगों को उनके अधिकारों के वंचित करते हैं तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है.

विषय: आजादी और नियंत्रण

प्रश्न: वे लोग जिस ढंग से अपने धर्म का आचरण करते हैं वह हमारी संस्कृति से मेल नहीं खाता. उस धर्म के सभी लोग वह आचरण नहीं करते इसलिए यह साफ़ है कि वह आवश्यक नहीं है. अगर वह आवश्यक नहीं है, तो हम उस पर प्रतिबन्ध लगा सकते हैं.
प्रश्न: अगर किसी धर्म का धार्मिक नेतृत्व कहता है कि उस धर्म का पालन एक विशेष तरीके से किया जाना चाहिए तो हमें लोगों को किसी अन्य तरीके से उसका पालन करने की इज़ाज़त क्यों देनी चाहिए?

संभावित उत्तर:

- सभी धर्मों में आंतरिक रूप से विशाल विविधता होती है. किसी भी पंथ विशेष के भीतर चीज़ों को करने के कई अलग-अलग तरीके होते हैं और ऐसे किसी एक धार्मिक प्राधिकरण का होना दुर्लभ होता है जिसे उस धर्म के सभी अनुयायी स्वीकार करते हों. दिन-ब-दिन अधिकाधिक सचल होती जाती दुनिया में, चीज़ों को अलग-अलग ढंग से करने वाले लोग एक-दूसरे के साथ रहते हुए जीवन जी रहे हैं.
- कल्पना कीजिये कि आपको अपने देश से भाग कर किसी अन्य देश में जाना पड़े. आपको कैसा लगेगा यदि वह समाज आपको उस ढंग से आपके धर्म का आचरण न करने दे जो आपको प्रिय है या आपको इस ढंग से आचरण करने पर मजबूर करे जो आपकी अंतःकरण के खिलाफ हो?
- लोगों को प्रथाओं के अभ्यास की अनुमति दी जाने के लिए यह अनिवार्य नहीं है कि वे लोग यह सिद्ध करें कि वे प्रथाएँ उनके धर्म का एक आवश्यक अंग हैं. हमें स्वतंत्र होना चाहिए. धर्मपालन की हमारी स्वतंत्रता को सीमित/प्रतिबंधित करने के लिए, राज्य को यह दिखाना ही होगा कि प्रस्तावित सीमाबंधन/प्रतिबंध, उदाहरण के तौर पर, लोकस्वास्थ्य की रक्षा के लिए या दूसरों के अधिकारों तथा स्वतंत्रताओं की रक्षा के लिए आवश्यक है. स्वतंत्रता को अनावश्यक सीमाबंधनों/प्रतिबंधों द्वारा प्रतिस्थापित करने से रोष और सामाजिक तनाव पैदा होते हैं, राज्य के हाथों में अत्यधिक और मनमानी शक्ति आ जाती है और समाज लोकतंत्र से दूर होकर तानाशाही की ओर बढ़ने लगता है.

विषय: ठेस पहुँचाना और सद्भाव

प्रश्न: क्या ठेस पहुंचाए जाने से रक्षा भी हमारा अधिकार है?
आपत्ति: अल्पसंख्यक/स्वतंत्र विचारकों को स्वतन्त्रतापूर्वक अपने धर्म के बारे में बात करने/उसका आचरण करने की आज़ादी देने से हमारे मूल्यों और सामाजिक एकजुटता के लिए खतरा उत्पन्न हो जाएगा.
आपत्ति: किसी को भी दूसरे लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचानी चाहिए. हमें ईशनिंदा और आहत करने वाले वचनों और व्यवहार पर प्रतिबन्ध लगा देना चाहिए. इस तरह ही हम सद्भाव कायम रख सकेंगे और जो पवित्र है, उसकी रक्षा कर सकेंगे.
आपत्ति: हमारे धर्म को नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किये जाने से हमारी रक्षा की जानी चाहिए - यह भेदभाव है.

संभावित उत्तर:

- अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार, हर व्यक्ति को अपने धर्म में आस्था रखने, उसका आचरण करने और अपनी आस्थाओं को स्वन्त्रतापूर्वक व्यक्त करने का अधिकार होना चाहिए जब तक कि उसके आचरण से दूसरों के अधिकारों और स्वतंत्रताओं को हानि कारित नहीं होती हो. जिससे हम असहमत हैं, उसे देखने या सुनने से अंतर्राष्ट्रीय कानून हमारी रक्षा नहीं करता और ना ही हम जिन चीज़ों को कीमती मानते हैं उनकी समालोचना से. ऐसा कोई मानव अधिकार नहीं है जो आहत होने से हमारी रक्षा करे.
- सामाजिक सद्भाव की रक्षा के लिए आहत करने या ठेस पहुँचाने वाली वाणी या आचरण पर प्रतिबन्ध तार्किक लग सकता है. परन्तु क्या आहत करने वाला है, इसे परिभाषित करना असंभव है. कुछ लोग तो मात्र इससे आहत हो जाते हैं कि उनसे अलग विचारों का दुनिया में अस्तित्व हैं. अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार नफरत फैलाने वाली और हिंसा भड़काने वाली बातों पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए. परन्तु ईशनिंदा और स्वधर्म त्याग के बारे में और 'सामाजिक सद्भाव की रक्षा' के लिए बनाये गए कानून अमूमन इससे कहीं आगे जाते हैं. वे सामान्यत:
  - अस्पष्ट होते हैं जिससे यह पता लगाना बहुत मुश्किल होता है कि क्या गैरक़ानूनी है.
  - ठेस पहुँचाने या आहत करने को बहुसंख्यकों के परिप्रेक्ष्य से परिभाषित करते हैं (अगर सिद्धांत में नहीं तो कम से कम व्यवहार में).

  - दुर्व्यवहार और झूठे आरोप लगाना आसान बनाते है - यह साबित करना बहुत मुश्किल होता है कि फलां बात आपने नहीं कही है.
  - इस विचार का समर्थन कर कि हमें उन लोगों को सजा देनी चाहिए जो शांतिपूर्वक ऐसी आस्थाएं व्यक्त कर रहे हों जो बहुसंख्यकों को पसंद नहीं हैं, हिंसा को प्रोत्साहित करते हैं.
  - शांतिपूर्वक अपनी आस्था व्यक्त कर रहे लोगों पर सामाजिक तनाव का आरोप मढ़े जाने का कारण बनते हैं. यह ज़िम्मेदारी शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति पर घृणा और हिंसा के साथ प्रतिक्रिया देने वाले लोगों के सिर होनी चाहिए.

- पवित्र चीज़ों के संरक्षण के लिए धर्मों और धार्मिक संस्थानों के उपहास या उनकी समालोचना पर रोक लगाना सही दिखाई पड़ सकता है. हालाँकि, बाहरी और अंदरूनी समालोचना धार्मिक संस्थानों को और मज़बूत तथा अधिक निष्ठावान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. धार्मिक संस्थानों के कर्मचारी इंसान होते हैं और इंसान कभी-कभी चीज़ों को गलत समझ बैठते हैं. समस्याओं से निपटना केवल तब संभव है जब हम बिना किसी डर के उनके बारे में बात कर सकते हों. धार्मिक संस्थानों में बच्चों से दुर्व्यवहार की हालिया घटनाएँ इस स्वतंत्रता का महत्व स्पष्ट करती हैं.

- अल्पसंख्यक और स्वतंत्र विचारकों के अपनी आस्था और पहचान को लेकर चुप रहने की नींव पर बनी 'सद्भाव' कहीं एक दिखावा तो नहीं जो केवल बहुसंख्यकों को ही सद्भाव के रूप में महसूस होती है? क्या हमारा समाज दीर्घकाल तक स्थिर और शांतिपूर्ण केवल तब रह सकता है यदि बहुसंख्यकों को लगे कि सद्भाव और एकजुटता मौजूद है?

- ऐसा कोई मानव अधिकार नहीं है जो आहत होने से हमारी रक्षा करे. असल में, विविध और परस्पर-विरोधी विचारों की समालोचना और उनके प्रति सहिष्णुता स्वस्थ समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं. हालाँकि, जब राज्य, मीडिया और/या बहुसंख्यक समुदाय सुव्यवस्थित ढंग से अल्पसंख्यक धर्मों के नकारात्मक और शत्रुरूपी चित्रण में लग जाते हैं तो परिणाम उन धर्मों के अनुयायियों के साथ भेदभाव और हिंसा के रूप में मिलता है. ऐसा तब भी होता है जब दिए जा रहे अलग-अलग बयान घृणास्पद भाषण या हिंसा के उकसाव की परिभाषा के दायरे में न आ रहे हों. मानव अधिकार का सम्मान और समाज की स्थिरता राज्य तथा मीडिया द्वारा नैतिक और निष्पक्ष व्यवहार पर निर्भर करते हैं. राजनीति में, मीडिया में और जन-विमर्श में नैतिकता को बढ़ावा देने का काम करें; घृणास्पद भाषण और उकसावों पर शीघ्रता से प्रतिक्रिया देना अत्यधिक महत्वपूर्ण है.

प्रतिक्रिया व अनुमतियाँ

अपनी **कहानियाँ और फ़ीडबैक** यहाँ साझा करें.

अपनी चेंजमेकर कहानियाँ सुनाएं और अपने फीडबैक और सुझाव साझा करें!
हम यह जानने के लिए बहुत आतुर हैं कि आप इन संसाधनों का प्रयोग किस प्रकार कर रहे हैं और क्या ये संसाधन लोगों को कार्यवाही करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं! क्या बढ़िया है और कहाँ हमें सुधार करना चाहिए.

अपना फीडबैक हमसे यहाँ साझा करें:
https://www.forb-learning.org/feedback-form/

क्या इन संसाधनों का प्रयोग करने से पहले मुझे किसी को सूचना देनी होगी या किसी से अनुमति लेनी होगी?
नहीं. इस सुविधादाता गाइड की संपूर्ण सामग्री व इसके साथ के संपूर्ण संसाधन अनुकूलित कर, अन्यों को शिक्षित करने और सभी के लिए धर्म या आस्था की आजादी को बढ़ावा देने के लिए उपलब्ध हैं.

इन संसाधनों का उपयोग करते समय कृपया लोगों को धर्म या आस्था की आजादी के सीखने का प्लेटफार्म www.forb-learning.org के बारे में बताएं और यह भी कि इस प्लेटफार्म पर अतिरिक्त जानकारियां, शिक्षण सामग्री व ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं.

क्या इस मार्गदर्शिका में वर्णित कुछ अभ्यासों को अन्य किसी प्रकाशन में शामिल करने के लिए मुझे अनुमति लेनी होगी?
नहीं. आप इस गाइड में दिए गए अभ्यासों के पाठ्य को या उनके अनुकूलित अथवा अनूदित संस्करणों को प्रकाशनों में शामिल कर सकते हैं. आप चित्रों का उपयोग अनुमति के बिना नहीं कर सकते हैं. पाठ का उपयोग करते समय, कृपया FORB सीखने का प्लेटफार्म को श्रेय दें और मूल संसाधन से लिंक इस प्रकार करें:

स्रोत: स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम, धर्म या आस्था की आजादी सीखने का प्लेटफार्म. www.forb-learning.org/changemakers

हम आपके प्रकाशनों के बारे में जानना चाहेंगे! जानकारी साझा करने के लिए कृपया फ़ीडबैक फ़ॉर्म का उपयोग करें.

क्या मैं इस सुविधादाता गाइड और साथ के अन्य संसाधनों का अपनी भाषा में अनुवाद कर उन्हें प्रकाशित कर सकता/ती हूँ?
हमारी यह मान्यता है कि अंग्रेजी भाषा न बोलने वालों को FORB शिक्षण संसाधन उपलब्ध करवाना महत्वपूर्ण है. आप इस सामग्री के हिस्सों का अनुवाद कर उनका उपयोग कर सकते हैं. अगर आप संपूर्ण पाठ्यक्रम और सुविधादाता गाइड का अनुवाद करना चाहते हों तो कृपया इस ईमेल पते पर हमसे संपर्क करें. info@forb-learning.org

कॉपीराइट
क्रिएटिव कॉमन कॉपीराइट: CC BY-SA के अंतर्गत इस प्रकाशन के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं. इसका यह अर्थ है कि आप संसाधनों को किसी भी प्रकार से अनुकूलित और उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं बशर्ते आप FORB सीखने का प्लेटफार्म को स्पष्ट रूप से श्रेय दें और इन्हीं कॉपीराइट शर्तों का उपयोग करते हुए अपने अनुकूलित संस्करणों को हमसे और दूसरों से साझा करें.

सुविधादाता गाइड में दिए गए चित्र और 'द सॉन्ग्स ऑफ़ द फ़्लूट एंड द ड्रम' (बाँसुरी और नगाड़े के गीत) कथा के पाठ्य और चित्र कॉपीराइट द्वारा संरक्षित हैं और उन्हें अनुमति के बिना प्रकाशित या अनुकूलित नहीं किया जा सकता है. कृपया हमसे संपर्क करें.

सर्वाधिकार: SMC Faith in Development, 2021, FORB सीखने का प्लेटफार्म के प्रायोजक NORFORB की ओर से.

भाग B

पाठ्यक्रम सामग्री

सत्र 1-5

भाग 1: अपना बोरिया-बिस्तर बाँधें

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम का उद्धेश्य है प्रतिभागियों को अपने-अपने समुदायों में धर्म या आस्था की आजादी (FORB) के चेंजमेकर बनाना. धर्म या आस्था की आजादी के लिए बदलाव की प्रक्रिया एक लंबी और कभी-कभी कठिन यात्रा होती है. तैयारी करने से मदद मिलती है!

पाठ्यक्रम का भाग 1 'अपना बोरिया-बिस्तर बाँधने' यानी ज्ञान और रवैये विकसित करने पर फ़ोकस करता है ताकि हम दिल-ओ-दिमाग से बदलाव की यात्रा पर निकलने को तैयार हो जाएँ. इससे सहभागियों को सामान्य रूप से मानव अधिकार और विशेष रूप से FORB (धर्म या आस्था की आजादी) के बारे में जानने और उनके प्रति अपने रवैये की छानबीन करने का और खुद से अलग पहचान वाले लोगों के प्रति अपने रवैयों पर सोच-विचार करने का मौका मिलता है. यह संदर्भ विश्लेषण के कौशल भी प्रदान करता है.

इसके सत्र 1-5 एक प्रक्रिया का हिस्सा हैं, जिसमें हर अगला सत्र, पिछले सत्र में सीखी गई बातों और विचारों को आगे बढाता है.

- सत्र 1 मानव अधिकारों का सामान्य परिचय देता है.
- सत्र 2 विशिष्टतः धर्म या आस्था की आजादी का परिचय देता है.
- सत्र 3 हमारी पहचानों और विशेषाधिकारों तथा प्रतिकूलताओं की पड़ताल पर केन्द्रित है.
- सत्र 4 FORB के उल्लंघनों की पड़ताल करता है और सहभागियों को उल्लंघनों की पहचान के अभ्यास में सक्षम बनाता है.
- सत्र 5 सहभागियों को उनके अपने समुदायों में FORB संबंधी समस्याओं की पहचान करके अपना खुद का FORB संदर्भ विश्लेषण विकसित करने में सक्षम बनाता है.

इन सत्रों में सीखी गई बातें और व्यक्त किए गए विचार पाठ्यक्रम के भाग 2, जो हमारे समुदायों में बदलाव की ओर यात्रा की योजना बनाने पर केन्द्रित है, का महत्वपूर्ण आधार बनते हैं - उन रणनीतियों का जिनका उपयोग हम मानव अधिकारों को बढ़ावा देने और कार्य योजना बनाने में कर सकते हैं. सत्र 5 में विकसित किये गए संदर्भ विश्लेषण का भाग 2 के सभी सत्रों मे सन्दर्भ सामग्री के रूप में उपयोग होता है.

सत्र 1

मानवीय ज़रूरतें - मानव अधिकार - मानवीय जिम्मेदारियाँ

सत्र अवलोकन

सुझाव! आप सत्र अवलोकन में सीखने के उद्देश्य, विषयवस्तु एवं समयावधि देख सकते हैं और संसाधनों की सूची एवं आवश्यक पूर्व तैयारी के बारे में भी जान सकते हैं.

कई संदर्भों में लोग यह मानते हैं कि मानव अधिकारों का उनके दैनिक जीवन में कोई स्थान नहीं है; उनका स्थानीय संस्कृति से कोई नाता नहीं है या वे पश्चिमी नव-उपनिवेशवादी एजेंडे का हिस्सा हैं. दुर्भाग्यवश, मानव अधिकारों के प्रति ऐसी नकारात्मक धारणाएं लोगों को एक उपयोगी औजार से वंचित कर सकती हैं, जिसका उपयोग वे अपने समुदायों में जीवन को बेहतर बनाने के लिए कर सकते हैं. यदि लोग यह न जानते हों कि अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय कानूनों के अनुसार उनके पास और दूसरों के पास क्या-क्या अधिकार होने चाहिए, तो मानव अधिकार उल्लंघनों का बिना किसी चुनौती के जारी रहना और आसान हो जाता है.

इस सत्र के दो भाग हैं:

भाग 1: परिचय
इसमें पाठ्यक्रम की संरचना और इसके लक्ष्यों का परिचय शामिल है और यह सहभागियों को एक-दूसरे को जानना शुरू करने में सक्षम बनाता है. इसमें चर्चाओं के आधारभूत नियमों पर एक चर्चा भी शामिल है. यह ऐसे समूहों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जहाँ एक-दूसरे पर भरोसा कम हो या जहाँ विषय संवेदनशील हो.

भाग 2: मानवीय ज़रूरतें - मानव अधिकार - मानवीय जिम्मेदारियाँ
इस भाग का लक्ष्य मानव अधिकारों एवं उनके महत्व के संबंध में प्रतिभागियों की जानकारी और समझ को बढ़ाना और उनके व उनके समुदायों द्वारा अनुभव की जा रही जीवन की आवश्यकताओं का मानव अधिकारों से संबंध जोड़ना है. यह सभी आगामी सत्रों का महत्वपूर्ण आधार है.

सीखने के उद्देश्य

सुझाव! मानव अधिकारों संबंधी मुश्किल सवालों के उत्तर देने में आपकी सहायता हेतु मार्गदर्शन पृष्ठ 21-28 पर उपलब्ध है.

यह सत्र प्रतिभागियों की उनके मानव अधिकारों के संबंध में जानकारी बढ़ाने एवं मानव अधिकारों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने पर केन्द्रित है.

इस सत्र के अंत तक प्रतिभागी:

- कम से छः ऐसे मानव अधिकारों की सूची बना सकेंगे जो उनके दैनिक जीवन/ समुदाय के लिए महत्वपूर्ण हैं और न्यूनतम एक ऐसा मानव अधिकार बता सकेंगे जिसका उनके समुदाय में उल्लंघन हो रहा है.
- यह बता सकेंगे कि मानव अधिकार उनके दैनिक जीवन में क्यों महत्वपूर्ण व प्रासंगिक हैं तथा यह भी कि ऐसे समाज, जिसमें मानव अधिकारों का सम्मान हो और जहाँ वे संरक्षित हों, के निर्माण में सभी कुछ न कुछ योगदान दे सकते हैं.

टिप्पणी

अध्ययन लक्ष्यों का उद्धेश्य सुविधादाता की यह आंकलन करने में मदद करना है कि सीखने के उद्देश्य कितने अच्छे ढंग से चल रही है ताकि वे यह समझ सकें कि प्रतिभागियों की जानकारी, दृष्टिकोण एवं कौशल में बेहतरी आ रही है या नहीं. इनका उद्धेश्य प्रतिभागियों को यह बताना नहीं है कि सूची में दी गई चीजें उन्हें 'हासिल' करना है.

किसी भी सत्र के सीखने के उद्देश्य की वास्तविकता सहभागियों के आरंभ बिंदुओं पर - जैसे, मानव अधिकार के प्रति उनके मौजूदा रवैयों पर - निर्भर करेगी. संभव है कि उद्देश्यों की दिशा में प्रगति एक सत्र में हासिल न हो बल्कि पाठ्यक्रम के दौरान क्रमिक ढंग से हो.

सत्र की अंतर्वस्तु और समय

स्वागत एवं परिचय स्वागत, प्रतिभागियों का परिचय, पाठ्यक्रम संबंधी प्रस्तुतिकरण एवं आधारभूत नियम संबंधी अभ्यास.	30 मिनट
पूर्ण अभ्यास: जीवन का सूप एक पात्र में भरे सूप में मिली विभिन्न चीज़ों की उपमा का प्रयोग करते हुए मानवीय ज़रूरतों की पड़ताल करता है.	35 मिनट
चलते-चलते बातचीत अभ्यास: मानव अधिकार गैलरी मानवीय ज़रूरतें एवं मानव अधिकारों के बीच संबंध स्थापित करने में प्रतिभागियों की सहायता करता है.	25 मिनट
प्रस्तुति: मानवीय ज़रूरतें - मानव अधिकार - मानवीय जिम्मेदारियाँ महत्वपूर्ण समझौतों पर प्रकाश डालते हुए मानव अधिकारों का परिचय, राज्य के कर्तव्य एवं मानव अधिकारों को वास्तविकता बनाने में साधारण लोगों की भूमिका.	15 मिनट
समापन चर्चा प्रतिभागियों को इनपुट्स पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है और सत्र का समापन करता है.	15 मिनट
कुल समय	**2 घंटे**

तैयारी करें

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप सत्र की तैयारी करें. याद रखें - आपको अपने समूह की बेहतर समझ है! आपके समूह की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार सत्र के किसी भी तत्व को अनुकूलित और परिवर्तित करने के लिए आपका स्वागत है.

इस सत्र के लिए संसाधन

पृष्ठ 16 पर सूचीबद्ध प्रत्येक सत्र के लिए मानक संसाधनों के अतिरिक्त, इस सत्र को संचालित करने के लिए आपको निम्नलिखित संसाधनों की आवश्यकता होगी:

- एक छोटी टोकरी.
- कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़े.
- सूप का पात्र (जिस तरह का आपकी संस्कृति में प्रयुक्त किया जाता है) जिस पर 'जीवन का सूप' लेबल लगा हो.
- पहले से कटे हुए मानवीय ज़रूरतें कार्ड.
- मानव अधिकार पोस्टरों के प्रिंटआउट.
- अगर आप 'बताईये आप क्या सोच रहे हैं!' अतिरिक्त अभ्यास करने जा रहे हैं तो आपको प्रति प्रतिभागी 10 छोटे पत्थर **या सिक्के** या कागज़ के टुकड़े भी चाहिए होंगें.

इस सत्र के **सहायक संसाधन** यहाँ हैं.

वैकल्पिक अतिरिक्त: अपना आत्मविश्वास बढ़ाएं!
सत्र की अपनी तैयारियों के तहत, मानव अधिकार के बारे में और जानने के लिए ये लघु फ़िल्में देखें. इससे आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा और प्रश्नों का उत्तर देने की आपकी क्षमता भी. पर चिंता न करें, एक सुविधादाता के रूप में आपकी भूमिका विशेषज्ञ होने की नहीं होती है, बल्कि ऐसा व्यक्ति होने की होती है जो परस्पर लर्निंग की प्रक्रिया की अगुआई करता है.

फ़िल्में

कक्ष तैयार करना
इस सत्र के लिए यह एक अच्छा विचार होगा कि प्रारंभ में कुर्सियां सामने की ओर मुंह करते हुए अर्धवृत्त में लगाई जाएं. समूह को एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से जाने की सुविधा होनी चाहिए. एक बड़ा कमरा, जिसमें मेजें न हों, सबसे बढ़िया होगा!

'जीवन का सूप'

"'जीवन का सूप' और 'मानव अधिकार गैलरी' अभ्यासों ने हमारी आँखें खोल दीं. कुछ सहभागियों को पहली बार यह एहसास हुआ कि उनके रोज़मर्रा के जीवन में मानव अधिकार का कुछ अर्थ है. उन्होंने वे मानव अधिकार जाने जो उन्हें कभी पता ही नहीं था कि उनके पास हैं."
उकोहा नवोबिया, सुविधादाता, नाइजीरिया

विस्तृत सत्र योजना

भाग 1: परिचय 30 मिनट

चूँकि यह प्रथम सत्र है इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम कुछ समय समूह के सदस्यों को एक दूसरे से जुड़ने में सहायता करने, आधारभूत नियमों का निर्धारण करने और पाठ्यक्रम के उद्देश्यों और उसके ढांचे का परिचय देने में व्यय करें.

टिप्पणी

यदि आपका समूह एक-दूसरे को पहले ही अच्छे से जानता है तो संभव है कि आप इसकी अवधि थोड़ी घटा पाएँ. यदि आपके समूह में विश्वास के अभाव के उल्लेखनीय मुद्दे होने की संभावना है तो आपको संबंधों के निर्माण में अधिक समय लगाना पड़ सकता है. यदि ऐसा है, तो पाठ्यक्रम की शुरुआत के लिए पहला सत्र अधिक लंबा चलाने पर विचार करें. जिन समूहों को इसमें अधिक समय लगाने की ज़रूरत है उनके लिए एक अतिरिक्त गतिविधि सुझाई गई है.

1. स्वागत 3 मिनट

सभी का अपने समूह की प्रकृति के अनुरूप जिस तरह से उचित हो, उस तरह से स्वागत करें, जैसे, उनकी भागीदारी की सराहना करें, किसी गीत का एक पद गाएं या कोई प्रार्थना करें.

2. आरंभिक अभ्यास: वाक्य पूरा करें 12 मिनट

पूर्ण अभ्यास

उद्देश्य

यह अभ्यास प्रतिभागियों को अपना परिचय देने का अवसर देता है और पाठ्यक्रम में शामिल होने के उनके कारणों को समझने में आपकी मदद करता है.

अभ्यास का संचालन कैसे करें

घेरे के चारों ओर घूमते हुए हर व्यक्ति से यह वाक्य पूरा करने को कहें. (एक सहभागी, एक वाक्य - लंबे-लंबे उत्तर नहीं!)

“मेरा नाम... है और मैं इस पाठ्यक्रम में इसलिए आया/आई हूँ क्योंकि...”

अभ्यास का समापन कैसे करें

जब सब लोग बोल चुकें तब संक्षेप में बताएं कि उनके उत्तरों में क्या समान था. प्रतिभागियों को उत्तर देने के लिए धन्यवाद दें और कहें कि आपको उम्मीद है कि पाठ्यक्रम से उनकी जो आशाएं हैं, उनमें से कम से कम कुछ ज़रूर पूरी होंगीं. कहें कि अब आप पाठ्यक्रम के उद्देश्यों और उसके ढांचे के बारे में आपको बताएंगें.

सुझाव! भाग 1 के दौरान, समय का विशेष ध्यान रखें: परिचय. आपको भाग 2 के लिए समय बचाना है!

3. पाठ्यक्रम का परिचय 5 मिनट

संक्षिप्त वार्ता

उद्देश्य

इस संक्षिप्त वार्ता का लक्ष्य प्रतिभागियों को पाठ्यक्रम के उद्देश्यों, कार्यपद्धति, विषयों और उपयोगिता का संक्षिप्त विवरण देना है.

क्या कहें

पावरपॉइंट स्लाइड्स 3-6 की विषय-वस्तु को या फ्लिप चार्ट शीट्स पर दिए गए उसी पाठ्य को शुरू से आखिर तक पढ़ें. पावरपॉइंट्स प्रस्तुतियों में आपके उपयोग के लिए स्पीकर नोट्स हैं (भले ही आप फ्लिप चार्ट शीट्स का उपयोग कर रहे हों).

टिप्पणी

अगर आपके समूह में मानव अधिकार एक विवदास्पद विषय हो तो आप शायद स्लाइड 5 पर पाठ्यक्रम विषयों का वर्णन करने वाले हिस्से को अनुकूलित कर उसमें सम्बद्ध परन्तु स्थानीय स्तर पर स्वीकार्य शब्दावली का प्रयोग करना चाहें.

4. आधारभूत नियम अभ्यास: टोकरी आगे बढाएं 10 मिनट

पूर्ण अभ्यास

उद्देश्य
सुरक्षित वातावरण का निर्माण करने और चर्चा को प्रतिभागियों की साझा अपेक्षाओं के अनुरूप बनाने के लिए परस्पर बातचीत के संबंध में आधारभूत नियम का निर्धारण महत्वपूर्ण है.

संसाधन

- टोकरी.
- कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़े.
- कलम.

अभ्यास का परिचय कैसे दें
निम्न बातें समझाएं:
इस पाठ्यक्रम के दौरान हम चाहते हैं कि सभी सुरक्षित अनुभव करें और सभी का सम्मान हो - और सभी को बोलने और अपनी सोच, अपने विचारों और अपने अनुभवों को सामने रखने का अवसर समान रूप से मिले. इस तरह का वातावरण बनाने के लिए कुछ ऐसे आधारभूत नियम, जिन पर हम सब सहमत हैं, उपयोगी होंगे - ऐसे नियम जो हम दूसरे को बता सकें. ये आधारभूत नियम एक व्यक्ति के लिए हो सकते हैं (जैसे समय पर आएं और अपने फ़ोन को साइलेंट मोड में रखें) या इस बारे में कि हम एक दूसरे से कैसा व्यवहार करें (जैसे सब की बात सम्मान से सुनें या सबको बोलने का अवसर दें).

अभ्यास का संचालन कैसे करें
गोले के बीच में एक टोकरी रख दें. हर व्यक्ति को कागज़ का एक टुकड़ा और एक कलम दें. हर व्यक्ति से कहें कि वह ऐसे दो आधारभूत नियम लिखे जो उसके विचार में समूह में होने चाहिए और फिर वह कागज़ टोकरी में रख दे. टोकरी में आए सभी विचारों को पढ़कर सुनाते जाएँ और एक फ्लिप चार्ट पर लिखते जाएँ.

यदि इनमें से कोई भी सिद्धांत गायब हो तो उसे जोड़ दें:

- ध्यान से सुनें - जब कोई व्यक्ति बोल रहा हो तो उसे सम्मान दें.
- अपने अनुभव से बोलें. सामान्यीकरण न करें ('वे', 'हम' और 'आप' की जगह 'मैं' बोलें).
- सम्मानपूर्वक प्रश्न पूछकर एक-दूसरे को चुनौती दें परन्तु व्यक्तिगत हमले से बचें - विचारों पर केन्द्रित रहें.

पूछें कि क्या आधारभूत नियमों के बारे में सब एकमत हैं.

5. वैकल्पिक अतिरिक्त अभ्यास: बताईये आप क्या सोच रहे हैं 15 मिनट

सामूहिक अभ्यास

अगर आपके समूह के सदस्यों को एक-दूसरे से परिचित होने के लिए अधिक समय चाहिए तो आप सत्र की अवधि में 15 मिनट जोड़ कर उसमें यह वैकल्पिक अभ्यास शामिल कर सकते हैं.

उद्देश्य
एक-दूसरे से जुड़ने में प्रतिभागियों की मदद करता है और यह दर्शाता है कि हम सब में बहुत से समानताएं हैं.

अभ्यास का संचालन कैसे करें

- समूह को 4-6 प्रतिभागियों के समूहों में विभाजित कर दें.
- हर एक को 10 छोटे सिक्के/पत्थर/कागज़ के टुकड़े दें.
- गोले के चारों ओर घूमते हुए, पहले व्यक्ति को अपनी पसंद का कोई काम बताना चाहिए (जैसे, पढ़ना). उसी काम को पसंद करने वाले बाकी हर व्यक्ति को गोले के बीच में एक सिक्का रख देना चाहिए.
- फिर दूसरा व्यक्ति अपनी पसंद बताता है और फिर वे सब जो वही करना पसंद करते हैं, बीच में एक और सिक्का रख देते हैं.
- इसे तब तक करें जब तक किसी एक व्यक्ति के सिक्के खत्म न हो जाएँ.

भाग 2: मानव अधिकारों का परिचय

1. पूर्ण अभ्यास: जीवन का सूप 35 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण

हमारी (और सभी इंसानों की) ज़रूरतों को जानने में सहभागियों की मदद के लिए इस अभ्यास में सूप के एक पात्र में उसकी सामग्री के चित्र का उपयोग किया गया है. सहभागी पहले से तैयार कार्ड्स और अपने खुद के विचारों का उपयोग करते हुए वह सामग्री चुनेंगे जो उनके जीवन को गरिमापूर्ण बनाने के लिए 'सूप' में होनी चाहिए.

उद्देश्य

इस अभ्यास के बाद 'मानव अधिकार गैलरी' अभ्यास करवाया जायेगा, जो इस अभ्यास में चिन्हित आवश्यकताओं को मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा में उल्लखित अधिकारों से जोड़ता है. ये दोनों अभ्यास युग्म हैं और इन्हें एक साथ संचालित किया जाना चाहिए. एक साथ मिलकर ये अभ्यास प्रतिभागियों की यह पता लगाने में मदद करते हैं कि मानव अधिकार 'विदेशी' या 'उनके मतलब के न होने' की बजाय उनके दैनिक जीवन से जुड़े हुए हैं और उन्हीं आवश्यकताओं को प्रतिबिंबित करते हैं जिन्हें उन्होंने स्वयं चिन्हित किया है.

संसाधन और पूर्व तैयारी

आपको ज़रूरत होगी:

- सूप बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाना वाला पारंपरिक पात्र या एक बड़ी डेगची जिसके एक ओर 'जीवन का सूप' लेबल लगा हो.
- 'मानवीय ज़रूरतें कार्ड', प्रिंट करके काटे हुए. यदि आवश्यक हो तो, कार्ड्स को संपादित करके अंग्रेज़ी पाठ्य के स्थान पर सहभागियों की भाषा वाला अनुवाद रख दें.
- कुछ कलम.

सुझाव! याद रखें कि पाठ्यक्रम सामग्री इस लिंक पर कई भाषाओं में उपलब्ध है.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 4 मिनट

सूप के पात्र को कमरे के बीच में रखें और 'मानवीय ज़रूरतें कार्ड' को पात्र के चारों ओर कुछ कलम के साथ फैला दें. सभी से कहें कि वे कार्ड्स के चारों ओर एक गोले में खड़े हो जाएँ.

निम्न बातें समझाएं:

- जीवन एक तरह से सूप के कटोरे के समान होता है जिसमें कई चीज़ें मिली रहती हैं - और सूप की तरह, जीवन को भी अच्छा स्वाद देने के लिए कई चीज़ों की ज़रुरत होती है.
- जीवन में कुछ सामग्री, जैसे (सांस्कृतिक दृष्टि से प्रासंगिक किसी लक्ज़री आइटम का नाम लें) जीवन का स्वाद और बढ़ा देती है. पर ऐसी अन्य सामग्री भी हैं जिनकी हमें सच में ज़रूरत होती है, जैसे घर, भोजन और स्वास्थ्य देखभाल. यदि ये सामग्री मौजूद न हुई, तो जीवन खराब हो जाता है और हम शारीरिक, मानसिक, सामाजिक या आध्यात्मिक रूप से कष्ट भोगते हैं. हमारी गरिमा खो जाती है.
- इस अभ्यास में हम इस बारे में सोचने जा रहे हैं कि हमारे जीवन की आवश्यक सामग्री क्या है. हम जीवन का - विशेष रूप से एक गरिमापूर्ण जीवन का - सूप पकाने जा रहे हैं!
- सूप पात्र के चारों ओर फ़र्श पर मौजूद हर कार्ड कोई ऐसी चीज़ दिखाता है जो गरिमापूर्ण जीवन के लिए महत्वपूर्ण हो सकती है. कुछ खाली कार्ड्स भी हैं ताकि हम, गरिमापूर्ण जीवन के लिए जो कुछ ज़रूरी है उसके बारे में अपने खुद के विचार लिख सकें या चित्रित कर सकें.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 30 मिनट

- समूह से कहें कि उनके पास कार्डों को देखने और यह तय करने कि उनमें से कौन-से उनके लिए सबसे ज़रूरी हैं, 2 मिनट हैं.
- फिर घेरे में घूमते हुए, हर व्यक्ति से कहें कि वो एक ऐसा कार्ड उठाये जो ऐसी किसी चीज़ का प्रतिनिधित्व करता हो जो उनकी समझ से गरिमापूर्ण जीवन के लिए आवश्यक है और इस बारे में (केवल) एक वाक्य कहे कि वह क्यों ज़रूरी है और फिर उस कार्ड को पात्र में डाल दे.

सुझाव! समय के मामले में सख्त रहे - आपको समापन चर्चा के लिए समय बचाना है!

- गोले के चारों ओर तब तक घूमते रहें जब तक लोगों को यह न लगने लगे कि अब ऐसा कोई कार्ड बाकी नहीं जो उनके लिए महत्वपूर्ण है. वे कोई खाली कार्ड भी उठा सकते हैं, यह बता सकते हैं कि वह किस चीज़ को दिखाता है और उसे पात्र में डाल सकते हैं. इस समय लोगों को एक-दूसरे के चुनावों पर टिप्पणी नहीं करनी चाहिए.
- जब लोग अपने-अपने हिसाब से सभी कार्ड पात्र में डाल चुकें तब समूह को कहिये कि अब हमने हमारा 'जीवन का सूप' पका लिया है. उनसे इन प्रश्नों पर चर्चा करने को कहें:
  - क्या जिन चीज़ों को हमने सूप में मिलाया है उनमें से कुछ गरिमापूर्ण जीवन के लिए आवश्यक नहीं हैं?
  - क्या हमने कुछ चीज़ें (कार्ड) फर्श पर ही छोड़ दी हैं. क्यों?
  - अगर 'आवश्यक चीज़ें' हमारी ज़िन्दगी में न हों तो इसका हम पर क्या प्रभाव पड़ता है? अपने विचारों को साझा करें.
  - क्या आपको लगता है कि अगर यही अभ्यास दुनिया के किसी दूसरे देश में किया गया होता तो उनकी आवश्यकताएं हमसे बहुत अलग होती हैं या फिर कुछ मानवीय ज़रूरतें सार्वभौम होतीं हैं - इतनी मूलभूत कि उनकी ज़रुरत सभी को होती है?

अभ्यास का समापन कैसे करें 1 मिनट

चर्चा का समापन यह कहते हुए करें कि पूरी दुनिया के सभी मनुष्यों में बहुत सारी समानताएं होतीं हैं - वह इसलिए क्योंकि हम सब मनुष्य हैं और हमारी आवश्यकताएं एक सी होतीं हैं.

2. चलते-चलते बातचीत अभ्यास: मानव अधिकार गैलरी 25 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण

प्रतिभागी कमरे में चहलकदमी करते हुए पिछले अभ्यास के "मानवीय ज़रूरतें कार्ड" को उन मानव अधिकार पोस्टरों से मिलाते हैं, जिनमें मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा में उल्लखित मानव अधिकार लिखे हुए हैं.

उद्देश्य

पिछले और इस अभ्यास का उद्देश्य यह है कि प्रतिभागी यह समझ सकें कि मानव अधिकार कैसे उनके रोज़मर्रा के जीवन से जुड़े हुए हैं और उन ज़रूरतों को प्रतिबिंबित करते हैं जो उन्होंने स्वयं चिन्हित की हैं - वे 'विदेशी' या 'दूर की कौड़ी' नहीं हैं.

संसाधन और पूर्व तैयारी

- 30 'मानव अधिकार गैलरी पोस्टर्स' प्रिंट करें. पोस्टर्स को कमरे की दीवारों पर चिपका दें. यदि आवश्यक हो तो, पोस्टर्स को पहले संपादित करके अंग्रेज़ी पाठ्य के स्थान पर सहभागियों की भाषा वाला अनुवाद रख दें.
- पोस्टर्स को पढ़ें और सोचें कि क्या वर्णित अधिकारों में से किसी अधिकार का आपकी परिस्थितियों में उल्लंघन होता है. इसके बारे में पहले से सोच लेने से आपको बातचीत की अगुआई में मदद मिलेगी.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 1 मिनट

पिछले अभ्यास में प्रयुक्त "मानवीय ज़रूरतें कार्ड" प्रतिभागियों को दे दें.

प्रतिभागियों से पूछें कि क्या उन्होंने मानव अधिकारों के बारे में सुना है. प्रतिभागियों को बताएं कि दीवार पर लगे हुए पोस्टर उन मानव अधिकारों का परिचय देते हैं जो दुनिया की लगभग सभी सरकारों द्वारा हस्ताक्षरित मानव अधिकार समझौतों के अनुसार धरती के हर पुरुष, महिला और बच्चे को प्राप्त हैं.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 23 मिनट

- **गैलरी वॉक** (15 मिनट)
  कमरे में एक 'गैलरी वॉक' पर निकलें और हर पोस्टर के पास जाएँ. जब आप किसी पोस्टर के पास पहुँचें तो पोस्टर पर लिखा पाठ्य पढ़कर सुनाएँ. पूछें कि क्या किसी के पास ऐसा 'मानवीय ज़रूरतें कार्ड' है जो उस मानव अधिकार से संबंधित है और जो भी हाँ में उत्तर दे उससे पूछें कि वह ज़रूरत क्या है. (मेल खाने वाले पोस्टर्स और कार्ड्स पर एक जैसा आइकन है, इसलिए यह काम आसान होना चाहिए!). इसके बाद बिना किसी चर्चा के तुरंत अगले पोस्टर की ओर बढ़ जाएं - आपको हर मिनट दो पोस्टरों को मैच करना है!

    अगर किसी विशेष पोस्टर से जुड़े कार्ड के बारे में कोई भी कुछ नहीं बोलता तो परेशान न हों. आगे बढ़ते जाएं और जब आप पोस्टरों के अंत में पहुँच जाएं तो जिन कार्डों के बारे में किसी ने कुछ नहीं कहा है, उन्हें सम्बंधित पोस्टरों से मैच कर लें कार्डों और पोस्टरों पर बने चिन्ह आपकी मदद करेंगे.

- **चर्चा हेतु प्रश्न** (8 मिनट)
  जब आप सभी पोस्टर पढ़ चुके हों और उन्हें आवश्यकताओं वाले कार्डों से मैच कर चुके हों तब इन प्रश्नों पर चर्चा करें:
  - क्या ये अधिकार, गरिमापूर्ण जीवन के लिए आवश्यक चीज़ों को प्रतिबिंबित करते हैं- दूसरे शब्दों में, क्या ये अधिकार हमारे जीवन के लिए प्रासंगिक हैं?
  - हमारे देश/समुदाय में इनमें से किन अधिकारों का सम्मान होता है और किनका नहीं? यदि समूह को यह काम मुश्किल लगे, तो अपनी जानकारी से ऐसे कुछ मानव अधिकार बताएँ जो कानून में या व्यवहार में अस्वीकार किए जाते हैं.

सुझाव! अगर आप सत्र का समय लम्बा कर सकते हैं तो इस चर्चा के लिए अधिक समय आवंटित किया जा सकता है.

अभ्यास का समापन कैसे करें 1 मिनट

चर्चा का समापन यह कहते हुए करें कि हमने जो अभ्यास अब तक किये हैं उनसे हमें यह समझने में हमें मदद मिली है कि हमारी आवश्यकताएं क्या हैं, मानव अधिकार क्या होते हैं और हमारी आवश्यकताओं और मानव अधिकारों में क्या संबंध है. शायद हम इन अभ्यासों में निहित सन्देश के सार के रूप में यह कह सकते हैं कि मानव अधिकारों का मानवीय ज़रूरतों और जिस तरह के समाज में हम रहना चाहते है, उससे निकट का संबंध होता है. अब हम प्रस्तुतिकरण के माध्यम से मानव अधिकारों के बारे में कुछ और जानेंगे.

सभी से कहें कि कार्डों को सूप पात्र में फिर से डाल दें. आपको अगले सत्र में पात्र और कार्डों की ज़रुरत पड़ेगी!

3. प्रस्तुति: मानवीय ज़रूरतें - मानव अधिकार - मानवीय जिम्मेदारियाँ 15 मिनट

प्रस्तुति

विवरण व उद्देश्य

यह प्रस्तुति मानवीय ज़रूरतें, मानव अधिकार और मानवीय जिम्मेदारियों के चश्मे से मानव अधिकार की बुनियादी बातों का परिचय सहभागियों से कराती है. यह मुख्य अंतरराष्ट्रीय समझौतों, राज्यों की ज़िम्मेदारियों और समाज के लोगों के नैतिक कर्तव्यों का परिचय देती है. यह बाकी के पाठ्यक्रम के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है.

संसाधन

- प्रस्तुति का स्क्रिप्ट इस गाइड के पेज 41 पर है.
- यह स्क्रिप्ट सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 7-28 से मैच करता है और इन स्लाइड्स हेतु वक्ता की टिप्पणियों में शामिल है.
- इस स्क्रिप्ट का संपादन-योग्य संस्करण, सत्र के लिए दिए गए संसाधनों में उपलब्ध है.

पूर्व तैयारी

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप तैयारी करें.

स्क्रिप्ट और पावरपॉइंट स्लाइडों को पढ़ें और उन्हें अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए उनमें बदलाव करें (या स्लाइडों के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की फ्लिप चार्ट शीट बनाएं). पेज 21-28 पर मुश्किल सवाल अनुभाग पढ़ें और सोचें कि सहभागियों से आने वाली अपेक्षित आपत्तियों के आधार पर क्या आपको कोई अतिरिक्त बिंदु शामिल करने की ज़रूरत है. स्लाइडों/फ्लिप चार्ट शीटों के साथ प्रस्तुतीकरण देने का अभ्यास करें.

सुझाव! लोगों से कहें कि वे आपका प्रस्तुतिकरण पूर्ण होने तक प्रश्न/टिप्पणियां न करें.

4. समापन चर्चा 15 मिनट

पूर्ण चर्चा

उद्देश्य

प्रतिभागियों ने प्रस्तुतिकरण में जो बातें सुनीं, यह चर्चा उन पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देती है एवं इसके साथ ही सत्र का समापन होता है.

चर्चा का संचालन कैसे करें

पिछले प्रस्तुतिकरण पर प्रतिभागियों की टिप्पणियां एवं प्रश्न आमंत्रित करें और फिर निम्न प्रश्न करें:

- मानव अधिकार की शुरुआत समानता, गरिमा और एक-दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारी के सिद्धांतों से होती है. हमारी संस्कृतियों, परंपराओं और भाषाओं में मौजूद कौनसी अवधारणाओं, कहानियों या मुहावरों-कहावतों में इन विचारों की झलक मिलती है?
- क्या हम हमारे समुदायों में मानव अधिकार को एक वास्तविकता बनते देखना चाहते हैं? क्या हम, ज़ालिहा और मैग्डेलेना की तरह, उन्हें वास्तविकता बनाने में योगदान दे सकते हैं?

सुझाव! मुश्किल सवाल के उत्तर देने के लिए मदद पेज 21-28 पर है.

चर्चा का समापन यह कहकर करें कि अगला सत्र अंतःकरण, धर्म या आस्था और विचारों की आजादी के मानव अधिकार पर केन्द्रित होगा. हम पाठ्यक्रम की पूरी अवधि में इस मुद्दे पर विचार करना जारी रखेंगे कि क्या हम अपने समुदाय में कोई बदलाव ला सकते हैं और यदि हां तो कैसे.

सुझाव! मानव अधिकार कार्डों को न फेंकें - अगले सत्र में आपको इनकी आवश्यकता पड़ेगी!

स्रोत

बताईये आप क्या सोच रहे हैं: लायंस क्लब इंटरनेशनल की फैसिलिटेटिंग ग्रुप इंट्रोडक्शन्स, 'मी टू' एक्सरसाइज से अनुकूलित https://temp.lionsclubs.org/EN/pdfs/icebreakers.pdf

प्रस्तुति स्क्रिप्ट

मानवीय ज़रूरतें - मानव अधिकार - मानवीय जिम्मेदारियाँ

सत्र 1 की प्रस्तुति के लिए यह स्क्रिप्ट सत्र पावरपॉइंट की स्लाइड 7-28 द्वारा सचित्र है.

परिचय: मानव अधिकार

हम कोई भी हों, हमारा धर्म, जाति, लिंग या आयु कुछ भी हो और हम कहीं भी रहते हों - हमारी कुछ साझी आवश्यकताएं होती हैं. कोई भी व्यक्ति बिना किसी वजह के गिरफ्तार नहीं होना चाहता, उत्पीड़न या भेदभाव का शिकार नहीं होना चाहता और कोई नहीं चाहता कि उसके बच्चे भुखमरी का शिकार हों. हम सब ऐसे समाज में रहना चाहते हैं जहां हम इन सब समस्याओं से सुरक्षित रहें.

मनुष्यों की आधारभूत व सार्वभौमिक ज़रूरतें एक जैसी हैं. यदि ये ज़रूरतें पूरी न हों, तो हमारी शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक खुशहाली को कष्ट उठाना पड़ता है.

मानव अधिकार

विश्व की सरकारों ने इस मान्यता को स्वीकार किया है कि प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक व्यक्ति की ये आवश्यकताएं हैं और यह सरकारों की जिम्मेदारी है - वास्तव में कर्तव्य है - कि वे इन आवश्यकताओं का सम्मान करें और इनकी उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए अपना सर्वोत्तम प्रयास करें.

इसे एक वास्तविकता बनाने के लिए, दुनिया की सरकारों ने सार्वभौमिक मानव अधिकार स्वीकार किए - ऐसे अधिकार जो प्रत्येक व्यक्ति के हैं, और यह भी स्वीकार किया कि इनका सम्मान और संरक्षण करना और इन्हें बढ़ावा देना प्रत्येक सरकार का कर्तव्य है.

तीन सबसे महत्वपूर्ण मानव अधिकार समझौते हैं:

- मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा, जिस पर हमने पोस्टरों के ज़रिए नज़र डाली थी,

तथा दो और विस्तृत करार जो हमारे अधिकारों की और गहराई से व्याख्या करते हैं:

- नागरिक व राजनैतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय प्रसंविदा (International Covenant on Civil and Political Rights, ICCPR) और
- आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय पसंविदा (International Covenant on Economic, Social and Cultural Rights, ICESCR)

ये दोनों प्रसंविदाएं इन्हें स्वीकार करने वाले देशों पर वैधानिक दृष्टि से बंधनकारी हैं.

अधिकांश देशों - वे सारे देश जो इन मानचित्रों में हरे रंग में हैं - ने इन करारों के प्रति वचनबद्धता ज़ाहिर की है! इन सभी देशों की सरकारों ने यह स्वीकार किया है कि अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत उनका ये तीन चीज़ें करने का कानूनी कर्तव्य है:

- उनके द्वारा बनाए जाने वाले कानून और उनके अधिकारियों द्वारा किए जाने वाले कार्य मानव अधिकारों का सम्मान करें. उदाहरणार्थ, कोई कानून भेदभावपूर्ण नहीं होना चाहिए और किसी को भी यातना नहीं दी जानी चाहिए.
- मानव अधिकार का संरक्षण करना, यह सुनिश्चित करना कि राज्य या किसी अन्य के द्वारा अधिकारों का उल्लंघन होने पर प्रत्येक व्यक्ति न्याय की मांग कर सके.
- और मानव अधिकार को बढ़ावा देना - अपनी सर्वोत्तम क्षमता से यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना कि सभी को उनके अधिकार उपलब्ध हों. उदाहरणार्थ, यह सुनिश्चित करने का सर्वोत्तम प्रयास करना कि स्वास्थ्य सुविधाओं और शिक्षा तक सभी की पहुंच हो. यह सच है कि सभी सरकारों के पास एक से संसाधन नहीं होते इसलिए इन सामाजिक एवं आर्थिक अधिकारों का वास्तविकता बनना एक धीमी प्रक्रिया है.

सरकारों ने इस बात पर सहमति दी है कि हर मनुष्य के पास ये अधिकार समान रूप से हैं. सरकारों ने यह स्वीकार किया है कि प्रत्येक मनुष्य को ये सभी अधिकार समान रूप से प्राप्त हैं. मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा का पहला अनुच्छेद है "सभी मनुष्य जन्म से ही स्वतंत्र होते हैं और गरिमा व अधिकारों की दृष्टि से समान हैं."

यह दुःखद है कि कई सरकारें अपनी इन प्रतिबद्धताओं पर कायम नहीं रहती - बहुत से लोगों के मानवाधिकारों का उल्लंघन होता है. महिलाओं, लड़कियों, अल्पसंख्यकों, विकलांगों एवं प्रवासियों के अधिकारों के उल्लंघन का खतरा अधिक होता है. लिंग आधारित हिंसा एक आम उदाहरण है जो दुनिया के हर देश में होती है.

मानव अधिकारों की समालोचना

सरकारों द्वारा स्वयं मानवाधिकारों का उल्लंघन करने या लोगों के अधिकारों का उल्लंघन होने से रोकने में विफल रहने पर सरकारों को दंडित करने के लिए कोई वैश्विक पुलिस नहीं है. चूंकि कोई वैश्विक पुलिस नहीं है, जो सरकारों को मानव अधिकारों का पालन करने के लिए बाध्य कर सके, तो क्या मानव अधिकार दंतहीन हैं, बदलाव का प्रभावी औजार होने की बजाए मात्र कागज पर लिखे शब्द?

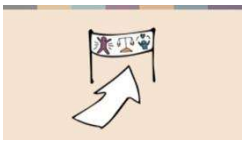

इस बात में थोड़ी सच्चाई तो है कि कुछ सरकारों को प्रभावित करना बहुत ही टेढ़ी खीर है. पर बहुत से देशों में मानवाधिकार के उल्लंघनों की अंतरराष्ट्रीय और घरेलू आलोचना से सकारात्मक बदलाव आए हैं. अंतरराष्ट्रीय पुलिस बल के बिना मानव अधिकार को बढ़ावा देने के कई तरीके हैं.

लोग मानव अधिकार की आलोचना कुछ अन्य कारणों से करते हैं. शायद आपके मन में भी ये विचार आए होंगे?

- संभवतः मानव अधिकार आपको तकनीकी लगते हों - जो वकीलों एवं राजनीतिज्ञों का विषय हैं ना कि ऐसा विषय जिससे आप संबद्ध हों.
- या संभवतः आप सोचते हों कि मानव अधिकार का आपकी रोजमर्रा की जिंदगी से कोई संबंध नहीं है - यह ऐसा मसला है जिसके बारे में सोचना केवल राजधानियों के कुलीनों के बस की बात है.
- या शायद, वैश्विक राजनीति के खेल में मानव अधिकार एक हथियार जैसे मालूम देते हैं. एक ऐसी चीज़ जिसके उपयोग में सरकारें पाखंड करती हैं, एक ओर खुद मानव अधिकार का उल्लंघन करती हैं और दूसरी ओर अपने दुश्मनों की ऐसा करने पर आलोचना करती हैं.

देखिए, मानव अधिकार का सरोकार कानून से है, कानून राजनेता बनाते हैं और वकील न्यायालयों के ज़रिए मानव अधिकार के लिए लड़ सकते हैं. और हाँ, इस शब्द का उपयोग और दुरुपयोग कभी-कभी राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए होता है. लेकिन मानव अधिकार इसके अलावा भी बहुत कुछ हैं!

मानव अधिकार और हम

जैसा हम देख चुके हैं, मानव अधिकार असल में हमारे दैनिक जीवन की ज़रूरतों से सरोकार रखते हैं. वे इस बात से सरोकार रखते हैं कि हमारे स्कूलों, खेतों, कार्यस्थलों, घरों और गली-मोहल्लों में क्या-कुछ होता है. और इस बात से कि हमें एक-दूसरे से कैसा व्यवहार करना चाहिए और हमसे कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए. और इस बात से कि उन लोगों के दुर्व्यवहार से हमारी रक्षा करना है जो हमसे अधिक शक्तिशाली हैं - जमींदार, नियोक्ता, अध्यापक या परिवार के सदस्य भी. और बेशक, इसमें पुलिस, न्यायालयों, सेना और सरकार द्वारा किया जाने वाला व्यवहार भी शामिल है.

कुल मिलाकर, हम यह कह सकते हैं कि मानव अधिकार का संबंध इससे है कि हम किस प्रकार के समाज में रहना चाहते हैं और किस तरह के समाज के निर्माण की दिशा में कार्य करना चाहते हैं.

यदि हमें हमारे समुदायों में मानव अधिकार को एक सच्चाई बनाना है, तो हम सभी को अपने-अपने हिस्से की भूमिका निभानी होगी. बहुत से मानवाधिकार के उल्लंघन इसलिए होते हैं क्योंकि आम लोग एक-दूसरे के अधिकारों का सम्मान नहीं करते हैं - जैसे तब जब हम कुछ लोगों से इस तरह व्यवहार करते हैं मानो वे हमारे समान नहीं हैं. सरकारें, व्यवसाय और व्यक्ति मानवाधिकार का उल्लंघन करते रहते हैं क्योंकि लोग एक-दूसरे के लिए खड़े नहीं होते और चीजों को बदलने की कोशिश नहीं करते. क्योंकि हम अक्सर चुप रहते हैं.

हम सरकार नहीं हैं - हमने अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार समझौतों पर हस्ताक्षर नहीं किए हैं. मानव अधिकार का पालन हो यह सुनिश्चित करना हमारा वैधानिक कर्तव्य नहीं हैं. किंतु हम मनुष्य हैं और हमारा विवेक और अंतःकरण है, हमारा एक दूसरे के प्रति एक नैतिक कर्तव्य है, जैसा कि मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा में कहा गया है:

> "सभी व्यक्ति जन्म से ही गरिमा व अधिकारों की दृष्टि से समान हैं. जन्म के समय सभी मनुष्य गरिमा और अधिकारों की दृष्टि से बराबर होते हैं. वे विवेक एवं अंतःकरण से संपन्न हैं और उन्हें एक दूसरे के साथ भाईचारे की भावना से व्यवहार करना चाहिए."
>
> "प्रत्येक व्यक्ति और समाज का प्रत्येक अंग [...] शिक्षा देकर और प्राप्त कर इन अधिकारों और स्वतंत्रताओं को बढ़ावा देने का प्रयास करेगा."

जब भी कभी हमारे पास दूसरे लोगों के जीवन में कुछ अच्छा या बुरा करने की शक्ति होती है, तो हमारा यह नैतिक कर्तव्य होता है कि हम मानव अधिकार को कायम रखें, उनका समर्थन करें. हम सब कुछ नहीं कर सकते हैं - कुछ परिस्थितियों में तो यह सूझना ही कठिन होता है कि हम क्या कर सकते हैं - पर जब हम अन्याय होता देखें, और हम मदद के लिए कुछ कर 'सकते' हों, तो हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम कोशिश करें.

कुछ करना उतना ही आसान हो सकता है जितना एक अच्छा पड़ोसी होना.

चेंजमेकर कहानियाँ

शफ़ाक हसन दक्षिण लंदन में रहने वाली एक ब्रिटिश मुस्लिम महिला हैं. हाल के वर्षों में UK में घृणा अपराध काफ़ी बढ़े हैं. मुस्लिमों को, और विशेष रूप से हिजाब पहनने वाली मुस्लिम महिलाओं (जैसे शफ़ाक) को अक्सर निशाना बनाया जाता है - ऑनलाइन भी और सड़कों पर भी. इस संदर्भ में, अलग-अलग धार्मिक परंपराओं वाले लोगों के बीच मित्रता और उदारता के रोज़मर्रा के कृत्य बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकते हैं.

शफाक का कहना है कि मानवता के प्रति उसकी आस्था तब पुनर्स्थापित हो गई जब उसके गैर-मुस्लिम पड़ोसी ने अप्रत्याशित रूप से उसे और उसके 14 साल के बेटे अयान को ईद मनाने के लिए तोहफे दिए.

शफाक ने इस भेंट की तस्वीर ट्विटर पर पोस्ट की और लिखा:

"हमारे गैर-मुस्लिम पड़ोसी ने हमें एकदम आश्चर्यचकित कर दिया जब उन्होंने हमें अल्जीरिया के खजूर और मेरे 14 साल के बेटे, जिसने सारे महीने रोजे रखे थे, के लिए जाए नमाज दी. ये पिछले 20 सालों से हमारे पड़ोसी हैं किंतु उन्होंने ईद पर ये उपहार देकर हमें एकदम हैरान कर दिया."

"मुझे नहीं पता था कि उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया कि अयान रोज़े से था. मेरे बेटे को सच में बहुत ही अच्छा महसूस हुआ. वे एक मिलनसार पड़ोसी हैं और उन्हें मेरी माँ के हाथों की बिरयानी बहुत ही अच्छी लगती है, इसलिए हम हमेशा ही उन्हें बिरयानी का डब्बा भेजते रहते हैं. हमारा समुदाय बहुत विविध है और यह बड़ी ही सौहार्दपूर्ण बात है कि हमारे पड़ोसी ने अयान और उसके धार्मिक आस्थाओं का न केवल ध्यान रखा बल्कि उन्हें बढ़ावा भी दिया."

ज़ालिहा और मैग्डालेना भी एक बहुत ही अलग संदर्भ में बदलाव ला रही हैं. ज़ालिहा एक धर्मनिष्ठ मुस्लिम हैं और दादी हैं; वे ज़ंज़ीबार के पेम्बा द्वीप की निवासी हैं जहाँ वे स्थानीय कुरान स्कूल में पढ़ाती हैं.

ज़ालिहा कहती हैं,

"मैं हमारे समुदायों में फैली अशांति को लेकर चिंतित हूँ. हमारे युवाओं को हमारे राजनीतिक नेताओं पर कोई भरोसा नहीं है और युवाओं के लिए अवसर मौजूद नहीं हैं."

वे आगे कहती हैं,

"पर्यटन उद्योग में काम करने के इरादे से यहाँ आ बसे मुख्य भूमि के कई निवासी ईसाई हैं. मेरी जान-पहचान के कई मुस्लिम उन ईसाइयों पर उनकी नौकरियाँ छीनने का आरोप लगाते हैं. मैंने वर्षों तक राजनीतिक अशांति और धार्मिक तनाव के बीच जीवन जिया है. मैंने चर्चों को जलते देखा है, नफ़रती पर्चे बँटते देखे हैं और चर्च जाते ईसाइयों का उत्पीड़न होते देखा है. मैं हमारे युवाओं को और कट्टरपंथी बनते देख रही हूँ और इससे मुझे चिंता होती है. इसीलिए मैं महिला अंतरधार्मिक समिति से जुड़ गई हूँ."

"मैं चाहती हूं कि हमारे द्वीप में धार्मिक हिंसा न हो. कुरान विद्यालय में मैं बच्चों को सिखाती हूं कि सहनशीलता और प्रेम हमारे धर्म के मूलभूत भाग हैं. भविष्य हमारे बच्चों के हाथ में है और उन्हें सही राह दिखाना हमारी जिम्मेदारी है."

मागडेलेना, जो मुख्य भूमि से ज़ंज़ीबार में रहने आई एक ईसाई हैं, भी अंतर्धार्मिक कार्यकलापों में भाग लेती हैं. उन्हें अपनी वेषभूषा और अपने धर्म के कारण भेदभाव का सामना करना पड़ता है, लेकिन वे मुसलमानों और ईसाईयों के बीच की खाई पाटने के लिए दृढ़संकल्पित हैं. वे उनगोया क्षेत्र की महिला परिषद में शामिल हुई हैं जो समुदायों के बीच जाकर अन्तर्धार्मिक चुनौतियों और महिला अधिकारों के बारे में बात करती है.

वे समझाती हैं, "मैं इस्लाम के बारे में और जानने और मुस्लिमों का जीने का तरीका समझने के लिए समिति से जुड़ी हूँ." "हम सभी महिलाएँ हैं और इस कारण हम सभी भेदभाव का सामना करती हैं - हमें साथ खड़ा होना होगा और एक-दूसरे का सहारा बनना होगा."

शफाक के पड़ोसी और ज़ालिहा और मेगडेलेना जैसे अनगिनत लोग हैं. हमारे जैसे साधारण लोग, जो अपने छोटे-छोटे कार्यों के माध्यम से अपने समुदायों में मानव अधिकार को एक वास्तविकता बनाने का प्रयास कर रहे हैं - स्थानीय चेंजमेकर्स!

हम जो भी हों, हम मानव अधिकार को एक वास्तविकता बनाने के लिए कुछ न कुछ तो कर ही सकते हैं.

स्रोत

फ़ेथ मैटर्स (Faith Matters) www.faith-matters.org

https://www.faith-matters.org/family-surprised-by-presents-from-non-muslim-neighbour-to-celebrate-eid/

ज़ंज़ीबार इंटर-फ़ेथ सेंटर (Zanzibar Inter-faith Centre, ZANZIC)

https://www.facebook.com/ZanzicMeansPeace/

https://english.danmission.dk/project/zanzibar-peacebuilding-through-interfaith-dialogue/

सत्र 2

विचारों, अंतः करण, धर्म या आस्था की आजादी (FORB) का परिचय

सत्र अवलोकन

FORB (FREEDOM OF THOUGHT, CONSCIENCE, RELIGION OR BELIEF) = विचारों, अंतः करण, धर्म या आस्था की आजादी

सुविधा के लिए, विचारों की आजादी, अंतःकरण धर्म और आस्था को प्रायः अपेक्षाकृत छोटे नाम 'धर्म या आस्था की आजादी' या FORB के नाम से पुकारा जाता है. हम इस गाइड में इस नाम और संक्षिप्त रूप का बार-बार ज़िक्र करेंगे - लेकिन यह मत भूलिए कि विचार और अंतःकरण भी सुरक्षित रखे जाते हैं!

विचारों, अंतः करण, धर्म या आस्था की आजादी का मानव अधिकार लगभग हर जगह विवादास्पद होता है. अधिकतर लोग अपनी आस्थाओं और इस बारे में अपने विचार कि दूसरों को कैसे सोचना और व्यवहार करना चाहिए - इन्हें सामान्य, सही और सच्चाई का रूप मानते हैं. जब तक हमारे व्यक्तिगत और सकारात्मक संबंध उन लोगों से नहीं बनाते हैं, जो हमसे भिन्न आस्थाएं और विचार रखते हैं, तब तक यह बहुत आसान हो जाता है कि हम उन्हें किसी न किसी रूप में हीन समझें, या फिर उन्हें अपनी सांस्कृतिक और नैतिक मान्यताओं, यहाँ तक कि राष्ट्रीय एकता और सुरक्षा के लिए भी एक खतरा मानने लगें. ऐसा अत्यंत धार्मिक तथा अत्यंत धर्मनिरपेक्ष समाज दोनों में हो सकता है.

मानव संस्कृति के किसी भी अन्य पहलू की तरह, धर्म और आस्था भी अपने भीतर अच्छाई और चुनौतियां, दोनों को समेटे हुए हैं. कभी-कभी आस्थाएं, परंपराएं, और उनसे जुड़े नेता एवं संस्थाएं समाज में गंभीर समस्याओं का कारण बन जाते हैं. लेकिन अक्सर धर्म और आस्था इस रूप में प्रकट होते हैं कि वे न केवल मानने वालों को सशक्त बनाते हैं, बल्कि व्यापक समुदाय के लिए भी कल्याणकारी सिद्ध होते हैं.

तो फिर, विचार, अंतःकरण, धर्म और आस्था के बारे में अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार क्या कहते हैं? हमारे पास कौन-कौन से अधिकार होते हैं, और राज्य कब धर्म या आस्था के अभ्यास को सीमित कर सकता है?

यह सत्र धर्म या आस्था की आजादी (FORB) के अधिकार का परिचय देता है, और यह भी स्पष्ट करता है कि अधिकारी कब, कैसे और किन परिस्थितियों में इस अधिकार को सीमित कर सकते हैं. यह प्रतिभागियों को अधिकार के बारे में जानने और यह विचार करने का अवसर देता है कि यह उनके मूल्यों, दैनिक जीवन और समाज से किस प्रकार संबंधित है.

सीखने के उद्देश्य

यह सत्र अंतःकरण, धर्म, आस्था एवं विचारों की आजादी के मानव अधिकार और उसके महत्व के बारे में प्रतिभागियों का ज्ञान बढ़ाने पर केन्द्रित है.

इस सत्र के अंत तक प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगे:

- FORB के मर्म की व्याख्या करने में: भेदभाव, दबाव या हिंसा का सामना किए बिना धर्म या आस्था को चुनने/बदलने व उनका पालन करने का आपका अधिकार.
- समझाने में कि FORB किस प्रकार उनकी रोजमर्रा की जिंदगी से संबंधित है.
- इस अधिकार की सीमा की बुनियादी व्याख्या करने में: FORB का उपयोग कभी भी अन्य लोगों को हानि पहुंचाने के बहाने के तौर पर नहीं किया जा सकता है.

सत्र की अंतर्वस्तु और समय

आरंभिक अभ्यास: सब कुछ बताएं! प्रतिभागियों को पिछले सत्र में सीखी गई बातों का स्मरण कराएं.	10 मिनट
कहानी एवं चर्चा का अभ्यास: एक समय की बात है कहानी से प्रतिभागियों को यह विचार करने में सहायता मिलती हैं कि FORB से जिन चीज़ों का संरक्षण होता है वे उन्हें महत्वपूर्ण मानते हैं या नहीं.	45 मिनट
प्रस्तुति: धर्म या आस्था की आजादी का परिचय यह इस पाठ्यक्रम की एक मुख्य प्रस्तुति है जिसमें यह बताया गया है कि FORB किन चीजों की रक्षा करता है और कब इन अधिकारों को सीमित किया जा सकता है.	15 मिनट
पूर्ण चर्चा: धर्म या आस्था की आजादी पूर्ववर्ती इनपुट्स की अंतर्वस्तु पर चर्चा.	10 मिनट
चर्चा एवं विचार व्यक्त करने संबंधी अभ्यास: मेरी रोजमर्रा की जिंदगी में FORB प्रतिभागियों को यह समझने में सहायता करता है कि वे अपने रोजमर्रा के जीवन में FORB का उपयोग कैसे करते हैं.	35 मिनट
अंतिम टिप्पणियां और चेंजमेकर कहानियाँ पूरे पाठ्यक्रम में प्रतिभागियों को प्रेरित करने के लिए कहानियों को शामिल किया गया है.	5 मिनट
कुल समय	**2 घंटे**

तैयारी करें

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप सत्र की तैयारी करें. याद रखें - आपको अपने समूह की बेहतर समझ है! आपका स्वागत है कि आप सत्र के किसी भी हिस्से को अपनी समूह की ज़रूरतों के अनुसार अनुकूलित और संशोधित करें.

इस सत्र के लिए संसाधन

पृष्ठ 16 पर सूचीबद्ध प्रत्येक सत्र के लिए मानक संसाधनों के अतिरिक्त, इस सत्र को संचालित करने के लिए आपको निम्नलिखित संसाधनों की आवश्यकता होगी:

- एक सॉफ़्ट बॉल.
- सूप का एक पात्र एवं मानवीय मानवीय ज़रूरतें कार्ड जिनका उपयोग पिछले सत्र में हुआ था.
- हैंडआउट या फ्लिप चार्ट शीट जिन पर 'एक समय की बात है' अभ्यास पर सामूहिक चर्चा के लिए प्रश्न अंकित हों.
- हैंडआउट या फ्लिप चार्ट शीट जिन पर 'मेरी रोजमर्रा की जिंदगी मे FORB' अभ्यास पर सामूहिक चर्चा के लिए प्रश्न अंकित हों.
- यदि आप पावरपॉइंट/फ़िल्म का उपयोग नहीं करना चाहते तो संभवतः आप निम्न सामग्री तैयार करना चाहेंगे:
  - एक बार की बात है: कहानी को दर्शाने वाले पोस्टर प्रिंट करें.
  - पावर्पॉइंट स्लाइड्स के महत्वपूर्ण बिंदु दर्शाने वाली फ्लिप चार्ट शीट्स.
  - मेरी रोजमर्रा की जिंदगी में FORB अभ्यासःसत्र पावरपॉइंट के स्लाइड 47-59 का प्रिंटआउट.

इस सत्र के **सहायक संसाधन** यहाँ हैं.

वैकल्पिक अतिरिक्त - अपना आत्मविश्वास बढ़ाएं!

तैयारी के एक हिस्से के रूप में, क्यों न आप ये लघु फ़िल्में देखें ताकि आप धर्म या आस्था की आजादी के बारे में और अधिक जान सकें? इससे आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा और प्रश्नों का उत्तर देने की आपकी क्षमता भी. इस प्लेलिस्ट में 5-10 मिनट की आठ फ़िल्में हैं. यदि आपके पास सभी फ़िल्मों को देखने का समय न हो तो फ़िल्म क्रमांक 2 (चुनने की आजादी), 3 (अभ्यास करने की आजादी) और थोड़ी लंबी फ़िल्म क्रमांक 8 (अधिकारों की सीमाएं) को प्राथमिकता दें.

फ़िल्में

कक्ष तैयार करना

इस सत्र के लिए यह एक अच्छा विचार होगा कि प्रारंभ में कुर्सियां सामने की ओर मुंह करते हुए अर्धवृत्त में लगाई जाएं और बीच में काफी जगह खाली रखी जाये. समूह को एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से जाने की सुविधा होनी चाहिए. एक बड़ा कमरा, जिसमें मेजें न हों, सबसे बढ़िया होगा!

'एक समय की बात है'

"एक समय की बात है" गतिविधि ने गहन चर्चाओं को जन्म दिया. इसने लोगों की सोच के नए द्वार खोल दिए. उन्होंने खुद अपने समुदायों की गहराई से पड़ताल शुरू की - लिंग से जुड़े सामाजिक नियमों से लेकर इस सवाल तक कि क्या स्थापित परंपराओं को चुनौती देना सही है."
हम्माम हद्दाद, सुविधादाता, जॉर्डन

विस्तृत सत्र योजना

1. आरंभिक अभ्यास: सब कुछ बताएं 10 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण

प्रतिभागी एक-दूसरे की ओर एक गेंद उछालेंगे, और गेंद को आगे फेंकने से पहले पिछले सत्र की कोई ऐसी बात कहेंगे, जो उन्हें याद हो.

उद्देश्य

यह अभ्यास, सत्र को एक मज़ेदार और पारस्परिक शुरुआत देता है. इसका लक्ष्य समूह के सदस्यों को वह सब कुछ याद करने में मदद करना है जो उन्होंने पिछले सत्र में सीखा, महसूस किया और सोचा था, और उन्हें जो याद है उसे एक-दूसरे से साझा करने में मदद करना है. यह समूह के नए सदस्यों को छूटा हुआ भाग कवर करने में भी मदद करता है.

संसाधन

- एक सॉफ़्ट बॉल.
- एक सूप पात्र जिसमें 'मानवीय ज़रूरतें कार्डस'
  (जिनका उपयोग पिछले सत्र में किया गया था) रखे हों.

अभ्यास का परिचय कैसे दें

'मानवीय ज़रूरतें कार्डस' वाले सूप पात्र को गोले के बीचोबीच रखें. सुनिश्चित करें कि धर्म या आस्था की आजादी से संबंधित कार्ड्स ढेर में सबसे ऊपर हों ताकि आप गेम के अंत में उन तक आसानी से पहुँच सकें.

सत्र में सभी का स्वागत करें और समझाएँ कि यह सत्र पिछली बैठक की एक त्वरित समीक्षा से शुरू होगा. समूह के सदस्यों को एक-दूसरे से पर्याप्त दूरी बनाए रखते हुए सूप पात्र के चारों ओर घेरा बनाकर खड़े होने के लिए कहें.

समझाएँ कि वे बिना किसी क्रम विशेष के एक-दूसरे की ओर बॉल फेंकेंगे. बॉल पकड़ने वाला व्यक्ति पिछले सत्र से उसे याद हो ऐसी किसी एक चीज़ के बारे में एक वाक्य कहेगा. वह कोई कहानी ऐसी कोई चीज़ हो सकती है जो उसने सीखी या उसे आया हुआ कोई विचार हो सकता है. साझा करने के बाद, उसे वह बॉल यूँ ही किसी अन्य सहभागी की ओर फेंकनी चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि हर किसी को बोलने का मौका मिले. जो भी व्यक्ति पिछले सत्र में उपस्थित नहीं था, वह बॉल उसकी ओर फेंके जाने पर, ज़ोर से 'सब कुछ बताएं' बोलेगा और फिर बॉल किसी और की ओर फेंकेगा.

अभ्यास का संचालन कैसे करें

पिछले सत्र से आपको याद कोई एक चीज़ कहकर और फिर बॉल किसी सहभागी की ओर फेंककर अभ्यास की शुरुआत खुद करें. सहभागियों के योगदानों के जवाब में हौसला बढ़ाने वाले शब्द कहें, जैसे 'धन्यवाद' और 'शानदार'! अभ्यास तब तक जारी रखें जब तक हर व्यक्ति एक-एक बार बॉल न पकड़ ले.

अभ्यास का समापन कैसे करें

समूह को इतना कुछ याद रखने के लिए बधाई दें और जो भी बिंदु उनसे छूट गए हों उन्हें बहुत ही संक्षेप में कहें. उसके बाद बीचोबीच रखे पात्र तक जाकर धर्म या आस्था की आजादी से संबंधित तीन कार्ड्स निकाल लें. कार्ड्स ऊपर करके थामें और सबको बताएँ कि इस सत्र में हम विचारों की आजादी, अंतःकरण, धर्म और आस्था की आजादी के अधिकार के बारे में जानेंगे.

2. कहानी एवं चर्चा का अभ्यास: एक समय की बात है 45 मिनट

कहानी

विवरण
यह अभ्यास 'बांसुरी और नगाड़े के गीत' नामक कहानी पर आधारित है. इसके चार भाग हैं: कहानी सुनाना - पूर्ण चर्चा - सामूहिक चर्चा - फ़ीडबैक/समापन.

उद्देश्य
इस अभ्यास का उद्देश्य समूह की इस बात पर विचार करने में सहायता करना है कि वे FORB से संरक्षित चीजों को कितना मूल्यवान मानते हैं और क्या/कैसे उनकी परंपराओं और संस्कृति में इन चीजों को महत्व दिया जाता है. यह कहानी धर्म या आस्था की आजादी से संबधित सात महत्वपूर्ण शब्दों की व्याख्या करती है: विचार, विश्वास, संबद्धता, अभ्यास, प्रश्न, बदलाव एवं इंकार.

संसाधन

- कहानी की स्क्रिप्ट (पृष्ठ 56 या यह लिंक देखें).
- सत्र पावरपॉइंट की स्लाइड्स 3-23 जो कहानी का चित्रण करती हैं या उन्हीं चित्रणों वाले पोस्टरों का प्रिंटआउट भी. (यदि आवश्यक हो तो इनके बिना अभ्यास किया जा सकता है.)
- 'एक समय की बात है' समूह कार्य प्रश्नों का हैंडआउट (हर 3-4 प्रतिभागियों पर एक) या पूर्व में तैयार फ्लिप चार्ट शीट, जिस पर समूह कार्य प्रश्न पहले से लिखे हों, प्रतिभागियों को दें.

कहानी, पोस्टर और हैंडआउट यहाँ हैं.

पूर्व तैयारी
कहानी को पढ़ने या अपने शब्दों में सुनाने का अभ्यास करें, ताकि आप रोचक ढंग से कहानी सुना सकें और आपको यह ठीक से पता हो कि कौन-सी पावरपॉइंट स्लाइड या पोस्टर कब दिखाया जाना है.
यदि आप पोस्टरों का उपयोग कर रहे हैं, तो उन्हें पहले से ही किसी दीवार पर क्रम में लगा दें. इससे, सही समय पर सही पोस्टर की ओर इशारा करना आसान हो जाएगा.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 35 मिनट

- **कहानी सुनाना** (15 मिनट)
  बताएं कि आप एक कहानी सुनाने जा रहे हैं, जिस पर सभी के साथ एवं छोटे समूहों में भी चर्चा होगी. कहानी सुनाएँ और पावरपॉइंट स्लाइड्स/पोस्टर्स दिखाएँ. उसे ढेर सारे एहसास के साथ पढ़कर सुनाने की कोशिश करें!

- **संक्षिप्त पूर्ण चर्चा** (5 मिनट)
  लोगों से कहें कि वे इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए हाथ खड़े करें - हर प्रश्न के एक या दो उत्तर ही लें.
  - आपके अनुसार इस कहानी का संदेश या सीख क्या है?
  - क्या विभिन्न पात्रों का कोई व्यवहार आपको सराहनीय लगा?

सुझाव! समय प्रबंधन के संबंध में सजग रहें ताकि छोटे समूहों में की जाने वाली सामूहिक चर्चा के लिए पर्याप्त समय बचा रहे.

(यदि लोगों को नगाड़ों और बाँसुरियों के महत्वपूर्ण होने के विचार पर भरोसा करने में मुश्किल हो तो उन्हें समझाएँ कि ये दोनों चीज़ें गाँव वालों की आस्था पद्धति और धार्मिक प्रथाओं को दर्शाती हैं.)

- **लघु सामूहिक चर्चा** (15 मिनट)
  सहभागियों को 3-4 के समूहों में बाँटें और हर समूह को समूह कार्य प्रश्नों की एक-एक प्रति दें. सात महत्वपूर्ण शब्दों वाली पावरपॉइंट स्लाइड 24 दिखाएँ या उन शब्दों वाली कोई फ्लिप चार्ट शीट दिखाएँ. समझाएँ कि ये सारे शब्द कहानी से किसी-न-किसी तरह जुड़े हुए हैं. (महत्वपूर्ण शब्द: विचार, विश्वास, संबद्धता, अभ्यास, प्रश्न, बदलाव एवं इंकार.)

- समूहों को निम्न प्रश्नों पर चर्चा करने को कहें:
  - कहानी के घटनाक्रम और इन शब्दों के बीच क्या संबंध है और आपको इस कहानी के पात्रों के बारे में क्या प्रशंसनीय लगा और क्या पसंद नहीं आया?
  - क्या आपको अपनी संस्कृति या आस्था की परंपरा से जुड़ी हुई ऐसी कहानियां याद आती हैं जिनमें विचार, विश्वास, संबध्दता, अभ्यास, प्रश्न, बदलाव एवं इंकार करने वाले व्यक्तियों के बारे में सकारात्मक बातें कही गई हों?
  - क्या जब लोगों को ये चीज़ें करने की अनुमति दी जाती है तो समुदाय को लाभ होता है या यह समुदाय के लिए एक खतरा बन जाता है? या दोनों?
  - क्या ऐसा करने वाले व्यक्तियों के बिना सकारात्मक बदलाव संभव है?

अभ्यास का समापन कैसे करें 10 मिनट

प्रत्येक समूह से एक ऐसी बात का जिक्र करने के लिए कहें जो उनकी चर्चा के दौरान उन्हें प्रेरक, महत्वपूर्ण या कठिन लगी.

समापन मोटे तौर पर निम्नानुसार बातें कहकर करें:

- हम इस कहानी के माध्यम से धर्म या आस्था की आजादी के मानव अधिकार से जुड़े मूल्यों एवं अधिकारों के बारे में जानना प्रारंभ कर रहे हैं.
- ये मूल्य और अधिकार सरल-साधारण या अविवादित नहीं हैं. वे हमें थोड़ी चिंता महसूस करा सकते हैं. जैसे, शायद आप सोचें कि:
  - यदि लोगों को अपने बारे में सोचने और वे अपना जीवन कैसे बिताएं यह तय करने की आजादी होगी तो क्या यह हमारी संस्कृति, परंपराओं और आस्थाओं के लिए खतरा नहीं होगा?
  - इस बात की क्या गारंटी है कि लोग इन स्वतंत्रताओं का उपयोग भलाई के लिए करेंगे? ऐसे लोग भी तो होते हैं जिनके विचार या इरादे बुरे होते हैं. ज़ियाना चाहती थी कि उसके दोस्तों की ज़िंदगी बेहतर हो, लेकिन हर कोई तो ज़ियाना की तरह नहीं होता न. कई बार लोग अपनी आस्थाओं के नाम पर ऐसे कार्यों को सही ठहराते हैं जो अन्य लोगों के लिए हानिकारक हों - जैसे चाय की दुकान वाला, जिसने ओनो को परेशान किया और एक गिरोह बनाकर 'सभी का स्वागत है' के बोर्डों को उतार दिया.
- ये वे महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिन पर हम आगे भी विचार करते रहेंगे! दूसरी ओर, सकारात्मक बदलाव तब नहीं हो सकते जब तक लोगों को विचार और विश्वास करने और उन बातों पर सवाल उठाने की छूट नहीं दी जाती जिन्हें वे गलत मानते हैं - जैसे मार्केटप्लेस में भेदभाव होना.
- तो फिर लोगों को कौन-से अधिकार दिए जाने चाहिए और सरकार को कब उन्हें सीमित करने का अधिकार होना चाहिए? अभी हम यह सीखने जा रहे हैं कि अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार कानून इस बारे में क्या कहते हैं.

3. प्रस्तुति: धर्म या आस्था की आजादी का परिचय 15 मिनट

प्रस्तुति

विवरण व उद्देश्य

यह प्रस्तुतिकरण धर्म या आस्था की आजादी के अधिकार का परिचय देता है और यह भी बताता है कि इसे कब सीमित किया जा सकता है. यह पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण ज्ञान आधार बनेगी.

संसाधन

- प्रस्तुति की स्क्रिप्ट इस गाइड के पेज 60 पर है.
- यह स्क्रिप्ट सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 25-46 से मैच करता है और इन स्लाइड्स हेतु वक्ता की टिप्पणियों में शामिल है.
- इस स्क्रिप्ट का संपादन-योग्य संस्करण, सत्र के लिए दिए गए संसाधनों में उपलब्ध है.

पूर्व तैयारी

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप तैयारी करें. स्क्रिप्ट और पावरपॉइंट स्लाइडों को पढ़ें और अगर चाहें तो उन्हें अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए उनमें बदलाव करें (या स्लाइडों के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की फ्लिप चार्ट शीट बनाएं) और स्लाइडों/फ्लिप चार्ट शीट के साथ प्रस्तुतिकरण देने का अभ्यास करें.

सुझाव! लोगों से कहें कि वे आपका प्रस्तुतिकरण पूर्ण होने तक प्रश्न/टिप्पणियां न करें.

टिप्पणी

इस प्रस्तुतिकरण के अवधि में कुछ मिनट बढ़ाकर आप यह जानकारी दे सकते हैं कि आपके देश में FORB संबंधी सबसे महत्वपूर्ण कानून क्या हैं और वे अंतर्राष्ट्रीय मानदंडों के कितने अनुरूप हैं. आपको यह जानकारी ढूँढने में मदद करने वाली सलाह और लिंक्स सुविधादाता गाइड के पेज 153-154 पर हैं.
बहुत अधिक समय तक न बोलें, क्योंकि लोग लंबे समय तक ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते हैं! आवश्यक होने पर, प्रस्तुति के बाद किसी ऊर्जावान का उपयोग करें. अन्य गतिविधियों के लिए समय कम करें ताकि इसे संभव बनाया जा सके (जैसे कि आरंभिक अभ्यास को छोटा करें) या सत्र को लंबा करें.

4. पूर्ण चर्चा: धर्म या आस्था की आजादी 10 मिनट

समग्र चर्चा

विवरण व उद्देश्य

पिछले प्रस्तुतीकरण पर चर्चा से प्रतिभागियों को इस प्रस्तुतीकरण की बातों को समझना आसान होगा.

चर्चा का संचालन कैसे करें

इनपुट पर सामान्य टिप्पणियाँ और प्रश्न माँगें और फिर ये या इन जैसे प्रश्न पूछें:

- जिन अधिकारों की चर्चा की गई उनमें से आपके लिए कौन-से सबसे महत्वपूर्ण हैं?
- क्या कुछ ऐसा था जिसे स्वीकार करना आपको मुश्किल लगा या कुछ ऐसा जो आपको भ्रामक लगा?

सुझाव! धर्म या आस्था की आजादी से जुड़े मुश्किल सवालों का जवाब देने में आपकी सहायता हेतु मार्गदर्शिका पृष्ठ 21-28 पर दी गई है.

10 मिनटों बाद पूर्ण चर्चा समाप्त कर दें. समझाएँ कि समूह अब एक अभ्यास के ज़रिए मुद्दों पर चर्चा करना और उनकी पड़ताल करना जारी रखेगा.

याद रखें: आप एक सुविधादाता हैं, विशेषज्ञ नहीं! अगर सहभागियों का कोई ऐसा प्रश्न हो जिसका उत्तर देना आपको आता हो तो उत्तर दें, लेकिन उत्तर जानने का दबाव महसूस न करें! इस बात पर ज़ोर दें कि यह मिलजुलकर पड़ताल करने की प्रक्रिया है और आपकी भूमिका बातचीत को संभव बनाने की है, विशेषज्ञ होने की नहीं.

5. पूर्ण अभ्यास: मेरी रोजमर्रा की जिंदगी में FORB 30 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण

यह एक विचार करें-जोड़ी बनाएं-साझा करें अभ्यास है जिसमें लोग यह बताते हैं कि वे अपने रोजमर्रा के जीवन में किस प्रकार विचार, विश्वास, संबध्दता, अभ्यास, प्रश्न, बदलाव एवं इंकार करते हैं.

उद्देश्य

इस अभ्यास का लक्ष्य लोगों को यह पहचानने में मदद देना है कि हम हमारे दैनिक जीवन में विचारों की आजादी, अंतःकरण, धर्म और आस्था की आजादी के हमारे अधिकार का उपयोग करते हैं. इससे यह स्पष्ट करने में मदद मिलती है कि यह अधिकार हमारे लिए मात्र सैद्धांतिक रूप से ही नहीं बल्कि वास्तविकता में भी महत्वपूर्ण है.

संसाधन और पूर्व तैयारी

- सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड्स 48 से 60 तक या इन स्लाइड्स के प्रिंटआउट, जो सत्र से पहले दीवार पर चिपकाए गए हों.
- हर 3-4 प्रतिभागियों के लिए समूह कार्य प्रश्नों की एक प्रति या पूर्व से तैयार फ्लिप चार्ट शीट (शीट्स), जिन पर समूह कार्य प्रश्न लिखे हों.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 4 मिनट

सभी से कहें कि वे जोड़ियाँ बनाकर फैल जाएँ. निम्न बातें समझाएं:

अब हम इस बात पर विचार-मंथन करने जा रहे हैं कि हमारे दैनिक जीवन में हमारे लिए FORB का क्या मतलब है. सबसे पहले, हर व्यक्ति मन-ही-मन में सोचेगा. उसके बाद हम अपनी जोड़ियों में कुछ विचार साझा करेंगे, और उसके बाद लौटकर अपने विचारों पर चर्चा करेंगे.

निम्न पाठ्य पढ़कर सुनाएँ (या इस जैसा कुछ कहें). पढ़ने के दौरान पावरपॉइंट स्लाइड्स 47-59 या इनके प्रिंट आउट की ओर इंगित करें.

"अपने जीवन के एक आम दिन के बारे में सोचें. आप अपने विचारों, आस्थाओं, प्रश्नों और धार्मिक या गैर-धार्मिक पहचान की भावना को कब और कैसे व्यक्त करते हैं? यह निम्नलिखित हो सकता है:

- *आप क्या खाते हैं और क्या नहीं खाते हैं,*
- *आप क्या पहनते हैं और क्या नहीं पहनते हैं,*
- *जीवन के महत्वपूर्ण मौकों पर आपके द्वारा की जाने वाली प्रार्थनाएँ, निभाई जाने वाली रस्में और आयोजित किये जाने वाले समारोह,*
- *आप जो पढ़ते हैं,*
- *आपकी अपने परिवार के सदस्यों, मित्रों या सहकर्मियों से की जाने वाली बातचीत और आप अपने बच्चों का लालन-पालन कैसे करते हैं या*
- *आप अपने समुदाय की सेवा कैसे करते हैं या आपको समाज के जो मुद्दे महत्वपूर्ण लगते हैं उनसे आप किस प्रकार जुड़ते हैं."*

अभ्यास का संचालन कैसे करें 30 मिनट

सोचें! (5 मिनट)

हर किसी से कहें कि वह किसी आम दिन के बारे में पाँच मिनट मन-ही-मन में सोचें. वे एक आम दिन में कब और कैसे अपने विचार, आस्थाएं, प्रश्न और धार्मिक या गैर-धार्मिक पहचान/संबद्धता को अभिव्यक्त करते हैं?

जोड़ियाँ बनाएँ (10 मिनट)

प्रतिभगियों से कहें कि वे अपने विचार अपने जोड़ीदार से साझा करें और इनमें से उन प्रश्नों पर विचार-विमर्श करें जिन पर बोलना उन्हें सुविधाजनक लगता हो:

- अपना एक ऐसा अनुभव साझा करें जब आपने अपने विचार दूसरों को बताए या किसी बात पर सवाल उठाया. ऐसा करने पर क्या हुआ और आपने कैसा महसूस किया?
- किसी ऐसे समय की कहानी साझा करें जब आप अपने विचार साझा नहीं कर पाए, किसी गलत चीज़ पर सवाल नहीं उठा सके, या अपनी पहचान के साथ खुले नहीं रह सके. यह आपको कैसा महसूस हुआ?
- क्या आपका अपने दैनिक जीवन में अपने विचारों और अपनी पहचान को व्यक्त करने में सक्षम होना महत्वपूर्ण है? क्या उन विचारों या प्रथाओं जिन्हें आप गलत मानते हैं, पर प्रश्न उठाने में सक्षम होना महत्वपूर्ण है?
- अगर आपको अपनी आस्थाओं के बजाय दूसरों के विचारों और विश्वासों के आधार पर जीने के लिए मजबूर किया जाए, तो आपको कैसा महसूस होगा?

साझा करें (15 मिनट)

लोगों से समग्र चर्चा में लौटने को कहें. हम दो-दो की जोड़ियों में जिन प्रश्नों पर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे, उन सबका संबंध निम्न प्रश्नों से है:

- क्या विचारों की आजादी, अंतःकरण, धर्म एवं आस्था की आजादी से संरक्षित अधिकार हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं?
- जब हमें इनसे वंचित कर दिया जाता है तब हम कैसा महसूस करते हैं?

सुझाव! यदि बातचीत शुरू न हो पाए तो आप अपने जीवन में FORB के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए तैयार रहें.

सभी से पूछें कि क्या उनमें से कोई दो-दो की जोड़ी में इस संबंध में हुई चर्चा के आधार पर अपने विचार, भावनाएं या अनुभव साझा करना चाहेगा. इन्हें साझा करना स्वैच्छिक होना चाहिए!

कुछ समय बाद, समूह से पूछें कि क्या हमारे साझा मानव स्वभाव का अर्थ यह है कि हममें से प्रत्येक की विचार-विश्वास-संबद्धता-अभ्यास-प्रश्न-बदलाव एवं इंकार करने के अधिकार के संबंध में एक-सी मानवीय ज़रूरतें हैं? क्या ये अधिकार सभी धर्मों या आस्थाओं के लोगों के लिए महत्वपूर्ण हैं?

अभ्यास का समापन कैसे करें 1 मिनट
अभ्यास के अंत में सभी को बातचीत में अपने विचार व्यक्त करने एवं जुड़ाव के लिए धन्यवाद दें.

6. अंतिम टिप्पणियां और चेंजमेकर कहानियाँ 5 मिनट

संक्षिप्त वार्ता

विवरण
इस लघु वार्ता के साथ सत्र समाप्त होगा, जो बदलव लाने की बात को एक साधारण व्यक्ति द्वारा अपने FORB अधिकारों के लिए खड़े होने की कहानी से जोड़ती है और प्रतिभागियों को बताती है कि आगे के सत्रों में वे क्या अपेक्षा कर सकते हैं.

क्या कहें
निम्न बिंदुओं पर चर्चा करें. यदि संभव हो, तो पीटर की कहानी प्रस्तुत करने के लिए सत्र पावरपॉइंट की स्लाइड्स 61-63 का उपयोग करें.

- आज हमने धर्म या आस्था की आजादी के अधिकार का अन्वेषण किया और यह जाना कि अंतर्राष्ट्रीय कानूनों के अनुसार हमारे और सभी लोगों के क्या अधिकार हैं.
- यह एक काफ़ी पेचीदा मानव अधिकार है और ऐसी चीज़ें हो सकती हैं जिन्हें हम समझते न हों या जिन पर हम सहमत न हों. लेकिन मुझे यकीन है कि ऐसी चीज़ें भी हैं, जिन्हें हम समझते हैं और जिन पर हम सहमत हैं. चेंजमेकरों हेतु शुरुआत के लिए वह एक अच्छी जगह है!
- हमारे जैसे सामान्य लोग अपने समुदाय की समस्याओं के सन्दर्भ में बदलाव ला सकते हैं.
- पृष्ठ 64 पर दी गई पीटर की कहानी पढ़ें (जो इस सत्र के डाउनलोड करने योग्य संसाधनों में भी शामिल है).
- हमारे अगले सत्र में हम पहचान, विशेषाधिकार और प्रतिकूलता के मुद्दों की पड़ताल में थोड़ा समय बिताएँगे. और उसके बाद आने वाले सत्रों में हम धर्म या आस्था की आजादी के अधिकार के उल्लंघनों के बारे में और जानेंगे तथा यह जानेंगे कि हम किन-किन तरीकों से बदलाव ला सकते हैं.

'बांसुरी और नगाड़े के गीत'

"सहभागियों को कहानी बहुत अच्छी लगी - वह सत्र का सबसे अच्छा भाग थी. चरित्र, चित्रण और विषय - सभी ने उन पर गहरा प्रभाव डाला."
हिदाया दूदी, सुविधादाता, तंज़ानिया

बांसुरी और नगाड़े के गीत

कैथरीन कैश (Katherine Cash) और सिडसेल-मैरी विन्थर प्राग (Sidsel-Marie Winther Prag) द्वारा लिखित
टोबी न्यूसम (Toby Newsome) द्वारा चित्रित

यह कहानी 'एक बार की बात है' अभ्यास की आधारशिला है और सत्र 2 की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 3 से 23 तक में चित्रित की गई है.

बांसुरी और नगाड़े के गीत

एक समय की बात है, दो गांव थे.

जंगल में बसे गांव के लोग नगाड़े बजाने और नाचने के लिए मशहूर थे. जैसे ही कोई बच्चा बैठना शुरू करता, उसे नगाड़ा थमा दिया जाता. छोटे-छोटे नगाड़े होते थे जो शांत बारिश की फुहार की तरह बजते थे और बड़े-बड़े गरजने वाले नगाड़े होते थे जिन्हें उठाने के लिए दो लोगों की ज़रूरत होती थी. नगाड़े बजाना जीवन के साथ-साथ चलता था - उत्सव, शोक और इनके बीच की हर चीज़ - और लोगों का मानना था कि नगाड़े बजाने से उनका जीवन जंगल की आत्माओं के साथ सद्भाव में रहता है.

नीचे घाटी में बसे गांव के लोगों ने नगाड़े बजाने वालों को कभी नहीं समझा था. उन्हें नगाड़े बजाना दखलंदाज़ी लगता था और वे बस 'पीटने' की आवाज़ पर हँसते थे. जब इस गांव में कोई लड़का पैदा होता था, तो उसके पिता लकड़ी या हड्डी से एक बांसुरी बनाते थे और लड़का अपने जीवन के अंत तक इसे अपने गले में एक तार के साथ लटकाए रखता था. उनकी पारंपरिक धुनों में निपुणता प्राप्त करने में वर्षों लगते थे, और सबसे बड़ा सम्मान उन पुरुषों को दिया जाता था जिनकी बांसुरी इतनी मधुर गूंजती थी कि स्वर्ग के देवता भी मोहित हो जाते और खेतों के लिए वर्षा और धूप का वरदान देते.

हालाँकि नगाड़े वाले गाँव के ग्रामीण अपना सामान बेचने के लिए बांसुरी गाँव के साप्ताहिक बाज़ार में जाते थे, लेकिन दोनों गांवों के लोग आपस में घुलते-मिलते नहीं थे. बाजार में नगाड़ा बजाना प्रतिबंधित था. बांसुरी गाँव के कई स्टॉल मालिकों ने नगाड़ा बजाने वालों को सामान बेचने से इनकार कर दिया और नगाड़ा बजाने वाले बांसुरी गाँव वालों से नाराज़ थे.

एक छोटी लड़की, ज़ियाना नाम की एक अकेली बच्ची, बांसुरी गाँव में रहती थी. उसकी जिज्ञास और दयालुता ने उसे सभी का प्रिय बना दिया. जब वह 10 साल की थी, तो उसके पिता बीमार पड़ गए. एक दिन, उन्होंने उसे अपने पास बुलाया, "मेरी प्यारी बेटी, मैं ज़्यादा दिनों तक नहीं जीऊँगा. मेरी बांसुरी ले लो और इसे पहन लो ताकि हम हमेशा साथ रहें." यह सुनकर ज़ियाना को बहुत अजीब-सा लगा क्योंकि उस गांव में लड़कियों के लिए बांसुरी रखना प्रथागत नहीं था. लेकिन थोड़ी देर में उसने खुद से पूछा, "मुझे बांसुरी बजाने का अधिकार क्यों नहीं होना चाहिए?' जिस रात उसके पिता का निधन हुआ, ज़ियाना ने बांसुरी उठाई और उसे अपनी गर्दन में पहन लिया.

जैसे-जैसे ज़ियाना बड़ी हुई, वह अपनी माँ की मदद करने में जुट गई - खेतों में सब्ज़ियाँ उगाने से लेकर उन्हें बाज़ार में ठेले पर बेचने तक. हालाँकि ज़ियाना मेहनती और दयालु थी, फिर भी उसके गाँव के लोग अक्सर उसकी बांसुरी पहनने की वजह से उसका मज़ाक उड़ाते थे. कभी-कभी लोग उसे समझाने की कोशिश करते कि वह बांसुरी उतार दे - पर ज़ियाना अडिग रहती. जब भी उसे मौका मिलता, ज़ियाना जंगल में भाग जाती और अपने पिता की बांसुरी बजाती.

ऐसे ही एक दिन, ज़ियाना ने नगाड़े की हल्की सी आवाज़ सुनी. उत्सुकतावश वह जंगल के भीतर नगाड़े की थापों का पीछा करती हुई एक खुली जगह तक पहुँची, जहाँ एक युवक नगाड़ा बजा रहा था और गा रहा था, जबकि उसकी बहन पेड़ से फल तोड़ रही थी. ज़ियाना ने उन्हें बाज़ार से पहचाना - वे भाई-बहन थे, जिनका नाम ओनो और आइरिस था.

ज़ियाना एक पेड़ के पीछे छुप गई और बांसुरी बजाकर उनका साथ देने लगी. बांसुरी की धुन और नगाड़ा की ताल एक-दूसरे के साथ लयबद्ध होकर सुंदर संगीत में झूम उठे.

गाना खत्म होने के बाद, ज़ियाना डरते-डरते खुले स्थान में गई. ओनो और आईरिस बांसुरी वाली लड़की देखकर चकित रह गए लेकिन जैसे ही उन्हें यह एहसास हुआ कि उसे भी उनकी तरह बांसुरी वाले गांव में बांसुरी बजाने की इजाजत नहीं होगी, वे मुस्कुराने लगे. आईरिस ने ज़ियाना को कुछ फल पेश किए और तीनों ने शाम घिरने तक बातें कीं और संगीत बजाया.

अगले हाट के दिन ज़ियाना ने अपने नए दोस्तों को एक चाय की दुकान के सामने देखा. दुकान का मालिक उनसे चिल्लाकर कह रहा था, "दूर हटो नगाड़े वाले गंदे लोग!" यह सुनकर ओनो नाराज हुआ किंतु आईरिस उसे खींचकर दूर ले गई. दुकान के मालिक का बेटा, जो ओनो के लिए चाय भर रहा था, लज्जित महसूस कर रहा था.

ज़ियाना ने कभी "नगाड़े वाले वर्जित हैं" के बोर्ड की ओर ध्यान नहीं दिया था. इस एहसास से उसका मन भारी हो गया कि उसने और उसकी मां ने कभी नगाड़े वालों की दुकानों से कुछ नहीं खरीदा था.

उस रात ज़ियाना ने अपनी माँ से बात की और पूछा कि वे कभी नगाड़े वालों के स्टॉल पर क्यों नहीं गए. "जो आप जानते हैं, उसी पर टिके रहना बेहतर है," उसकी माँ ने जवाब दिया, लेकिन ज़ियाना समझ नहीं पाई और पूछती रही कि हर किसी का हर जगह स्वागत क्यों नहीं किया जाना चाहिए और ओनो और आइरिस के स्टॉल पर बिकने वाले स्वादिष्ट फलों की तारीफ करती रही. आखिरकार, ज़ियाना की माँ अगले बाज़ार के दिन उनके कुछ फल खाने के लिए सहमत हो गई.

इस बीच चाय की दुकान वाले के घर पर झगड़ा शुरू हो गया जब मालिक के बेटे ब्रोन ने नगाड़े वालों के साथ उसके पिता के व्यवहार पर सवाल उठाया. दुकान का मालिक गांव का अत्यंत सम्मानित बांसुरी वादक और गौरवान्वित व्यक्ति था. उसके पिता एवं दादा भी कुशल वादक रहे थे लेकिन उसके बेटे से बहुत निराशा हाथ लगी थी. बहुत कोशिशों के बाद भी ब्रोन साधारण धुनें भी नहीं सीख सका था. कई साल तक थोपे गए अभ्यास और कड़वी टिप्पणियों के बाद बांसुरी ब्रोन के दिल से उतर गई. उसे दूर से सुनाई देने वाली नगाड़ों की आवाज़ें आकर्षित करती थीं और वह एक अलग तरह की जिंदगी का सपना देखता था.

समय बीतता गया, ज़ियाना, आईरिस और ओनो जंगल में मिलते रहे और एक साथ मिलकर संगीत बजाते रहे. वे भी सपना देखते थे - एक ऐसे दिन का जब सबका हर जगह स्वागत होगा, जब कोई भी खुलकर नगाड़े और बांसुरी बजा सकेगा और जब वे एक साथ मिलकर बाज़ार में सुन्दर संगीत का सृजन कर सकेंगे.

हर हफ्ते, ओनो और आईरिस, ज़ियाना और उसकी माँ की सब्जी की दुकान पर जाते थे और ज़ियाना की मां, उनसे फल और मेवे खरीदती. एक दिन ओनो की नज़र ज़ियाना की मां पर पड़ी, जो उसके बेल्ट में बंधे नगाड़े को ध्यान से देख रही थी.

"ये हँसने वाला नगाड़ा है," ओनो के उन्हें बताया. "इसकी धुन खुशियाँ लाती है और जब मैं इसे बजाता हूँ तो बच्चे खूब हँसते और नाचते हैं." ज़ियाना की माँ मंत्रमुग्ध हो गई थीं.

जल्दी ही अन्य नगाड़ा वादक भी वहां इकट्ठा हो गए और ज़ियाना की माँ ने उनसे भी उनके नगाड़ों के बारे में पूछा. उस दिन, ज़ियाना की मां की सारी सब्जियां बहुत जल्दी बिक गईं. पड़ोस के दुकानदार उससे नाराज़ थे क्योंकि वह अपनी दुकान पर नगाड़े वालों का स्वागत कर रही थी, लेकिन ज़ियाना की माँ का कहना था अगर सब लोग एक-दूसरे से सामान खरीद सकेंगे तो यह सब के लिए अच्छा होगा.

उनकी दुकान के बगल में एक बुजुर्ग व्यक्ति मसाले बेच रहा था परन्तु उसका धंधा ठीक से नहीं चल रहा था. ओनो ने सुझाव दिया कि उसे अपना व्यापार बढ़ाने के लिए एक बोर्ड लगाना चाहिए जिस पर लिखा हो, "सभी का स्वागत है" और उसने बुजुर्ग आदमी के लिए एक सुन्दर सा बोर्ड बना भी दिया जिस पर नगाड़े और बांसुरी के चित्र भी बने थे.

बूढ़े आदमी की बिक्री बढ़ गई, और धीरे-धीरे अन्य स्टॉल मालिक भी आश्वस्त हो गए. इम बजाने वालों और बांसुरी बजाने वालों के स्वामित्व वाले स्टॉल पर "सभी का स्वागत है" का चिन्ह दिखाई देने लगा. बाजार में रौनक बढ़ गई.

परन्तु सब कुछ ठीक नहीं था. ब्रोन के पिता यह देखकर बहुत कुपित हो गए कि नगाड़े वाले बाज़ार के उनके हिस्से में घुस रहे हैं. उन्हें लगा कि यह उनके पुराने तौर तरीके के लिए खतरा है. उन्होंने अपने जैसी सोच रखने वालों को इकठ्ठा किया और वे मिलकर बोर्डों को उखाड़ कर फेंकने लगे और नगाड़े वालों को तंग करने लगे. इससे बाज़ार में तनाव फैल गया और बाज़ार समिति चिंतित हो गई.

ब्रोन ने अपने पिता का साथ देने से इंकार कर दिया. बल्कि उसने और बुजुर्ग मसाला विक्रेता ने बाज़ार समिति से बात की और उसे इस बात के लिए राजी किया कि वो बाज़ार में सभी के लिए एक संगीत सम्मलेन का आयोजन करवाए. उनका सोचना था कि अगर ब्रोन के पिता और उनके जैसे दूसरे लोग, नगाड़े वालों के बारे में जानेंगे और उनका संगीत सुनेंगे तो शायद वे उन्हें स्वीकार करना शुरू कर दें.

संगीत सम्मलेन की खबर चारों तरफ फैल गई और लोग दूर-दूर से बाज़ार पहुंचे. उस दिन, दुकानदारों की अन्य दिनों के अपेक्षा काफी बिक्री हुई.

आखिरकार, संगीत कार्यक्रम का समय आ गया. बूढ़े मसाला विक्रेता ने अपनी लकड़ी की बांसुरी पर एक सुंदर धुन बजाई, जबकि उसकी बेटी अच्छी फसल के लिए स्वर्ग के भगवान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए एक गीत गा रही थी. उन्होंने बताया कि युवावस्था में वर्षों की कठिनाइयों के बाद यह गीत उनके लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों था.

ब्रोन के पिता ने भीड़ में कुछ नगाड़े वालों की मुस्कान और सिर हिलाते हुए देखा तो भौंहें चढ़ा दीं.

बूढ़े व्यक्ति ने ओनो और आइरिस को मंच पर आमंत्रित किया. उन्होंने अपने नगाड़े की कहानियाँ सुनाईं और जंगल की धारा की नाचती आत्मा के सम्मान में चंचल धुनें बजाईं, और तूफ़ान की आत्मा का आभार व्यक्त करने के लिए गूंजते हुए गीत गाए, जिसने उनके फलदार पेड़ों की रक्षा की थी. पहली बार, बांसुरी वाले ग्रामीणों को समझ में आने लगा कि नगाड़े वालों के लिए नगाड़े का क्या मतलब है. ब्रोन के पिता ने मुँह बिचकाया.

आखिरकार, ज़ियाना मंच पर ओनो और आइरिस के साथ शामिल हो गई. उसने अपने पिता के बारे में सोचा, उनकी बांसुरी अपने होठों से लगाई और तीनों ने एक साथ गाना बजाना शुरू कर दिया. एक चौंका देने वाला सन्नाटा छा गया. इससे पहले कभी भी बांसुरी और नगाड़ा एक साथ नहीं सुने गए थे या किसी लड़की को बांसुरी बजाते हुए नहीं देखा गया था.

ज़ियाना की बांसुरी से धूप और बारिश के लिए आभार की धुन हवा में तैर रही थी, ओनो के नगाड़े से निकलती नाचती धारा की लय के साथ तालमेल बिठाती हुई.

गाना खत्म हुआ और भीड़ एक दूसरे की तरफ देखने लगी. कुछ लोग झिझकते हुए ताली बजा रहे थे जबकि अन्य दूसरी तरफ देख रहे थे. ब्रोन के पिता ज़ियाना पर भड़क उठे. "गद्दार!" वे चिल्लाए और गुस्से में चले गए.

ब्रोन ने अपने पिता की ओर देखा. उसके चेहरे पर दुख के बादल थे. अपना सिर हिलाते हुए उसने बांसुरी गले से उतारी और उसे अपने पिता की दुकान पर रख कर वो हमेशा के लिए गाँव छोड़ कर चला गया.

संगीत सम्मलेन के बाद दोनों गांवों में खूब बहस-मुबाहिसे हुए. क्या बाज़ार की सभी दुकानों से सब को सामान बेचा जाना चाहिए? क्या लड़कियों को बांसुरी बजाने की इजाज़त होनी चाहिए और क्या बांसुरी और नगाड़े को एक साथ बजाया जाना चाहिए? कई महीने बीत गए पर गाँव वाले फिर भी कोई राय नहीं बना पाए.

नगाड़े वालों के अनुभव सुनने के बाद और सब लोगों की नेकनीयत को देखते हुए, बाज़ार समिति ने यह फैसला सुनाया:

"बाज़ार में सभी लोगों के साथ एक-सा व्यवहार होगा!"

नगाड़े बजाने पर रोक उठा ली गई और "नगाड़े वाले वर्जित हैं" के बोर्ड हटा दिए गए. जहाँ तक बाजे बजाने का सवाल था, समिति ने किसी का भी पक्ष नहीं लिया. उसने सिर्फ यह कहा कि हर व्यक्ति की आस्था का सम्मान होगा और वे उस विश्वास के अनुरूप अभ्यास कर सकेंगे.

नगाड़े वालों को यह महसूस होने में कई साल लग गए कि उनका हर दुकान पर स्वागत है, परन्तु हर हफ्ते, ज़ियाना, ओनो और आईरिस एक साथ बांसुरी और नगाड़े के गीत बजाते रहे जब तक कि उनकी उँगलियाँ अकड़ नहीं गईं और उनके बाल सफ़ेद नहीं हो गए.

प्रस्तुति स्क्रिप्ट

विचारों, अंतःकरण धर्म या आस्था की आजादी का परिचय

सत्र 2 की प्रस्तुति के लिए यह स्क्रिप्ट सत्र पावरपॉइंट की स्लाइड 25-46 द्वारा सचित्र है.

टिप्पणी यह प्रस्तुति 'बाँसुरी और नगाड़े के गीत' नामक कहानी से संबंधित है.
यदि आपका आपके समूह के साथ कहानी का उपयोग करने का इरादा नहीं है तो आपको स्क्रिप्ट में बदलाव करने होंगे.
आपको यह कहानी सुविधादाता गाइड के पेज 55पर और सहायक सामग्री में मिल जाएगी.

परिचय

तो, धर्म या आस्था की आजादी किसकी रक्षा करती है?

आपको शायद लगे कि धर्म और आस्था ही तर्कसंगत उत्तर है. पर वास्तव में, धर्म या आस्था की आजादी अपने-आप में धर्म या अन्य आस्थाओं का संरक्षण नहीं करती है. वह ईश्वर या पवित्र का संरक्षण नहीं करती है. बाकी सभी मानव अधिकार की तरह यह भी लोगों का संरक्षण करती है.

इस अधिकार का पूरा नाम है, विचारों की आजादी, अंतःकरण, धर्म या आस्था की आजादी और यह प्रत्येक मनुष्य के अधिकारों की रक्षा करती है - भले ही वे कोई भी हों, उनकी आस्था कुछ भी हो और वे किसी भी धर्म के हों.

धर्म या आस्था की आजादी इस विचार पर आधारित है कि सभी मनुष्यों की कुछ मूलभूत आवश्यकताएं हैं:

- खुद के लिए यह विचार और निर्णय करने की कि क्या अच्छा और सही है
- समान आस्थाओं, प्रथाओं और पहचान वाले समूहों से जुड़ने की
- और अभ्यास एवं विचारों पर प्रश्न उठाने, आस्था संबंधी अपने नजरिए को बदलने एवं उन कार्यों को करने से इंकार करने की आजादी जो उनके अंतःकरण के विरूद्ध हों.

विचार, विश्वास, संबद्धता, अभ्यास करना, प्रश्न करना, अपने नजरिए को बदलना और इंकार करने के लिए.

हमारे क्या अधिकार हैं?

तो, हमारे क्या अधिकार हैं? आईये हम देखें कि समझौतों में क्या कहा गया है.

नागरिक एवं राजनैतिक अधिकारों संबंधी अंतरराष्ट्रीय प्रसंविदा (International Covenant on Civil and Political Rights, ICCPR) का अनुच्छेद 18, धर्म या आस्था की आजादी की रक्षा करता है. यह क़ानूनी रूप से बंधनकारी प्रसंविदा है और दुनिया के 173 देशों ने इन अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का पालन करने की अपनी प्रतिबद्धता घोषित की है [*प्रतिभागियों को बताईये कि क्या आपका देश ICCPR से सहमत है*]

अनुच्छेद 18 का पहला वाक्य कहता है:
"प्रत्येक व्यक्ति को विचारों की आजादी, अंतःकरण और धर्म की आजादी का अधिकार होगा."

हर एक व्यक्ति को सोचने की आज़ादी है - जैसे कहानी में ज़ियाना, जो सोचती थी कि उसके लड़की होने के बावजूद उसे अपने गले में बांसुरी लटकाने की इज़ाज़त होनी चाहिए.

हमें अपनी अंतःकरण की आवाज़ सुनने का अधिकार है - जैसे ब्रोन, जिसने अपने पिता की मदद करने से इंकार कर दिया क्योंकि उसका मानना था कि उसके पिता जो कर रहे थे, वह गलत था.

और हमारे पास धार्मिक या अधार्मिक (नास्तिक) आस्था रखने का और धार्मिक या आस्थागत पहचान रखने का - विश्वास करने का और उसे अपना मानने का - अधिकार है. बाँसुरी और नगाड़े गाँववालों की तरह, हममें से कई के निष्ठावान आस्थाएं होती हैं. हमारी आस्थाएं और हमारे ही जैसे आस्था वाले लोगों का समुदाय हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हो सकते हैं.

परन्तु हम चाहे जिस समाज में रहते हों या हमारी आस्थाएं कितनी ही सत्य और सही क्यों न हों, कुछ ऐसे लोग हो सकते हैं जो अपनी आस्थाओं और अपने समुदाय में विश्वास खो दें - जैसे ब्रोन, जिसने अपनी बांसुरी उतार दी और अपने समुदाय को छोड़ दिया.

अंतर्राष्ट्रीय मानव अधिकार कानून हमें अपना धर्म और अपनी आस्थाओं में विश्वास रखने के साथ-साथ, अपने धर्म या आस्थाओं को बदलने का अधिकार भी देते हैं.

विचार करने, आस्था रखने, प्रश्न करने और हमारी आस्था को बदलने के इन अधिकारों को अक्सर अंतर्मन के अधिकार कहा जाता है. ये अधिकार हमारे दिमाग और हमारी आत्मा से जुड़े हुए हैं, हमारी पहचान से सम्बंधित हैं - इससे कि हम अपने आप को क्या मानते है.

और इसीलिए, ये अधिकार अउल्लंघनीय है. अंतर्राष्ट्रीय कानून के अंतर्गत, किसी भी सरकार या व्यक्ति को इन अधिकारों पर रोक लगाने की इजाज़त नहीं है.

पर बेशक, धर्म और आस्था का सरोकार केवल हमारे मन और आत्मा में हो रहीं चीज़ों से ही नहीं बल्कि और भी कई चीज़ों से है! उनका सरोकार इससे है कि हम क्या करते हैं - इससे है कि हम हमारे विश्वासों को शब्दों और कृत्यों में किस प्रकार व्यक्त करते हैं.

हमारी कहानी में गाँववाले अपने दैनिक जीवन में अनेक ऐसे कार्य करते हैं, जो उनकी आस्था को अभिव्यक्त करते हैं और बताते हैं कि वे कौन हैं! बांसुरी पहनने से लेकर नगाड़े बजाने तक रोज़मर्रा की ज़िंदगी में.
धर्म या आस्था की आजादी इन अधिकारों की भी रक्षा करती है. चलिए प्रसंविदा पर एक बार फिर नज़र डालते हैं:

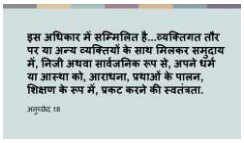

अनुच्छेद 18 कहता है कि:

> "इस अधिकार में सम्मिलित है-व्यक्तिगत तौर पर या अन्य व्यक्तियों के साथ मिलकर समुदाय में, निजी अथवा सार्वजनिक रूप से, अपने धर्म या आस्थाओं को, आराधना, प्रथाओं के पालन, अभ्यास या शिक्षण के रूप में, प्रकट करने की स्वतंत्रता."

हमारे पास सामूहिक उपासना और परंपराओं के साथ, निजी रूप से प्रार्थना करने और एक समुदाय के भाग के रूप में हमारे धर्म या आस्था को व्यक्त करने का अधिकार है. और उस समुदाय के पास भी अधिकार होते हैं - अपने सदस्यों को नियंत्रित करने के अधिकार नहीं बल्कि राज्य के संबंध में अधिकार. जैसे, राज्य को यह सुनिश्चित करना होगा कि धार्मिक और आस्था संबंधी समुदाय यदि चाहें तो कानूनी पहचान हासिल कर सकते हों, ताकि वे बैंक खाते रख सकें, लोगों को काम पर रख सकें और इमारतों के मालिक हो सकें.

व्यक्ति या समूह कई अलग-अलग तरीकों से अपने धर्म या आस्थाओं का अभ्यास कर सकते हैं. संयुक्त राष्ट्र संघ के विशेषज्ञों ने ऐसी अनेक गतिविधियों के उदाहरण दिए हैं, जो संरक्षित हैं. उदाहरण के लिए, हमें ये अधिकार हैं: जैसे, हमारे पास ये अधिकार हैं:

- आराधना करने और त्यौहार व काम से छुट्टी का दिन मनाने का.
- धार्मिक पोशाक पहनने और कोई विशेष भोजन करने का.
- धार्मिक संस्थान व अंतिम संस्कार स्थल का और धार्मिक प्रतीकों का प्रदर्शित करने का.
- समाज में अपनी भूमिका निभाने का जैसे खैराती संस्थाएं बनाकर और
- अपने धर्म या आस्था के बारे में बात करने और उसकी शिक्षा देने का और अपने नेताओं को प्रशिक्षण देने और उनकी नियुक्ति करने का.

यह सुनकर आप शायद सोच रहे होंगे - "बहुत बढ़िया. मैं अपने समुदाय के लिए यही अधिकार तो चाहता हूँ!" या यह भी हो सकता है कि आप चिंता में पड़ गए हों!

स्वयंसेविता और समानता - दूसरों को नुकसान न पहुँचाएँ!

उन लोगों या समूहों का क्या जो अपने धर्म या आस्था का प्रयोग दूसरों के खिलाफ नफरत या हिंसा को बढ़ावा देने के लिए करते हैं, जो दूसरों के साथ भेदभाव करते हैं या जो अपने समूह के भीतर लोगों पर नियंत्रण करना चाहते हैं या उनका दमन करते हैं?

क्या धर्म या आस्था की आजादी का यह अर्थ है कि वे ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हैं - फिर चाहे इसका दूसरों पर कुछ भी असर क्यों न हो?

शुक्र है ऐसा नहीं है!

मानव अधिकार समझौते हमें यह बताते हैं कि हमारे अधिकार क्या हैं परन्तु वे हमें यह भी बताते हैं कि हमारे अधिकारों की सीमा क्या है. या, दूसरे शब्दों में - जब हम हमारे अधिकारों का उपयोग करते हैं तब हमारी क्या-क्या ज़िम्मेदारियाँ होती हैं.

हम इन ज़िम्मेदारियों का सारांश यह कहकर दे सकते हैं कि किसी को भी अपने अधिकारों और स्वतंत्रताओं का उपयोग ऐसे ढंग से नहीं करना चाहिए जिससे दूसरों को नुकसान पहुँचता हो. मानव अधिकार समझौतों के अनुसार यह हर व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है. और सरकार का यह नैतिक कर्त्तव्य है कि वह सभी के अधिकारों का सम्मान करे और प्रत्येक व्यक्ति को किसी के भी प्रकार के नुकसान से बचाए. आईये हम देखें कि हमें किस तरह के विशिष्ट नुकसानों से बचाया जाना चाहिए.

सबसे पहले तो कहता है: कोई दबाव नहीं!

धर्म या आस्था के मामलों में दबाव की अनुमति नहीं है. विश्वास करना और अपना मानना स्वैच्छिक होता है. शासक वर्ग, आस्था-आधारित समुदायों और परिवारों को कतई यह अनुमति नहीं है कि वे किसी व्यक्ति के साथ विश्वास रखने या न रखने, अभ्यास करने या न करने और किसी धर्म का अनुयायी होने या न होने के मामले के किसी प्रकार की धमकी, हिंसा या जोर-ज़बरदस्ती का प्रयोग करें.

दूसरा यह कहता है: कोई भेदभाव नहीं!

प्रसंविदा का अनुच्छेद 2 सभी प्रकार के भेदभाव को निषिद्ध करता है - फिर चाहे वह, उदाहरण के लिए, धर्म पर आधारित हो या नस्ल, लिंग अथवा भाषा पर. मानव अधिकार संधियों पर हस्ताक्षर कर चुके राज्यों ने हर किसी से समानता का व्यवहार करने और समाज में भेदभाव मिटाने के लिए सक्रिय रूप से काम करने पर सहमति दी है - बिल्कुल वैसे ही जैसे हमारी कहानी में बाज़ार परिषद ने दी थी.

तीसरा: मानवाधिकारों का हनन नहीं!

अनुच्छेद 5 कहता है कि किसी सरकार, समूह या व्यक्ति को यह अनुमति नहीं है कि वह किसी एक मानव अधिकार की इस प्रकार व्याख्या करे जिससे उसे ऐसा कोई काम करने का अधिकार मिल जाए जो अन्य मानव अधिकार का उल्लंघन करता हो.

और अनुच्छेद 20, भेदभाव, बैरभाव या हिंसा भड़का कर धार्मिक घृणा का समर्थन करने पर रोक लगाता है.

चाहे कोई सरकार या व्यक्ति यह मानता हो कि धर्म उनसे क्या अपेक्षा करता है, कोई यह तर्क नहीं कर सकता कि धर्म या आस्था की आजादी उन्हें दूसरों के अधिकारों को कुचलने का अधिकार देती है. इसलिए ब्रोन के पिता को नगाड़ेकवालों का उत्पीड़न करने का कोई अधिकार नहीं था, भले ही उन्हें यह लगा हो कि ऐसा करना सही है.

मुझे यकीन है कि आप ऐसे ढेरों उदाहरण बता सकते हैं जिनमें हिंसा को सही ठहराने या उकसाने के लिए धर्म का उपयोग किया गया है, या ऐसी धार्मिक प्रथाओं के उदाहरण जो लोगों को नुकसान पहुँचाती हैं. शायद आप ऐसे मौके भी याद करके बता पाएँगे जब लोगों को उनके धर्म या आस्था के शांतिपूर्वक पालन से अन्यायपूर्ण ढंग से रोका गया हो.

धर्म या आस्था की आजादी की सीमाएं

तो, वे नियम क्या हैं? सरकारें कब और कैसे धर्म या आस्था की आजादी को सीमित कर सकतीं हैं? आईये, हम इन पर संक्षेप में नज़र डालते हैं.

सबसे पहले, सोचने और विश्वास करने के अधिकार (अंतर्मन की स्वतंत्रता) पर कभी कोई रोक नहीं लगाई जा सकती. दूसरे, धर्म या आस्था के अभ्यास पर रोक लगाई जा सकती है परन्तु केवल तभी जब निम्न चार नियमों का पालन किया जाए:

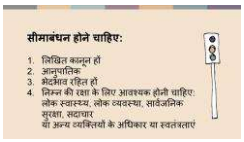

1. सीमाबंधन का वर्णन करने वाला कानून होना ज़रूरी है. दूसरे शब्दों में, पुलिस मनमानी नहीं कर सकती.
2. वह सीमाबंधन उस समस्या के समानुपाती होनी चाहिए, जिसे हल करने के लिए रोक लगाई जा रही है. जैसे, अगर किसी आस्था-आधारित समुदाय द्वारा बहुत तेज़ आवाज़ में लाउडस्पीकर बजाया जाता है, तो उस समुदाय को यह आदेश दिया जा सकता है कि वह लाउडस्पीकर की आवाज़ कुछ धीमी रखे या जुर्माना भरे. उस समुदाय के लोगों के इकठ्ठा होने पर प्रतिबन्ध लगाना समानुपातिक नहीं होगा.
3. सभी सीमाबंधनों को भेदभाव-रहित होना चाहिए अर्थात वे सभी पर लागू होने चाहिए.
4. सीमाबंधन का इनमें से किसी चीज़ के संरक्षण के लिए आवश्यक होना ज़रूरी है: सार्वजनिक सुरक्षा, लोक व्यवस्था, लोक स्वास्थ्य, सदाचार या अन्य व्यक्तियों के अधिकार या स्वतंत्रताएं.

'आवश्यक' शब्द सच में महत्वपूर्ण है. सरकार या बहुसंख्यक जनसंख्या का यह सोचना भर पर्याप्त नहीं है कि इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सीमाबंधन वांछनीय है. सीमाबंधन का आवश्यक होना ज़रूरी है. अन्य शब्दों में, अधिकारों को सीमित किए बिना प्रथाओं से उत्पन्न समस्याओं को हल करने का कोई भी तरीका नहीं होना चाहिए. अधिकारों का सीमाबंधन अंतिम उपाय होना चाहिए. बहरहाल, यह कभी-कभी आवश्यक होता है.

उदाहरण के लिए, किसी धार्मिक संस्थान में बहुत बड़ी भीड़ का घुसना खतरनाक हो सकता है. किसी धार्मिक संस्थान ऐसे में, प्राधिकारियों के लिए सार्वजनिक सुरक्षा के आधार पर, वहां प्रवेश करने वाले व्यक्तियों की सीमा निर्धारित करना ज़रूरी हो सकता है.

कोरोना वायरस महामारी के दौरान, लोक स्वास्थ्य के हित में आराधना के लिए लोगों के एकत्र होने पर प्रतिबन्ध बहुत आम थे. कुछ मामलों में ये प्रतिबन्ध आवश्यक, समानुपातिक और भेदभाव रहित थे. कुछ मामलों में वे बहुत भेदभावपूर्ण और अनुपातहीन थे. कभी-कभी वे अत्यधिक भेदभावपूर्ण और विषमानुपाती रहे हैं.

लड़कियों के जननांग के विकृतीकरण पर रोक एक ऐसे सीमाबंधन का उदाहरण है, जो दूसरों के - इस मामले में लड़कियों के - अधिकारों और स्वतंत्रताओं का संरक्षण करता है. भले ही इसे धार्मिक या सांस्कृतिक प्रथा माना जाता हो परन्तु इससे लड़कियों का स्वास्थ्य खतरे में पड़ता है और इसे धर्म या आस्था की आजादी के नाम पर औचित्यपूर्ण नहीं ठहराया जा सकता.

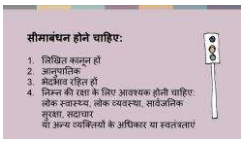

ये नियम सच में महत्वपूर्ण हैं. इनके बिना, सरकारें ऐसे किसी भी समूह या प्रथा को सीमित/प्रतिबंधित कर सकती हैं जिसे वे पसंद नहीं करतीं. सीमाबंधन अंतिम उपाय हैं, न कि सरकारी नियंत्रण के साधन. अगले सत्र में हम और अधिक गहराई से देखेंगे कि दुनिया में धर्म या आस्था की आजादी के किस तरह के उल्लंघन हो रहे हैं.

चेंजमेकर कहानियाँ

निम्न कहानी सत्र 2 की अंतिम टिप्पणियों के भाग के रूप में पढ़ी जाएगी. इसे सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुतियों की स्लाइड्स 61-63 द्वारा स्पष्ट किया गया है.

पीटर की कहानी, पाकिस्तान

कहानी

पीटर एक युवक है जिसने लाहौर, पाकिस्तान के एक मुस्लिम-बहुल क्षेत्र कोट लखपत के ईसाई समुदाय के लिए बदलाव लाने में सहायता की. हर सुबह पीटर अपने दिन की शुरूआत एक स्थानीय ईसाई टीवी चैनल पर एक पादरी द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली सर्विस को देखकर करता है. "मेरे पास इतना समय नहीं होता कि में धर्मग्रंथों को पढ़ूं या बाईबल अध्ययन समूहों का हिस्सा बनूं. इस सर्विस को देखना मेरे लिए दिन की शुरूआत करने का एक अद्भुत तरीका है" वह कहता है.

एक सुबह, क्रिश्चियन TV चैनल बंद हो गया. शुरू में, पीटर को लगा कि कोई तकनीकी समस्या होगी. जब चैनल को बंद हुए एक हफ़्ता हो गया, तो पीटर और उस इलाके के कुछ अन्य नियमित दर्शकों ने समूह बनाकर TV पादरी से संपर्क किया, तो उन्हें पता चला कि चैनल अन्य इलाकों में सामान्य ढंग से चल रहा था.

यह जानकारी प्राप्त होने के बाद उन्हें पता लगा कि एक स्थानीय मस्जिद के इमाम ने केबिल टेक्निशयन से कहकर उनके क्षेत्र में चैनल का प्रसारण बंद करवाया है क्योंकि एक मौलवी (धार्मिक अध्येता) उसे ईसाई धर्म का प्रचार करने की कवायद मानते थे.

"आप सोच सकते हैं कि हम कितने आश्चर्यचकित हो गए. हम हमारे मुसलमान पड़ोसियों के करीब रहते हैं और हमें उनसे कोई समस्या नहीं है." पीटर ने कहा.

समूह को पता था कि मामला संवेदनशील है, इसलिए उन्होंने सलाह और जानकारी के लिए एक राष्ट्रीय ईसाई युति संगठन से संपर्क किया. उसकी सलाह का पालन करते हुए, उन्होंने सबसे पहले केबल तकनीशियन से संपर्क किया. उसे प्रसारण कनेक्ट करने पर कोई आपत्ति नहीं थी पर उसने कहा कि वह इमाम के विरुद्ध नहीं जा सकता है. समूह ने तय किया कि उन्हें मौलवी से बात करनी होगी.

समूह के एक प्रतिनिधि ने तीन घंटों तक कोशिश की कि वह मौलवी को चैनल के प्रसारण से रोक हटाने के लिए राज़ी कर ले, पर उसे कामयाबी नहीं मिली. अगले दिन, उस प्रतिनिधि ने दोबारा कोशिश की और मौलवी को मानव अधिकार, धर्म और आस्था की स्वतंत्रता और पाकिस्तान के संविधान द्वारा हर नागरिक को दिए गए अधिकारों के बारे में बताया. दिन भर की बहस के बाद, मौलवी चैनल के प्रसारण की अनुमति देने पर सहमत हो गया, पर उसने यह अनुरोध किया कि नमाज़ के वक्त ईसाई दर्शक आवाज़ कम रखें ताकि नमाज़ अदा कर रहे पड़ोसियों को परेशानी न हो.

"हम बहुत खुश हुए!" पीटर कहता है, "यद्यपि यह केवल कुछ लोगों से संबंधित टीवी प्रसारण का मसला था लेकिन ईसाईयों के रूप में हमारे जीवन का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है."

स्रोत
मानव विकास हेतु ईसाई युति आयोग (एक्यूमेनिकल कमिशन फ़ॉर ह्यूमन डिवेलपमेंट, ECHD), पाकिस्तान.
पीटर जिसका नाम सुरक्षा कारणों से बदल दिया गया है.

सत्र 3

हमारी कई पहचानें

सत्र अवलोकन

यह सत्र हमारी पहचानों की रचना करने वाले विभिन्न घटकों की और इस बात की छानबीन करता है कि वे घटक समाज में विशेषाधिकार और प्रतिकूलता से किस प्रकार जुड़े हुए हैं. यह उन कई प्रतिकूलताओं पर प्रकाश डालता है जिनका सामना कुछ लोग इसलिए करते हैं क्योंकि वे उनकी पहचान के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी होती हैं - जैसे, धार्मिक या अन्य अल्पसंख्यक स्थिति और लिंग, आयु या वर्ग, दोनों के कारण.

धार्मिक पहचान कई समाजों में प्रमुख 'विभाजक' मानी जाती है परंतु जीवन में हमारी कई अन्य साझा पहचानें और अनुभव होते हैं. इस सत्र का यह अभ्यास यही दर्शाता है.

यह एक अत्यंत सहभागितापूर्ण सत्र है जो ज्ञान-आधारित इनपुट्स पर तात्कालिक विराम लगाता है. यह विविध प्रकार के अभ्यासों पर आधारित अनुभवात्मक अध्ययन पर केन्द्रित है जिसमें प्रतिभागी स्वयं विचार करते हैं और दूसरों से सीखते हैं.

सीखने के उद्देश्य

यह सत्र 'अन्यों' के प्रति सकारात्मक रवैया विकसित करने और विशेषाधिकारों और प्रतिकूलताओं को पहचानने की क्षमता पर केन्द्रित है.

इस सत्र के अंत तक प्रतिभागी:

- यह समझने में समर्थ होंगे कि धार्मिक पहचान उनकी समग्र पहचान का एक हिस्सा मात्र है और उनकी कई पहचानें और जीवन के साझा अनुभव उनकी धार्मिक पहचान से परे हैं
- यह समझने में समर्थ होंगे कि हमारी पहचान के विभिन्न पहलुओं के कारण हमें विशेषाधिकार भी प्राप्त हो सकते हैं और हमें वंचित भी होना पड़ सकता है, और यह भी कि इसके परिणामस्वरूप कई लोगों को विभिन्न विशेषाधिकार उपलब्ध होते हैं और कई लोगों को कई प्रकार से वंचित होना पड़ता है
- उनकी पहचान के किसी पहलू के कारण जिन लोगों को वंचित किया जा रहा है उनके प्रति एकजुटता प्रकट करेंगे, और बदलाव लाने के लिए विभाजनों से ऊपर उठकर लोगों के लामबंद होने की आवश्यकता को समझ पाएंगे.

टिप्पणी

याद रखें कि इन उद्देश्यों की प्राप्ति की वास्तविकता सहभागियों के आरंभ बिंदुओं पर निर्भर करेगी - जैसे, क्या अन्य समूहों के प्रति सशक्त नकारात्मक रवैये मौजूद हैं. सीखने के उद्देश्य का उद्देश्य उन क्षेत्रों को इंगित करना है, जहाँ सुविधादाता प्रतिभागियों के ज्ञान, दृष्टिकोण और क्रियात्मक कौशल में प्रगति देख सकते हैं. संभव है कि प्रगति एक सत्र में हासिल न हो बल्कि पाठ्यक्रम के दौरान क्रमिक ढंग से हो.

सत्र की अंतर्वस्तु और समय

स्वागत	2 मिनट
आरंभिक अभ्यास: सौभाग्य पात्र प्रतिभागियों को असमानता एवं एकजुटता जैसे मुद्दों पर विचार करने में सहायता करता है.	15 मिनट
पूर्ण अभ्यास: आगे की ओर एक कदम प्रतिभागियों की यह सोचने में सहायता करता है कि उनके सन्दर्भों में भेदभाव और अन्य अधिकारों के उल्लंघन का प्रभाव किन लोगों पर पड़ता है.	45 मिनट
ऊर्जावान: सभी लोग कुर्सियां बदलें एक शारीरिक कवायद जिनमें कथनों पर सहमत होने वाले लोग कुर्सियों की अदला-बदली करते हैं.	10 मिनट
पूर्ण अभ्यास: हमारी सामाजिक पहचानें प्रतिभागियों को अपनी पहचान के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने में मदद करता है और यह समझने में सहायता करता है कि वे अन्य धर्मों के लोगों के साथ कई पहचानों को साझा करते हैं.	40 मिनट
अंतिम टिप्पणियां: पहचानें और रुढीबद्ध धारणाएं ये टिप्पणियां पिछले अभ्यासों के संदेशों को जोड़तीं हैं.	8 मिनट
कुल समय	**2 घंटे**

तैयारी करें

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप सत्र की तैयारी करें. याद रखें - आपको अपने समूह की बेहतर समझ है! आपका स्वागत है कि आप सत्र के किसी भी हिस्से को अपनी समूह की ज़रूरतों के अनुसार अनुकूलित और संशोधित करें.

इस सत्र के लिए संसाधन

पृष्ठ 16 पर सूचीबद्ध प्रत्येक सत्र के लिए मानक संसाधनों के अतिरिक्त, इस सत्र को संचालित करने के लिए आपको निम्नलिखित संसाधनों की आवश्यकता होगी:

- खुला स्थान या कमरा जहां इतनी जगह हो कि प्रतिभागी एक पंक्ति में एक दूसरे के बगल में खड़े हो सकें और 10 कदम आगे कक्ष की दूसरी ओर चल सकें.
- 'सौभाग्य पात्र' अभ्यास के हैंडआउट.
- हर आठ प्रतिभागियों पर एक कैंची (उदाहरण के लिए 17-24 के समूहों के लिए तीन कैंचियां).
- मुद्रित एवं काटे हुए कैरेक्टर कार्ड्स (आगे की ओर एक कदम अभ्यास हेतु).
- पढ़े जाने वाले कथनों की सूची (आगे की ओर एक कदम अभ्यास हेतु).
- पढ़े जाने वाले कथनों की सूची (सभी लोग कुर्सियां बदलें अभ्यास हेतु).

इस सत्र के **सहायक संसाधन** यहाँ हैं.

कक्ष तैयार करना

यह एक बहुत सक्रिय सत्र है जिसमें काफ़ी जगह की और खिसकाने में आसान कुर्सियों की ज़रूरत होगी - जैसे, कुर्सियों को दीवारों से सटाना. डेस्क रास्ते में बाधा बनेंगी. कुर्सियों को रास्ते से हटा चुकने के बाद सत्र शुरू करें ताकि सहभागी पूरे कमरे में बेरोक घूम-फिर सकें.

'आगे की ओर एक कदम'

"एक कदम आगे बिल्कुल सही अभ्यास है! इसने सच में यह दिखाया कि कैसे लोग पीछे छूट जाते हैं और कैसे लोगों पर ठप्पा लगाने और उन्हें कलंकित करने से उनके जीवन प्रभावित होते हैं. हमें अभ्यास के बाद चर्चा के लिए काफ़ी समय की ज़रूरत पड़ी."

हम्माम, सुविधादाता, जॉर्डन

"एक कदम आगे अभ्यास ने सहभागियों को सच में यह समझने में मदद दी कि क्यों कुछ लोग पीछे छूट जाते हैं - भले ही वे समान रूप से बुद्धिमान, सक्षम और परिश्रमी हों. बढ़ती हुई खाई इस बात का एक ठोस चित्रण थी कि कैसे समाज की संरचना इस प्रकार बनाई गई है कि विशेषाधिकार-प्राप्त समूहों और लिंग को लाभ हो, जबकि हर कोई जन्म से समान होता है."

इरफ़ान इंजीनियर, सुविधादाता, भारत

विस्तृत सत्र योजना

1. स्वागत 2 मिनट

संक्षिप्त वार्ता

क्या कहें

सत्र में सभी का स्वागत करें और निम्नलिखित बातें समझाएं:
इस सत्र का विषय है 'हमारी अनेक पहचानें' और इस सत्र का उद्धेश्य हमारे समुदायों के आतंरिक विभाजनों को जानना ही नहीं है बल्कि हममें जो समानताएं हैं उन्हें जानना भी है. सत्र अत्यंत सहभागितापूर्ण होगा जिसमें काफी चर्चा एवं साझाकरण होगा.

2. आरंभिक अभ्यास: सौभाग्य पात्र 15 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण

प्रतिभागियों को एक तस्वीर को काटने या फाड़ने के लिए 1 मिनट मिलेगा लेकिन बहुत कम प्रतिभागियों की पास कैंची होगी.

उद्देश्य

इस अभ्यास के माध्यम से सत्र की एक मनोरंजक, क्रियात्मक शुरूआत होती है जिससे प्रतिभागियों को इस बात पर विचार करने में सहायता मिलती है कि लोगों के जीवन की शुरुआत अलग-अलग बिंदुओं से होती है और इस पर भी कि एकजुटता के क्या फायदे हैं. (सत्र 1 में सीखी गई बातों की याद दिलाने हेतु एक सूप पात्र का उपयोग किया जाता है जो मानव अधिकारों का प्रतिनिधित्व करता है.)

संसाधन

- हर प्रतिभागी हेतु सूप पात्र पर्चे की एक फोटोकॉपी.
- हर आठ प्रतिभागियों पर एक के अनुपात में कैचियां.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 3 मिनट

प्रत्येक प्रतिभागी को सूप पात्र पर्चे की एक प्रति दें (या उसका एक रेखाचित्र, यदि आपको फोटो कापियर उपलब्ध न हो सके तो). बहुत कम लोगों (जैसे आठ में से एक) को कैंचियां दें. प्रतिभागियों को अभ्यास का उद्देश्य बताए बिना उन्हें यह बताएं कि उन्हें क्या करना है जैसे, आप यह कह सकते हैं:

> *"जैसे ही मैं कहूं 'गो' आपको 1 मिनट के अंदर किसी भी तरह से सूप पात्र को कागज में से निकालना है. अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग करें और रचनात्मक ढंग से तरकीब ढूढें. आप में से वे लोग सौभाग्यशाली हैं, जिनके पास कैंची है."*

अभ्यास का संचालन कैसे करें 11 मिनट

'गो' कहें और 1 मिनट का टाइमर लगा दें. टाइमर की घंटी बजते ही सभी से कहें कि वे रुक जाएँ और अपने-अपने सूप पात्र ऊपर करके थाम लें ताकि हर कोई देख सके कि उन्होंने कैसा प्रदर्शन किया.

हर किसी की कोशिश करने के लिए तारीफ़ करें और उनसे पूछें:

- उन्होंने यह कार्य कैसे किया?
- कैंची उपलब्ध न होने पर उन्हें कैसा महसूस हुआ?
- कैंची उपलब्ध होने पर उन्हें कैसा महसूस हुआ?
- क्या किसी के मन में कैंची उधार मांगने या देने का विचार आया? क्यों या क्यों नहीं?

निम्न बातें समझाएं:

- यह अभ्यास दर्शाता है कि सारी दुनिया में और हमारे समुदाय में जन्म के समय लोगों के जीवन का प्रारम्भिक बिंदु एक-दूसरे से बहुत भिन्न होता है. हमारा जीवन कैसा होगा यह कई कारकों पर निर्भर करता है - जिसमें हमारे माता-पिता का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर भी महत्वपूर्ण होता है. कई लोग सौभाग्यशाली होते हैं और उन्हें जन्म के समय ही अलग-अलग प्रकार के विशेषाधिकार उपलब्ध रहते हैं - कैंची की तरह. कई लोग इतने सौभाग्यशाली नहीं होते.
- जिन लोगों को विशेषाधिकार नहीं मिल पाते उनमें से कुछ सोचते हैं कि उन्हें जो भूमिका एवं स्थान दिया गया है, वे उसे ही स्वीकार कर लें और कैंची उधार लेने अर्थात चीज़ों को बदलने का प्रयास न करें. और विशेषाधिकार प्राप्त व्यक्ति हमेशा दूसरों को 'कैंची' उपलब्ध कराने के बारे में नहीं सोचते.
- मानव अधिकार गरिमापूर्ण जीवन से सरोकार रखते हैं. मानव अधिकार के बारे में अधिक सजग रहने से हमें अलग ढंग से सोचने में मदद मिल सकती है. हम अन्याय स्वीकार करने को और इस तथ्य कि हम बेड़ियों में बँधे हैं, से हारने को मज़बूर नहीं हैं. हम 'बेड़ियाँ' काट सकते हैं! मानव अधिकार, विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को विशेषाधिकारहीन लोगों के अधिकारों के लिए खड़े होने को प्रेरित करने में भी मदद कर सकते हैं.

अभ्यास का समापन कैसे करें 1 मिनट

समापन यह कहते हुए करें कि शेष सत्र में हम इस पर विचार करेंगे कि हमारे समुदाय में धर्म, आस्था या विचारों अथवा अन्य कारणों से किसे विशेषाधिकार प्राप्त हैं और किसे अन्याय का सामना करना पड़ रहा है. यह आशा की जानी चाहिए कि इससे हमें यह सोचने में सहायता मिलेगी कि हम कैसे यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि सभी लोग गरिमामय जीवन जी सकें और 'सूप पात्र' - हमारे मानव अधिकार - सभी को मिलें.

टिप्पणी

यदि आप थोड़े लंबे सत्र का संचालन कर रहे हैं तो इस अभ्यास का थोड़ा लंबा संस्करण संभव है. समापन करने से पहले, समूह को अभ्यास दोबारा आज़माने का एक दूसरा मौका दें. इस बार वे उसे दोबारा करने में एक मिनट लगाने से पहले एक मिनट इस चर्चा में लगा सकते हैं कि परस्पर सहयोग कैसे करना है. उसके बाद उनसे पूछें कि उन्हें परस्पर सहयोग के बारे में कैसा लगा. यह टिप्पणी करें कि साथ मिलकर काम करने का इच्छुक रहने से हम हमारे समाज के लिए और हमारे खुद के लिए दूसरे मौकों की रचना कर सकते हैं. यदि आप इसे करें तो दोगुनी संख्या में हैंडआउट प्रिंट करना न भूलें!

3. पूर्ण अभ्यास: आगे की ओर एक कदम 45 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण

इस साधारण रोल-प्ले अभ्यास में प्रतिभागी उन्हें दी गई पात्र की भूमिका निभाते हैं, और यदि उनके द्वारा निभाया जा रहा पात्र सुविधादाता द्वारा पढ़े गए किसी कथन से सहमत होता है तो वे एक कदम आगे बढ़ते हैं. जैसे-जैसे प्रतिभागियों के बीच की दूरी बढ़ती जाती है, यह स्पष्ट होता जाता है कि समाज के विभिन्न समूहों को लाभप्रद और हानिप्रद स्थितियों का सामना करना पड़ता है.

उद्देश्य

- अन्य पृष्ठभूमियों के व्यक्तियों की जगह स्वयं को रख कर प्रतिभागियों को सभी धर्मों या कोई भी धर्म न मानने वालों के लिए मानव अधिकारों/धर्म या आस्था की आजादी के महत्व से अवगत करवाना.
- अन्य धर्मों या आस्थाओं के व्यक्तियों को उनके जीवन में किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, इस बारे में उन्हें जागरूक करना.
- यह दिखाना कि किस तरह धर्म/आस्था और अन्य पहचानें जैसे लिंग या वर्ग एक दूसरे को काटतीं हैं, जिसके चलते कुछ लोगों को कई तरह की प्रतिकूलताओं का सामना करना पड़ता है.

संसाधन

- कोई कक्ष या स्थान जिसमें इतनी जगह हो कि प्रतिभागी एक ओर एक-दूसरे के बगल में पंक्ति में खड़े हो सकें और कक्ष के दूसरी ओर करीब 15 छोटे कदम बढ़ सकें.
- प्रतिभागियों को देने के लिए फोटोकॉपी किए हुए कैरेक्टर कार्ड.
- पढ़े जाने वाले कथनों की सूची.

पूर्व तैयारी

कैरेक्टर कार्डों और कथनों को इस प्रकार तैयार करें:

- शुरुआत के लिए, मानकीकृत कार्डों और कथनों का सेट चुनें. कई अलग-अलग क्षेत्रों के लिए उपयुक्त मानकीकृत कार्ड और कथन, सत्र के लिए दी जानी वाली सामग्री में उपलब्ध हैं. उस सेट का चुनाव करें जो आपके भौगोलिक और सांस्कृतिक सन्दर्भों में सबसे उपयुक्त हो.

अपने क्षेत्र के लिए **चरित्र और कथन** आपको यहाँ मिल जाएँगे.

फिर:

- चुनें कि किन चरित्रों का उपयोग करना है. हर मानक सेट में लगभग 30 चरित्र कार्ड्स दिए गए हैं जिन्हें आप संपादित और प्रिंट कर सकते हैं. आपको प्रति प्रतिभागी एक पात्र की आवश्यकता होगी. चरित्रों की सर्वाधिक प्रासंगिकता और विविधता के आधार पर चुनें कि किन कार्ड्स का उपयोग करना है. चरित्रों का चुनाव और अनुकूलन कैसे करें इस बारे में अधिक पूर्ण मार्गदर्शन दस्तावेज़ों में मिल जाएगा.
- उन कथनों को चुनें जिनका उपयोग आप करेंगे. आपको पढने के लिए 12-15 कथनों की ज़रुरत होगी. अपने देश के संदर्भ में प्रासंगिक कथनों का चुनाव मानकीकृत सूची से करें.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 8 मिनट

- यह समझाएं कि अब हम इस पर विचार करेंगे कि हमारे समुदायों में किनके लिए अनुकूल स्थितियां हैं और किनके लिए प्रतिकूल और ये उनके जीवन को किस तरह प्रभावित करतीं हैं.
- यह समझाएं कि सभी प्रतिभागी एक सरल रोल प्ले अभ्यास करेंगे. हर एक को एक पात्र बनाया जायेगा. वे कमरे की एक दीवार की ओर अपनी पीठ कर एक पंक्ति में खड़े होंगें. उन्हें केवल यह करना है कि यदि उनका पात्र आपके किसी कथन से सहमत है तो वह एक कदम आगे बढ़ जायेगा.
- चरित्रों का बिना किसी क्रम विशेष के वितरण करें और लोगों से अपना चरित्र गुप्त रखने को कहें. इससे फ़र्क नहीं पड़ता कि पुरुष को स्त्री का चरित्र मिला है या स्त्री को पुरुष का.
- लोगों को अपना पात्र बनने के लिए कुछ मिनट दीजिये. इस हेतु उनसे निम्न प्रश्नों पर विचार करने को कहिये.
  यह कल्पना करें कि आप वह पात्र हैं, जिसका कार्ड आपको दिया गया है:
  - आपका बचपन कैसा था?
  - आपका रोज़मर्रा का जीवन कैसा है - एक सामान्य दिन में आप क्या करतें हैं, आपका सामाजिक मेलमिलाप किन लोगों से होता है, आपकी आमदनी और जीवनशैली क्या है?
  - आपके क्या भय हैं और आपकी क्या आशाएं हैं?

अभ्यास का संचालन कैसे करें 35 मिनट

- **रोल प्ले** (15 मिनट)
  प्रतिभागियों को कमरे के एक तरफ, एक-दूसरे के बगल में एक पंक्ति में खड़ा होने को कहें. उन्हें बताएं कि आप कई कथन पढ़ेंगे. अगर उन्हें लगता है कि जिस पात्र की भूमिका वे निभा रहे हैं, वह किसी कथन से सहमत होगा तो उन्हें एक कदम आगे बढ़ना है. अगर उन्हें लगे कि वह असहमत होगा तो उन्हें अपने स्थान पर ही खड़े रहना है.
  यह जोर देकर कहें कि इस खेल में उनका लक्ष्य आगे कदम बढ़ाना नहीं है बल्कि अपने पात्र के जीवन के यथार्थों के अनुरूप आचरण करना है. अभ्यास के दौरान प्रतिभागियों को आपस में बातचीत करने की इज़ाज़त नहीं होगी.

कथनों को एक-एक करके ज़ोर से पढ़कर सुनाएँ. हर कथन के बाद थोड़ा रुकें ताकि सहभागियों को यह सोचने का समय मिले कि उनका चरित्र आगे बढ़ सकता है या नहीं. सारे कथन पढ़ चुकने के बाद सहभागियों को, वे कौन थे यह बोले बिना, कमरे में अन्य लोगों के सापेक्ष अपने-अपने स्थान नोट करने के लिए थोड़ा समय दें.

- **समग्र चर्चा** (20 मिनट)
  सहभागियों से खुले छोर वाले प्रश्न पूछें, जैसे ये. (हर प्रश्न के एक या दो उत्तर लें, ताकि सुनिश्चित हो सके कि आपके पास अंतिम दो प्रश्नों के लिए समय हो.)
  - अभ्यास के दौरान क्या हुआ?
  - आपको आगे बढ़ने या आगे न बढ़ पाने पर कैसा लगा?
  - लोगों के बीच बढ़ते अंतर को देख कर आपको कैसा लगा?
  - अपनी भूमिका निभाना - किसी दूसरे व्यक्ति की जगह लेना - कितना आसान या कितना कठिन था?
  - क्या ऐसा कोई क्षण था जब आपको लगा कि आपके पात्र के धर्म या आस्था की आजादी सहित अन्य मूल मानव अधिकारों को नज़रअंदाज़ किया जा रहा है? कब?

  सबसे पूछें कि उनका पात्र या भूमिका क्या थी.
  - क्या कमरे में आपके अपने-अपने स्थान हमारे समाज में असमानता की वास्तविकता को दर्शाते हैं? कौन पीछे छोड़ा जा रहा है - महिलाएँ, अल्पसंख्यक, गरीब लोग?
  - इस स्थिति का लोगों की जिंदगियों के लिए क्या नतीजा होता है?

अभ्यास का समापन कैसे करें 2 मिनट
यह कहकर समापन करें कि मानव अधिकार समझौते कहते हैं कि हम अधिकारों और गरिमा के मामले में जन्म से समान हैं - यानी हम एक ही रेखा पर शुरुआत करते हैं. लेकिन, उदाहरण के तौर पर, हमारी धार्मिक या आस्था की पहचान या हमारी सामाजिक स्थिति के आधार पर अथवा हम पुरुष हैं या स्त्री इस आधार पर हमारी समानता को अस्वीकार किया जाता है जिससे हमारे जन्म लेने के पल से ही हमारे जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ने लगता है. बहुत से लोग पीछे छूट जाते हैं.

4. ऊर्जावान: सभी लोग कुर्सियां बदलें 10 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण
जो प्रतिभागी सुविधादाता द्वारा पढ़े गए कथनों से सहमत हैं वे अपनी कुर्सियों की अदलाबदली करेंगे.

उद्देश्य
उर्जा का पुनर्संचार करते हुए यह देखने में लोगों की मदद करना कि विभाजनों के बाद भी हममें बहुत सी समानताएं हैं.

पूर्व तैयारी
नीचे दी गई सूची में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करते हुए पढ़ने के लिए कथन तैयार करें.

अभ्यास का परिचय कैसे दें
सभी को एक गोले में बैठने को कहें. कहें कि इससे पहले कि हम एक अधिक गंभीर चर्चा पर जाएँ, हम एक संक्षिप्त और मज़ेदार अभ्यास से शुरुआत करेंगे. कहें कि आप एक कथन पढ़कर सुनाएँगे और उससे सहमत हर व्यक्ति को कुर्सियों की अदला-बदली करनी है.

अभ्यास का संचालन कैसे करें

इन कथनों को पढ़ें:

- वे सब लोग जो खाना *(कोई स्थानीय व्यंजन जो सभी समुदायों के लोगों में लोकप्रिय हो)* पसंद करते हैं, वे कुर्सियां बदल लें.
- वे सब लोग जो *(कोई स्थानीय संगीतकार जो सभी समुदायों के लोगों में लोकप्रिय हो)* को पसंद करते हैं, वे कुर्सियां बदल लें.
- वे सब लोग जो *(कोई स्थानीय स्पोर्ट्स टीम जो सभी समुदायों के लोगों में लोकप्रिय हो)* को पसंद करते हैं, वे कुर्सियां बदल लें.
- वे सब लोग जो *(कोई टीवी कार्यक्रम जो सभी समुदायों के लोगों में लोकप्रिय हो)* देखना पसंद करते हैं, वे कुर्सियां बदल लें.
- जिन्हें धूप अच्छे लगती है वे कुर्सियां बदल लें.
- जो बारिश होने पर खुश होते हैं, वे कुर्सियां बदल लें.
- जो ऐसे शांतिपूर्ण समुदाय में रहना चाहते हैं, जहाँ सभी लोग एक-दूसरे को स्वीकार करें, वे कुर्सियां बदल लें.

अभ्यास का समापन कैसे करें

सभी को भाग लेने के लिए धन्यवाद दें और कहें कि ऐसा लगता है कि हम सब में कई चीज़ें समान हैं और हमारे कुछ सपने भी साझा हैं.

5. विचार-विमर्श अभ्यास: हमारी सामाजिक पहचानें 40 मिनट

समग्र चर्चा

उद्देश्य

प्रतिभागियों की यह समझने में मदद करना कि अन्य धार्मिक/आस्था-आधारित पहचानों वाले लोगों और हमारे बीच कई समानताएं होती हैं और यह भी कि पहचानों और कमजोर होने में क्या संबंध है.

आवश्यक संसाधन

- फ्लिप चार्ट शीट जिस पर 10 'पहचान' लिखी हों.
- सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुतियों की स्लाइड 3, या एक फ्लिप चार्ट शीट जिस पर उक्त स्लाइड की विषय-वस्तु लिखी हो.

पूर्व तैयारी

- **10 पहचान चुनें और एक फ्लिप चार्ट शीट तैयार करें जिस पर वे पहचान लिखी हों**
  इस सूची में हमारी 15 संभव 'पहचान' लिखी हैं. समूह के लिए जिन चीज़ों पर चर्चा करना सबसे प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हो उनके आधार पर इनमें से 10 पहचानों को अपने सहभागियों द्वारा चर्चा के लिए चुन लें. चर्चा हल्की रखने के लिए और यदि लोगों को चर्चा के प्रश्न अत्यधिक संवेदनशील लगें तो उन्हें बोलने हेतु 'सुरक्षित' विकल्प प्रदान करने के लिए, अपने संकलन में खेल और संगीत जैसी 'मज़ेदार' पहचानों को शामिल करना न भूलें. ऐसी कोई भी पहचान शामिल न करें जो प्रक्रिया को बेपटरी करके उग्र बहसों को जन्म देती हो - मुद्दों पर बहस इस अभ्यास का उद्देश्य नहीं है.

  पहचानें
  - धर्म या आस्था
  - लिंग
  - आप किस फुटबॉल या किसी दूसरे खेल के क्लब के समर्थक हैं
  - नस्ल/जातीयता
  - राष्ट्रीयता
  - संगीत में रूचि
  - पारिवारिक स्थिति
  - शैक्षणिक स्तर
  - शौक
  - वर्ग/आर्थिक स्तर
  - जाति
  - उम्र
  - प्रथम भाषा
  - यौन उन्मुखीकरण
  - शक्तता/अशक्तता

- **अपनी चाक्षुष सहायक सामग्री तैयार करें**
  आपके द्वारा चुनी गई 10 पहचानों को एक फ्लिप चार्ट शीट पर लिख लें. अगर आप पावरपॉइंट का उपयोग नहीं कर रहे हैं तो एक और फ्लिप चार्ट शीट तैयार करें, जिसमें पावरपॉइंट स्लाइड 3 में दिए गए चर्चा हेतु प्रश्न लिख लें.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 4 मिनट

- लोगों से जोड़ियाँ बनाने और अन्य जोड़ियों से कुछ दूर खिसक जाने को कहें. अगर वे बैठ सकें तो बेहतर होगा परन्तु यह ज़रूरी नहीं है.

- अभ्यास का परिचय देते हुए निम्न बातें समझाएं:
  अक्सर हम उन चीज़ों पर फ़ोकस करते हैं जो हमें अलग करती हैं. जैसे, जब हम धर्म के बारे में सोचते हैं तो हम अक्सर 'उनके', यानी दूसरे धर्मों के लोगों के बारे में और 'हमारे' यानी मेरे जैसी आस्थाओं और परंपराओं वाले लोगों के बारे में सोचते हैं. धार्मिक पहचान बहुत शक्तिशाली हो सकती हैं. पर हममें से हर व्यक्ति की ऐसी कई पहचान होती हैं जो हमें वह बनाती हैं जो हम हैं - जैसे (स्थानीय भाषा) का वक्ता होना, (प्रांत) से होना या (फ़ुटबॉल क्लब) का उत्साही प्रशंसक होना! अब हम एक ऐसा अभ्यास करने जा रहे हैं जो हमें हमारी विभिन्न पहचानों के बारे में और वे अन्य लोगों की पहचानों से किस प्रकार संबंधित हैं इस बारे में सोचने में मदद देगा.

  फ्लिप चार्ट/पावरपॉइंट स्लाइड 3 से 10 पहचानें और चर्चा हेतु प्रश्न पढ़ें.

  चर्चा हेतु प्रश्न
  - आप स्वयं को कैसे देखते हैं, इस पर आपकी पहचान के किन भागों का सबसे अधिक प्रभाव होता है?
  - दूसरे आपको किस रूप में देखते हैं, उस पर आपकी पहचान के किन भागों का सबसे अधिक प्रभाव होता है?
  - आपकी दृष्टि में आपकी पहचान के किस भाग के कारण आपको प्रतिकूलताओं का सामना करना पड़ता है या विशेषाधिकार प्राप्त होता है?

अभ्यास का संचालन कैसे करें 35 मिनट

- **विचार करें** (5 मिनट)
  सभी से अनुरोध करें कि वे अपनी पहचान के बारे में व्यक्तिगत रूप से 5 मिनट तक सोचें और स्क्रीन पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर कैसे देंगे, इस पर विचार करें.

- **जोड़ियाँ बनाएं** (10 मिनट)
  लोगों से कहें कि वे जोड़ियां बना कर दिए गए प्रश्नों पर 10 मिनट के लिए विचार करें. यह जोर देकर कहें कि किसी के लिए ऐसी कोई बात कहना ज़रूरी नहीं है जिसे वे अत्यंत निजी समझते हैं - उन्हें वहीं बातें साझा करनी हैं जो वे सहजता से कर सकते हैं.

- **साझा करें** (20 मिनट)
  सभी को समग्र चर्चा में वापस लाएँ. लोगों से उनके विचार समूह से साझा करने को कहें. सभी लोग स्वेच्छा से विचार साझा करेंगे! इस काफ़ी व्यक्तिगत चर्चा में एक सुनने का लहज़ा बनाए रखना न भूलें. वैसे तो यह आम है कि लोग दूसरों की कहानी की प्रतिक्रिया में अपने खुद के एहसास या अनुभव साझा करते हैं, पर लोगों को दूसरों के अनुभवों की आलोचना न करने दें.

अभ्यास का समापन कैसे करें 1 मिनट

अपनी बातें साझा करने के लिए सबका धन्यवाद करें और कहें कि आपको आशा है कि इस अभ्यास से सभी को अपनी पहचान के विभिन्न पहलुओं के बारे में सोचने में मदद मिली होगी!

6. अंतिम टिप्पणियां: पहचानें और रुढीबद्ध धारणाएं 8 मिनट

प्रस्तुति

विवरण
इस सत्र हेतु अंतिम टिप्पणियां, एक लघु प्रस्तुतीकरण के रूप में हैं, जो इस सत्र के अभ्यासों के सूत्रों को एक-दूसरे से जोड़ती है. प्रस्तुति में कुछ सैद्धांतिक तत्व और चेंजमेकर कहानियाँ शामिल है.

उद्देश्य
इस सत्र के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर जोर डालना: यह कि सभी की कई पहचानें होती हैं और उन्हें उन पहचानों के आधार पर अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं का सामना करना पड़ता है, यह कि यह महत्वपूर्ण है कि हम 'दूसरों' के बारे में यह न सोचें कि उनकी केवल एक पहचान है जो उनके बारे में सब कुछ बताती है.

संसाधन

- अंतिम टिप्पणियों की स्क्रिप्ट इस मार्गदर्शिका के पृष्ठ 75 पर है.
- यह स्क्रिप्ट सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 4 से मैच करता है और इन स्लाइड्स हेतु वक्ता की टिप्पणियों में शामिल है.
- इस स्क्रिप्ट का संपादन-योग्य संस्करण, सत्र के लिए दिए गए संसाधनों में उपलब्ध है.

पूर्व तैयारी
स्क्रिप्ट और पावरपॉइंट स्लाइडों को पढ़ें और अगर चाहें तो उन्हें अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए उनमें बदलाव करें (या स्लाइडों के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की फ्लिप चार्ट शीटें बनाएं). स्लाइडों/फ्लिप चार्ट शीटों के साथ प्रस्तुतीकरण देने का अभ्यास करें.

स्रोत
सौभाग्य पात्र: स्टार अभ्यास से अनुकूलित: जॉर्ज लेकी, फ़ेसिलिटेटिंग ग्रुप लर्निंग, पे.109.

आगे की ओर एक कदम: ईयू कमीशन के कम्पास मैन्युअल और एजुकेशन फॉर पीस की प्रशिक्षण सामग्री से अनुकूलित. http://www.educationforpeace.com/english/forb.php

हमारी सामाजिक पहचानें: मिशिगन विश्वविद्यालय के समावेशिता अध्ययन कार्यक्रम, सामाजिक पहचानें व्हील, से अनुकूलित. https://sites.lsa.umich.edu/inclusive-teaching/social-identity-wheel/)

प्रस्तुति स्क्रिप्ट

पहचानें और रुढीबद्ध धारणाएं

सत्र 3 अंतिम टिप्पणियां की प्रस्तुति के लिए यह स्क्रिप्ट सत्र की स्लाइड 4-13 द्वारा सचित्र है.

इस सत्र में हमने यह पड़ताल की कि स्वयं को और दूसरों को देखने के हमारे तरीकों और दूसरों के साथ हमारे व्यवहार को हमारी विभिन्न पहचानें किस तरह प्रभावित करतीं हैं. हमने हमारी कई पहचानों के बारे में भी सोचा, और इस बारे में भी कि कैसे ये पहचानें धार्मिक सीमाओं के पार भी अक्सर साझा होती हैं. समाज में हिंदू, मुस्लिम और नास्तिक महिलाओं की कई मुश्किलें और चुनौतियाँ समान हैं, साथ ही अशक्त बौद्ध, ईसाइयों और यहूदियों की भी, या किसी भी धर्म के उन लोगों की जिन्हें अधिक शिक्षा नहीं मिली है. हममें बहुत सी समानताएं भी हैं और भिन्नताएं भी.

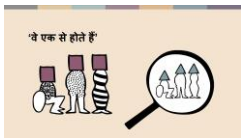

अक्सर, धार्मिक पहचानों का उपयोग हमारे बीच खाइयाँ बनाने के लिए होता है. इसके नतीजे में हम दूसरे समुदायों के लोगों को ऐसे देखने लगते हैं मानों उनकी केवल एक ही पहचान हो. हमें लगता है कि हर यहूदी, मुसलमान और बौद्ध एक ही तरह से सोचता, महसूस करता और व्यवहार करता है.

लोग आमतौर पर एक-दूसरे पर अपनी रुढीबद्ध धारणाओं के आधार पर लेबल चस्पा कर देते हैं. अक्सर हम जाने-अनजाने यह मान लेते हैं कि किसी विशिष्ट धार्मिक या आस्था-आधारित पहचान वाले सभी व्यक्ति एक से हैं - चाहे फिर उनकी आयु, लिंग, वर्ग, राष्ट्रीयता या राजनैतिक सोच कुछ भी हों और चाहे वे अपनी धार्मिक आस्थाओं और अभ्यास का पालन करते हों या नहीं.

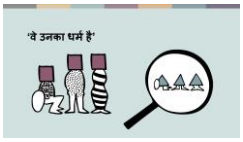

लोगों को उनके धर्म से परिभाषित होने देखना - यानी यह मान लेना कि उनकी बाकी हर बात भी उनके धर्म से ही तय होती है - भी आम है. इसलिए, यदि समूह का एक व्यक्ति कुछ गलत करता है तो यह ज़रूरी इसलिए है कि उनका धर्म बुरी चीज़ों का समर्थन करता है या वह अनैतिक है.

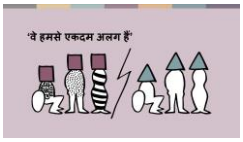

जब अलग-अलग समुदायों के लोगों के बीच आपसी संबंध नहीं होते तो यह मान लेना आसान हो जाता है कि 'दूसरे लोग' 'हम'से पूरी तरह अलग हैं - उन 'दूसरों' की रुचियाँ, ज़रूरतें, मान्यताएं और एहसास 'हम'से अलग हैं. इस आधार पर संभव है कि हम यह सोच लें कि उनके पास ऐसी कोई अंतर्दृष्टि या समझदारी नहीं है जिससे हम कुछ सीख सकते हैं, या यहाँ तक कि ऐसा भी संभव है कि हम सांस्कृतिक या नैतिक पैमाने पर उन्हें खुद से कमतर मान लें.

इसकी जगह, अगर हम समाज के अन्य समूहों के लोगों को एक 'संपूर्ण व्यक्ति' के रूप में देखें, जिनकी कई पहचानें और जीवन-अनुभव हैं (जिनमें से कई हमारे साथ साझा भी है) तब शायद हम नई दृष्टि से उन्हें देख सकेंगे, उनके प्रति सहानुभूति रख सकेंगे और उनसे जुड़ सकेंगे. हम सीमाओं को लांघ कर उनसे साथ रिश्ते बनाने के तरीके भी ढूंढ सकेंगे.

कुछ पहचानें समाज में पिछड़ने का कारण बनती हैं, वहीं कुछ ऐसी हैं जिनसे हमें विशेषाधिकार मिलते हैं. हमारे विशेषाधिकारों को पहचानने से हमें यह पहचानने में मदद मिल सकती है कि जब हम एक ऐसी समस्या का हिस्सा हैं जो दूसरों के पिछड़ने का कारण है. और हमारी कई पहचानों को पहचानने से हमें हमारे सामने मौजूद पिछड़ाव के कारणों और भेदभाव के विरुद्ध खड़े होने तथा भेदभाव का सामना कर रहे दूसरों के साथ मिलकर खड़े होने की संभावनाओं और अवसरों को देखने में मदद मिल सकती है

चेंजमेकर कहानियाँ

एक ईसाई युवा सामेह और एक मुस्लिम युवती हाना, मिस्र के काना गवर्नरेट (राज्यपालाधीन क्षेत्र) के हिजाज़ा गाँव से हैं. वे गाँव के मुस्लिम और ईसाई समुदायों के बीच की खाइयाँ पाटने के लिए साथ मिलकर काम करते हैं.

हाना कहती है,

> "मैंने ऐसे बच्चे देखें हैं जो दूसरे धर्म के बच्चों के साथ बात करने या उनके साथ बैठने के लिए भी तैयार नहीं थे."

सामेह कहते हैं,

> "मुझे महसूस हुआ कि साथ मिलकर इससे निपटना और उनके नज़रिये बदलने की कोशिश करना आसान था. हम चाहते थे कि इस इलाके के बच्चे बदलाव के बीज बनें."

उन्हें पता चला कि बच्चे फ़ुटबॉल खेलना चाहते थे, पर फ़ुटबॉल खेलने की एकमात्र उपयुक्त जगह कैथलिक चर्च के बाहर वाले मैदान पर थी. दोनों स्थानीय पुजारी फ़ादर फ़्रांसिस के पास गए; वे बहुत मददगार थे और उन्होंने गतिविधियाँ आयोजित करने में दोनों की काफ़ी मदद की.

वे कहते हैं,

> "सामेह और हाना इस गाँव में जो कर रहे हैं हमें उसकी बहुत ज़रूरत है. हमें उम्मीद है कि ऐसा ही काम अन्य गांवों में भी होगा."

शुरुआत में, मुस्लिम बच्चे वहाँ नहीं जाना चाहते थे, पर आखिरकार वे सभी हाना की अगुआई में वहाँ आ गए.

> वे कहती हैं, "मैंने धीरे-धीरे, लेकिन अटल ढंग से, बच्चों को साथ मिलाने की कोशिश की." पहले मुस्लिम लड़के वहां जाने को राजी नहीं थे परन्तु बाद में वे हाना की बात मानने के लिए तैयार हो गए. "धीरे-धीरे मैंने बच्चों में आपसी मेलजोल बढ़ाने का प्रयास किया," वो कहती है. "पहले तो उन्होंने मना किया परन्तु कदम-दर-कदम हम आगे बढ़ते गए और हमनें नए मिश्रित समूह बनाये."

हाना और सामेह ने बच्चों के माता-पिता को आकर समूह की गतिविधियाँ देखने का बुलावा दिया. बच्चे आपस में जिस तरह व्यवहार कर रहे थे उस पर आम तौर पर माँओं ने सबसे पहले प्रतिक्रिया दी.

सामेह कहते हैं,

> "हमें बदलना होगा, और बदलाव की शुरुआत किसी विचार में विश्वास से होती है"

और हना आगे कहती हैं,

> "हम दोनों इसके जीते-जागते उदाहरण हैं. हम लोग अलग-अलग धर्मों के हैं परन्तु साथ मिलकर काम करते हैं. हम एक दूसरे के पूरक हैं और हमारा साझा लक्ष्य है. बच्चे हमारा उद्देश्य हैं."

निष्कर्ष

आखिरकार, हम सभी चाहते हैं कि जीवन का सूप समृद्ध और स्वादिष्ट हो! हम सभी एक ही मानव परिवार के सदस्य हैं और हम सभी की मूलभूत ज़रूरतें व अधिकार एक जैसे हैं. जब हम हर किसी के अधिकारों के लिए साथ मिलकर काम करेंगे, तो हम कहीं अधिक प्रभावी होंगे.

अगले दो सत्रों में हम धर्म या आस्था की आज़ादी के उल्लंघनों के बारे में और अधिक सीखेंगे और यह देखेंगे कि हमारे समुदाय में इस तरह के उल्लंघन कहाँ और कैसे होते हैं. हमें आशा है कि यह ज्ञान स्थानीय चेंजमेकर्स बनने के अगले कदम उठाने में हमारी मदद करेगा.

स्रोत

तादुदिया (Taadudiya), www.taadudiya.com

नोटः हाना और सामेह पर एक यूट्यूब फिल्म, जिसमें वे अपनी कहानी को अरबी भाषा में सुनते हैं, अंग्रेजी सब-टाइटल्स के साथ यहाँ उपलब्ध है: What is your story? Egypt (English Subtitles)

बड़ी ही दर्दनाक बात है कि 2019 में एक ट्रैफ़िक दुर्घटना में हाना की मृत्यु हो गई.

सत्र 4

धर्म या आस्था की आजादी के उल्लंघन

सत्र अवलोकन

यह सत्र सहभागियों का परिचय FORB के विभिन्न प्रकार के उल्लंघनों से और इस बात से कराता है कि दुनिया के विभिन्न भागों में सभी धर्मों के लोग और नास्तिक लोग उनसे किस तरह प्रभावित होते हैं. इससे, सहभागियों के सामने हो सकने वाले आम FORB उल्लंघनों को पहचानने की उनकी योग्यता भी मज़बूत होती है.

सत्र की शुरुआत उल्लंघनों के बारे में एक 20 मिनट की प्रस्तुति से होती है. इस प्रस्तुति के कुछ भाग आपकी परिस्थितियों में विवादास्पद हो सकते हैं. आपके सहभागियों के साथ रचनात्मक ढंग से किस-किस चीज़ की चर्चा करना सुरक्षित और संभव है इस बात के आपके आंकलन के आधार पर आपको प्रस्तुति को अनुकूलित करने की ज़रूरत पड़ेगी.

प्रस्तुतिकरण के पश्चात सत्र का स्वरूप अत्यंत संवादात्मक होगा जिसमें 75 मिनट का नाट्य अभ्यास होगा जिसमें सभी प्रतिभागी शामिल होंगे. इसका समापन नाईजीरिया के दो चेंजमेकर्स की कहानी से होगा.

सीखने के उद्देश्य

यह सत्र विभिन्न प्रकार के FORB उल्लंघनों एवं विश्व स्तर पर FORB की स्थिति की जानकारी बढ़ाने एवं उल्लंघनों की पहचान करने के कौशल में वृद्धि करने पर केन्द्रित है.

इस सत्र के अंत तक प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगे:

- विभिन्न प्रकार के FORB उल्लंघनों का वर्णन करना
- वास्तविक स्थितियों में विशिष्ट FORB उल्लंघनों की पहचान करना
- यह समझ पाना कि सभी धर्मों को मानने वाले, और किसी भी धर्म को न मानने वाले भी, FORB उल्लंघनों से प्रभावित होते हैं और उनकी पीड़ा के प्रति सहानुभूति रखना.

सत्र की अंतर्वस्तु और समय

स्वागत एवं परिचय लोगों को याद दिलाना कि FORB क्या है और सत्र का परिचय देना.	5 मिनट
प्रस्तुति: FORB के उल्लंघनों को समझना एक वार्ता के माध्यम से FORB उल्लंघनों के विभिन्न प्रकारों की जानकारी विश्व के विभिन्न क्षेत्रों के उदाहरण सहित दी जाएगी.	20 मिनट
पूर्ण चर्चा प्रस्तुतिकरण पर विचार एवं चर्चा करने का अवसर.	10 मिनट
नाट्य अभ्यास: दो मिनट अवधि के FORB पर लघु नाटक इससे प्रतिभागियों को FORB उल्लंघनों को पहचानने का अभ्यास करने का एक मनोरंजक व संवादात्मक अवसर प्राप्त होगा.	80 मिनट
अंतिम टिप्पणियां और चेंजमेकर कहानियाँ यह कहानी सत्र को एक सूत्र में बांधती है.	5 मिनट
कुल समय	**2 घंटे**

तैयारी करें

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप सत्र की तैयारी करें. याद रखें - आपको अपने समूह की बेहतर समझ है! आपका स्वागत है कि आप सत्र के किसी भी हिस्से को अपनी समूह की ज़रूरतों के अनुसार अनुकूलित और संशोधित करें.

इस सत्र के लिए संसाधन

पृष्ठ 16 पर सूचीबद्ध प्रत्येक सत्र के लिए मानक संसाधनों के अतिरिक्त, इस सत्र को संचालित करने के लिए आपको निम्नलिखित संसाधनों की आवश्यकता होगी:

- इतनी संख्या में लघु नाटक के परिदृश्य ताकि लगभग छः प्रतिभागियों के प्रत्येक समूह को उनके विशिष्ट परिदृश्य की दो-दो प्रतियां उपलब्ध हों सकें.

इस सत्र के **सहायक संसाधन** यहाँ हैं.

वैकल्पिक अतिरिक्त - अपना आत्मविश्वास बढ़ाएं!

तैयारी के एक हिस्से के रूप में, क्यों न आप यह लघु फ़िल्म देखें ताकि आप धर्म या आस्था की आजादी के उल्लंघन के बारे में और अधिक जान सकें?

फ़िल्में

कक्ष तैयार करना

इस सत्र के लिए बेहतर होगा कि प्रारंभ में कुर्सियां सामने की ओर मुंह करते हुए अर्धवृत्त में लगाई जाएं. एक बड़ा कमरा (या अतिरिक्त कमरे) होना भी बेहतर है ताकि समूह अपने ड्रामा का अभ्यास एक-दूसरे से थोड़ा दूर रहकर कर सकें.

'प्रस्तुति'

विस्तृत सत्र योजना

1. स्वागत एवं परिचय 5 मिनट

संक्षिप्त वार्ता

विवरण व उद्देश्य
यह संक्षिप्त परिचय सहभागियों को खुद को पाठ्यक्रम की प्रक्रिया की ओर उन्मुख करने में मदद देता है. यह उन्हें उन चीज़ों की याद दिलाता है जो उन्होंने सत्र 2 में FORB के बारे में सीखी थीं और सत्र 4 व 5 के फ़ोकस - अधिकार के उल्लंघन - को प्रस्तुत करता है.

संसाधन

- सत्र 1 से आधारभूत नियम वाली फ्लिप चार्ट शीट.
- सत्र 4 की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 3, या एक फ्लिप चार्ट शीट जिस पर ये शब्द लिखे हों **'विचार-विश्वास-संबध्दता-अभ्यास-प्रश्न-बदलाव-इंकार'**.

क्या कहें
सत्र में सभी का स्वागत करें और निम्नलिखित बिंदु अपने समूह के अनुसार अनुकूलित करके रखें.

- सत्र 2 में हमने जाना कि धर्म या आस्था की आजादी से क्या आशय है. क्या आपको वे महत्वपूर्ण शब्द याद हैं जिनके माध्यम से हमने FORB की व्याख्या की थी? (पहले देखें कि क्या समूह ये महत्वपूर्ण शब्द, *विचार-विश्वास-संबध्दता-अभ्यास-प्रश्न-बदलाव-इंकार बता पाता है या नहीं.* इसके बाद स्लाइड 3 दिखाएं.)
- हमने यह भी जाना कि FORB को कब सीमित किया जा सकता है. और यह भी कि आंतरिक स्वतंत्रताओं - सोचने, विश्वास करने और आस्थाओं के संबंध में अपने विचारों को बदलने की स्वतंत्रताओं को सीमित नहीं किया जा सकता लेकिन हमारे धार्मिक एवं आस्था संबंधी आचरणों को सीमित किया जा सकता है, यदि ये किन्हीं विशिष्ट तरीकों से अन्य लोगों के लिए हानिकारक हों. हमने यह भी जाना कि भेदभाव, जोर-जबरदस्ती एवं हिंसा भड़काने की अनुमति नहीं दी जा सकती.
- अगले दो सत्रों में हम धर्म या आस्था की आजादी के अधिकार के उल्लंघनों पर फ़ोकस करेंगे. इस सत्र में हम उल्लंघनों के प्रकारों पर और दुनिया भर से उनके उदाहरणों पर नज़र डालेंगे. इससे हमें यह समझने में मदद मिल सकती है कि कैसे सभी धर्मों और आस्थाओं को मानने वाले लोग सभी प्रकार के स्थानों पर प्रभावित होते हैं. अगले सत्र में हम हमारे समुदायों में ऐसे उल्लंघनों को मैप करने की कोशिश करेंगे.
- ये सत्र कठिन हो सकते हैं - इसलिए भी क्योंकि हम जो कहानियाँ सुनते हैं वे हमें कठिन व्यक्तिगत अनुभव याद दिला सकती हैं और इसलिए भी क्योंकि उठाए गए कुछ मुद्दे इस बारे में हमारे मौजूदा विचारों को चुनौती दे सकते हैं कि समाज में किसकी अनुमति होनी चाहिए और किसकी नहीं. ऐसी चीज़ें हो सकती हैं जिन पर हम समूह में सहमत नहीं होते हैं. इसलिए, इस सत्र में आइए हमारे आधारभूत नियम याद रखते हुए एक-दूसरे का खयाल रखें और एक-दूसरे की बात सुनें! *(आधारभूत नियमों वाली फ्लिप चार्ट शीट का उपयोग करके सहभागियों को याद दिलाएँ कि वे क्या हैं.)*
- उल्लंघनों की कहानियां सुनकर हम कुंठित और यहां तक कि निराश भी हो सकते हैं. लेकिन हमें यह ध्यान रखना होगा कि समस्याओं को समझने के बाद ही हम उन्हें सुलझाने और बदलाव लाने के लिए कुछ कर पाएंगे.

2. प्रस्तुति: FORB के उल्लंघनों को समझना 20 मिनट

प्रस्तुति

विवरण व उद्देश्य

यह प्रस्तुति FORB उल्लंघनों के विभिन्न प्रकारों के बारे में और दुनिया भर में FORB की स्थिति के बारे में सहभागियों के ज्ञान को बढ़ाने का लक्ष्य रखती है. यह ज्ञान इस सत्र और अगले सत्र का आधार है; अगले सत्र में सहभागी FORB संदर्भ विश्लेषण का कौशल विकसित करेंगे.

संसाधन

- प्रस्तुति की स्क्रिप्ट इस गाइड के पेज 85 पर है.
- यह स्क्रिप्ट सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 4-39 से मैच करता है और इन स्लाइड्स हेतु वक्ता की टिप्पणियों में शामिल है.
- इस स्क्रिप्ट का संपादन-योग्य संस्करण, सत्र के लिए दिए गए संसाधनों में उपलब्ध है.

पूर्व तैयारी

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप तैयारी करें. स्क्रिप्ट और पावरपॉइंट स्लाइडों को पढ़ें और अगर चाहें तो उन्हें अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए उनमें बदलाव करें (या स्लाइडों के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की फ्लिप चार्ट शीट बनाएं) और स्लाइडों/फ्लिप चार्ट शीट के साथ प्रस्तुतिकरण देने का अभ्यास करें.

सुझाव! लोगों से कहें कि वे आपका प्रस्तुतिकरण पूर्ण होने तक प्रश्न/टिप्पणियां न करें.

टिप्पणी

यह प्रस्तुतिकरण लंबा है और इसमें कई उदाहरण शामिल हैं. आप संभवतः ऐसे उदाहरणों को हटाना चाहेंगे, जो आपके समूह के लिए कम प्रासंगिक हों. आप अपने समूह के लिए सबसे कम प्रासंगिक लगने वाले उदाहरणों को भी हटाना चाह सकते हैं. स्क्रिप्ट में मुख्य संदेशों को मोटे अक्षरों में लिखा गया है. कृपया इन बिंदुओं को अपने भाषण में शामिल करें!

3. पूर्ण चर्चा 10 मिनट

समग्र चर्चा

विवरण व उद्देश्य

पिछले प्रस्तुतीकरण पर चर्चा से प्रतिभागियों को इस की बातों को समझना आसान होगा.

चर्चा का संचालन कैसे करें

इनपुट पर सामान्य टिप्पणियाँ और प्रश्न माँगें और फिर ये या इन जैसे प्रश्न पूछें:

- क्या ऐसी कोई बात थी जो आपको ज्ञात नहीं थी या जिसे सुनकर आपको आश्चर्य हुआ?
- प्रस्तुतीकरण की किस कहानी से आप आपने आप को सबसे ज्यादा जोड़ सके?
- हमारे संदर्भ में किस प्रकार के उल्लंघन सबसे अधिक समस्याएं उत्पन्न करते हैं?

15 मिनटों बाद पूर्ण चर्चा समाप्त कर दें. समझाएँ कि समूह अब एक अभ्यास के ज़रिए मुद्दों पर चर्चा करना और उनकी पड़ताल करना जारी रखेगा.

टिप्पणी

जो भी 'लेक्चर' देने लगे या गैर-मददगार ढंग से 'माहौल गर्म करने लगे' उसे टोक दें. सहभागियों को उनकी टिप्पणियों के लिए धन्यवाद कहें और वे जो महसूस कर रहे हैं उसे स्वीकारें, विशेष रूप से तब जब वह एहसास सदमे और असुरक्षा के अनुभवों से जन्मा हो. यदि आवश्यक हो तो लोगों को आधारभूत नियम याद दिलाएँ. बातचीत उस जगह पर वापस लाने की कोशिश करें जहाँ लोगों को सुरक्षा महसूस हो - जैसे कोई ऐसा प्रश्न पूछकर जो ऐसी महत्वपूर्ण चीज़ों पर फ़ोकस करता हो जिस पर लोग सहमत हो सकते हैं.

4. नाट्य अभ्यास: दो मिनट अवधि के FORB पर लघु नाटक
80 मिनट

सामूहिक अभ्यास

विवरण
इस अभ्यास में, विभिन्न समूह उन्हें मिले परिदृश्यों के आधार पर 2-2 मिनट के नाटक बनाते हैं और उनका अभ्यास करते हैं. ये परिदृश्य ऐसी स्थितियों का चित्रण करते हैं जिनमें विभिन्न तरीकों से FORB के उल्लंघन हो रहे हैं. उसके बाद ये नाटक समग्र चर्चा में प्रस्तुत किए जाते हैं और उन पर चर्चा की जाती है तथा सहभागी परिदृश्य में हुए FORB उल्लंघनों की पहचान करते हैं.

उद्देश्य
इस अभ्यास का उद्देश्य प्रस्तुतिकरण के सैद्धांतिक ज्ञान को FORB उल्लंघनों को पहचानने के व्यावहारिक कौशल में परिणत करना एवं प्रतिभागियों को उनके संदर्भ में उल्लंघनों पर विचार करने में समर्थ बनाना है.

संसाधन और पूर्व तैयारी

- यह तय करें कि आप कितने समूह बनाएंगे: 6-10 लोगों के 2-3 समूह आदर्श होंगे क्योंकि सभी परिदृश्यों को प्रस्तुत करने के लिए कम-से-कम छह पात्रों की ज़रुरत होगी. इस अभ्यास के लिए समयावधि का निर्धारण (अधिकतम 30 प्रतिभागियों) के अधिकतम तीन समूहों के आधार पर किया गया है. इससे अधिक समूह न बनाएं, जब तक कि आप सत्र की अवधि बढ़ाने की स्थिति में न हों!
- पांच नाट्य परिदृश्यों को चुनें. यह परिदृश्यों की आपके लिए प्रासंगिकता और समूहों की संख्या पर निर्भर करेगा. हर समूह को अलग परिदृश्य दिया जाना चाहिए. परिदृश्य इस मार्गदर्शिका के पृष्ठ 92-94 और सत्र के लिए संसाधनों की लिंक पर उपलब्ध हैं.
- आपने जिन परिदृश्यों को चुना है, उनमें से प्रत्येक के दो प्रिंट आउट निकाल लें.
- सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 40, या एक फ्लिप चार्ट जिस पर ये शब्द लिखे हों: भेदभाव, सरकारी प्रतिबंध, सरकार की विफलताएँ और हिंसा.

ड्रामा परिदृश्य
हैंडआउट यहाँ है.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 5 मिनट
निम्न बातें समझाएं:

- हम एक नाटक-आधारित अभ्यास करेंगे, जिससे हमें उन FORB उल्लंघनों को पहचनाने में मदद मिलेगी जिनसे हमारा सामना हो सकता है.
- हम समूहों में बँटने जा रहे हैं. हम लोग अलग-अलग समूहों में बंट जाएंगें. हर समूह को एक परिदृश्य मिलेगा, जो कि कुछ पात्रों के बीच घटे घटनाक्रम पर आधारित होगा. आपको अधिकतम 2 मिनट में उसे प्रस्तुत करना है!
- आपको नाटक तैयार करने और उसका अभ्यास करने के लिए 15 मिनट मिलेंगे. यह बहुत अधिक समय नहीं है इसलिए जल्दी से अपने बीच भूमिकाएं बाँट लें और फिर काम शुरू करें!
- 15 मिनट बाद आप शेष समूहों के सामने अपना नाटक प्रस्तुत करेंगे.
- अगर आप कहानी में कुछ और विवरण जोड़ना चाहें तो बेशक जोडें. परन्तु नाटक की अवधि 2 मिनट से ज्यादा नहीं होनी चाहिए.
- परेशान न हों! हमें केवल कामचलाऊ प्रदर्शन चाहिए, शानदार अदाकारी नहीं. अगर आप अपनी कहानी सुना पाते हैं तो आप सफल हैं!

समूहों में बांटें और परिदृश्य दें.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 75 मिनट

- **ड्रामा का अभ्यास करें** (15 मिनट)
  समूहों से अभ्यास शुरू करने को कहें! विभिन्न समूहों में जाकर शुरुआत करने में उनकी मदद करें.

टिप्पणी

इस अभ्यास में समय का हिसाब रखना बहुत महत्वपूर्ण है! अभ्यास का समय 15 मिनट से अधिक न होने दें, नहीं तो अभ्यास के महत्वपूर्ण प्रदर्शन/चर्चा भाग का समय घट जाएगा. प्रदर्शन/चर्चा अनुभाग के दौरान भी समय प्रबंधन महत्वपूर्ण है, ताकि प्रदर्शन करने वाले शुरुआती समूह बाद में आने वाले समूहों का समय न खा जाएँ.

- **प्रदर्शन एवं चर्चा** (50 मिनट)
  समय: 15 मिनट प्रति समूह प्रदर्शन के लिए और 5 मिनट का अतिरिक्त समय.
  हर समूह अपना दो मिनट का ड्रामा दो बार प्रस्तुत करता है. वे पहली बार उसे बिना किसी रोक-टोक के प्रस्तुत करते हैं. दूसरी बार, जब भी दर्शकों को कोई FORB उल्लंघन होता दिखेगा तो वे चिल्लाकर कहेंगे, 'रुको!'. तब ड्रामा रोक दिया जाना चाहिए (चरित्रों को वहीं-के-वहीं रहना चाहिए). पावरपॉइंट प्रस्तुतियों की स्लाइड 40 दिखाएँ और जिस व्यक्ति ने 'रुको!' कहा था उससे इस प्रश्न का संक्षेप में उत्तर देने को कहें:
  – यह किस प्रकार के उल्लंघन का उदाहरण है और उल्लंघन कौन कर रहा है (जैसे, भेदभाव या हिंसा रूपी सामाजिक शत्रुताएँ, सरकारी प्रतिबंध या लोगों की सुरक्षा करने में सरकार की विफलताएँ)?

  ड्रामा तब तक जारी रखें जब तक अगला व्यक्ति रुको न बोले और तब ऊपर वाले प्रश्न दोहराएँ. हर ड्रामा में तीन उल्लंघन हैं. आप वे उल्लंघन ड्रामा परिदृश्यों के सुविधादाता संस्करण में देख सकते हैं जो पेज 92-94 पर हैं.

  अगर किसी समूह द्वारा दोनों प्रस्तुतियों के बाद भी समय बचे, तो इन प्रश्नों के ज़रिये अधिक व्यापक चर्चा प्रारंभ करें:
  – इस परिदृश्य में क्या अलग होना चाहिए? किन संस्थानों या व्यक्तियों को अलग ढंग से कार्य करना चाहिए या किन कानूनों अथवा नियमों को अलग होना चाहिए?
  – चीज़ें बदलने के लिए कौन सकारात्मक ढंग से हस्तक्षेप कर सकता था? क्या समुदाय का कोई सदस्य, कोई कार्यकर्ता, कोई संगठन या कोई निर्णयकर्ता कोई बदलाव ला सकता था?

  सख्ती से प्रत्येक समूह के प्रदर्शन/चर्चा के लिए 15 मिनट से अधिक समय न दें! (अगर केवल दो समूह हों तो आप इस समयावधि को बढ़ा सकते हैं.) समूहों को बीच में ही रोकने के लिए क्षमा मांगें और यह स्पष्ट करें कि सभी को अपना प्रदर्शन करने का मौका मिलना चाहिए. हर समूह के 15 मिनट समाप्त होने कर तालियों से उनका अभिनन्दन करना न भूलें!

- **समग्र रूप से साझा करने का समय** (10 मिनट)
  जब सभी समूह अपने-अपने परिदृश्य प्रस्तुत करके चर्चा कर चुके हों, तो सभी को उनके प्रदर्शनों के लिए एक बार फिर बधाई दें. उसके बाद, इन प्रश्नों के आधार पर एक व्यापक चर्चा शुरू करें:
  – क्या जिस तरह के उल्लंघन हमने नाटकों में देखे, वैसे उल्लंघन हमारे समुदाय में कभी-कभी होते हैं?
  – इनसे लोगों और संपूर्ण समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?

  लोगों को अपनी कहानियां और अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें, बशर्ते ऐसा करने में वे सहज महसूस करें. जब सहभागी व्यक्तिगत कहानियाँ साझा करें, तो सामान्यीकरण करने वाले प्रश्न पूछने की कोशिश करें - संपूर्ण समुदाय के लिए इस प्रकार के अनुभव क्या अर्थ रखते हैं? यह निष्कर्ष निकालने की कोशिश करें कि उल्लंघनों से अंत में सभी को नुकसान होता है क्योंकि वे पूरे समाज के लिए तनाव और जोखिम पैदा करते हैं.

5. अंतिम टिप्पणियां और चेंजमेकर कहानियाँ 5 मिनट

संक्षिप्त वार्ता

विवरण व उद्देश्य

अंतिम टिप्पणियों का उद्देश्य लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए प्रेरित करना है कि बदलाव संभव है.

संसाधन

सत्र 4 की पावरपॉइंट प्रस्तुतियों की स्लाइड्स 41-44 या स्लाइड 41 का प्रिंटआउट.

क्या कहें

- जब हम उन समस्याओं की कहानियाँ साझा करते हैं जिनका सामना लोग हमारे समुदायों में करते हैं, तो हिम्मत हारना आसान हो जाता है. लेकिन बदलाव संभव है - उन परिस्थितियों में भी जहाँ अत्यधिक घृणा और हिंसा मौजूद है! आइए, उम्मीद की एक आखिरी कहानी के साथ समापन करें.
- पृष्ठ 95 पर दी गई पादरी जेम्स और इमाम अशफा की कहानियां पढ़ कर सुनाएं (यह सत्र के डाउनलोड किये जा सकने वाले संसाधनों में भी उपलब्ध हैं).
- बदलाव करना एक धीमी लेकिन अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण प्रक्रिया है. बदलाव लाना एक धीमी परन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है. इसकी शुरुआत होती है धर्म या आस्था की आजादी की स्थिति को समझने से - न केवल हमारे लिए वरन हमारे देश और हमारे समुदाय के हर व्यक्ति के लिए.

प्रस्तुति स्क्रिप्ट

धर्म या आस्था की आजादी के उल्लंघनों को समझना

सत्र 4 की प्रस्तुति के लिए यह स्क्रिप्ट सत्र पावरपॉइंट की स्लाइड 4-39 द्वारा सचित्र है.

टिपण्णी: यह प्रस्तुतिकरण लंबा (20 मिनट से कुछ ही कम) है और इसमें कई उदाहरण शामिल हैं. आप संभवतः ऐसे उदाहरणों को हटाना चाहेंगे, जो आपके समूह के लिए कम प्रासंगिक हों. आप अपने समूह के लिए सबसे कम प्रासंगिक लगने वाले उदाहरणों को भी हटाना चाह सकते हैं. '... की कहानियाँ' अनुभागों में मुख्य संदेश बोल्ड अक्षरों में हाइलाइट किए गए हैं. कृपया इन बिंदुओं को अपने भाषण में शामिल करें! पावरपाइंट, मुख्य पावरपाइंट के प्रिंट आउट्स या संबंधित फ्लिप चार्ट चित्रणों का उपयोग करें ताकि आपके प्रतिभागियों को अंतर्वस्तु को समझने में सहायता मिले.

परिचय

सभी तरह के देशों में सभी तरह के लोग धर्म या आस्था की आजादी की कमी के कारण समस्याओं का सामना करते हैं. जो अलग-अलग होता है वह यह है कि कौन प्रभावित होता है, उल्लंघन की गंभीरता क्या है और कौन उन्हें कर रहा है.

इस प्रस्तुति में, हम भेदभाव, अधिकारों के प्रतिबंध और हिंसा के बारे में वास्तविक जीवन की कहानियाँ सुनने जा रहे हैं.

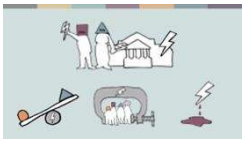

ये उल्लंघन राज्य और समुदाय के लोगों दोनों द्वारा किए जाते हैं. हम अक्सर इसे सरकारी उल्लंघन और सामाजिक शत्रुता के रूप में संदर्भित करते हैं. लेकिन उल्लंघन परिवार के भीतर और आस्था समुदायों के भीतर भी हो सकते हैं.

उल्लंघन का एक चौथा प्रकार भी है: समुदाय में उल्लंघन से लोगों की रक्षा करने में सरकार की विफलता. राज्य का यह कर्तव्य है कि वह अपने क्षेत्र में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को भेदभाव, उनके अधिकारों पर अनुचित प्रतिबंध और हिंसा से बचाए. कई राज्य ऐसा करने में विफल रहते हैं.

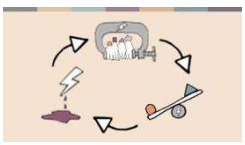

भेदभाव, अधिकारों पर प्रतिबंध और हिंसा आम तौर पर एक दूसरे से जुड़े होते हैं और एक दूसरे पर हावी होते हैं. उदाहरण के लिए, प्रतिबंध भेदभावपूर्ण हो सकता है और हिंसा में योगदान दे सकता है. और अक्सर सरकारी उल्लंघन और सामाजिक शत्रुता एक दूसरे में योगदान करते हैं, जिससे एक दुष्चक्र बनता है.

अल्पसंख्यकों के खिलाफ भेदभाव करने वाला सरकारी कानून समाज में असहिष्णुता को वैध बनाता है, जिसके परिणामस्वरूप समुदाय में भेदभाव, उत्पीड़न और हिंसा होती है. अगर अधिकारी समुदाय में होने वाले उल्लंघनों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं, तो लोगों को लगता है कि वे बच सकते हैं, और इससे भेदभाव, उत्पीड़न और हिंसा और भी बढ़ जाती है.

आइए, दुनिया के विभिन्न भागों में भेदभाव, उत्पीड़न और हिंसा पर कुछ वास्तविक कहानियों के माध्यम से एक नजर डालें. शायद इनमें से कुछ का संबंध ऐसी चीज़ों से हो सकता है जो आपने अनुभव की हों.

भेदभाव की कहानियां

भेदभाव बहुत आम है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करता है.
रेवरेंड कुमार श्रीलंका के ग्रामीण क्षेत्र में पादरी हैं. उसके परिवार को उसके गाँव में बहुसंख्यक बौद्ध समुदाय की ओर से भेदभाव का सामना करना पड़ा है. शिक्षक और सहपाठी उनके बच्चों को डराते-धमकाते थे और उनकी पानी और बिजली की आपूर्ति यह कहकर बंद कर दी जाती थी कि उनका घर एक गैरकानूनी धार्मिक संस्थान है.[1]

कई सरकारें सार्वजनिक वित्त के आवंटन में भेदभाव करती हैं - जैसे अल्पसंख्यक इलाकों में अधोसंरचना, स्वास्थ्य या शिक्षा के क्षेत्र में कम निवेश करना. इससे सांप्रदायिक तनाव और राजनीतिक अस्थिरता के लिए दीर्घकालिक जोखिम पैदा हो सकते हैं.

संस्थाओं के कामकाज के तरीके में भी भेदभाव हो सकता है. उदाहरण के लिए, स्कूली बच्चों को भेदभाव का सामना करना पड़ सकता है, धार्मिक गतिविधियों में जबरन भाग लेना पड़ सकता है, या ऐसी पाठ्यपुस्तकें दी जा सकती हैं जो उनके समुदाय के बारे में बुरा बोलती हैं. दुर्लभ मामलों में, समूहों को शिक्षा से वंचित किया जाता है - बहाई लोगों को ईरान में विश्वविद्यालय में जाने की अनुमति नहीं है.[2]

पाबंदियों और भेदभाव की कहानियां

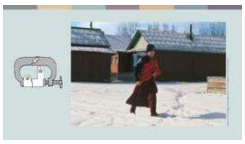

कई तरह के कानून ऐसे प्रतिबंध लगाते हैं जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भेदभाव का कारण बनते हैं. योजना नियम, जो तटस्थ प्रतीत हो सकते हैं, अल्पसंख्यक लोगों को धार्मिक संस्थान बनाने से रोकने वाली एक आम बाधा हैं.

रूस में कई अल्पसंख्यक समुदायों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है - जैसे उन्हें निर्माण करने की अनुमति प्रदान नहीं की जाती, निर्माण प्रारंभ होने के बाद म्युनिसिपल लीज समाप्त कर दी जाती या निर्मित भवनों को ढहा दिया जाता है.[3]

धार्मिक समुदायों के पंजीयन संबंधी कानून भी भेदभावपूर्ण और प्रतिबंधक हो सकते हैं.
अल्जीरियाई सरकार ने सभी धार्मिक एवं अन्य समूहों के लिए यह अनिवार्य बना दिया है कि वे अपनी गतिविधियां प्रारंभ करने के पूर्व एक संगठन के रूप में अपना पंजीयन करवाएं. छोटे से अहमदी समुदाय का पंजीयन नहीं किया गया. सन 2020 के अंत में समुदाय के सदस्यों के विरूद्ध 220 क़ानूनी प्रकरण चल रहे थे जिनमें उन पर अनाधिकृत स्थानों पर प्रार्थना करने का आरोप लगाया गया था. [4]

कई सरकारें बहुसंख्यक समुदाय के धार्मिक क्रियाकलापों पर भी पाबंदियां लगाती हैं. सन् 2020 में तुर्कमेनिस्तान के लेबाप क्षेत्र के अधिकारियों ने सरकारी कर्मचारियों जैसे शिक्षकों और नर्सों को आदेश दिया कि वे शुक्रवार की प्रार्थनाओं में भाग न लें और उन्हें चेतावनी दी गई कि यदि वे मस्जिदों में नजर आए तो उन्हें नौकरी से बर्खास्त कर दिया जाएगा. [5]

[1] स्थानीय स्रोत
[2] द गार्जियन,https://www.theguardian.com/world/2013/feb/27/bahai-student-expelled-iranian-university
[3] फोरम 18,https://www.forum18.org/archive.php?article_id=2508
[4] अमेरिकी विदेश विभाग,https://www.state.gov/reports/2020-report-on-international-religious-freedom/algeria/
[5] फोरम 18,https://www.forum18.org/archive.php?article_id=2555

आइए 2 और तरह के कानूनों के बारे में सोचें जो प्रतिबंध लगा सकते हैं: पारिवारिक कानून और ईशनिंदा या धर्मत्याग कानून.

<u>परिवारिक कानून</u>

विवाह, तलाक, उत्तराधिकार एवं बच्चों की अभिरक्षा सबंधी धर्मनिरपेक्ष एवं धार्मिक, दोनों कानून अधिकारों को सीमित करने वाले और भेदभावपूर्ण हो सकते हैं.

भारत में विशेष विवाह अधिनियम, जो एक धर्मनिरपेक्ष कानून है, में यह प्रावधान है कि अन्तर्धार्मिक विवाह के 30 दिन पहले जोड़ों को दण्डाधिकारी को आवेदन करना होगा. दण्डाधिकारी आवेदन की जांच करेगा और दोनों के परिवारों को उनके निवास-स्थानों पर नोटिस भेजेगा. यह कई जोड़ों को सम्मान आधारित हिंसा के ख़तरे में डाल देता है. [6]

रेवती मासूसी एक मलेशियाई है. उसके माता-पिता मुस्लिम थे लेकिन उसका लालनपालन उसकी हिन्दू दादी ने एक हिन्दू की तरह किया. एक धार्मिक न्यायालय ने रेवती को हिन्दू से विवाह करने और पुनः इस्लाम ग्रहण करने से इंकार करने के कारण छः माह के लिए एक इस्लामिक पुर्नशिक्षा केन्द्र में भेज दिया.[7]

कभी-कभी धार्मिक पारिवारिक कानून और स्वधर्मत्याग सम्बन्धी कानून, अल्पसंख्यक लोगों को आपराधिक हमलों का आसान शिकार बना देते हैं.
पाकिस्तान में हर साल सैकड़ों हिन्दू और ईसाई लड़कियों का अपहरण कर उन्हें धर्मपरिवर्तन कर विवाह करने के लिए मजबूर किया जाता है. जब मायरा शाहबाज़ 14 साल की थी तब उसके साथ यही हुआ. उसके माता-पिता ने उसे वापस पाने के लिए अदालत का दरवाज़ा खटखटाया, परन्तु पाकिस्तान में इस्लाम धर्म को त्यागना प्रतिबंधित है और ईसाई माता-पिता को मुस्लिम बच्चों का संरक्षक नहीं बनाया जा सकता. इसलिए हाईकोर्ट ने आदेश दिया कि मायरा को उसके अपहरणकर्ताओं को सौंप दिया जाए. दो सप्ताह बाद, मायरा अपने अपहरणकर्ताओं के चंगुल से भाग निकली. अब वह कहीं छिपी हुई है और अपनी शादी को रद्द किये जाने और उसे फिर से ईसाई घोषित किये जाने के लिए क़ानूनी लड़ाई लड़ रही है.[8]

<u>ईशनिंदा और स्वधर्मत्याग कानून</u>
ईशनिंदा और स्वधर्मत्याग को प्रतिबंधित करने वाले कानूनों को अक्सर इस आधार पर उचित ठहराया जाता है कि वे सामाजिक सद्भाव बनाए रखने में सहायक होते हैं. परन्तु इन कानूनों का उल्टा असर भी हो सकता है. कई देशों में इन कानूनों का दुरुपयोग होता है और व्यक्तिगत दुश्मनी के कारण झूठे आरोप लगाये जाते हैं. वैसे भी, ये कानून वाणी और आचरण पर जिस तरह के प्रतिबन्ध लगाते हैं वे धर्म या आस्था की आज़ादी के अधिकार को कमज़ोर करने वाले हैं - विशेषकर उन लोगों के मामले में जिनकी आस्थाओं को राज्य या बहुसंख्यक समुदाय पसंद नहीं करता.

अहमदी लोग, जो पैगम्बर मोहम्मद के बाद एक और पैगम्बर में विश्वास करते हैं, नास्तिक और वे लोग जो राज्य या धार्मिक सत्ताधारियों की आलोचना करते हैं, इन कानूनों का आम तौर पर निशाना बनते है परन्तु इनका शिकार कोई भी व्यक्ति बन सकता है.

[6] द लीफलेट,https://www.theleaflet.in/india-needs-to-overhaul-laws-on-interfaith-marriage-and-religious-conversion/
[7] फोरम एशिया,https://www.forum-asia.org/?p=7086
[8] यूके संसद,https://edm.parliament.uk/early-day-motion/57474/maira-shahbaz-and-child-abduction-forced-conversion-and-marriage-in-pakistan

सन 2020 में उत्तरी नाइजीरिया में एक धार्मिक अदालत ने 12 साल के मुस्लिम लड़के को इस आरोप में 10 साल की कैद की सजा सुनायी कि उसने पैगम्बर का अपमान किया है. उसकी दोषसिद्धि को 2021 में धर्मनिरपेक्ष अपीलीय अदालत ने रद्द कर दिया. परन्तु बदला लेने के लिए हमलों के डर से उसके परिवार के लिए उस इलाके में रहना असुरक्षित हो गया है. [9]

अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार हिंसा भड़काने वाली वाणी पर प्रतिबन्ध लगाया जाना चाहिए. परन्तु, ईशनिंदा और स्वधर्मत्याग कानून, हिंसा को रोकने की बजाय उसे प्रोत्साहित करते हैं और वह इस तरह कि वे इस सोच का समर्थन करते हैं कि उन लोगों को सजा दी जानी चाहिए जो शांतिपूर्वक ऐसे विचारों को अभिव्यक्त करते हैं जो बहुसंख्यकों को पसंद नहीं है.

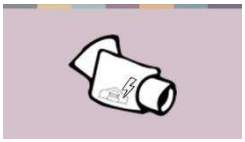

<u>सरकार की निगरानी और नियंत्रण</u>

आस्था समुदायों की गतिविधियों और उनके वित्त की सरकार द्वारा निगरानी, रोकें लगाने वाला एक अन्य तरीका है जिसे राज्य द्वारा प्रयुक्त किया जाता है. उदाहरण के लिए, श्रीलंका में कुछ चर्च राज्य अधिकारियों द्वारा निगरानी की रिपोर्ट करते हैं.[10] **यह नागरिक समाज के लिए जगह कम करने की व्यापक प्रवृत्ति का हिस्सा है.**

दुनिया में कहीं भी निगरानी इतनी कड़ी नहीं है जितनी कि पश्चिमी चीन में है जहाँ ऐसे सुरक्षा कैमरों का उपयोग किया जाता है जो चेहरे पहचान सकते हैं. ये कैमरे मुख्यतः अल्पसंख्यक उइग़ुर मुसलमानों की पहचान करने और वे कहाँ हैं, इसकी जानकारी पुलिस को देने के लिए लगाये गए हैं. [11]

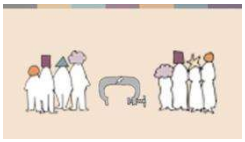

<u>सामाजिक प्रतिबंध</u>

अधिकारों को परिवारों, आस्था समूहों या व्यापक समुदाय के भीतर भी प्रतिबंधित किया जा सकता है. यह अक्सर पुरुषों और महिलाओं को अलग-अलग तरीके से प्रभावित करता है. महिलाओं को अक्सर अवसरों से वंचित किया जाता है - उदाहरण के लिए धर्मशास्त्र का अध्ययन करने के लिए, और महिलाओं का व्यवहार और धार्मिक पालन धार्मिक आधार पर परिवार या समुदाय के नियंत्रण का विषय हो सकता है.

बहुसंख्यक समुदाय अक्सर अल्पसंख्यक समुदायों की महिलाओं के अपने धर्म को प्रकट करने के अधिकार पर पाबंदियां लगाते हैं. जैसे महिलाओं पर यह दबाव बनाया जाता है कि रोज़गार पाने के लिए उन्हें अपनी धार्मिक पहचान छुपानी होगी.

मारिया मिस्र में रहने वाली एक युवा ईसाई है. मारिया को विश्वविद्यालय से स्नातक होने पर एक बैंक में नौकरी की पेशकश की गई, लेकिन कहा गया कि अगर वह इसे लेती है, तो उसे हिजाब पहनना होगा. मारिया को नहीं लगा कि अलग धार्मिक पहचान का दिखावा करना उचित है, इसलिए उसने नौकरी ठुकरा दी. [12]

[9] बीबीसी समाचार, https://www.bbc.com/news/world-africa-55756834

[10] स्थानीय स्रोत

[11] न्यूयॉर्क टाइम्स, https://www.nytimes.com/2019/04/14/technology/china-surveillance-artificial-intelligence-racial-profiling.html

[12] स्रोत: मारिया, जिसका नाम सुरक्षा कारणों से बदल दिया गया है.

हिंसा की कहानियां

आईये अब हम हिंसा के बारे में विचार करें. **नफरत फैलाने वाली बातें और नफरत-जनित अपराध हिंसा के सबसे आम स्वरुप हैं जिनका लोगों को सामना करना पड़ता है. आराधना स्थल और वहां जाने वाले लोग, नफरत-जनित अपराधों के सबसे आसान शिकार होते हैं. धार्मिक संस्थान और उनमें जाने वाले लोग घृणा अपराधों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं.**

ब्राज़ील में पारंपरिक एफ्रो-ब्राज़ीलियाई धर्मों का पालन करने वालों पर उनके पड़ोसी नव-पेंटकोस्टल ईसाई, जो यह मानते है कि उनका धर्म पैशाचिक है, हिंसक हमले करते रहते हैं. केनदूम्बले धर्म के पादरी फादर मार्शियो ने अपने मंदिर पर 20 हमलों की रपट लिखवाई. परन्तु पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की. [13]

इस मामले में भी महिलाओं और पुरुषों पर पड़ने वाला प्रभाव अलग-अलग होता है. स्वीडन में मुस्लिम महिलाओं, विशेषकर जो हिजाब जैसे धार्मिक वस्त्र पहनतीं हैं, की सार्वजनिक स्थानों पर अजनबियों के हाथों नफरत-जनित अपराधों का शिकार होने की अधिक आशंका होती है जबकि मुस्लिम पुरुषों की पड़ोसियों या सहकर्मियों के हाथों ऐसे अपराधों का शिकार होने की ज्यादा आशंका होती है.[14]

कई स्थानों पर कोरोना वायरस महामारी ने पहले से मौजूद भेदभाव और घृणा को और गहरा किया है. भारत में एक मुस्लिम धार्मिक कार्यक्रम के बाद फैले वायरस संक्रमण के चलते मुसलमानों पर कोरोना जिहाद करने का आरोप लगाया गया. अहमद शेख एक मुस्लिम है जो सड़कों पर सामान बेचकर किसी तरह अपना जीवनयापन करते हैं. अप्रैल 2020 में हिन्दू राष्ट्रवादियों के एक गिरोह ने उससे कहा कि वह अपना स्टाल बंद कर दें और वहां से चले जाएं, क्योंकि मुसलमान कोरोना फैलाने के लिए षड़यंत्र कर रहे हैं. अहमद ने उनसे याचना की कि उसे छोड़ दिया जाए परन्तु उनकी डंडों से जम कर पिटाई की गई. उसने पुलिस में शिकायत करने का प्रयास किया परन्तु उसकी शिकायत यह कह कर दर्ज नहीं की गई कि सड़कों पर सामान बेचना गैर-क़ानूनी है.[15]

सांप्रदायिक दंगे और आतंकी हमले समुदायों के भीतर अधिकारों के उल्लंघनों की पराकाष्ठा हैं. पादरी सैमुअल उत्तरी बुर्किना फासो से हैं. देश में धार्मिक सहिष्णुता की परंपरा है जिसे आतंकवादी समूह कमज़ोर कर रहे हैं. 2019 में चर्चों पर हमले उनकी रणनीति का हिस्सा बन गए. पादरी सैमुअल अब आंतरिक रूप से विस्थापित लोगों के लिए एक शिविर में रहते हैं.

> "इन हमलों ने हमारे लोगों के जीवन को तहस-नहस कर दिया है. हम दर्द से भर गए हैं," वे कहते हैं.

2019 से आतंकवादी हमले बढ़ गए हैं, जिससे हर कोई प्रभावित हुआ है, 1 मिलियन से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं.[16]

[13] RioOnWatch, https://rioonwatch.org/?p=40117

[14] स्वीडिश नेशनल काउंसिल फॉर क्राइम प्रिवेंशन, https://www.bra.se/om-bra/nytt-fran-bra/arkiv/press/2021-03-31-islamofobiska-hatbrott-yttrar-sig-i-manga-olika-former.html

[15] सबरंग इंडिया, https://sabrangindia.in/article/stop-targeting-discriminating-against-and-attacking-vendors-and-hawkers-national-hawker

[16] ओपन डोर्स यूके, https://www.opendoorsuk.org/persecution/world-watch-list/burkina-faso

यद्यपि आतंकी घटनाओं से सम्बंधित वैश्विक आंकड़ों में इस्लाम से जुड़े आतंकी समूहों का बोलबाला है परन्तु कई राष्ट्रीय सन्दर्भों में अन्य समूह अधिक बड़ा खतरा हैं.कुछ पश्चिमी देशों में सुरक्षा सेवाएं, अति-दक्षिणपंथी अतिवादियों को सबसे बड़ा आतंरिक आतंकी खतरा मानती हैं.[17] ये समूह धार्मिक अल्पसंख्यक लोगों को निशाना बनाते हैं. सन 2018 में अमरीका के पिट्सबर्ग में एक सिनेगोग में ग्यारह यहूदियों की हत्या कर दी गई थी और 2019 में न्यूज़ीलैंड के क्राइस्टचर्च में एक मस्जिद में 51 मुसलमानों को जान से मार दिया गया था.

पुलिस, सुरक्षा सेवाओं या सेना अथवा राज्य द्वारा भाड़े पर ली गई भीड़ व्यक्तियों या पूरे समुदायों को निशाना बना सकतीं हैं. पश्चिमी चीन में उइगरों की स्थिति दर्शाती है कि सरकारी हिंसा कितनी चरम हो सकती है. उइगर महिलाओं को जबरन नसबंदी और गर्भनिरोधक का सामना करना पड़ा है, जिसके परिणामस्वरूप जन्म दर में भारी गिरावट आई है, और लगभग 1.8 मिलियन उइगरों को हिजाब पहनने या दाढ़ी रखने जैसे कारणों से पुनर्शिक्षा शिविरों में भेज दिया गया है. शिविरों से यातना और बलात्कार की खबरें आती रहती हैं, जहां कैदियों को उनकी भाषा और धर्म से वंचित रखा जाता है तथा उन्हें राज्य की विचारधारा में दीक्षित किया जाता है. चीनी सरकार का दावा है कि ये शिविर स्वैच्छिक शिक्षा केंद्र हैं.[18]

सरकार की जिम्मेदारियाँ और विफलताएँ

आइए, हम लोगों की सुरक्षा करने में सरकारों की असफलता पर एक अंतिम नज़र डालें. **लोगों के मानव अधिकारों की रक्षा करना सरकारों की ज़िम्मेदारी है.जब वे ऐसा करने में असफल रहतीं हैं, तो भेदभाव और हिंसा बढ़ती है. परन्तु विशिष्ट मामलों में त्वरित पुलिस कार्यवाही, हननों को रोक सकती है.**

सन 2017 दक्षिणी किर्ग़िज़स्तान में एक वृद्ध महिला, जिसने इस्लाम छोड़कर ईसाई धर्म अपना लिया था, की मृत्यु हो गई. जब उसकी लड़की ने वहां के म्युनिसिपल कब्रिस्तान में उसे दफ़नाने का प्रयास किया तो स्थानीय इमाम के नेतृत्व में एक समूह ने इसका हिंसक विरोध किया. महिला के शव को बार-बार खोद कर बाहर निकाला गया. अंततः लोगों का इस पर ध्यान जाने से प्राधिकारियों को कार्यवाही करने पर मजबूर होना पड़ा. अपराधियों को आरोपी बनाया गया. उसके बाद से धर्मपरिवर्तित व्यक्तियों के खिलाफ आक्रामक और हिंसक कार्यवाहियां कम हो गईं.[19]

अधिकारी अक्सर परिवारों या आस्था समुदायों के भीतर उल्लंघन के संबंध में हस्तक्षेप करने में विफल रहते हैं. जॉर्डन में एक 22 वर्षीय ईसाई विश्वविद्यालय की छात्रा नादिया को एक साथी छात्र - एक मुस्लिम से प्यार हो गया. जब उसके परिवार को पता चला, तो उन्होंने उसे घर से बाहर जाने से मना कर दिया और उसे प्रताड़ित किया. नादिया भागने में सफल रही, लेकिन दो महीने बाद उसके पिता ने उसे ढूंढ़ लिया और उसे मार डाला. अदालत ने उसके 'सम्मान' आधारित उद्देश्यों को कम करने वाली परिस्थिति माना और उसे जेल नहीं भेजा.[20]

[17] संयुक्त राज्य अमेरिका कांग्रेस, https://www.congress.gov/116/bills/s894/BILLS-116s894is.xml

[18] द गार्जियन,https://www.theguardian.com/world/2020/sep/04/muslim-minority-teacher-50-tells-of-forced-sterilisation-in-xinjiang-china

[19] फोरम 18,https://www.forum18.org/archive.php?article_id=2248

[20] स्थानीय स्रोत

निष्कर्ष

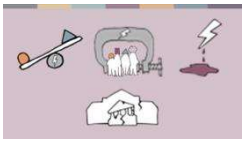

इस प्रस्तुतिकरण में हमने सरकारों और समुदाय के लोगों द्वारा किये जाने वाले भेदभाव और हिंसा और लगाई जाने वाली पाबंदियों को देखा. हमने लोगों की सुरक्षा करने में राज्य की विफलता पर भी चर्चा की.

हमने कहानियाँ जो सुनीं, उनसे हम कई निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं:

- उल्लंघन हर प्रकार के देशों में होते हैं और वे सभी धर्मों और आस्थाओं के लोगों को प्रभावित करते हैं. विभिन्न संदर्भों में जो चीज़ें अलग होती हैं उनमें शामिल हैं प्रभावित होने वाले व्यक्ति, उल्लंघन की व्यापकता, गंभीरता और आवृत्ति और हननों में सरकार की संलिप्तता का परिमाण.

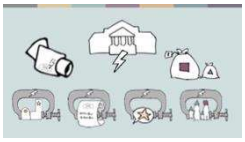

- कई अलग-अलग प्रकार के कानून और सरकार की नीतियां, उल्लंघनों में योगदान दे सकते हैं.

- आमतौर पर अल्पसंख्यकों के साथ-साथ बहुसंख्यकों में अलग तरह से सोचने वाले लोग सबसे ज़्यादा प्रभावित होते हैं. लेकिन बहुसंख्यक समुदाय भी उल्लंघनों से प्रभावित हो सकते हैं - खासकर आतंकवादी हिंसा से.

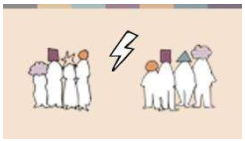

- हमने जो कहानियाँ सुनी हैं, उनसे पता चलता है कि धर्म या आस्था की आजादी के उल्लंघन में आमतौर पर अन्य अधिकारों का उल्लंघन भी शामिल होता है - उदाहरण के लिए, शिक्षा या विवाह का अधिकार या जीवन का अधिकार. कई कहानियां बतातीं हैं कि किस तरह पुरुष और महिलाएं अलग-अलग ढंग से प्रभावित होते हैं - चाहे वे नफरत-जनित अपराध हों, जबरदस्ती विवाह करवाना हो, ऑनर किल्लिंग्स हो या जबरिया नसबंदी हो.

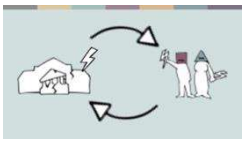

- हमने जो कहानियाँ सुनीं, उनमें से कुछ दिखाती हैं कि किस तरह समुदाय द्वारा अधिकारों का उल्लंघन, सरकार की विफलताएं और सरकार द्वारा उल्लंघन एक दूसरे को मजबूती देते हैं और इस प्रकार एक दुष्चक्र का निर्माण करते हैं.

धर्म या आस्था की आजादी का उल्लंघन आम लोगों के लिए बहुत बड़ी व्यक्तिगत पीड़ा का कारण बनता है. वे समाज को भी अस्थिर करते हैं. अंत में, हर कोई असुरक्षा और आर्थिक और सामाजिक प्रभाव से पीड़ित होता है.

हम चाहे जो भी हों या किसी भी आस्था समुदाय से संबंध रखते हों, अगर हमारे देश में सभी लोगों के लिए धर्म या आस्था की आजादी का सम्मान किया जाए, तो हम सभी को इसका बहुत लाभ मिल सकता है. और हम सभी के पास ऐसे साथी आस्तिक हैं जो दूसरे देशों में अल्पसंख्यक के रूप में रहते हैं और वहाँ समान अधिकार देखना चाहते हैं. हर जगह सभी के लिए समान अधिकार हम सभी के लिए एक खुशहाल, सुरक्षित दुनिया बनाएंगे.

दो मिनट के लघु नाटक परिदृश्य

सुविधादाता हेतु टीका सहित संस्करण

इन पेज पर आपको सत्र 4 'दो मिनट अवधि के FORB पर लघु नाटक' अभ्यास के लिए प्रस्तावित परिदृश्य मिलेंगे. हर परिदृश्य में FORB के तीन उल्लंघन हैं और चुनने के लिए कुल पाँच परिदृश्य हैं.

परिदृश्य: सड़क पर एवं कार्यस्थल पर

एक महिला अपने ऑफ़िस को जा रही है. उसके कपड़ों से स्पष्ट है कि वह अल्पसंख्यक धार्मिक पहचान रखती है. एक राहगीर उसके कपड़ों के कारण उसका उत्पीड़न करने लगता है. कोई भी उसकी मदद नहीं करता. उसे एक पुलिस अधिकारी दिखता है और वह उसे मदद के लिए बुलाती है. राहगीर भाग जाता है पर पुलिस अधिकारी उसकी किसी भी तरह मदद नहीं करता है. वह अपने ऑफ़िस पहुँचती है जहाँ उसका जूनियर कलीग अपने प्रमोशन का जश्न मना रहा है. एक बार फिर, प्रमोशन के लिए उस पर विचार नहीं किया गया.

चरित्र
अनिवार्य पात्रः महिला, उत्पीड़क, पुलिस अधिकारी, राहगीर, कलीग
अतिरिक्त पात्रः अतिरिक्त कलीग और राहगीर

इस परिदृश्य में दिखाए गए उल्लंघन

यह प्रकरण एक व्यक्ति की धार्मिक पहचान के कारण उसे दी जाने वाली उत्पीड़न और उसके साथ किए जाने वाले भेदभाव तथा प्राधिकारियों के इस संबंध में कुछ न करने पर केन्द्रित है.

- सामाजिक शत्रुता: उत्पीड़न/घृणा-जनित अपराध.
- सुरक्षा देने में सरकार की विफलता: पुलिस अधिकारी ने मदद नहीं की.
- सामाजिक शत्रुता: भेदभाव - कार्यस्थल पर अल्पसंख्यकों का अपने करियर में आगे बढ़ने में अवरोध.

परिदृश्य: धार्मिक संस्थान

एक धार्मिक अल्पसंख्यक समूह ने एक भूखंड खरीदा है और उस पर एक धार्मिक संस्थान बनाने के लिए प्राधिकारियों से अनुमति ले ली है. वे निर्माण शुरू करते हैं, पर निर्माण स्थल पर बार-बार तोड़-फोड़ की जाती है. वे पुलिस और स्थानीय प्राधिकारियों से संपर्क करते हैं पर वे कहते हैं कि वे इसमें कुछ नहीं कर सकते. समूह आखिरकार अपना उपासना स्थल बना लेता है, पर जब-जब लोग वहाँ उपासना के लिए जाते हैं तो बहुसंख्यक समुदाय के लोग उनका उत्पीड़न करते हैं और टोका-टाकी करते हैं.

चरित्र
अनिवार्य पात्रः अल्पसंख्यक समूह के दो व्यक्ति, पुलिस अधिकारी, स्थानीय प्राधिकरण का प्रतिनिधि, बहुसंख्यक समूह के दो व्यक्ति
अतिरिक्त पात्रः अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यक समूह के अन्य व्यक्ति

इस परिदृश्य में दिखाए गए उल्लंघन

यह प्रकरण धर्म-आधारित सामाजिक शत्रुता के इसमें किसी भी प्रकार की कार्यवाही करने में असफल रहने पर केन्द्रित है.

- सामाजिक शत्रुता: निर्माण स्थल पर तोड़-फोड़.
- सुरक्षा देने में सरकार की विफलता: प्राधिकारी कोई कार्रवाई नहीं करते हैं.
- सामाजिक शत्रुता: धार्मिक संस्थान के बाहर उत्पीड़न.

परिदृश्य: विद्यालय में FORB

अल्पसंख्यक समुदाय का 12 वर्ष का एक बालक एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में पहुंचता है. आज का दिन विद्यालय का एक सामान्य दिन है. दिन की शुरूआत बहुसंख्यक समुदाय की धार्मिक प्रार्थना से होती है जिसमें इस बालक का सम्मिलित होना अनिवार्य है. प्रार्थना के पश्चात वह इतिहास के पाठ का अध्ययन करता है जहां शिक्षक पहले पाठ्यपुस्तक का एक अंश पढ़ता है और फिर इस बालक के अल्पसंख्यक धार्मिक समुदाय के बारे में अपमानजनक बातें कहता है. इस पाठ के बाद ब्रेक के दौरान उसके सहपाठी उसकी धार्मिक पहचान के कारण उसे धमकाते हैं और उसे अपने खेल में शामिल नहीं करते.

चरित्र
अनिवार्य पात्रः बालक, प्रार्थना संचालित करने वाला/इतिहास पढ़ाने वाला शिक्षक, दो सहपाठी
अतिरिक्त पात्रः अतिरिक्त शिक्षक एवं सहपाठी

इस परिदृश्य में दिखाए गए उल्लंघन

यह प्रकरण शासकीय व्यक्तियों (वह शैक्षणिक संस्था जो पाठ्यपुस्तकों को अनुमोदित करती है, विद्यालय, शिक्षक) द्वारा किए जाने वाले FORB के संस्थागत उल्लंघनों एवं इससे किस प्रकार सामाजिक शत्रुता बढ़ता है, यह दर्शाने पर केन्द्रित है.

- सरकार द्वारा किए जाने वाले उल्लंघनः बहुसंख्यकों के धर्म की प्रार्थनाओं में भाग लेने के लिए बाध्य किया जाना.
- सरकार द्वारा उल्लंघनः स्कूली किताबों में भेदभावपूर्ण सामग्री.
- सामाजिक शत्रुताएँः सहपाठियों द्वारा धौंसाया जाना.

परिदृश्य: परिवार में FORB

एक 17 वर्षीय लड़की अध्यापक बनने हेतु प्रशिक्षण लेने के लिए यूनिवर्सिटी जाना चाहती है. उसके माता-पिता उसे इसकी अनुमति नहीं दे रहे हैं. बल्कि, वे चाहते हैं कि वह परिवार के सम्मान को बचाने के लिए शादी कर ले. उनका यह तर्क है कि उनका धर्म लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा नहीं देता है क्योंकि पत्नियों की भूमिका घर में होने की होती है. लड़की इन विश्वासों से सहमत नहीं है और अपने खुद के निर्णय लेना चाहती है. जबरन शादी के डर से वह घर से भाग जाती है और एक दूसरे शहर में अपनी से अधिक उम्र की एक महिला दोस्त के साथ रहने लगती है. उसका परिवार पुलिस को उसकी गुमशुदगी की सूचना देता है. पुलिस उसे ढूँढ निकालती है और उसकी इच्छा के विरुद्ध उसे उसके माता-पिता के पास वापस ले आती है. अगले दिन उसकी शादी एक ऐसे पुरुष से कर दी जाती है जिससे वह मिली तक नहीं है और उसे अब अपने घर से जाने की अनुमति नहीं है.

चरित्र
अनिवार्य पात्रः लड़की, उसकी माता, उसका पिता, पुलिस अधिकारी, लड़की का पति;
अतिरिक्त पात्रः परिवार के अन्य सदस्य, शादी में आए लोग, अतिरिक्त पुलिस अधिकारी

इस परिदृश्य में दिखाए गए उल्लंघन

यह प्रकरण महिलाओं के अधिकारों एवं FORB के प्रतिच्छेदन पर रोशनी डालता है.

- सामाजिक शत्रुता (परिवार में उल्लंघन): बेटी की शिक्षा को अनुमति नहीं देना. यह बेटी के शिक्षा के अधिकार का उल्लंघन है. यह उसके इस अधिकार का भी उल्लंघन है कि वह खुद यह तय कर सकती है कि वह किस बात में विश्वास करती है (जैसे, लड़कियों की शिक्षा के बारे में ईश्वर के विचारों के बारे में) और उसी के अनुसार वह कदम उठा सकती है. इस प्रकार, यह उसके शिक्षा के अधिकार और उसके FORB के अधिकार का उल्लंघन है.

इस परिदृश्य में दिखाए गए उल्लंघन

- सरकार की संरक्षण देने में असफलता: पुलिस लड़की को उसकी मर्जी के खिलाफ उसके माता-पिता को सौंप देती है जबकि ऐसा करने पर उसका जबरदस्ती विवाह कर दिए जाने का खतरा है.
- सामाजिक शत्रुता (परिवार में उल्लंघन): जबरन शादी और आने-जाने के लिए स्वतंत्र न होना.

टिप्पणी

अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार, माता-पिता को अपने विश्वासों के अनुसार बच्चों का लालन-पालन करने का अधिकार है लेकिन अभिभावकों को बच्चों की धर्म एवं आस्था के मामलों (एवं जीवन के अन्य पहलुओं के मामलों में भी) स्वयं के संबंध में निर्णय लेने की बढ़ती हुई क्षमता का भी सम्मान करना चाहिए.

परिदृश्य: आवाज़ उठाना - भ्रष्टाचार एवं हिंसा

एक राज्य संचालित यूनिवर्सिटी की एक महिला विद्यार्थी, अखबार को एक प्रोफ़ेसर द्वारा उसके यौन उत्पीड़न की सूचना देती है. एक विद्यार्थी पत्रकार मामले के बारे में यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर का इंटरव्यू लेता है. यूनिवर्सिटी मामले को छिपाना चाहती है, इसलिए सोशल मीडिया पर यह अफ़वाह फैला दी जाती है कि विद्यार्थी पत्रकार ने धार्मिक विश्वासों और धार्मिक नेताओं की आलोचना की है. एक हिंसक भीड़ विरोध-प्रदर्शन करने के लिए यूनिवर्सिटी में इकट्ठा हो जाती है और विद्यार्थी पत्रकार तथा अखबार पर ईशनिंदा का आरोप लगाती है. यूनिवर्सिटी इसे एक बहाने के रूप में इस्तेमाल कर विद्यार्थी अखबार को बंद कर देती है. पुलिस पत्रकार को ईशनिंदा के संदेह में गिरफ़्तार कर लेती है.

चरित्र

अनिवार्य पात्र: विद्यार्थी, पत्रकार, विश्वविद्यालय का प्राचार्य, भीड़ के दो सदस्य, पुलिस अधिकारी
अतिरिक्त पात्र: भीड़ में शामिल लोग

इस परिदृश्य में दिखाए गए उल्लंघन

यह उदाहरण अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, संगठित होने के अधिकार एवं FORB के प्रतिच्छेदन पर रोशनी डालता है. साथ ही मानव अधिकारों के उल्लंघन व भ्रष्टचार के बीच के संबंध को भी दिखाता है.

- सरकार द्वारा किए जाने वाले उल्लंघन: (सरकारी) विश्वविद्यालय द्वारा एक अपराध को छिपाने के लिए धर्म संबंधी आरोपों का इस्तेमाल.
- सामाजिक शत्रुता: हिंसक भीड़.
- सरकार द्वारा उल्लंघन: पुलिस विद्यार्थी पत्रकार को गिरफ़्तार कर लेती है.

इसके अतिरिक्त, अखबार को बलपूर्वक बंद करवाना अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और संगठित होने के अधिकार का उल्लंघन है.

चेंजमेकर कहानियाँ

निम्न कहानी सत्र 4 की अंतिम टिप्पणियों के भाग के रूप में पढ़ी जाएगी. इसे सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड्स 41-44 द्वारा स्पष्ट किया गया है.

कहानी

पादरी जेम्स और इमाम अशफा की कहानी

यह पादरी जेम्स और इमाम अशफा की कहानी है. 1992 में, वे युवा थे और उत्तरी नाइजीरिया में एक धार्मिक टकराव के दौरान एक-दूसरे से क्रूरतापूर्वक लड़ रहे विरोधी लड़ाका समूहों का नेतृत्व कर रहे थे. एक हिंसक मुठभेड़ में पादरी जेम्स की एक बाँह कट गई, वहीं इमाम अशाफ़ा के आध्यात्मिक गुरु और दो करीबी रिश्तेदारों की मौत हो गई. दोनों एक-दूसरे के जानी दुश्मन बन गए और उन्होंने बदला लेने की कसमें खाईं.

दो वर्ष बाद, संयोग से हुई एक मुलाकात ने सब कुछ बदल दिया. पोलियो के विरुद्ध बच्चों के टीकाकरण के विषय पर समुदाय के नेताओं की एक सभा के दौरान, उन दोनों का एक दोस्त उन्हें साथ ले आया. दोस्त ने अपने हाथ जोड़े और दोनों से कहा, "मैं जानता हूँ कि आपमें राज्य में शांति कायम रखने की क्षमता है. मैं चाहता हूँ कि आप बात करें."

हालाँकि दोनों ने एक-दूसरे से बात करने का इरादा नहीं किया था, फिर भी उनमें नाइजीरिया के प्रति अपने प्रेम और देश की प्रगति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में समानताएं मिली.

"उस समय मुसलमानों के प्रति मेरी नफरत की कोई सीमा नहीं थी," पादरी जेम्स ने बताया. "हम ईश्वर का धन्यवाद करते हैं कि हमें एक-दूसरे की बात सुनने की क्षमता हासिल हुई और बातचीत करने की एक सुरक्षित जगह मिली जिसके बिना हम सदैव दूर से हालातों का अंदाजा भर लगाते रहते," उन्होंने आगे कहा. "हमें एक कड़वा सबक मिला है."

इमाम अशफा याद करते हैं कि सन् 1992 में कदूना में हुई हिंसा के बाद वे और उनके लड़ाके बदला लेने की तैयारी कर रहे थे. एक दिन, जब वह मस्जिद में नमाज़ अदा कर रहा था, तो उसे अहसास हुआ: "क़ुरान सिखाता है कि बुराई को बदलने के लिए अच्छाई का उपयोग करना बेहतर है. तो, यदि आप एक मुसलमान हैं और उन लोगों को माफ़ करने से इनकार करते हैं जिन्होंने आपको चोट पहुँचाई है, तो आप मोहम्मद साहब की सच्ची मिसाल कैसे बन सकते हैं?"

दोनों धार्मिक नेता अपनी बदले और पलटवार की इच्छा के आगे संघर्षरत थे. पर उन्होंने इस बात को भी समझा कि यदि उनके दिलों में घृणा है तो वे सच्चे नेता नहीं हो सकते हैं.

पादरी जेम्स और इमाम अशफा के मन में एक-दूसरे के प्रति विश्वास धीरे-धीरे बढ़ता गया. उनके संबंध मित्रता में बदल गए जो मुस्लिम-ईसाई अर्न्तधार्मिक मध्यस्थता केन्द्र की स्थापना का आधार बनी.

यह केन्द्र शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का हामी है और इसका लक्ष्य है क्षेत्र में हिंसक धार्मिक संघर्ष रोकना. इसने नाईजीरिया एवं अन्य स्थानों पर हुई हिंसा के बाद शांति समझौते करवाए हैं और यह सभी आस्थाओं के लोगों के शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का पक्षपोषण करने में स्थानीय आस्था आधारित संगठनों का मार्गदर्शन करता है.

स्रोत
तानेंबौम. https://tanenbaum.org/peacemakers-in-action-network/meet-the-peacemakers/imam-muhammad-ashafa-pastor-james-wuye/

सत्र 5

हमारे समुदाय में धर्म या आस्था की आजादी

सत्र अवलोकन

पिछले तीन सत्रों में हमने धर्म या आस्था की आजादी के मानव अधिकार एवं इसके उल्लंघनों के संबंध में जाना; अधिकारों के संबंध में अपने दृष्टिकोण पर मंथन किया और पहचान, विशेषाधिकारों एवं प्रतिकूलताओं जैसे विषयों का अन्वेषण किया. उन सत्रों में हमने जो कुछ. सीखा, उसे आधार बनाकर सत्र 5 में प्रतिभागी एक सहभागितापूर्ण प्रक्रिया के माध्यम से अपने क्षेत्र या देश के FORB का संदर्भ विश्लेषण विकसित करेंगे.

यह पाठ्यक्रम के भाग 1 का अंतिम सत्र है. विकसित किया गया संदर्भ विश्लेषण, पाठ्यक्रम के संपूर्ण भाग 2 में संदर्भ बिंदु के रूप में प्रयुक्त किया जाएगा.

सीखने के उद्देश्य

यह सत्र संदर्भ विश्लेषण करने के कौशल का विकास करने पर केन्द्रित है.

इस सत्र के अंत तक प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगे:

- उनके समुदाय के विभिन्न व्यक्तियों एवं समूहों की FORB से जुड़ी समस्याओं/उल्लंघनों का विवरण देना
- यह पहचानना कि FORB उल्लंघन किस प्रकार उनके समुदाय की महिलाओं और लड़कियों को पुरूषों एवं लड़कों की तुलना में अलग ढंग से प्रभावित करते हैं
- अन्य समुदायों के FORB उल्लंघनों से पीड़ित व्यक्तियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रवैया रखना.

सत्र की अंतर्वस्तु और समय

स्वागत एवं परिचय	3 मिनट
आरंभिक अभ्यास: अच्छाईयों का जाल प्रतिभागी हमारे समुदाय की अच्छी चीजों की पहचान करेंगे.	12 मिनट
प्रस्तुति: चीज़ें कैसे बिगड़ती (और बेहतर) होती हैं संदर्भ विश्लेषण के एक साधन का परिचय देता है जिसका नाम है अत्याचार के तीन चरण	10 मिनट
मैपिंग अभ्यास: हमारे नगर का FORB मानचित्र, भाग 1 प्रतिभागी एक सहभागितापूर्ण अभ्यास के माध्यम से FORB संदर्भ विश्लेषण का आधार विकसित करते हैं.	60 मिनट
ऊर्जावान: चलें और रुकें एक मनोरंजक शारीरिक अभ्यास जिसमें लोगों को जो करने को कहा जाए उन्हें उसके ठीक विपरीत कार्य करना है.	5 मिनट
पूर्ण चर्चा: हमारे नगर का FORB मानचित्र, भाग 2 प्रतिभागी अभ्यास के प्रथम भाग में विकसित चीजों का विश्लेषण करते हैं.	25 मिनट
अंतिम टिप्पणियां और चेंजमेकर कहानियाँ समस्याओं पर केंद्रित सत्र को आशा से भरे स्वर में समाप्त करता है.	5 मिनट
कुल समय	**2 घंटे**

यदि आप सत्र 5 के बाद पाठ्यक्रम का समापन कर रहे हैं
यदि आपकी 'भाग 2: बदलाव की ओर यात्रा' के संचालन की योजना नहीं है, या यदि कुछ सहभागी भाग 2 में भाग नहीं लेंगे, तो आपको इस सत्र के अंत में ये गतिविधियाँ जोड़नी पड़ सकती हैं. या तो 'अच्छाई का जाल' अभ्यास को काटकर और मैपिंग अभ्यास का समय 10 मिनट घटाकर इसके लिए समय बनाएँ या सत्र को अधिक लंबा चलाएँ.

मूल्यांकन अभ्यास: दिमाग, दिल, हाथ इसमें प्रतिभागी यह बताते हैं कि वे पाठ्यक्रम से क्या सीखकर जा रहे हैं.	15 मिनट
धन्यवाद एवं अलविदा जश्न मनाना मत भूलिए!	5 मिनट

तैयारी करें

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप सत्र की तैयारी करें. याद रखें - आपको अपने समूह की बेहतर समझ है! आपका स्वागत है कि आप सत्र के किसी भी हिस्से को अपनी समूह की ज़रूरतों के अनुसार अनुकूलित और संशोधित करें.

थोड़ा अतिरिक्त पठन
सत्र सामग्री को पढ़ने के साथ-साथ, अपने देश में धर्म या आस्था की आजादी (सभी पंथों के लोगों और नास्तिकों के लिए) की स्थिति के बारे में पढ़कर खुद को तैयार करना बहुत ही उपयोगी रहेगा. अक्सर, हमें केवल उन समस्याओं के बारे में पता होता है जिनका सामना हमारा खुद का समूह करता है, या समाज के सबसे बड़े समूह करते हैं. थोड़ा पढ़ने से आप अपने सहभागियों की काफ़ी मदद कर पाएँगे!

यह सामग्री कहां उपलब्ध हो सकती है इसकी जानकारी पृष्ठ 153-154 पर दी गई है.

इस सत्र के लिए संसाधन

पृष्ठ 16 पर सूचीबद्ध प्रत्येक सत्र के लिए मानक संसाधनों के अतिरिक्त, इस सत्र को संचालित करने के लिए आपको निम्नलिखित संसाधनों की आवश्यकता होगी:

- 'अच्छाईयों का जाल' अभ्यास हेतु एक ऊन या रस्सी की साफ्ट बाल.
- 'हमारे नगर का FORB मानचित्र' अभ्यास हेतु पहले से तैयार फ्लिप चार्ट 'मानचित्र'.
- यदि आप मूल्यांकन अभ्यास: दिमाग, दिल एवं हाथ करने वाले हैं तो आपको प्रति प्रतिभागी एक हैंडआउट की आवश्यकता होगी.

इस सत्र के **सहायक संसाधन** यहाँ हैं.

कक्ष तैयार करना
इस सत्र के लिए यह एक अच्छा विचार होगा कि प्रारंभ में कुर्सियां सामने की ओर मुंह करते हुए अर्धवृत्त में लगाई जाएं और बीच में काफी जगह खाली रखी जाये. समूह को एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से जाने की सुविधा होनी चाहिए. एक बड़ा कमरा, जिसमें मेजें न हों, सबसे बढ़िया होगा!

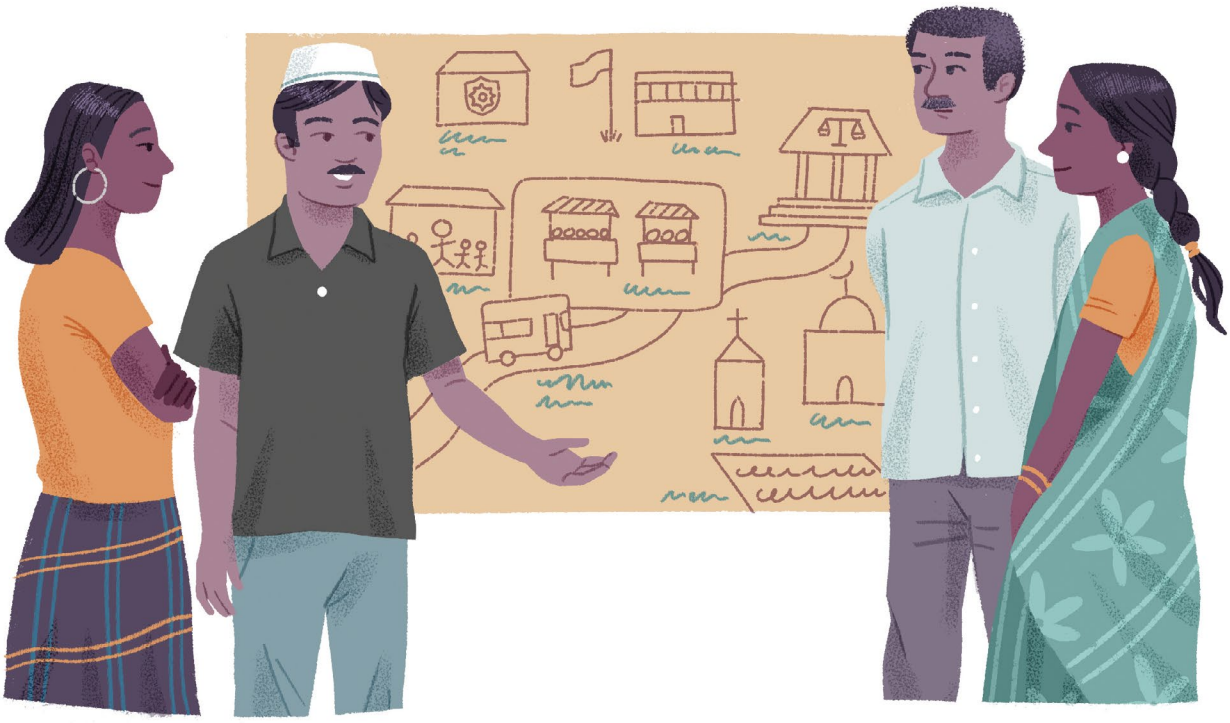

'हमारे नगर का FORB मानचित्र'

"सहभागियों ने हमारे शहर में FORB अभ्यास का आनंद लिया - इसने बिल्कुल सही काम किया. इससे उन्हें उनके दैनिक जीवन में होने वाले उल्लंघनों पर विचार करने का अवसर मिला तथा गहन बातचीत शुरू हुई. यह रचनात्मक, विश्लेषणात्मक और समालोचनात्मक सोच तथा टीमकार्य कौशल विकसित करने के लिए बहुत अच्छा है."

हम्माम हद्दाद, सुविधादाता, जॉर्डन

विस्तृत सत्र योजना

1. स्वागत 3 मिनट

संक्षिप्त वार्ता

क्या कहें

सत्र में सभी का स्वागत करें. सत्र का परिचय देते हुए निम्न बातें समझाएं:

- पिछले तीन सत्रों में हमने धर्म या आस्था की आजादी के मानव अधिकार पर नज़र डाली. हमने उन अधिकारों के बारे में जाना जो हमारे पास होते हैं और उन विभिन्न प्रकार के उल्लंघनों के बारे में जाना जो हो सकते हैं. हमने इस बारे में सोच-विचार भी किया कि यह मानव अधिकार हमारे लिए क्या अर्थ रखता है तथा हमने पहचान, विशेषाधिकार और प्रतिकूलता के मुद्दों की पड़ताल की.
- इस सत्र में हमारा फोकस, अपने सन्दर्भों में यह विवेचना करना है कि विभिन्न लोगों और समूहों को किस प्रकार की समस्याएं पेश आ सकतीं हैं. यह विश्लेषण हम एक साथ मिलकर अपने नगर में धर्म या आस्था की आजादी का चाक्षुष 'मानचित्र' बना कर करेंगे. परन्तु समस्याओं की ओर रुख करने से पहले, आईये हम अच्छी चीज़ों के बारे में सोचें!

2. आरंभिक अभ्यास: अच्छाईयों का जाल 12 मिनट

पूर्ण अभ्यास

टिप्पणी

यह अभ्यास मज़ेदार होने के साथ-साथ कुछ सिखाता भी है परन्तु यह सत्र का आवश्यक भाग नहीं है. आप शायद इस अभ्यास को छोटा करना पसंद करें ताकि हमारे नगर के FORB मानचित्र पर पूर्ण चर्चा के लिए अधिक समय मिल सके. इस चर्चा के लिए निर्धारित समयावधि सीमित है.

विवरण व उद्देश्य

यह समस्याओं पर नज़र डालने से पहले, खेल-खेल में हमारे समुदाय की अच्छी चीज़ों, जिन्हें हम पसंद करते है, का चाक्षुष निरूपण करने का अभ्यास है.

संसाधन

- ऊन (या रस्सी) की गेंद.

अभ्यास का परिचय कैसे दें

सभी लोगों को एक गोल घेरे में खड़ा होने के लिए कहें. (गोले का आकार इतना होना चाहिए कि सभी लोग आसानी से ऊन की गेंद को एक दूसरे की ओर उछाल सकें.)

निम्न बातें समझाएं:

- घेरे में खड़े लोग एक-दूसरे की तरफ ऊन की गेंद फेंकेगे.
- बॉल फेंकने से पहले हर व्यक्ति को यह वाक्य पूरा करना है: "मेरे शहर में रहने की एक अच्छी बात यह है कि...". जैसे, 'मेरे शहर में रहने की एक अच्छी बात यह है कि मैं मेरे परिवार के (या फ़ुटबॉल टीम के या स्थानीय स्कूल के) करीब हूँ.' आपको ऐसा कुछ कहने की अनुमति नहीं है जो किसी ने पहले ही कह दिया है, यानी आगे बढ़ने के साथ-साथ अभ्यास कठिन होता जाएगा!
- जब आप गेंद फेंके तब ऊन के धागे को एक हाथ से पकड़ लें और दूसरे हाथ से गेंद फेंके. इससे आप आपके पहले वाले व्यक्ति और आपके बाद वाले व्यक्ति से ऊन के धागे से जुड़ जाएंगे. अभ्यास पूरा होने तक, धागे को अपने हाथ में पकड़े रहें.

अभ्यास का संचालन कैसे करें
अभ्यास की शुरुआत आप स्वयं करें. वाक्य को पूरा करें और गेंद को घेरे के दूसरी ओर के किसी व्यक्ति की ओर उछाल दें. धागे का कोना अपने हाथ में पकड़े रहना न भूलें! इस प्रक्रिया से धीरे-धीरे प्रतिभागियों के बीच एक 'जाल' बन जायेगा.

अभ्यास का समापन कैसे करें
जब हर एक प्रतिभागी कम से कम एक बार ऊन को पकड़ ले तब अभ्यास को ख़त्म कर दें लेकिन लोगों से कहें कि वे धागों को अपने हाथों में पकड़े रहे. समापन यह कह कर करें.

इन बिंदुओं पर विचार के साथ समापन करें:
- हमारे बीच की जगह अब कैसी दिखती है? शायद किसी मकड़ी के जाले या जाल जैसी?
- यह सत्र हमारे देश या समुदाय की समस्याओं के बारे में ज़रूर है परन्तु हमारे बीच अच्छे लोग भी हैं और अच्छी चीज़ें भी होती रहतीं हैं. यही हमारे काम आतीं हैं!
- जब हम समस्याओं को बदलने का काम करें तब इन चीज़ों को याद रखना महत्वपूर्ण है. आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि वे हमें शक्ति और आशा देती हैं. और आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि अच्छे लोगों और अच्छी चीज़ों का नेटटवर्क समस्याओं से निपटने में हमारी मदद के लिए एक उपयोगी संसाधन सिद्ध हो सकता है.

3. प्रस्तुति: चीज़ें कैसे बिगड़ती (और बेहतर) होती हैं 10 मिनट

प्रस्तुति

विवरण व उद्देश्य
यह संक्षिप्त इनपुट सहभागी के उन प्रक्रियाओं के ज्ञान को मज़बूती देता है जिनके द्वारा समाज में उल्लंघन बदतर होते जाते हैं. यह संदर्भ विश्लेषण का एक साधन भी प्रदान करता है जिसका उपयोग आगे आ रहे 'आपके शहर का FORB मैप' अभ्यास में किया गया है.

संसाधन
- प्रस्तुति की स्क्रिप्ट इस गाइड के पेज 107 पर है.
- यह स्क्रिप्ट सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 3-13 से मैच करता है और इन स्लाइड्स हेतु वक्ता की टिप्पणियों में शामिल है.
- इस स्क्रिप्ट का संपादन-योग्य संस्करण, सत्र के लिए दिए गए संसाधनों में उपलब्ध है.

सुझाव! लोगों से कहें कि वे आपका प्रस्तुतिकरण पूर्ण होने तक प्रश्न/टिप्पणियां न करें.

पूर्व तैयारी
पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप तैयारी करें. स्क्रिप्ट और पावरपॉइंट स्लाइडों को पढ़ें और अगर चाहें तो उन्हें अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए उनमें बदलाव करें (या स्लाइडों के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की फ्लिप चार्ट शीट बनाएं) और स्लाइडों/फ्लिप चार्ट शीट के साथ प्रस्तुतिकरण देने का अभ्यास करें.

4. मैपिंग अभ्यास: हमारे नगर का FORB मानचित्र, भाग 1 60 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण

इस अभ्यास में नगर के फ्लिप चार्ट मानचित्र और कैरेक्टर कार्डों की मदद से प्रतिभागियों की उनके सन्दर्भों में FORB उल्लंघनों को चिन्हित और विश्लेषित करने में सहायता की जाती है. इसके लिए प्रतिभागियों के अपने ज्ञान और अनुभवों के साथ-साथ, सुविधादाता के रूप में आपकी कोई अतिरिक्त जानकारी, यदि हो तो, का प्रयोग किया जा सकता है. यह अभ्यास दो भागों में विभाजित है जिनके बीच में एक ऊर्जावान है.

उद्देश्य

इस अभ्यास से FORB से जुड़े मुद्दों के विभिन्न लोगों पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में ज्ञान और समझ विकसित करने में मदद मिलती है और साथ ही एक सरल, चाक्षुष मॉडल की सहायता से मानवाधिकार का उल्लंघन का खाका बनाने का कौशल सीखा जा सकता है.

संसाधन

- पूर्व से तैयार फ्लिप चार्ट मानचित्र (नीचे दिए गए निर्देश देखें)
- फ्लिप चार्ट पेन

पूर्व तैयारी

यदि आप इस सत्र की तैयारी के लिए आपके देश में FORB की स्थिति का अध्ययन पहले से कर लेंगे तो आप इस अभ्यास में बेहतर योगदान दे सकेंगे. अध्ययन हेतु सामग्री की लिंक पृष्ठ 153-154 पर उपलब्ध है.

सत्र से पहले निम्न व्यावहारिक तैयारियां भी करें:

- **अपने शहर का FORB मैप बनाएँ**
  चार फ्लिप चार्ट शीट्स को एक ब्लॉक में टेप से एक साथ चिपकाएँ. शीट्स पर एक गाँव/शहर का मैप बनाएँ. ऐसे 10 अलग-अलग स्थानों की रफ़ ड्रॉइंग या नाम शामिल करें जहाँ लोगों का सामना धर्म या आस्था से संबंधित समस्याओं से हो सकता है. (पेज 98 पर स्पष्टीकरण देखें).

  नीचे आपके 'मैप' में शामिल करने के लिए सुझावित स्थानों की एक सूची है. जो भी स्थान आपकी परिस्थिति में प्रासंगिक नहीं हैं उन्हें छोड़ दें और उनकी जगह अन्य अधिक प्रासंगिक स्थान शामिल करें. सुनिश्चित करें कि आप घर, धार्मिक संस्थान, दुकानें आदि सार्वजनिक स्थान और पुलिस स्टेशन आदि 'आधिकारिक' स्थान शामिल करें.

  मैप बनाते समय स्थानों के बीच काफ़ी जगह छोड़ें, पर करीब से संबंधित स्थानों, जैसे विभिन्न सरकारी ऑफ़िस, को पास-पास समूह बनाकर रखें. एक फ्लिप चार्ट शीट पर सब कुछ फ़िट करने की कोशिश के लालच में न फंसें - आपको अभ्यास के दौरान ड्रॉइंग्स के बीच लिखने की जगह चाहिए होगी.

  मानचित्र में शामिल करते हेतु संभावित स्थान: घर, एक स्कूल, एक अस्पताल, धार्मिक संस्थान, एक बाज़ार, एक फैक्ट्री, एक खेत, एक बस, पुलिस थाना और अदालत, नियोजन की अनुमति देने वाला सरकारी विभाग, धार्मिक मामलों का सरकारी विभाग और जन्म, मृत्यु व विवाह का पंजीयन करने वाला सरकारी विभाग.

(वैकल्पिक संस्करण: समूहों में बँट जाएँ और हर समूह से उसका खुद का मैप बनाने को कहें. समग्र फ़ीडबैक के साथ समापन करें. 20 मिनट जोड़ता है.)

- **चरित्रों वाली फ्लिप चार्ट शीट्स तैयार करें**
  1-2 फ्लिप चार्ट शीट्स तैयार करें जिन पर निम्नलिखित चरित्र लिखे हों, अधोरेखांकित शब्दों के स्थान पर उन धर्मों के नाम लिखें जो आपके देश की परिस्थिति में प्रासंगिक हैं. जैसे, '**छोटे अल्पसंख्यक समूह** की महिला' के स्थान पर आप उदाहरण के तौर पर बहाई महिला लिख सकते हैं. बड़े अक्षरों में और साफ़-साफ़ लिखें जिससे कुछ दूरी से भी लोग उसे पढ़ सकें.

चरित्र
- **बहुसंख्यक** लड़का/पुरुष
- **बहुसंख्यक** लड़की/महिला
- **बहुसंख्यक** धार्मिक नेता
- **सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय** का लड़का/पुरुष
- **सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय** की लड़की/महिला
- **सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय** का धार्मिक नेता
- **छोटे अल्पसंख्यक समुदाय** का लड़का/पुरुष
- **छोटे अल्पसंख्यक समुदाय** की लड़की/महिला
- **छोटे अल्पसंख्यक समुदाय** का धार्मिक नेता
- **बहुसंख्यक** धर्म छोड़ कर **अल्पसंख्यक धर्म अपनाने वाली महिला**
- **अल्पसंख्यक** धर्म छोड़ कर **बहुसंख्यक धर्म अपनाने वाला पुरुष**
- नास्तिक पुरुष जिसके विचार सोशल मीडिया पोस्ट के जरिये जाहिर हुए हों
- अलग-अलग धर्मों वाला दंपती (बताएँ कि पुरुष का धर्म क्या है और महिला का धर्म क्या है)
- चुनौती देना वाला: एक **बहुसंख्यक** महिला जिसके विचार/व्यवहार **बहुसंख्यकों** के सांस्कृतिक मानदंडों के विपरीत हों
- आलोचक: एक व्यक्ति जो धार्मिक विचारों या आचरणों की, या धार्मिक लोगों के व्यवहार की या राज्य के धर्मों के मामले में रुख की आलोचना करता है

सत्र शुरू होने से पहले, फ्लिप चार्ट मानचित्र और पात्र फ्लिप चार्ट शीट/शीटों को दीवार पर लगा दें.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 10 मिनट

- **फ्लिप चार्ट मानचित्र का परिचय**
  समूह को फ्लिप चार्ट मानचित्र के चारों ओर अर्धवृत्त में खड़े होने को कहें. निम्न बातें समझाएं:
  - लोगों को विभिन्न अवसरों और स्थानों पर धर्म या आस्था की आजादी से सम्बंधित समस्यायों का सामना करना पड़ता है. उन्हें बस में या सोशल मीडिया पर उनके खिलाफ नफरत भरी बातें सुननी पड़ सकती हैं, कार्यस्थल पर भेदभाव का सामना करना पड़ सकता है या राज्य की ओर से समस्याओं का - नीतियों, कानूनों, स्थानीय अधिकारियों या पुलिस बल के संदर्भ में.
  - इनमें से कुछ ऐसे स्थानों या अवसरों को इस 'मानचित्र' में देखा जा सकता है. (उन स्थानों की सूची पढ़ें जिनके नाम/चित्र मानचित्र में हैं).
  - यह नक्शे हमारे शहर या इलाके को दिखाता है, पर हम अधिक व्यापक रूप से हमारे देश के बारे में भी सोच सकते हैं. हम नक्शे पर अंतःकरण, धर्म या आस्था और विचारों की आजादी से संबंधित समस्याओं की मैपिंग करने जा रहे हैं.

- **पात्रों को प्रस्तुत करें**
  यह समझाएं कि हमारे खाका खींचने की शुरुआत, उन अनेक पात्रों से होगी जिन्हें हमारे मानचित्र में दिखाए गए एक या अधिक स्थानों पर धर्म या आस्था की आजादी से सम्बंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है.

  फ्लिप चार्ट शीट पर लिखी चरित्रों की सूची शुरू से आखिर तक पढ़ें. पूछें कि क्या उसमें ऐसे चरित्र नामौजूद हैं जिनका समस्याओं से सामना हो सकता है, और ग्रुप को जैसे सही लगे वैसे चरित्र जोड़ें.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 50 मिनट

- **सोचें** (5 मिनट)
  सभी से कहें कि वे बिना किसी अन्य को बताये, ऐसा कोई पात्र चुन लें जिसे, उनके विचार से, उनके देश/समुदाय में अंतःकरण, धर्म या आस्था और विचारों की आजादी से सम्बंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है.

  उनसे कहें कि वे 'नक्शे' को देखें और 3 मिनट तक इस प्रश्न के बारे में सोचें: आपके चरित्र को धार्मिक पहचान, प्रथाओं या आस्था के उसके विचारों के कारण मैप के किन स्थानों पर समस्याओं का सामना करना पड़ता? उसे किन समस्याओं का सामना करना पड़ता?

  सुनिश्चित करें कि यह बात स्पष्ट हो कि यहाँ कार्य दोषियों पर फ़ोकस करना नहीं है बल्कि उल्लंघनों के पीड़ितों के अनुभवों की मैपिंग करना है.

- **साझा करें और लिखें** (45 मिनट)
  1. एक व्यक्ति से कहें कि वह यह कहे कि उसने कौनसा चरित्र चुना और बहुत ही संक्षेप में यह बताए कि मैप के किन स्थानों पर उसके चरित्र को समस्याओं का सामना करना पड़ता और वे किस प्रकार की समस्याएँ होतीं.

     फ्लिप चार्ट शीट्स पर चरित्र को नोट करें, और व्यक्ति द्वारा बताई गई समस्याएँ उनके होने के स्थान के बगल में नोट करें. जैसे, आप बस के बगल में 'अलग-अलग धर्मों वाला दंपती - उत्पीड़न' लिख सकते हैं.

     जो व्यक्ति 2 मिनट के बाद भी बोलने से न रुके उसे रोकें, भले ही उसने उसके सोचे स्थानों/समस्याओं में से मात्र कुछ ही बताई हों. ऐसा यह सुनिश्चित करने के लिए है कि दूसरों को भी योगदान देने का समय मिले!
  2. अन्यों से पूछिए कि क्या उन्होंने भी वही पात्र चुना है और क्या उनके पास इस पात्र के बारे में कुछ अतिरिक्त कहने को है. इस मौके पर, चर्चा और कहानियां सुनाने को प्रोत्साहित कीजिये.
  3. पूछें कि क्या अन्य चरित्रों में से कोई ऐसा है जिसे इन्हीं स्थानों पर इन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ता. उन चरित्रों के नाम संबंधित समस्याओं की बगल में नोट करें.

एक और व्यक्ति से उसके द्वारा चुने गए चरित्र के बारे में पूछते हुए उपर्युक्त बिंदु 1-3 दोहराएँ. एक के बाद एक पात्रों पर तब तक चर्चा करते जाएं जब तक कि इसके लिए निर्धारित 45 मिनट में से 10 मिनट बचें. फिर, सभी से पूछें कि क्या वे कोई ऐसी समस्या मानचित्र में जोड़ना चाहेंगे जिस पर अब तक कोई बात नहीं हुई हो और उनसे कहें कि वे मानचित्र के सम्बंधित स्थान पर सम्बद्ध पात्र के नाम के साथ, उसे लिखें. अंतिम कुछ मिनटों में, लोग एक-दूसरे द्वारा अंकित की गई समस्याओं को पढ़ें.

यह अभ्यास ऊर्जावान के बाद, पूर्ण चर्चा के रूप में जारी रहेगा.

5. ऊर्जावान: चलें और रूकें 5 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण
प्रतिभागी निर्देशों का पालन करते हुए, जो कहा गया है उसका उलट करेंगे.

उद्देश्य
लोगों के उर्जा के स्तर को बढ़ाना और समस्यायों पर केन्द्रित सत्र का माहौल हल्का बनाना.

अभ्यास का संचालन कैसे करें
इन चरणों से गुज़रें:

- समूह को पूरे कमरे में फैल जाने को कहें.
- उन्हें कहें कि आप जब '**चलो**' कहें तो सब चलें और जब '**रुको**' कहें तब सब रुक जाएं. ये आदेश किसी भी क्रम में 20 से 30 सेकंड तक दें.
- फिर यह घोषणा करें कि अब इन आदेशों के अर्थ की अदलाबदली कर दी गई है. इसलिए, अब '**चलो**' का अर्थ है '**रुको**' और '**रुको**' का अर्थ है '**चलो**'. लगभग 30 सेकंड तक ये आदेश दें.
- अब दो नए आदेशों की घोषणा करें. जब आप कहें '**नाम**' तो सभी को जोर से अपना नाम बोलना है. और जब आप कहें '**ताली**' तब सभी को एक बार ताली बजाना है. ये करते हुए या तो उन्हें चलते रहना है या रुके रहना है.
- इन दोनों नए आदेशों का, '**चलो**' और '**रुको**' के साथ अभ्यास करें (जिनके अर्थ अभी भी उलटे हैं).
- अंत में यह घोषणा करें कि दोनों अंतिम आदेशों का अर्थ बदल दिया गया है. अब जब आप कहें '**ताली**' तो उन्हें अपना नाम बोलना है और जब आप कहें '**नाम**' तब इन्हें ताली बजाना है.
- यह खेल पांच मिनट पूरे होने तक जारी रखें.

इस अभ्यास का एक **वीडियो ट्यूटोरियल** यहाँ है.

6. विश्लेषण अभ्यास: हमारे नगर का FORB मानचित्र, भाग 2 25 मिनट

समग्र चर्चा

विवरण
यह ऊर्जावान से पहले वाले अभ्यास का विस्तार है. अभ्यास के इस भाग में सहभागी मैपिंग अभ्यास में उनके द्वारा किए गए अवलोकनों का विश्लेषण करते हैं; विश्लेषण के लिए वे प्रस्तुति में पेश किए गए तीन चरणों वाले मॉडल का उपयोग करते हैं.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 5 मिनट
सभी से फ्लिप चार्ट के सामने अर्धवृत्त में बैठने के लिए कहें
- समूह को बताएं कि अब वे खाका खींचने के दौरान उन्होंने जो पता लगाया, उसका विश्लेषण उस मॉडल का उपयोग करते हुए करेंगे, जिसे उन्होंने वार्ता में सीखा है.
- पूछें कि क्या किसी को वे तीन चरण याद हैं. जब वे उत्तर दे चुके हों तो PPT स्लाइड 13 या उन्हीं शब्दों वाला फ्लिप चार्ट दोबारा दिखाएँ.
- उनसे पूछें कि क्या उन्हें याद है कि दुष्प्रचार से क्या आशय है और अगर ज़रूरी हो, तो उन्हें याद दिलाएं.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 20 मिनट
ये प्रश्न पूछें और चर्चा में प्राप्त मुख्य बिंदुओं को खाली फ्लिप चार्ट शीट्स पर लिख लें. यदि चर्चा में अतिरिक्त समस्याएँ या चरित्र सामने आएँ तो मैप पर उन्हें भी नोट करें.
- क्या हमारे मानचित्र पर दुष्प्रचार, भेदभाव और हिंसा के उदाहरण अंकित हैं?
- जिन समस्यायों की पहचान हमने की है, उनसे कौन लोग प्रभावित होते हैं?
  - हमारे समुदाय में कौन विशेष रूप से कमज़ोर हैं?
  - क्या महिलाओं और लड़कियों की समस्याएं और कमजोरियां, पुरुषों और लड़कों से भिन्न होती हैं?
- आवृत्ति, स्तर और प्रभाव की दृष्टि से समस्याएं कितनी गंभीर हैं?
  - आवृत्ति: हमने जो समस्याएँ पहचानी हैं वे कभी-कभार होती हैं या अक्सर? क्या उनमें से कोई सुव्यवस्थित है - यानी समाज के काम करने के तरीके में मौजूद है?
  - पैमाना: इन समस्याओं से कम व्यक्ति प्रभावित होते हैं या अधिक? कौन-सी समस्याएं अधिकांश लोगों को प्रभावित करतीं हैं?
  - प्रभाव: किन समस्याओं का प्रभावित लोगों पर सबसे गंभीर प्रभाव होता है? समूह को यह याद दिलाइए ये कि अगर किसी समस्या से केवल बहुत थोड़े लोग प्रभावित होते हैं परन्तु अगर उल्लंघन का उन पर अत्यंत भयावह प्रभाव पड़ता है, तो वह समस्या गंभीर है.
- समस्याओं को उत्पन्न करने में किनका योगदान है?
  - क्या राज्य स्वयं उल्लंघन कर रहा है, अन्यों द्वारा उत्पन्न समस्याओं के बारे में कुछ नहीं कर रहा या वह सक्रिय रूप से FORB को बढ़ावा दे रहा है?
  - क्या हम कभी समस्या का भाग होते हैं, चाहे जानते-बूझते या अनजाने में?
- क्या ऐसे चरित्र - व्यक्ति या धार्मिक समुदाय - हैं जिनकी समस्याओं के बारे में हम नहीं जानते या जिन्हें हम ठीक से नहीं समझते? क्या हम उनके अनुभवों के बारे में पता कर सके और वह जानकारी हमारे नक्शे तथा हमारे विश्लेषण में जोड़ सके?
- इन समस्याओं की पहचान करते हुए आपको कैसा महसूस हो रहा है?

सुझाव! हमारे नगर की FORB फ्लिप चार्ट शीट को संभाल कर रखें और यदि संभव हो तो उसे दीवार पर ही लगा रहने दें. आपको भविष्य के सभी सत्रों में इसकी ज़रुरत पड़ेगी.

चर्चा के दौरान इस बात पर प्रकाश डालने की कोशिश करें कि कैसे सहभागियों द्वारा बताए गए उदाहरण दिखाते हैं कि FORB उल्लंघनों में किस प्रकार अन्य अधिकारों के उल्लंघन भी शामिल होते हैं, जैसे महिलाओं के अधिकारों के और शिक्षा या रोज़गार के अधिकारों के. इस बात पर ज़ोर दें कि हमारे सभी मानव अधिकार आपस में जुड़े हुए हैं. हमें उन सबकी ज़रूरत है!

टिप्पणी

इसके लिए आपको आराम से 20 मिनट से अधिक समय लग जाएगा. किसी एक प्रश्न पर चर्चा में बहुत अधिक समय न लगाएँ ताकि अधिकतम संभव प्रश्न कवर किए जा सकें. आप 'अच्छाईयों का जाल' अभ्यास को काटकर इस चर्चा का समय बढ़ा सकते हैं.

7. अंतिम टिप्पणियां और चेंजमेकर कहानियाँ 5 मिनट

संक्षिप्त वार्ता

विवरण

इस लघु वार्ता के साथ सत्र समाप्त होगा, जो बदलाव लाने की बात को एक साधारण व्यक्ति द्वारा अपने FORB अधिकारों के लिए खड़े होने की कहानी से जोड़ती है और प्रतिभागियों को बताती है कि आगे के सत्रों में वे क्या अपेक्षा कर सकते हैं.

क्या कहें

निम्न बिंदुओं पर चर्चा करें. अगर संभव हो तो सत्र के पावरपॉइंट की स्लाइड 14-19 का प्रयोग करते हुए एमीना की कहानी सुनाएं (या इन स्लाइडों के प्रिंट आउट निकल लें).

- अब हम स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम के भाग 1 के पांचवें और अंतिम सत्र के अंत में हैं.
- इन सत्रों में हमने मानव अधिकारों, धर्म या आस्था की आजादी, पहचान, विशेषाधिकार और प्रतिकूलताओं और हमारे समुदाय या देश में धर्म या आस्था की स्वतत्रता के बारे में जाना. आज के सत्र में हमने लोगों को पेश आने वाली समस्याओं पर बात की, जो बहुत महत्वपूर्ण है.
- ऐसा हो सकता है कि हम हमेशा इस बात पर सहमत न हुए हों कि समस्याएँ क्या हैं या किन चीज़ों को बदलने की ज़रूरत है. पर ऐसी चीज़ें हैं जिन पर हम सहमत हो सकते हैं और ऐसे बदलाव हैं जो हम सब होते देखना चाहते हैं.
- जिन समस्याओं को हमने चिन्हित किया है, उनके चलते हमारे सामने दो विकल्प हैं: हम स्वयं को निराश, हताश और असहाय मानने लगें या फिर हम किसी ठोस चीज़ की पहचान करें - भले ही वह कितनी ही छोटी क्यों न हो - जिसमें बदलाव लाने के लिए हम प्रयास कर सकते हैं. हम अपने समुदायों में चेंजमेकर्स बनें.
- पृष्ठ 109 पर दी गई एमीना की कहानी पढ़ कर सुनाएं और पावरपॉइंट स्लाइड 14-19 (या उनके प्रिंट आउट दिखाएं).
- आइए, एमिना के काम के लिए उसका तालियों से अभिनंदन करें और इस पाठ्यक्रम का भाग 1 पूरा करने के लिए हम सबका तालियों से अभिनंदन करें! पाठ्यक्रम के भाग 2 में, हम इस बात पर फ़ोकस करेंगे कि हम बदलाव कैसे ला सकते हैं - हम किन विधियों का उपयोग कर सकते हैं और कैसे कार्य योजना तैयार कर सकते हैं.

जो समूह पाठ्यक्रम के केवल 1 - 5 सत्रों में भाग ले रहे हैं, उनके लिए अतिरिक्त/वैकल्पिक अंतर्वस्तु

अगर आप पाठ्यक्रम का केवल भाग 1 संचालित कर रहे हैं तो सत्र 5 के अंत में कृपया निम्न तत्वों को शामिल करें. इसके लिए या तो सत्र की अवधि को 20 मिनट लम्बा करें या अभ्यास 1: अच्छाईयों का जाल को छोटा करें और मानचित्र बनाने के अभ्यास से 5 मिनट निकालें.

8. मूल्यांकन अभ्यास: दिमाग, दिल, हाथ 15 मिनट

व्यक्तिगत अभ्यास

इस अत्यंत सरल व्यक्तिगत मूल्यांकन अभ्यास से प्रतिभागियों को यह बताने में मदद मिलेगी कि वे पाठ्यक्रम से क्या सीखकर जा रहे हैं.

संसाधन

- प्रति प्रतिभागी एक दिमाग-दिल-हाथ हैंडआउट.
- प्रति प्रतिभागी एक कलम.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 2 मिनट
हर प्रतिभागी को एक हैंडआउट दें.
समझाएँ कि वे पाठ्यक्रम से अपने साथ व्यक्तिगत रूप से अपने घर क्या ले जा रहे हैं इस बारे में सोचने के लिए वे एक मूल्यांकन अभ्यास करने जा रहे हैं. इस बारे में स्पष्ट रहें कि क्या शीट्स को पाठ्यक्रम मूल्यांकन में आपकी मदद के लिए इकट्ठा किया जाएगा या वे शीट्स को बतौर अनुस्मारक अपने साथ घर ले जा सकते हैं. यदि आप शीट्स इकट्ठी कर रहे हैं तो यह महत्वपूर्ण है कि लोग निजी विचार लिखने से बचें!

अभ्यास का संचालन कैसे करें 13 मिनट
प्रतिभागियों से निम्न पर विचार करने के लिए कहें:

- सोचें कि आपने ज्ञान और विचारों के सन्दर्भ में क्या पाया है. इन्हें अपने दिमाग में अंकित कर लें.
- सोचें कि आपने अपने बारे में, अपनी भावनाओं और दृष्टिकोण के बारे में क्या नया जाना है. इन्हें अपने दिल में अंकित कर लें.
- सोचें कि कोई काम अलग ढंग से करने या कोई कदम उठाने के बारे में आपके मन में क्या विचार आये हैं. इन्हें अपने हाथों पर लिख लें.
- जितना संभव हो उतना विशिष्ट रहे. उन्हें यह करने के लिए 5 मिनट दें.

आपके समूह के आकार के अनुसार, या तो गोल घेरे के चारों ओर घूम कर प्रत्येक व्यक्ति से एक बात साझा करने को कहें या प्रतिभागियों से कहें कि वे जोड़ियों में बंट कर अपनी उत्तरों पर चर्चा करें और इनमें समानताओं और अंतरों पर विचार करें. (8 मिनट)

(वैकल्पिक संस्करण: तीन अलग-अलग फ्लिप चार्ट शीट्स पर सिर, दिल और हाथ बनाएँ. सहभागियों से कहें कि वे उन प्रश्नों के उत्तर पोस्ट-इट नोट्स पर लिखें और उन्हें फ्लिप चार्ट शीट्स पर चिपका दें. समग्र चर्चा में परिणामों पर चर्चा करें.)

9. धन्यवाद एवं अलविदा 5 मिनट

पाठ्यक्रम में सहभागियों को एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जानने का मौका मिला और उन्होंने इस प्रक्रिया में अपना समय और ऊर्जा लगाई. अब समय है उन्हें धन्यवाद कहने का और पाठ्यक्रम में उनके द्वारा विकसित नए विचारों, अंतर्दृष्टियों, कौशलों और संबंधों का जश्न मनाने का!

शाबाशी देने और धन्यवाद कहने के लिए एक बहुत ही छोटे समारोह की योजना बनाएँ. आप चाहें तो कोई गीत गा सकते हैं, कुछ शब्द कह सकते हैं, प्रार्थना कर सकते हैं, नाच सकते हैं, इत्यादि. एक प्रमाणपत्र उपलब्ध है. अगर आप चाहें तो उसे प्रिंट कर प्रतिभागियों को दे सकते हैं.

स्रोत
चलें और रुकें: मार्क कोल्लार्ड, Playmeo. www.playmeo.com/activities/energizer-warm-up-games/walk-stop/

प्रस्तुति स्क्रिप्ट

चीज़ें कैसे बिगड़ती (और बेहतर) होती हैं

सत्र 5 की प्रस्तुति के लिए यह स्क्रिप्ट सत्र पावरपॉइंट की स्लाइड 3-13 द्वारा सचित्र है.

परिचय

पिछले सत्र में:

- हमने देखा कि धर्म या आस्था की आजादी के उल्लंघन किस प्रकार होते हैं और इससे लोगों का जीवन कैसे प्रभावित होता है,
- हमने इस पर विचार किया कि ये उल्लंघन कौन करता है - राज्य, कानून के ज़रिये और उसके अधिकारियों द्वारा कार्यवाही करके और न करके, अथवा समुदाय के लोग,
- हमनें नाटकों को एक औजार के रूप में प्रयुक्त करते हुए पड़ताल की कि ये उल्लंघन कैसे नजर आते हैं और उन्हें पहचानने का अभ्यास किया.

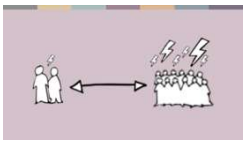

हम इस बारे में विचार करेंगे कि ये उल्लंघन किस तरह मामूली से लेकर, ख़राब और फिर और ख़राब होते जाते हैं - व्यक्तियों को प्रभावित करने वाली यदाकदा घटनाओं से लेकर लोगों के अधिकारों पर सुनियोजित, व्यापक और गंभीर हमलों तक. स्थितियाँ कैसे बिगड़ती हैं इस पर विचार करने का एक तरीका है इसे तीन चरणों की प्रक्रिया के रूप में देखना - दुष्प्रचार, भेदभाव और हिंसा.

अत्याचार के तीन चरण

पहला चरण है दुष्प्रचार. इस चरण में व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूहों - जैसे धार्मिक अल्पसंख्यकों - के बारे में पूर्वग्रह, रुढीबद्ध धारणाएं और झूठ फैलाए जाते हैं. ये पूर्वाग्रह कई तरीकों से फैलाए जाते हैं - अभिवावक, अध्यापक और स्कूल की किताबें बच्चों को जो सिखातीं हैं उसके ज़रिये, रेडियो या सोशल मीडिया के ज़रिये या राजनेताओं के भाषणों और धार्मिक नेताओं के उपदेशों के जरिये.

कोई भी समाज पूर्वाग्रहों से पूरी तरह मुक्त नहीं होता परन्तु जब पूर्वाग्रहों और रूढ़ीबद्ध धारणाओं को चुनौती नहीं दी जाती, और विशेषकर जब राजनैतिक और धार्मिक नेता उन्हें बढ़ावा देते हैं, तब पूर्वाग्रह और रूढ़ीबद्ध धारणाएं, असहिष्णुता की संस्कृति और विभिन्न समूहों के बीच तनाव को जन्म देतीं हैं.

ऐसा होने पर, आम लोगों, स्थानीय अधिकारियों और यहाँ तक कि सरकार के लिए यह आसान बल्कि सामान्य हो जाता है कि वे न केवल भेदभाव करने के बारे में सोचें या बोलें बल्कि इस तरह से काम करें जिससे भेदभाव हो. दुष्प्रचार, भेदभाव को स्वीकार्य बनाता है. दुष्प्रचार का चरम होता है लोगों को यह मानने के लिए उकसाना कि अन्यों के साथ भेदभाव बल्कि हिंसा भी स्वीकार्य और उचित है. सबसे चरम रूप में, दुष्प्रचार का उपयोग लोगों को यह मानने हेतु उकसाने में किया जाता है कि केवल भेदभाव ही नहीं बल्कि हिंसा भी स्वीकार्य है या यहाँ तक कि सही भी है.

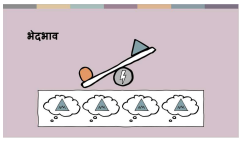

भेदभाव जीवन के हर क्षेत्र में लोगों को प्रभावित करता है. पिछले सत्र में हमने राज्य द्वारा भेदभाव के उदाहरण देखे - जैसे भेदभावपूर्ण पारिवारिक और व्यक्तिगत पहचान कानून, पुलिस व अदालतों द्वारा कानूनों को लागू करने में भेदभाव और शिक्षा जैसी सेवाएँ उपलब्ध कराने भेदभाव. हमने निजी क्षेत्र में भी भेदभाव के उदाहरण देखे जो लोगों को रोज़गार से दूर करते हैं.

कोई भी समाज भेदभाव से पूर्णतः मुक्त नहीं होता परन्तु व्यापक और सुनियोजित भेदभाव तभी हो सकता जब वह अज्ञानता और असहिष्णुता की संस्कृति पर आधारित हो. अगर बहुसंख्यक लोग उसे स्वीकार नहीं करेंगे तो भेदभाव जारी नहीं रह सकता.

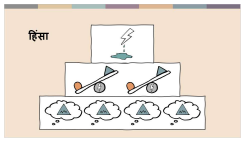

और जिस प्रकार दुष्प्रचार भेदभाव की नींव बनाता है, उसी प्रकार दुष्प्रचार और भेदभाव मिलकर हिंसा की नींव तैयार करते हैं. समुदाय में हिंसा कई रूप ले सकती है - तोड़फोड़ से लेकर उत्पीड़न, धमकियों और शारीरिक हिंसा तक. और राज्य द्वारा हिंसा में मनमानी कैद, प्रताड़ना और लिंग-आधारित हिंसा शामिल हो सकते हैं.

आवृत्ति, स्तर और प्रभाव

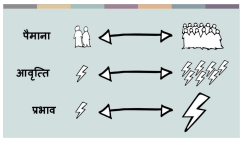

तीनों तरह की समस्याओं - दुष्प्रचार, भेदभाव और हिंसा - का पैमाना और आवृत्ति अलग-अलग स्तर की हो सकतीं हैं और उनके प्रभाव के भी कई स्तर हो सकते हैं. कुछ उल्लंघन केवल चंद व्यक्तियों को प्रभावित कर सकते हैं या वे विशाल समूहों पर भी असर डाल सकते हैं. ये उल्लंघन यदाकदा हो सकते हैं या नियमित और सुनियोजित हो सकते हैं - अर्थात वे सामाजिक प्रणाली और उसके ढांचे का हिस्सा हो सकते हैं. और लोगों पर उनका प्रभाव सीमित हो सकता है या खौफनाक भी.

कई देशों में हुए अनुभव हमें बताते हैं कि पूर्वग्रह और दुष्प्रचार जितने अधिक फैले हुए और गंभीर होंगे, भेदभाव भी उतना ही अधिक फैला हुआ और गंभीर होगा. और ये दोनों जितने अधिक फैले हुए और गंभीर होंगे, हिंसा के अधिक फैलने और अधिक गंभीर होने की संभावना उतनी ही अधिक होगी. एक चीज़ दूसरी को जन्म देती है. सुनने में भले ही अवसादजनक लगे पर हालात कैसे बदतर हो सकते हैं यह समझने से हमें इस बारे में सोचने में मदद मिल सकती है कि हालात कैसे बेहतर हो सकते हैं.

निष्कर्ष

हर चीज़ की शुरुआत एक-दूसरे के बारे में हमारे सोचने, बोलने और व्यवहार करने के तरीके से होती है. और यह एक ऐसी चीज़ है जिसके बारे में हममें से हर व्यक्ति - हमारे परिवारों और व्यक्तिगत नेटवर्कों में - कुछ-न-कुछ कर सकता है. यह भी संभव है कि हम सामुदायिक स्तर पर भी इस बारे में कुछ कर पाएँ - जैसे हमारे आस्था समुदायों, स्कूलों और कार्यस्थलों के संदर्भ में.

निःसंदेह यह काफ़ी नहीं है. निसंदेह यह काफी नहीं है. उन आधिकारिक प्रणालियों को भी बदलने की ज़रुरत है जो लोगों के बीच भेदभाव करती हैं और उन्हें नुकसान पहुचातीं हैं - ख़राब कानूनों से लेकर स्कूल अध्यापको और पुलिसकर्मियों जैसे अधिकारियों के व्यवहार तक.

इस तरह के परिवर्तन को संभव बनाने के लिए हमें ज़रुरत है ऐसे अल्पसंख्यक समुदायों की जो अपने अधिकारों के बारे में जानते हों और उनके लिए खड़े होने में सक्षम हों. और हमें ज़रुरत है ऐसे बहुसंख्यकों की जो अल्पसंख्यकों का साथ देने के लिए तत्पर हों. और ऐसे राजनैतिक और धार्मिक नेताओं की जो यह समझते हों कि मानव अधिकार का सम्मान, रक्षा और उन्हें बढ़ावा देना उनकी ज़िम्मेदारी है.

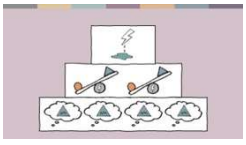

इसे वास्तविकता बनाना एक धीमी और कठिन प्रक्रिया है. यह प्रक्रिया तब शुरू होगी जब हम अपने सन्दर्भ का विश्लेषण करेंगे और समस्याओं की पहचान करेंगे. हम तीन चरणों के इस मॉडल: दुष्प्रचार - भेदभाव - हिंसा का प्रयोग इसमें हमारी सहायता करने के लिए कर सकते हैं.

आभार
यह स्क्रिप्ट, जॉन केनडिलिन द्वारा विकसित थ्री फेसिस ऑफ़ परसीक्यूशन मॉडल पर आधारित है.

चेंजमेकर कहानियाँ

निम्न कहानी सत्र 5 की अंतिम टिप्पणियों के भाग के रूप में पढ़ी जाएगी. इसे सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड्स 14-19 द्वारा स्पष्ट किया गया है.

एमीना की कहानी, बोस्निया हर्ज़ेगोविना

कहानी

1995 में बोस्नियाई युद्ध की समाप्ति पर, बोस्निया हर्ज़ेगोविना का धार्मिक परिदृश्य नाटकीय रूप से बदल गया था. कुछ इलाके जो मुसलमान बहुल थे, ईसाई बहुल हो गए और इसके उलट भी हुआ. नस्लीय और धार्मिक तनाव आज भी बना हुआ है, और जो लोग अपने मूल निवास के इलाकों में लौटे हैं वे विशेष रूप से असुरक्षित हैं.

यह एमिना हैं. एमिना सकारात्मक बदलाव में योगदान देना चाहती थीं, इसलिए उन्होंने नाहला नामक एक बोस्नियाई NGO द्वारा संचालित एक संक्षिप्त मानव अधिकार ट्रेनिंग पाठ्यक्रम किया.

“मैंने इस पाठ्यक्रम से बहुत कुछ सीखा. मैंने धर्म या आस्था की आजादी के मायने जाने और मैंने अपने संदर्भों में इनके उल्लंघनों की पहचान करना प्रारंभ कर दिया. मैंने नफरत भरे भाषणों की खबरें सोशल मीडिया पर देनी शुरू किया.”

पाठ्यक्रम के बाद, नाहला ने एमिना को युवा स्वयंसेवकों के एक समूह से मिलवाया, जो देश में धर्म या आस्था की आजादी के उल्लंघनों के दस्तावेज़ीकरण के लिए प्रतिष्ठित और विश्वसनीय स्थानीय व राष्ट्रीय मीडिया की रिपोर्टों का उपयोग करते हैं और हर वर्ष होने वाली सभी घटनाओं की एक सूची तैयार करते हैं.

एमीना कहती हैं, “हमारे पास प्रश्नों का एक सेट है जिसका उपयोग कर हम घटनाओं का वर्गीकरण करते हैं - जैसे कौनसा समुदाय प्रभावित है और उसके किस प्रकार के अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है - धमकाना, संपत्ति या लोगों पर हमले इत्यादि.”

यह समूह अपनी रपटें बोस्निया के अधिकारियों और मीडिया को एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे आर्गनाईजेशन फॉर सिक्युरिटी एंड को-आपरेशन इन यूरोप (ओएससीई) को भेजता है जो अपनी वार्षिक रपटों में प्रायः कार्यकर्ताओं द्वारा दी गई जानकारियों को सम्मिलित करते हैं.

एमिना कहती है “मैं समझती हूँ कि हमारे कार्यों का प्रभाव पड़ता है, भले ही वे कितने ही छोटे नजर आएं”. उल्लंघनों का दस्तावेज़ीकरण करने तथा उन पर अंतरराष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करने से प्राधिकरणों को इन मुद्दों को गंभीरता से लेने के लिए राज़ी करने में मदद मिल सकती है. मानव अधिकार के उल्लंघन के बारे में जागरूकता बढ़ाने से हमें हमारे पूर्वग्रहों को समझने में भी मदद मिलती है.”

स्रोत
एमिना फ़र्लजाक, PRVI और नाहला सेंटर फ़ॉर एजुकेशन एंड रिसर्च

सत्र 6-9

भाग 2: बदलाव की यात्रा

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम का उद्धेश्य है प्रतिभागियों को अपने-अपने समुदायों में धर्म या आस्था की आजादी (FORB) के चेंजमेकर बनाना. बदलाव की प्रक्रिया एक लंबी और कभी-कभी कठिन यात्रा होती है. यदि हमारे पास बिंदु अ से बिंदु ब तक की यात्रा कैसे की जाए यह बताने वाला नक्शा हो तो वह इसमें काफी मददगार होता है!

पाठ्यक्रम का भाग 2 प्रतिभागियों को उनकी 'बदलाव की यात्रा' की योजना बनाने में मदद करता है. प्रतिभागी FORB व अन्य अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए उपयोगी रणनीतियों (या तरीकों) के बारे में जानेंगे और उनके द्वारा चिन्हित एक FORB समस्या के लिए कार्य योजना बनाने के प्रक्रिया के बारे में उन्हें मार्गनिर्देशन दिया जायेगा. सत्र कौशल और कार्रवाई पर ध्यान केंद्रित करते हैं - प्रतिभागियों को अपनी बात पर अमल करने के लिए तैयार करने पर!

भाग 2 में चार सत्र हैं, जिन्हें दो-दो भागों में विभाजित किया गया है. प्रत्येक भाग के साझा सीखने के उद्देश्य एवं अध्ययन प्रक्रिया हैं, जिनका विस्तार दोनों सत्रों तक है.

- सत्र 6 एवं 7 रणनीतियां सीखने एवं यह समझने पर केन्द्रित हैं कि प्रतिभागी मानव अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए इनका प्रयोग कैसे कर सकते हैं. साथ ही उन लोगों के प्रेरणादायक प्रसंग भी इसमें शामिल हैं जो इन रणनीतियों के माध्यम से बदलाव ला सके हैं.
- सत्र 8 और 9 फ़ोकस करते हैं कार्य योजना बनाने पर - समुदाय में बदलाव लाने के लिए ठोस विचार विकसित करने पर. सहभागी कार्य योजना बनाने का कौशल विकसित करते हैं और कार्य योजना बनाने के साधनों का उपयोग करके अभ्यास करते हैं. आपके समूह की प्रकृति के आधार पर, कार्य योजनाएँ पाठ्यक्रम के बाद कार्यान्वित की जाने वाली वास्तविक योजनाएँ या 'अभ्यास' योजनाएँ हो सकती हैं.

सत्र 6

कहानियों से प्रेरित - रणनीतियों से सशक्त

सत्र अवलोकन

सत्र 6 एवं 7 साझे सीखने के उद्देश्य एवं एकल अध्ययन प्रक्रिया के चलते 'जोड़ीदार' हैं.

मानव अधिकारों को बढ़ावा देने के कई तरीके हो सकते हैं जिन्हें 15 रणनीतियों में समेटा जा सकता है. सत्र 6 एवं 7 इन रणनीतियों का प्रारंभिक और बुनियादी परिचय देते हैं. यद्यपि सत्र 6 में प्रस्तुतिकरण शामिल है, लेकिन वह सिद्धांतों की बजाए प्रेरक कहानियों एवं आपसी विचार-विमर्श के माध्यम से प्रेरणा प्रदान करने पर केन्द्रित है.

एक या दो रणनीतियों की विस्तृत एवं गहन जानकारी देने के बजाए ये सत्र प्रतिभागियों को वे विभिन्न तौर-तरीके बताते हैं जिनके माध्यम से वे बदलाव ला सकते हैं. पृष्ठ 155-158 पर उन अन्य स्रोतों की जानकारी दी गई है जहाँ इनमें से कुछ रणनीतियों का गहन अध्ययन किया जा सकता है.

15 रणनीतियों का विंहगावलोकन
आपातकालीन रणनीतियां: निवारक उपाय; रोकें और बचाएं; सहायता मांगें और सचेत करें.
बदलाव की रणनीतियां: अभियान; समर्थन; प्रोत्साहन व अवहेलना.
निर्माण की रणनीतियां: जागरूकता; लोगों को जोड़ना; कौशल और नेटवर्क्स.
उपचारात्मक रणनीतियां: दस्तावेज़ीकरण करें; याद करें; न्याय और मुआवजा मांगें; भौतिक एवं मनोसामाजिक सहायता उपलब्ध करवाएं.

टिप्पणी

सत्र 6-7 की सामग्री सेंटर फॉर विक्टिम्स ऑफ़ टार्चर www.newtactics.org द्वारा संचालित 'मानव अधिकारों में नयी रणनीतियां परियोजना' के लिए विकसित रणनीतिक तंत्र व उसका अनुकूलित रूपांतरण है. यह वेबसाईट आपके लिए अत्यंत प्रेरक हो सकती है!

सीखने के उद्देश्य

सत्र 6 एवं 7 मानव अधिकारों को बढ़ावा देने संबंधी रणनीतियों की जानकारी देने पर केन्द्रित हैं.

इन सत्रों के अंत तक प्रतिभागी:

- मानव अधिकारों को बढ़ावा देने की रणनीतियों की चार विभिन्न श्रेणियों व उनमें से प्रत्येक के अंतर्गत की जा सकने वाली कार्यवाहियों के संबंध में सामान्य जानकारी देने में सक्षम होंगे
- अपने समुदाय में मानव अधिकारों को प्रोत्साहन देने की आकांक्षा व्यक्त करेंगे
- अपने समुदाय में FORB को प्रोत्साहित करने के लिए संयुक्त रूप से ऐसे पांच कार्यों की पहचान करेंगे जो वे व्यक्तिगत तौर पर कर सकते हैं और पांच ऐसे कार्यों की जो वे सामूहिक / संस्थागत स्तर पर अपनी भागीदारी के साथ कर सकते हैं.

टिप्पणी

याद रखें कि इन सीखने के उद्देश्यों की वास्तविकता आपके समूह के आरंभ बिंदु पर निर्भर करेगी. सीखने के उद्देश्य का उद्देश्य उन क्षेत्रों को इंगित करना है जहाँ प्रशिक्षक प्रतिभागियों के ज्ञान, दृष्टिकोण और क्रियात्मक कौशल में प्रगति देख सकते हैं. संभव है कि प्रगति एक सत्र में हासिल न हो बल्कि पाठ्यक्रम के दौरान क्रमिक ढंग से हो.

सत्र की अंतर्वस्तु और समय

आरंभिक अभ्यास: चेंजमेकर कहानियों पर समूह चर्चा दूसरों से प्रेरणा लेने से सत्र की शुरुआत करें.	20 मिनट
सोच-विचार अभ्यास: मूकदर्शक एवं उपचारक इससे इस मुद्दे पर विचार किया जा सकेगा कि हमें जब कोई अन्याय होता नजर आता है तो ऐसा क्यों होता है कि कभी हम कुछ करते हैं और कभी कुछ नहीं करते.	25 मिनट
व्यक्तिगत अभ्यास: मैं कौन हूँ? यह चित्र बनाने का अभ्यास है जिससे हम यह विचार कर सकेंगे कि किन संदर्भों में हम बदलाव ला सकते हैं.	15 मिनट
प्रस्तुति: युक्तियों का परिचय यह एक महत्वपूर्ण प्रस्तुतिकरण है जिसमें आग लगने को एक बिम्ब के रूप में प्रयुक्त करते हुए, मानव अधिकारों को बढ़ावा देने की चार प्रकार की रणनीतियों का परिचय दिया जाता है (आपातकालीन, परिवर्तनकारी, निर्माणकारी एवं उपचारात्मक रणनीतियां).	10 मिनट
समग्र फ़ीडबैक के साथ सामूहिक अभ्यास: आपातकालीन रणनीतियों पर चर्चा प्रतिभागी 'आपातकालीन' रणनीतियों पर चर्चा करते हैं और इनके उपयोग के तरीकों पर विचार-विमर्श करते हैं.	45 मिनट
अंतिम टिप्पणियां सत्र के विभिन्न भागों को एक दूसरे से जोड़ें.	5 मिनट
कुल समय	**2 घंटे**

तैयारी करें

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप सत्र की तैयारी करें. याद रखें - आपको अपने समूह की बेहतर समझ है! आपके समूह की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार सत्र के किसी भी तत्व को अनुकूलित और परिवर्तित करने के लिए आपका स्वागत है.

इस सत्र के लिए संसाधन

पृष्ठ 16 पर सूचीबद्ध प्रत्येक सत्र के लिए मानक संसाधनों के अतिरिक्त, इस सत्र को संचालित करने के लिए आपको निम्नलिखित संसाधनों की आवश्यकता होगी:

- पर्याप्त संख्या में फ्लिप चार्ट शीट एवं रंग भरने हेतु इतने कलम ताकि प्रत्येक प्रतिभागी को एक कलम मिल सके.
- 'हमारे नगर का FORB मानचित्र' फ्लिप चार्ट शीटें, जो पिछले सत्र में बनाई गईं थीं.
- एक फ्लिप चार्ट शीट जिसका शीर्षक 'कार्रवाही के विचार: आपातकालीन रणनीतियां' और ढेर सारे पोस्ट-इट नोट्स.
- रणनीतियों के सारांश एवं समस्त आपातकालीन रणनीतियों/कहानियों के पोस्टरों के प्रिंटआउट.
- (वैकल्पिक) यदि आप पावरपॉइंट का उपयोग नहीं कर रहे हैं तो आप पावरपॉइंट स्लाइड्स 3-10 के चेंजमेकर कहानियों के फोटोग्राफ्स के प्रिंटआउट का उपयोग कर सकते हैं.

इस सत्र के **सहायक संसाधन** यहाँ हैं.

कक्ष तैयार करना

इस सत्र के लिए यह एक अच्छा विचार होगा कि प्रारंभ में कुर्सियां सामने की ओर मुंह करते हुए अर्धवृत्त में लगाई जाएं. सत्र शुरू होने से पहले 'FORB मैप' और 'कार्रवाही के विचार: आपातकालीन रणनीतियां' फ्लिप चार्ट शीट दीवार पर चिपका दें.

'मैं कौन हूँ?'

"मूकदर्शक-उपचारक और मैं कौन हूँ, अभ्यासों ने मिले-जुले एहसास पैदा किए. हम कितनी बार मूकदर्शक बने रहते हैं (सोशल मीडिया पर भी) यह जानने से दुख उत्पन्न हुआ. पर हम जो ठोस युक्तियाँ इस्तेमाल कर सकते हैं उन सभी के बारे में जानने से हमें इस बारे में काफ़ी उम्मीद भी मिली कि हम कैसे बदलाव ला सकते हैं और अग्रसक्रिय चेंजमेकर्स बन सकते हैं. समूह में युक्तियों का उपयोग करने की प्रतिबद्धता का एक मज़बूत एहसास था."

उकोहा न्वोबिया, सुविधादाता, नाइजीरिया

विस्तृत सत्र योजना

1. आरंभिक अभ्यास: चेंजमेकर कहानियाँ पर समूह चर्चा 20 मिनट

चर्चा का सामूहिक अभ्यास

विवरण
समूह चर्चा में तीन कहानियों का पढ़ा जाना और उसके उपरांत उन पर चर्चा.

उद्देश्य
पाठ्यक्रम के भाग 2 की प्रक्रिया को प्रस्तुत करने और सत्र की सकारात्मक शुरुआत करने के लिए, हम उन लोगों की परिवर्तनकारी कार्रवाइयों से प्रेरणा लेंगे जिन्होंने अधिकारों की रक्षा और सामाजिक बदलाव के लिए साहसिक कदम उठाए हैं.

संसाधन

- पावरपॉइंट स्लाइड्स 1-10.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 2 मिनट
सत्र में सभी का स्वागत करें और निम्नलिखित बातें समझाएं:

- अब तक के सत्रों में हमने मानव अधिकारों, धर्म एवं आस्था की स्वतंत्रता के अधिकार और अधिकारों के उल्लंघन के बारे में सीखा. हमने इसका खाका भी बनाया कि हमारे समुदाय मे FORB उल्लंघन का स्वरूप क्या है. हमने हमारे समुदाय में मौजूद FORB उल्लंघनों की भी मैपिंग की है.
- अबसे हम क्रिया पर फ़ोकस करने जा रहे हैं! अब से हम कार्यवाहियों पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे! इस सत्र एवं अगले सत्र में हम उन विभिन्न तरीकों या रणनीतियों को जानेंगे जिनका इस्तेमाल मानव अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है और यह विचार करेंगे कि हम इन रणनीतियों का इस्तेमाल कैसे कर सकते हैं. अंतिम दो सत्रों में हम कार्य योजनाओं पर ध्यान केन्द्रित करेंगे.
- हम प्रारंभ में उन लोगों की तीन कहानियां सुनेंगे जो अपने समुदाय में धर्म या आस्था की आजादी के मामले में बदलाव ला रहे हैं.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 16 मिनट

- अगर संभव हो तो सत्र के पावरपॉइंट की स्लाइड्स 3-10 का उपयोग करते हुए अथवा इन स्लाइड्स के प्रिंट आउट के माध्यम से पृष्ठ 124-125 पर दी गईं तीन चेंजमेकर कहानियों का वाचन करें.
- प्रतिभागियों से कहें कि वे अपने निकट बैठे व्यक्तियों के साथ तीन-तीन के समूह बनाकर चर्चा करें कि: इन कहानियों में से कौनसी आपको सबसे अच्छी और प्रेरणादायी लगी और क्यों?

अभ्यास का समापन कैसे करें 2 मिनट
अंत में यह कहें कि भले ही कहानियों में वर्णित स्थितियां हमारी स्थितियों से बहुत अलग हों और भले ही इनमें संबंधित व्यक्तियों द्वारा की गई कार्यवाही हमारे मामले में प्रासंगिक न हो परन्तु ये निडर एवं रचनात्मक चेंजमेकर हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि बदलाव लाना संभव है और उसके लिए संघर्ष करना सार्थक है. ये कहानियां हमें यह विश्वास दिलातीं हैं कि हममे से प्रत्येक बदलाव लाने के लिए कुछ न कुछ कर सकता है, भले ही वह कितना ही छोटा काम क्यों न हो.

2. सोच-विचार अभ्यास: मूकदर्शक एवं उपचारक 25 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण
प्रतिभागी अन्याय को रोकने हेतु उनके द्वारा किए गए हस्तक्षेपों (छोटे से छोटे) का विवरण देते हैं और उन घटनाओं का भी जब उन्होंने कुछ नहीं किया. वे उन कारकों की चर्चा भी करेंगे जिनके होने पर हमारे हस्तक्षेप करने की संभावना अधिक होगी.

उद्देश्य

इस अभ्यास के लक्ष्य हैं:

- प्रतिभागियों को यह अहसास दिलाने में सहायता करना कि हममें से प्रत्येक ने, कभी न कभी 'मूकदर्शक' की भूमिका निभाई है अर्थात हम अन्याय होते हुए चुपचाप देखते रहे और कभी न कभी 'उपचारक' की, अर्थात हम अपने या किसी अन्य के अधिकारों के लिए खड़े हुए, भले ही कितने ही छोटे या मामूली रूप में.
- प्रतिभागियों को उन सुविचारित विकल्पों और कदमों की पहचान करने में सहायता करना जिनके माध्यम से वे अधिकारों के उल्लंघन के मामलों में अधिक सक्रिय 'उपचारक' बन सकते हैं.

संसाधन

- हर सहभागी के लिए एक A4 पेपर शीट.
- पर्याप्त संख्या में साधारण कलम या पेंसिल ताकि प्रत्येक प्रतिभागी हेतु एक या दो उपलब्ध हों.
- फिल्प चार्ट/वाईटबोर्ड एवं मार्कर पेन.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 2 मिनट

हर व्यक्ति को एक खाली A4 पेपर दें और कहें कि वह उसे आधा मोड़ ले और ऊपरी आधे भाग पर 'मूकदर्शक' तथा दूसरे आधे भाग पर 'उपचारक' लिख लें.

निम्न बातें समझाएं:

- हम एक अभ्यास करने जा रहे हैं जो बदलाव लाने के हमारे अनुभवों के बारे में सोचने में हमारी मदद करेगा.
- मूकदर्शक वह होता है जो कोई अन्याय - जैसे धौंसाना या भेदभाव - होता देखने पर भी चुप रहता है और कुछ नहीं करता है.
- एक उपचारक वह व्यक्ति है जो अन्याय के शिकार व्यक्ति या व्यक्तियों के पक्ष में बोलता है या कुछ करता है.
- इस बात पर जोर दीजिए कि हम सभी ने विभिन्न अवसरों पर ये दोनों भूमिकाएं निभाई हैं.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 20 मिनट

- **लिखना एवं चित्र बनाना** (5 मिनट)
  प्रत्येक प्रतिभागी से कहें कि वह अपने हैंडआउट पर लिखकर या चित्र बनाकर उसके द्वारा अदा की गई दोनों प्रकार की भूमिकाओं का विवरण दे. यह रोजमर्रा की कोई घटना हो सकती है, जैसे उन्होंने तब मदद मांगी हो जब कक्षा के किसी छात्र को धमकाया जा रहा हो या जब परिवार के किसी सदस्य या सहकर्मी के साथ दुर्व्यवहार हो रहा हो. या, जब ऐसी स्थितियों में किसी भी वजह से वे मूकदर्शक बने रहे हों और उन्होंने कुछ न किया हो.

- **पूर्ण चर्चा** (15 मिनट)
  प्रारंभ में जोर देकर कहें कि हर एक व्यक्ति अलग-अलग समय पर दोनों प्रकार की भूमिकाएं अदा करता है. इसके बाद दो या तीन प्रतिभागियों से कहिए कि वे उनकी मूकदर्शक या उपचारक की भूमिका का उदाहरण दें. विशिष्ट घटनाओं की चर्चा न करें क्योंकि यह अभ्यास का उद्देश्य नहीं है. बस लोगों के अनुभवों को स्वीकार करें.
  सिर्फ लोगों के अनुभव सुनें व इसके बाद समूह से निम्न प्रश्न करें:
  – यह अभ्यास करके आप कैसा महसूस कर रहे हैं?
  – क्या वजह है कि कभी तो आप कोई कदम उठाते हैं और कभी नहीं? ऐसा क्यों होता है?
  – इन समस्याओं के संदर्भ में आपको मूकदर्शक से अपने एवं अन्य लोगों के अधिकारों के लिए उठ खड़ा होने वाला व्यक्ति बनाने में कौन-सी बातें सहायक हो सकती हैं?

  उनके उत्तर एक फ्लिप चार्ट शीट/वाईट बोर्ड पर लिखें.

पूर्ण चर्चा

अंतिम प्रश्न के लोगों द्वारा दिए गए उत्तरों में से निम्न बिंदु उभारने का प्रयास करें या लोगों को इन बिंदुओं से जुड़े प्रश्नों के माध्यम से ये उत्तर देने के लिए प्रेरित करें:

- हम उस स्थिति में हस्तक्षेप करने के अधिक इच्छुक होते हैं जब पीड़ित व्यक्ति से हमारा कुछ संबंध होता है या हमें उससे सहानुभूति होती है.
- हम तब अधिक आत्मविश्वास से हस्तक्षेप करते हैं जब हम अकेले नहीं होते, विशेषकर तब जब हम किसी संगठित समूह का हिस्सा होते हैं.
- हम तब अधिक आत्मविश्वास से हस्तक्षेप करते हैं जब हमें मुद्दे और 'तंत्र' की जानकारी होती है - अर्थात नियम क्या हैं और किससे शिकायत की जा सकती है या किससे सहायता मांगी जा सकती है.
- हमारा आत्मविश्वास तब अधिक होता है जब हम पहले से तैयार होते हैं - हम स्थिति के बारे में पहले से ही विचार कर चुके होते हैं और यह योजना बना चुके होते हैं कि हम क्या करना चाहेंगे. हम यदि ऐसी स्थितियों में पूर्व में हस्तक्षेप कर चुके होते हैं तब भी अगली बार हम स्थिति का सामना अधिक आत्मविश्वास से कर पाते हैं. रोल प्ले इसका अभ्यास करने का एक अच्छा तरीका हो सकता है!

अभ्यास का समापन कैसे करें 3 मिनट

पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 11 दिखाते हुए अग्रलिखित पर प्रकाश डालकर समापन करें:

- हम यह सचेतन निर्णय ले सकते हैं कि हम मूकदर्शक बनने की बजाए उपचारक बनेंगे, उदाहरणार्थ अधिकारों के उल्लंघन के पीड़ितों के साथ संबंध स्थापित कर, समूहों में संगठित होकर, आवश्यक जानकारी प्राप्त कर व यह योजना बनाकर कि हम सामूहिक रूप से क्या कार्यवाही कर सकते हैं.
- हम हमेशा कार्रवाई नहीं कर पाएंगे - ऐसा करना हमेशा सुरक्षित या रचनात्मक नहीं होगा. पर यदि हम संबंध बनाएँ, साथ मिलकर काम करें इत्यादि तो हमारे द्वारा कदम उठाए जाने की और प्रभावी होने की संभावना बढ़ जाती है.
- हमारे शहर के फ्लिप चार्ट शीट में FORB मानचित्र की ओर इशारा करें. लोगों से कहें कि वे इस बारे में मन-ही-मन सोचें कि उन्होंने जो समस्याएँ लिखी हैं वे उनमें से किसके उपचारक बनना चाहेंगे. (लोगों को सोचने का थोड़ा समय दें, पर उत्तर न माँगें.)
- शेष सत्रों में हम इस पर विचार करेंगे कि इन समस्याओं के संदर्भ में हम मूकदर्शक से उपचारक कैसे बन सकते हैं.

3. ड्रॉइंग अभ्यास: मैं कौन हूँ? 15 मिनट

व्यक्तिगत अभ्यास

टिप्पणी

यह अभ्यास मज़ेदार होने के साथ-साथ कुछ सिखाता भी है परन्तु यह सत्र का आवश्यक भाग नहीं है. आप चाहें तो यह अभ्यास काटकर अन्य अभ्यासों को अधिक समय दे सकते हैं.

विवरण व उद्देश्य

प्रतिभागी अपने व्यक्तिगत एवं पेशेवर नेटवर्क का चित्र बनाकर यह 'पहचान' करेंगे कि वे कहां बदलाव ला सकते हैं.

संसाधन

- फ्लिप चार्ट शीट एवं कलम.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 1 मिनट
प्रत्येक प्रतिभागी को एक फ्लिप चार्ट शीट एवं एक फ्लिप चार्ट/रंग भरने वाली कलम दें.

निम्न बातें समझाएं:
हम सभी एक ऐसे समुदाय का हिस्सा हैं जिसमें हमारे बहुत सारे संबंध हैं और हम अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं - हमारे परिवारों में, कार्यस्थलों पर या आस्था समुदायों में, और हमारे दोस्तों व परिचितों के नेटवर्कों में.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 10 मिनट
निम्न बातें समझाएं:
अब हम अपने व्यक्तिगत नेटवर्क का चित्र बनाने का प्रयास करेंगे. कागज के बीच में स्वयं का चित्र बनाएं और फिर कागज के विभिन्न भागों पर अपने नेटवर्कों को चित्रित करें.

वे निम्न हो सकते हैं:
- परिवार एवं मित्र.
- आपके कार्यस्थल के सहकर्मी/विद्यालय व विद्यालय के सहपाठी.
- आपका आस्था-आधारित समुदाय या कोई अन्य समुदाय या समूह जिसमें आप भी शामिल हों - जैसे शौक के रूप में किसी खेल की टीम का सदस्य होना या महिलाओं के समूह. ये औपचारिक समूह हो सकते हैं और अनौपचारिक भी.
- सोशल मीडिया पर आपका नेटवर्क.

आपके द्वारा चिन्हित प्रत्येक समूह या नेटवर्क के संदर्भ में विचार करें कि आप उनमें या उनके द्वारा धर्म या आस्था की आजादी को बढ़ावा देने के लिए क्या कर सकते हैं. आपके पास 10 मिनट हैं.

अभ्यास का समापन कैसे करें 4 मिनट
सभी से कहें कि वे एक गोले में खड़े हो जाएँ और अपनी-अपनी ड्रॉइंग ऊपर करके थाम लें. इस बारे में टिप्पणियाँ करें कि चित्र कितने समृद्ध और रोचक हैं तथा वे जीवन में हमारी विभिन्न भूमिकाओं को किस प्रकार चित्रित करते हैं.

निम्न बिंदुओं पर चर्चा करें:
- हमने जिन विभिन्न परिस्थितियों की पहचान की है, उनमें से हरेक में हम एक मूकदर्शक या एक अग्रसक्रिय उपचारक की भूमिका निभा सकते हैं. हम इन नेटवर्कों और समूहों में और इनके ज़रिए धर्म या आस्था की आजादी को बढ़ावा देने वाला संसाधन बन सकते हैं.
- बाकी के पाठ्यक्रम में आप जो कुछ सुनें और करें उस सब में कृपया तीन प्रश्नों के बारे में सोचें. (पावरपॉइंट प्रस्तुति स्लाइड 12 दिखाएँ या उन्हीं प्रश्नों वाला फ्लिप चार्ट दिखाएँ.)
  - मैं क्या कर सकता/ती हूँ?
    क्या मैं एक अभिभावक, संतान, दोस्त या पड़ोसी की मेरी भूमिका में कार्य कर सकता/ती हूँ? मैं कार्यस्थल पर मेरी भूमिका के ज़रिए या मेरे निजी जीवन में मेरी जो भूमिकाएँ हैं - जैसे मेरे आस्था समुदाय में मेरी भूमिका - उनके ज़रिए मैं क्या कर सकता/ती हूँ?
  - यदि हम संगठित हो जाते और साथ मिलकर काम करते तो हम क्या कर सकते थे?
    क्या, उदाहरण के तौर पर, मेरा आस्था समुदाय, युवा समूह या कार्यस्थल कोई पहल करता?
  - हम अन्य लोगों / संस्थाओं को क्या करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं?
    ऐसी कई चीज़ें हैं जो दूसरे कर सकते हैं पर हम नहीं. शायद कोई अन्य आस्था समुदाय या स्थानीय स्कूल का कोई वरिष्ठ अधिकारी कोई कदम उठा सकता था. हम किसे कदम उठाने को प्रोत्साहित कर सकते थे?

4. प्रस्तुति: रणनीतियों का परिचय 10 मिनट

प्रस्तुति

विवरण व उद्देश्य

इस प्रस्तुतिकरण का लक्ष्य उन व्यावहारिक तरीकों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है जिनके माध्यम से प्रतिभागी मानव अधिकारों को बढ़ावा दे सकते हैं. इसमें चार प्रकार की रणनीतियों का परिचय देना शामिल है जिनका इस्तेमाल मानव अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है.

संसाधन

- प्रस्तुति की स्क्रिप्ट इस गाइड के पेज 121 पर है.
- यह स्क्रिप्ट सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 13-24 से मैच करता है और इन स्लाइड्स हेतु वक्ता की टिप्पणियों में शामिल है.
- इस स्क्रिप्ट का संपादन-योग्य संस्करण, सत्र के लिए दिए गए संसाधनों में उपलब्ध है.

पूर्व तैयारी

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप तैयारी करें. स्क्रिप्ट और पावरपॉइंट स्लाइडों को पढ़ें और अगर चाहें तो उन्हें अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए उनमें बदलाव करें (या स्लाइडों के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की फ्लिप चार्ट शीट बनाएं) और स्लाइडों/फ्लिप चार्ट शीट के साथ प्रस्तुतिकरण देने का अभ्यास करें.

सुझाव! लोगों से कहें कि वे आपका प्रस्तुतिकरण पूर्ण होने तक प्रश्न/टिप्पणियां न करें.

5. चर्चा आधारित अभ्यास: आपातकालीन रणनीतियों पर चर्चा 45 मिनट

सामूहिक अभ्यास

विवरण व उद्देश्य

यह सामूहिक चर्चा पर आधारित अभ्यास है जिसमें प्रतिभागी व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से उन आपातकालीन रणनीतियों के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे जिनका उपयोग लोगों ने FORB संबंधी समस्याओं का सामना करने के लिए किया. प्रतिभागी इन रणनीतियो पर चर्चा करेगे एवं उन सुझावों पर विचार मंथन करेंगे जिन्हें उनके समुदाय में FORB को प्रोत्साहन देने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है. इस प्रक्रिया से उन्हें जानकारी मिलेगी एवं उनमें कार्य करने का कौशल उत्पन्न होगा.

संसाधन

- सभी 'आपातकालीन रणनीतियां' पोस्टर्स का प्रिंटआउट.
- पोस्ट-इट नोट्स व कलम.
- एक फ्लिप चार्ट शीट जिसका शीर्षक है 'कार्रवाही के विचार: आपातकालीन रणनीतियां'.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 4 मिनट

निम्न बिंदुओं पर चर्चा करें:

- शेष सत्र आपातकालीन रणनीतियों पर केन्द्रित होगा और हम इस पर विचार करेंगे कि क्या इन रणनीतियों का उपयोग हमारे समुदाय की FORB से संबंधित समस्याओं को सुलझाने के लिए किया जा सकता है. अन्य रणनीतियों पर चर्चा हम अगले सत्र में करेंगे.
- इस अभ्यास के माध्यम से हम आपातकालीन रणनीतियों के बारे में जानेंगे और अपने समुदाय में कार्यवाहियों के अधिक से अधिक तरीकों पर विचार मंथन करेंगें. हम विचार करेंगे कि मैं क्या कर सकता/ती हूँ, हम क्या कर सकते हैं और हम अन्य लोगों को क्या करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं?
- लेकिन शुरू करने से पहले, आइए याद करें कि धर्म या आस्था की आजादी (FORB) से संबंधित 'आपातकाल' किसे कहा जाता है. आपातकालीन रणनीतियों का उपयोग तब किया जाता है जब एक विशिष्ट व्यक्ति का, विशिष्ट स्थान पर विशिष्ट मानव अधिकार का दुर्व्यवहार हो रहा होता है या होने वाला होता है. तो हम इन रणनीतियों के माध्यम से किस प्रकार के FORB उल्लंघनों का सामना करने का प्रयास कर रहे हैं?

पावरपॉइंट स्लाइड 24 दिखाएं और निम्न उदाहरणों का वाचन करें:
- उत्पीड़न - जैसे सड़क पर अल्पसंख्यक समुदाय की किसी महिला को उत्पीड़न किया जाना
- नफरत भरे भाषण (आनलाइन या प्रत्यक्ष)
- नफरत-जनित अपराध जैसे तोड़फोड़ या हमला
- धार्मिक संस्थान पर हमले
- सांप्रदायिक हिंसा
- मनमाने ढंग से की गई गिरफ्तारियाँ

अभ्यास का संचालन कैसे करें 40 मिनट

- **चर्चा समूह** (20 मिनट)
  - प्रतिभागियों को तीन समूहों में बांट दें.
    आपातकालीन रणनीतियां तीन होती हैं: निवारक उपाय; रोकें और बचाएं, सहायता मांगें और सचेत करें. समझाएँ कि हर समूह उनमें से एक रणनीति पर फ़ोकस करेगा.
  - सभी समूहों को पोस्ट-इट नोट्स एवं कलम, संबंधित रणनीति के पोस्टर व उसके साथ के कहानियों के पोस्टर दें एवं संबंधित रणनीति पर विचारार्थ प्रश्नों का हैंडआउट दें.
  - समूहों को ये निर्देश दें: पोस्टर्स पर लिखा पाठ्य पढ़कर सुनाएँ. उसके बाद हैंडआउट पर लिखे प्रश्नों पर चर्चा करें. इसके भाग के रूप में आप इन रणनीतियों के इस्तेमाल संबंधी सुझावों पर चर्चा करेंगे. पोस्ट-इट नोट्स पर कार्यवाही संबंधी अपने सुझाव लिखें. चर्चा हेतु आपके पास 20 मिनट हैं.

- **सभी प्रतिभागियों से फीडबैक** (20 मिनट)
  हर समूह को, उसकी चुनी युक्ति और उसके कार्रवाही के विचार प्रस्तुत करने के लिए अधिकतम 5 मिनट दें. उनके कार्रवाही के विचार पोस्ट-इट नोट्स 'कार्रवाही के विचार: आपातकालीन क्रियाएँ' फ्लिप चार्ट शीट पर लगा दें.
  प्रस्तुतियों के पश्चात निम्न प्रश्नों पर चर्चा प्रारंभ करें:
  - अन्य समूहों के विचार सुनने के बाद क्या आप आपातकाल से निपटने के संबंध में कोई नया सुझाव देना चाहेंगे?
  - क्या सुझावों के बारे में विचार करना कठिन था?
  - आपको कौन-सा सुझाव सर्वोत्तम लगा?

अभ्यास का समापन कैसे करें 1 मिनट

समूहों को प्रोत्साहित करें: उनके सुझावों की प्रशंसा करें और यह स्वीकार करें कि सुझावों के बारे में विचार करना, विशेषकर आपातकालीन रणनीतियों के संबंध में, आसान नहीं होता क्योंकि इन स्थितियों में कदम उठाना जोखिम भरा और खतरनाक भी हो सकता है.

6. अंतिम टिप्पणियां 5 मिनट

संक्षिप्त वार्ता

सत्र का समापन निम्न टिप्पणियों को साझा करते हुए एवं स्लाइड 26-28 दिखाते हुए करें:

- इसी सत्र में पहले हमने मूकदर्शक से उपचारक बनने के तरीकों के बारे में बात की थी. हमने संबंध बनाने, साथ मिलकर काम करने, जानकारी खोजने, योजना बनाने और तैयारी करने के बारे में बात की थी.

- आपातकालीन रणनीतियों के संदर्भ में इसके लिए हमें जिस प्रकार के प्रश्न पूछने होंगे उनकी चर्चा हम अभी-अभी कर रहे थे. उदाहरण के लिए:
  - यह पहचान करना कि FORB आपात स्थिति का सामना किसे, कब और कहां करना पड़ सकता है.
  - इस पर विचार करना कि इन आपाती स्थितियों के बनने के पूर्व ही हम क्या कर सकते हैं. उदाहरण के लिए: जैसेः मैं व्यक्तिगत तौर पर क्या करना चाहूंगा/गी यदि मैं सोशल मीडिया पर एक नफरत भरा भाषण या सड़क पर किसी का उत्पीड़न होते हुए देखता/ती हूँ? या फिर, क्या हम एक समूह के भाग के रूप में, जिसके सदस्य मिलकर योजना बनाकर एवं तैयारी कर कार्य करते हों, अधिक संगठित, और सक्रिय प्रतिक्रिया की क्षमता विकसित करना चाहेंगे?
  - यह पता लगाना कि सक्षम प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक जानकारियां एवं संपर्क हमारे पास हों.

- साथ ही, खतरे का अनुमान लगाकर यह सुनिश्चित करना कि हम सुरक्षित रहें और हमारे कारण स्थिति और खराब न हो जाए.

- बेशक, ऐसा संभव है कि आपातकालीन रणनीतियां वे युक्तियाँ न हों जिनका हम उपयोग करना चाहते हैं. जैसे, संभव है कि हम बदलाव हेतु जागरूकता फैलाने या प्रचार-अभियान चलाने पर काम करने के लिए बेहतर स्थिति में हों. कोई भी सारी चीज़ें नहीं कर सकता और किसी को भी ऐसी कोशिश नहीं करनी चाहिए!
- अगले सत्र में, हम बदलाव की रणनीतियां, निर्माण की रणनीतियां, और उपचारात्मक रणनीतियों के लिए कार्रवाही के विचार को सीखेंगे और उन पर विचार-मंथन करेंगे. हम अधिकतम संभव कार्रवाही के विचार के बारे में जानना चाहते हैं!
- फिर, पाठ्यक्रम के अंतिम दो सत्रों में हम अपने विचारों को परिसीमित करेंगे - उन समस्याओं के बारे में चर्चा करके जिनमें हम वास्तव में हस्तक्षेप करना चाहते हैं और इसके लिए हमारे कार्रवाही के विचार में से कौन-सी सबसे प्रभावी एवं यर्थाथवादी होंगी जिनका हम इस्तेमाल करें.
- सत्र का समापन सक्रिय भागीदारी हेतु सभी का आभार प्रकट कर करें.

स्रोत

मूकदर्शक-उपचारक: ह्यूमन राइट्स एजुकेशन हैंडबुक, क्रिस्टी रुडेलियस-पामर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ मिनेसोटा ह्यूमन राइट्स रिसोर्स सेंटर से अनुकूलित. https://ihs.smc.global/wp-content/uploads/documents/Human_rights_education_handbook.pdf

रणनीतियों का परिचय/आपातकालीन रणनीतियों पर चर्चा: न्यू टैक्टिक्स इन ह्यूमन राइट्स प्रोजेक्ट के युक्तियाँ मॉडल के एक अनुकूलन पर आधारित मूल प्रस्तुति और अभ्यास.
www.newtactics.org

प्रस्तुति स्क्रिप्ट

मानव अधिकारों को बढ़ावा देने हेतु रणनीतियां

सत्र 6 की प्रस्तुति के लिए यह स्क्रिप्ट सत्र PowerPoint की स्लाइड 13-24 द्वारा चित्रित की गई है.

परिचय

इस और पिछले सत्रों में, हमने अलग-अलग लोगों द्वारा अपने समुदाय में धर्म या आस्था की आजादी के लिए स्थिति को बेहतर बनाने के लिए अलग-अलग काम करने की कहानियाँ सुनी हैं. हमने अपने समुदाय में FORB की समस्याओं के बारे में भी खुद को याद दिलाया है. *(हमारे शहर के फ्लिप चार्ट शीट में FORB की ओर इशारा करें).*

अब हम उन विभिन्न रणनीतियों के बारे में सीखेंगे जो समुदाय के स्तर पर मानव अधिकारों के संरक्षण एवं प्रोत्साहन हेतु अपनाई जा सकती हैं. और हम इस पर विचार करेंगे की हम इन रणनीतियों का उपयोग अपने समुदाय की उन समस्याओं को हल करने के लिए कैसे कर सकते हैं जिनकी पहचान हमने की है.

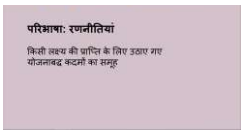

तो, रणनीति से हमारा आशय क्या है? रणनीति की परिभाषा है "किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उठाए गए योजनाबद्ध कदमों का समूह".

मानव अधिकार कार्य के लिए चार अलग-अलग प्रकार की रणनीतियाँ हैं. इन चार प्रकार की युक्तियों को समझाने में मदद के लिए हम मानवाधिकार का उल्लंघन का प्रतिनिधित्व करने वाले रूपक के रूप में आग के बारे में सोच सकते हैं. यह कोई अच्छी आग नहीं है जिसके इर्द-गिर्द बैठकर हम गर्म हो जाएँ, बल्कि यह एक खतरनाक, बेकाबू आग है. मानवाधिकार के उल्लंघनों की तरह ही, आग भी लोगों को नुकसान पहुँचाती है - वे लोगों को मानसिक आघात देती हैं, घायल करती हैं, जान लेती हैं, और संपत्ति व भूमि को नष्ट कर देती हैं.

तो हम आग को कैसे रोकते हैं? हम चार प्रकार के कदम उठाते हैं.

1. आपातकालीन रणनीतियां

आपातकालीन रणनीतियां आग को लगने से रोकने, आग को बुझाने और लोगों को बचाने के लिए अपनाई जाती हैं.

अगर आप किसी बच्चे को माचिस से खेलते हुए देखें तो आप क्या करेंगे? आप माचिस बुझा देंगे और माचिस दूर ले जाएँगे! आप आग लगने से रोकने की कोशिश करेंगे.

अगर आप बहुत देर से पहुँचे हैं और छोटी आग लग चुकी है, तो आप आग बुझाने वाले यंत्र या पानी की बाल्टी से उसे खुद ही बुझाने की कोशिश कर सकते हैं. आप आग को रोक कर खतरे में पड़े लोगों और संपत्ति की रक्षा करने की कोशिश करेंगे. और अगर आग बड़ी है और इन उपायों से उस पर काबू नहीं पाया जा सकता तो आप फायर ब्रिगेड की मदद लेंगे और लोगों से बाहर निकलने के लिए कहेंगे.

मानव अधिकारों के लिए आपातकालीन रणनीतियां कुछ इस तरह की है! हम मानव अधिकार के उल्लंघन के लिए आपातकालीन रणनीतियों का उपयोग करते हैं जो विशेष लोगों के साथ, विशेष स्थानों पर होने वाला है या अभी हो रहा है. इसका मतलब हो सकता है कि किसी दुर्व्यवहार की रोकथाम करने या रोकने के लिए सीधे हस्तक्षेप करना और लोगों को बचाना या इसका मतलब हो सकता है मदद के लिए पुकारना और खतरे में पड़े लोगों को चेतावनी देना.

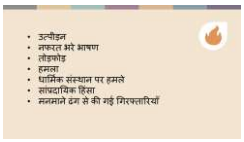

तो, हम किस तरह के FORB उल्लंघनों के लिए आपातकालीन रणनीतियां उपयोग कर सकते हैं? उत्पीड़न, घृणा भाषण, हमले, संपत्ति की तोड़फोड़, धार्मिक संस्थान पर हमले, सांप्रदायिक हिंसा और मनमाने ढंग से की गई गिरफ्तारियाँ - सभी ऐसे उल्लंघनों के उदाहरण हैं जो विशिष्ट व्यक्तियों या समूहों के साथ, विशिष्ट स्थानों पर, विशिष्ट समय पर होते हैं.

हालांकि आपातकालीन रणनीतियों का उपयोग अचानक होने वाली घटनाओं से निपटने के लिए किया जाता है लेकिन यह आवश्यक है कि हम पहले से इनके लिए तैयार रहे. हमें पहले से ही यह ज्ञात हो कि क्या करना है. जैसे लोग फायर ब्रिगेड का नंबर याद कर लेते हैं या अग्निशमन यंत्र का इस्तेमाल करना सीख लेते हैं, उसी तरह, हमें मानवाधिकारों का उल्लंघन रोकने एवं मदद मांगने से संबंधी जानकारी पहले से ही होनी चाहिए.

2. बदलाव की रणनीतियां

आग लगने के पीछे कोई-न-कोई कारण होता है - जैसे बिजली की असुरक्षित वायरिंग. बदलाव की रणनीतियों के अंतर्गत उन स्थितियों को परिवर्तित किया जाता है जिनके चलते आग लगती है, जैसे यह सुनिश्चित करना कि भवन निर्माण नियमों में सुरक्षित वायरिंग संबंधी प्रावधान हों.

मानवाधिकार के उल्लंघन भी कुछ कारणों से होते हैं, उदाहरण के लिए, जब समाज में लोगों की रक्षा के लिए आवश्यक नियम मौजूद नहीं होते, या जब जिन लोगों की ज़िम्मेदारी होती है कि वे इन नियमों का पालन सुनिश्चित करें, वे ऐसा नहीं करते. अर्थात समाज गलत ढंग से 'बना हुआ' है.

मानवाधिकार के उल्लंघन के कई मामले लोगों को केवल नियमों में बदलाव के लिए राजी करके या काम के तरीके में परिवर्तन करके ही रोके जा सकते हैं. हम ऐसा 4 प्रकार से कर सकते हैं:

- अभियान चलाकर एवं विरोध व्यक्त करके समस्या की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करके,
- स्थिति में सुधार लाने में सक्षम व्यक्तियों को समस्या के हल के लिए कोई कदम उठाने के लिए राजी करके - हम इसे समर्थन कह सकते हैं,
- लोगों को अलग तरह से व्यवहार करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करके,
- या फिर शांतिपूर्वक बुरे कानूनों या सामाजिक मानदंडों का उल्लंघन करके यह दिखाकर कि हम उन्हें स्वीकार नहीं करते.

ये बदलाव की रणनीतियां हैं. वे आमतौर पर समाज की दीर्घकालिक और अधिक प्रणालीगत समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं - सी समस्याएँ जो कई लोगों को, कई स्थानों पर प्रभावित करती हैं.

3. निर्माण की रणनीतियां

आग रोकने का एक अन्य तरीका यह हो सकता है कि लोगों में जागरूकता उत्पन्न की जाए और उनके रवैये में बदलाव लाया जाए, जैसे लोगों को सिगरेट के जलते हुए बट को सूखी जमीन पर फेंकने से पैदा होने वाले खतरे के प्रति सचेत किया जाए. हम सार्वजनिक भागीदारी भी बढ़ा सकते हैं - अधिक लोगों को स्वैच्छिक अग्निशमन सेवा में शामिल करके. और हम कौशल का निर्माण कर सकते हैं - उदाहरण के लिए यह सुनिश्चित करना कि लोगों को पता हो कि अग्निशामक यंत्र का उपयोग कैसे किया जाता है.

मानव अधिकार के संदर्भ में निर्माण की रणनीतियां होंगी मानव अधिकार की संस्कृति के निर्माण के लिए दीर्घकालिक काम. इसका अर्थ है ऐसे समाज की ओर बढ़ना, जहाँ हर व्यक्ति अपने अधिकारों और दूसरों के अधिकारों को समझे, मानव अधिकार के सम्मान को सामान्य और उचित माने, यह जानता हो कि यदि अधिकारों का उल्लंघन हो तो क्या करना चाहिए, और यह भी जानता हो कि अपने और दूसरों के अधिकारों का सम्मान कैसे किया जाए और उनके लिए खड़ा कैसे हुआ जाए.

ऐसे समाज के निर्माण के लिए 4 कार्य करने होंगे:

- मानव अधिकार के महत्व एवं उनके उल्लंघन के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करना एवं उनके उल्लंघन व उससे होने वाली हानि की समझ विकसित करना.
- लोगों को जोड़ना - ज्यादा से ज्यादा लोगों में मानव अधिकार को प्रोत्साहन देने संबंधी कार्यों के प्रति प्रतिबद्धता उत्पन्न करना.
- कौशल निर्माण करना - ताकि लोगों में यह समझ उत्पन्न हो कि मानव अधिकार को कैसे बढ़ावा दिया जाए.
- और लोगों और संगठनों के ऐसे नेटवर्क बनाना, जो अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग कार्य करते हैं, लेकिन सामान्य लक्ष्यों की दिशा में समन्वित रूप से कार्य करते हैं.

ये दीर्घकालिक रणनीतियां हैं, जो बदलाव के लिए पूर्व-स्थितियाँ बनाती हैं. जब हम अन्य सभी रणनीतियों का उपयोग करते हैं तो वे हमारे लिए खड़े होने के लिए एक आधार तैयार करती हैं.

4. उपचारात्मक रणनीतियां

अंत में, उपचारात्मक रणनीतियां आग की तरह मानवाधिकार के उल्लंघन से भी व्यक्तियों, संपत्ति और समुदायों की हानि होती है. उपचारात्मक रणनीतियों में वे कदम शामिल हैं, जो मानवाधिकारों के हनन के पश्चात लोगों की देखभाल के लिए उठाए जाते हैं.

आंशिक रूप से इसमें लोगों को चिकित्सकीय, भौतिक व मनोसामाजिक सहायता उपलब्ध कराना शामिल है जो उन्हें सामान्य अवस्था में वापिस आने के लिए आवश्यक है. परंतु इसमें गरिमा और न्याय भी शामिल है.

- सम्पूर्ण घटनाक्रम का दस्तावेज़ीकरण, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कुछ भी छिपाया नहीं गया है.
- पीड़ितों के साथ जो कुछ हुआ है उन्हें उसके बारे में बताने एवं उसे याद करने का मौका देना के बारे में.
- पीड़ितों को न्याय एवं मुआवजा मिले यह सुनिश्चित करना.

निष्कर्ष

काम करने के ये सभी अलग-अलग तरीके मानव अधिकार को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं. वे एक-दूसरे के पूरक हैं, ओवरलैप करते हैं और एक-दूसरे के समानांतर इस्तेमाल किए जा सकते हैं.

कोई भी व्यक्ति या संगठन सभी रणनीतियों का इस्तेमाल नहीं कर सकता - हमारे पास अलग-अलग भूमिकाएँ, कौशल और अवसर हैं जो सही मायने में हमारे द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली रणनीतियों के चुनाव को प्रभावित करते हैं. महत्वपूर्ण बात यह है कि हर कोई कुछ न कुछ कर सकता है और हम लोगों और संगठनों के नेटवर्क के माध्यम से, जो एक ही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, हम चीजों को बदल सकते हैं.

हम सब मानवाधिकार के उल्लंघन की आग को लगने से रोकने एवं ऐसे समाज के निर्माण में योगदान दे सकते हैं जिसमें हमारे घरों और समुदायों में और हमारी सरकारों द्वारा मानव अधिकार का सम्मान किया जाए.

अभिस्वीकृति

यह प्रस्तुतिकरण सामग्री सेंटर फॉर विकटिम्स ऑफ़ टार्चर (Center for Victims of Torture) www.newtactics.org द्वारा संचालित 'मानव अधिकार में नयी रणनीतियां परियोजना' के लिए विकसित रणनीतिक तंत्र से प्रेरित है व उसका अनुकूलित रूपांतरण है.

चेंजमेकर कहानियाँ

सत्र 6 में 'चेंजमेकर कहानियाँ चर्चा सामूहिक अभ्यास' का परिचय देते समय ये कहानियाँ पढ़कर सुनाई जाती हैं. उन्हें सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड्स 3-10 द्वारा स्पष्ट किया गया है.

राहुल की कहानी, भारत

कहानी

राहुल पूर्वी भारत के भागलपुर में रहता है. शहर की लगभग 80% जनसंख्या हिंदू है और 18% मुसलमान, और शहर का हिंसा का इतिहास है. 1989 में हुए दंगों में बताया जाता है कि 1000 से अधिक मुसलमान मरे थे और 50,000 लोग विस्थापित हुए थे.

राहुल, जो एक हिंदू है, शहर के अंतरधार्मिक शांति केंद्र से जुड़ा हुआ है. यह केंद्र विभाजक रेखाओं के आर-पार संबंध बनाने और भरोसा जमाने के काम करता है, जैसे शांति समितियों के ज़रिए, वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव आयोजित करके और धार्मिक नेताओं को जोड़कर. इस दीर्घकालिक शांति कार्य ने एक नींव तैयार की है जहाँ से, हालात बेकाबू होना शुरू होने पर अविलंब कार्रवाई की जा सकती है. इसकी अक्सर ही ज़रूरत पड़ती है.

चुनाव अभियानों के दौरान हिंसा विशेष रूप से आम है. 2019 में एक हिंदू राष्ट्रवादी चुनाव प्रत्याशी ने एक मुसलमानों के इलाके से एक परेड निकाली और दंगा भड़काने की कोशिश में घृणास्पद भाषण युक्त ताने उछाले. जब कुछ मुसलमान युवा जवाब में गुस्से से चिल्लाए, तो प्रत्याशी ने हिंसा शुरू कर दी जिससे दुकानों और घरों को नुकसान हुआ. इस बात का गंभीर जोखिम था कि दंगे अन्य इलाकों में फैल जाएँगे तथा और भी हिंसक हो जाएँगे. राहुल और उसके सहकर्मी जानते थे कि यह कितना खतरनाक हो सकता है.

अगले कुछ दिनों के दौरान, राहुल और उसके सहकर्मियों ने हिंसा के सबसे अधिक जोखिम वाले मुसलमान और हिंदू मोहल्लों में सामुदायिक सभाएँ आयोजित कीं. इन सभाओं में शांति स्वयंसेवियों के समूह गठित किए गए, जो अपने-अपने मोहल्लों में घर-घर गए.

राहुल कहते हैं, "यह महत्वपूर्ण था कि पुरुष और महिलाएँ जोड़ियों में साथ जाएँ, ताकि चाहे जो भी दरवाज़ा खोले, वह खुलकर बात कर सके."

स्वयंसेवियों ने पर्चे बाँटे, अपने पड़ोसियों से बातें की और उनकी बातें सुनी, और इस बात पर ज़ोर दिया कि दंगे हर किसी के लिए हालात बदतर करते हैं, चाहे उसका धर्म कुछ भी हो. शुक्र है कि मोहल्ला सभाओं और स्वयंसेवियों ने शहर के हालात शांत करने में काफ़ी मदद की.

स्रोत
सेंटर फ़ॉर द स्टडी ऑफ़ सोसायटी एंड सेकुलरिज़्म, भारत

डोंट जज अ बुक बाय इट्स कवर – The Human Library™, डेनमार्क

कहानी

1990 के दशक के मध्य में चार दोस्तों ने शहरी हिंसा के विरुद्ध अभियान चलाने के लिए एक युवा संगठन शुरू किया. उसके सदस्यों की संख्या बढ़ी और एक डेनिश संगीत समारोह के आयोजक ने उनसे कहा कि वे समारोह के आगंतुकों के बीच संवाद को बढ़ावा देने वाले एक इवेंट का आइडिया पेश करें. उन्होंने जो आइडिया पेश किया वह था ह्यूमन लाइब्रेरी का, जहां से आगंतुक उधार ले सकते थे ह्यूमन 'बुक्स' - यानी ऐसे लोग जो अपनी पहचान और जीवन अनुभवों के बारे में सम्मानपूर्ण बातचीत करने को तैयार थे.

आम तौर पर, ह्यूमन बुक्स स्थानीय समुदाय के ऐसे लोग होते हैं जो उनकी 'कहानी' को दूसरों का लर्निंग अनुभव बनने देने के लिए स्वेच्छा से प्रस्तुत रहते हैं. स्वयंसेवी आम तौर पर वे लोग होते हैं जिनके लिए उनकी पहचान के किसी पहलू से कोई पूर्वग्रह या कलंक जुड़ा होता है - जैसे उनका धर्म, उनकी आस्था, उनकी नृजाति, उनका यौन झुकाव, उनकी अशक्तता या उनकी HIV पॉज़िटिव स्थिति. इससे गलत जानकारी पर आधारित रुढीबद्ध धारणाएं घटाने में मदद मिलती है. The Human Library™ संगठन अब 85 से भी अधिक देशों में गतिविधियाँ करता है.

स्रोत
The Human Library Organisation www.humanlibrary.org

कदम उठाने के लिए सत्ता को राज़ी करना, किर्गिज़स्तान

कहानी

2010 की क्रांति के बाद, असहिष्णु गुंडे-बदमाशों के एक छोटे-से गिरोह ने प्रोटेस्टेंट और ऑर्थोडॉक्स ईसाई संप्रदायों के धार्मिक संस्थान को लूटना शुरू कर दिया. ये हमले लगभग छह महीनों तक चले. कई शिकायतों के बावजूद, अभियोजक कार्यालय, धार्मिक कार्य राज्य आयोग या गृह मंत्रालय की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई. यहाँ तक कि प्राधिकारियों ने समुदायों से मुद्दे से खुद ही निपटने को कह दिया.

हताश होकर धार्मिक नेता एकजुट हुए और उन्होंने घटनाओं तथा प्राधिकारियों की अक्रियता पर प्रकाश डालने के लिए एक राष्ट्रीय अखबार से संपर्क किया. जब घटनाओं की जानकारी राष्ट्रपति तक पहुँची तो उन्होंने मामले को अपने सीधे नियंत्रण में ले लिया. गिरोह के सारे सदस्य चार दिनों के भीतर पकड़े गए.

स्रोत
नेल्या शाकीरोवा, पादरी, यूनाइटेड मेथोडिस्ट चर्च, बिशकेक.

सत्र 7

रणनीतियों पर चर्चा

सत्र अवलोकन

मानव अधिकार को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों का अन्वेषण, जो सत्र 6 में प्रारंभ हुआ था वह सत्र 7 में भी जारी रहेगा. सत्र 6 एवं 7 परस्पर जुड़े हुए हैं, उनके सीखने के उद्देश्य और सीखने की प्रक्रिया एक हैं. कृपया इस सत्र के सीखने के उद्देश्यों के लिए सत्र 6 की सत्र योजना देखें. आपका समूह कितना बातूनी है इस पर निर्भर करते हुए, इस सत्र में नियोजित दो घंटों से कम समय लग सकता है.

सत्र की अंतर्वस्तु और समय

स्वागत एवं परिचय लोगों को पिछले सत्र में प्रस्तुत की गई चार प्रकार की रणनीतियों का स्मरण कराना.	5 मिनट
सामूहिक चर्चा: रणनीतियों पर चर्चा, भाग 1 प्रतिभागी परिवर्तनकारी, निर्माणकारी एवं उपचारात्मक रणनीतियां पर बातचीत करेंगे एवं इस पर विचार मंथन करेंगे कि उनके संदर्भ में इन्हें कैसे इस्तेमाल किया जा सकता है.	50-65 मिनट
ऊर्जावान: सिर से पंजे तक एक शारीरिक अभ्यास जिसमें प्रतिभागी सुविधादाता का अनुसरण करते हैं.	5 मिनट
पूर्ण चर्चा: रणनीतियों पर चर्चा, भाग 2 समूह कार्य में सामने आए कार्रवाही के विचार पर पूर्ण चर्चा.	20-40 मिनट
समापन अभ्यास: इमॉटिकॉन (चेहरे का भाव) प्रतिभागी स्वयं प्रतिमा बनकर उन्होंने जो सीखा उसके संबंध में वे जो महसूस करते हैं उसे सांझा करते हैं.	5 मिनट
कुल समय	**अधिकतम 2 घंटे**

तैयारी करें

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप सत्र की तैयारी करें. याद रखें - आपको अपने समूह की बेहतर समझ है! आपके समूह की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार सत्र के किसी भी तत्व को अनुकूलित और परिवर्तित करने के लिए आपका स्वागत है.

इस सत्र के लिए संसाधन

पृष्ठ 16 पर सूचीबद्ध प्रत्येक सत्र के लिए मानक संसाधनों के अतिरिक्त, इस सत्र को संचालित करने के लिए आपको निम्नलिखित संसाधनों की आवश्यकता होगी:

- 'बदलाव', 'निर्माण' एवं 'उपचारात्मक' रणनीतियों के प्रिंटआउट/कहानियों के पोस्टर.
- तीनों रणनीतियों - हेतु पहले से तैयार फ्लिप चार्ट शीट, जिनके शीर्षक 'कार्रवाही के विचार संबंधी सुझाव: बदलाव की रणनीतियां, निर्माण की रणनीतियां एवं उपचारात्मक रणनीतियां.
- कार्रवाही के विचार: सत्र 6 की 'कार्यवाही संबंधी सुझाव: आपातकालीन रणनीतियां' फ्लिप चार्ट शीट.
- 'हमारे नगर का FORB मानचित्र' संबंधी सत्र 5 की फ्लिप चार्ट शीट्स.
- पर्याप्त संख्या में पोस्ट-इट नोट्स एवं कलम.

इस सत्र के **सहायक संसाधन** यहाँ हैं.

कक्ष तैयार करना

सत्र से पहले कुर्सियां को एक अर्धवृत्त में सामने की ओर मुंह करके रखें.

बदलाव, निर्माण और उपचारात्मक रणनीतियां तथा कहानी के पोस्टर्स को उन तीन मेज़ों पर रख दें जिनके इर्द-गिर्द सहभागी बैठ सकते हैं (हर मेज़ पर एक श्रेणी). मेल खाने वाली 'कार्रवाही के विचार' फ्लिप चार्ट शीट को पोस्टर्स वाली मेज़ पर रखें और साथ में पोस्ट-इट नोट्स तथा कलम भी रखें.

सत्र 5 के 'FORB मानचित्र' फ्लिप चार्ट शीट और सत्र 6 के आपातकालीन रणनीतियां वाले पोस्टर दीवारों पर चिपकाएँ.

'रणनीतियों पर चर्चा'

"यह एक शानदार सत्र था. गतिविधियों ने सहभागियों को दिखाया कि वे किन-किन विभिन्न तरीकों से मानवाधिकार का उल्लंघन पर प्रतिक्रिया कर सकते हैं. पोस्टर्स ने लोगों को युक्तियों के विचार को समझने में तथा उन भूमिकाओं के बारे में सोचने में मदद की जो वे समुदाय में मानव अधिकार को बढ़ावा देने में निभा सकते हैं. विभिन्न सहभागी खुद को विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करते देख सके."

हम्माम हद्दाद, सुविधादाता, जॉर्डन

विस्तृत सत्र योजना

1. स्वागत एवं परिचय 5 मिनट

संक्षिप्त वार्ता

उद्देश्य
लोगों को मानव अधिकार संबंधी कार्यों की चार प्रकार की रणनीतियों का स्मरण दिलाना जो पिछले सत्र में प्रस्तुत की गईं थीं.

संसाधन

सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति या युक्तियाँ सारांश पोस्टर (युक्तियाँ पोस्टर दस्तावेज़ के पेज 2 पर उपलब्ध).

क्या कहें
सत्र में सभी का स्वागत करें. पावरपॉइंट स्लाइड 3 या रणनीति सारांश पोस्टर की ओर इंगित करते हुए निम्न बातें कहें.

पिछले सत्र में हमने उन रणनीतियों के बारे में सीखा जिनका उपयोग मानवाधिकार का उल्लंघन से निपटने के लिए किया जा सकता है. क्या आपको याद है कि हमने आग लगने के बिम्ब का उपयोग, मानवाधिकार का उल्लंघन को दर्शाने के लिए किया था और चर्चा की थी कि आग का मुकाबला किन-किन तरीकों से किया जा सकता है?

- हम आग को फैलने से रोकते हैं और उसे बुझाते हैं, हम मदद मांगते हैं और लोगों को सचेत करते हैं. ये आपातकालीन रणनीतियां हैं.
- आपातकालीन सुरक्षा को बेहतर बनाने और खतरनाक उत्पादों पर प्रतिबंध लगाने के लिए हम अभियान और वकालत के माध्यम से आग सुरक्षा नियमों को सुधारने के लिए प्रयास करते हैं. ये बदलाव की रणनीतियां हैं.
- हम लोगों की जागरूकता, भागीदारी एवं कौशल में वृद्धि करते हैं ताकि लोग जान सकें कि आग को रोकने एवं बुझाने के लिए क्या किया जा सकता है. ये निर्माण की रणनीतियां हैं.
- और हम आग से घायल हुए व्यक्तियों की देखभाल कर, मृतकों को याद करते हैं और पीड़ितों व उनके परिवारों के लिए न्याय और मुआवजे की मांग करते हैं. ये उपचारात्मक रणनीतियां हैं.

आपातकालीन, बदलाव, निर्माण की एवं उपचारात्मक रणनीतियां - इन चार प्रकार की रणनीतियों का उपयोग मानवाधिकार का उल्लंघन से निपटने के लिए किया जा सकता है.

पिछले सत्र में हमने आपातकालीन रणनीतियों की चर्चा की एवं इनके माध्यम से हमारे समुदाय में नफरत भरे भाषणों या उत्पीड़न जैसे मामलों से निपटने के लिए कार्रवाही के विचार मंथन किया.

इस सत्र में हम अन्य तीन प्रकार की रणनीतियों - बदलाव की रणनीतियों, निर्माण की रणनीतियों एवं उपचारात्मक रणनीतियों के संदर्भ में यह विचार मंथन जारी रखेंगे.

2. सामूहिक चर्चा: रणनीतियों पर चर्चा 50-65 मिनट

सामूहिक अभ्यास

विवरण
समूह बारी-बारी से हर मेज़ पर जाकर 3 प्रकार की युक्तियों को देखते हैं. वे उन युक्तियों का उपयोग करने वाले लोगों की कहानियाँ पढ़ते हैं और कार्रवाही के विचार पर विचार मंथन करते हैं.

उद्देश्य
मानव अधिकार को बढ़ावा देने वाली रणनीतियों के अध्ययन को सुदृढ़ एवं मजबूत करना और इस अध्ययन को उनके संदर्भ में लागू करने के ठोस कार्रवाही के विचार मंथन करना.

संसाधन

- पावरपॉइंट स्लाइड 4 (सामूहिक चर्चा निर्देश) या फ्लिप चार्ट शीटें, जिन पर निर्देश लिखे हों.
- बदलाव, निर्माण की व उपचारात्मक रणनीतियों/कहानियों के पोस्टर.
- 'कार्रवाही के विचार: रणनीति का नाम' शीर्षक फ्लिप चार्ट शीटें (तीनों प्रकार की रणनीतियों के लिए एक-एक).
- पोस्ट-इट नोट्स व कलम.

पूर्व तैयारी
ऊपर 'कमरे की तैयारी' में बताये अनुसार तीनों मेजों पर रणनीतियों/कहानियों के पोस्टर व कार्रवाही के विचार फ्लिप चार्ट शीटें (एक प्रकार की रणनीति, जैसे निर्माण की रणनीतियां, से सम्बंधित सामग्री एक मेज़ पर) रख दें.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 5 मिनट
पूरे अभ्यास के दौरान स्लाइड 4 (या निर्देश लिखी फ्लिप चार्ट शीट) दिखाएँ.

निम्न बातें समझाएं:

- हम एक सामूहिक विचार मंथन अभ्यास करने जा रहे हैं. हम तीन समूहों में तीन प्रकार की रणनीतियों - बदलाव की रणनीतियां, निर्माण की रणनीतियां और उपचारात्मक रणनीतियां - पर चर्चा करने जा रहे हैं. हर समूह 20 मिनट तक पोस्टर्स पढ़ेगा और एक श्रेणी की युक्ति के लिए विचारों के बारे में सोच-विचार करेगा. उसके बाद, समूह मेज़ बदलेंगे और अगली श्रेणी पर 20 मिनट चर्चा करेंगे, उसके बाद एक बार फिर मेज़ बदलेंगे और फिर से चर्चा करेंगे.
- पढ़ें और विचार करें: पढ़ें और सोचें: आप पोस्टरों तक पहुंचे तो सबसे पहले उन्हें व अगर उन पर पिछले समूह ने कार्रवाही के विचार के कोई पोस्ट-इट नोट्स लगाएं हों तो उन्हें भी, कुछ मिनटों तक पढ़ें और उन पर विचार करें.
- सोच-विचार: हमारे शहर के FORB मैप (FORB मैप फ्लिप चार्ट्स की ओर इशारा करें) पर हमने जिन समस्याओं की पहचान की थी उनके बारे में सोचते हुए, सोच-विचार करके उन तरीकों के अधिकतम संभव विचार सोचें जिनसे उन समस्याओं से निपटने के लिए इन युक्तियों का उपयोग किया जा सकता है.
- अपने विचार पोस्ट-इट नोट्स पर लिखें और उन्हें पोस्टर्स के बगल में मौजूद 'कार्रवाही के विचार' शीट पर चिपका दें. पोस्ट-इट नोट्स पर कृपया साफ़-साफ़ लिखें ताकि अन्य लोग उन्हें पढ़ सकें! इस चरण में, इस बात से फ़र्क नहीं पड़ता कि आपके विचार में वे विचार वास्तविकतावादी हैं या नहीं - जितना रचनात्मक हो सकते हैं उतना रचनात्मक हों!
- उन क्रियाओं के बारे में सोचना न भूलें जो हम हमारे दैनिक जीवन में व्यक्ति के रूप में कर सकते हैं और उन क्रियाओं के बारे में भी जो हम समूहों या संगठनों के रूप में कर सकते हैं - शायद हमारे आस्था समुदायों, कार्यस्थलों या युवा समूहों के ज़रिए या लोगों के एक नए समूह को एक साथ इकट्ठा करके.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 45-60 मिनट

प्रतिभागियों को तीन समूहों में बांट दें. हर समूह को बताएं कि उसे पोस्टरों के किस सेट से शुरुआत करनी है और कहें कि वे अपने काम पर लग जाएं. जब पोस्टरों के अगले सेट पर बढ़ने का समय हो जाए, तो उन्हें बताएं - अर्थात हर 20 मिनट में. इस सामूहिक कार्य के दौरान, विभिन्न समूहों के बीच घूम-घूम यह देखते रहे कि वे कैसे काम कर रहे हैं.

(यह अभ्यास ऊर्जावान के बाद, पूर्ण चर्चा के रूप में जारी रहेगा.)

3. ऊर्जावान: सिर से पंजे तक 5 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण

एक शारीरिक गतिविधि, जिसमें प्रतिभागी सुविधादाता जो कहता या करता है, उसकी नक़ल करते हैं. इसमें कई तरह के बदलाव किये जा सकते हैं.

उद्देश्य

उर्जा के स्तर को बढ़ाना.

अभ्यास का परिचय कैसे दें

प्रतिभागियों से कहें कि अब समय आ गयाहै कि हम अपने उर्जा की स्तर को बढ़ाएं ताकि हमारी रचनात्मकता बरक़रार रहे! सबसे कहें कि वे अपने बीच कुछ दूरी रखते हुए खड़े हो जाएं. बताएं कि अगले कुछ मिनटों तक उन्हें आपके शब्दों और शारीरिक क्रियाकलापों की नक़ल करना है - आप जो कह या कर रहे है, उसे दोहराना है.

अभ्यास का संचालन कैसे करें

निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण करते हुए अपने दोनों हाथों को शरीर के सम्बंधित भाग पर रखें: सिर, मुंह, कंधे, कुहनी, कूल्हा, घुटने, पंजे.

शुरुआत में शब्द धीरे-धीरे बोलें, उसके बाद शब्दों को दोहराएँ, हर बार अपने मूवमेंट और तेज़ तथा अधिक ऊर्जावान करते जाएँ.

4. समग्र फीडबैक: रणनीतियों पर चर्चा 20-40 मिनट

पूर्ण चर्चा

यह सामूहिक चर्चा अभ्यास 'रणनीतियों पर चर्चा' की अगली कड़ी है.

अभ्यास को कैसे जारी रखें

मेजों से 'कार्रवाही के विचार' फ्लिप चार्ट शीटें उठा लें और पिछले सत्र की आपातकालीन कार्यवाही संबंधी सुझाव फ्लिप चार्ट शीट लायें. चारों शीटों को, उनके बीच कुछ दूरी रखते हुए, दीवार पर लगा दें.

सहभागियों से शीट्स के इर्द-गिर्द इकट्ठा होकर कार्रवाही के विचार को पढ़ने को कहें. कुछ मिनट बाद, उनसे कहें कि वे कार्रवाही के विचार में से एक ऐसा सुझाव चुनें जो उनके विचार से अच्छा है और उनके संदर्भों में 'काम' करेगा. वे फ्लिप चार्ट शीट का पोस्ट-इट नोट निकल कर बैठ जाएं (सबके साथ).

हर व्यक्ति से बारी-बारी से कहें कि वह बताए कि उसने कौनसा कार्रवाही के विचार चुना और क्यों चुना. बाकी सब से पूछें कि उनमें से जिसे भी यह लगता हो कि वह एक अच्छा विचार है वह अपना हाथ खड़ा करे. इनमें से एक-दो लोगों से कहें कि वे इनमें से एक-दो लोगों से इस बात पर टिप्पणी करने को कहें कि उन्हें क्यों लगता है कि वह एक अच्छा विचार है.

अगर सबके अपनी बात रखने के बाद भी समय बचे तो प्रतिभागियों से पूछें कि क्या ऐसा कोई कार्रवाही के विचार है जिसे किसी ने नहीं चुना परन्तु जो उन्हें पसंद आया हो.

प्रतिभागियों ने जो पोस्ट-इट नोट चुनें हैं, उन्हें इकठ्ठा करें और एक नई फ्लिप चार्ट शीट पर लगा दें, जिसका शीर्षक हो 'हमारे पसंदीदा कार्रवाही के विचार'.

अभ्यास का समापन कैसे करें

सहभागियों को उनके सभी विचारों पर बधाई दें और उनकी सक्रिय सहभागिता के लिए उन्हें धन्यवाद कहें. यह कहकर समापन करें कि हमने युक्तियों के बारे में जो कुछ सीखा है उसे और हमारे कार्रवाही के विचार को अपने साथ अंतिम दो सत्रों में ले जाएँगे, जहाँ हम कार्य योजनाएँ विकसित करेंगे.

5. समापन अभ्यास: इमॉटिकॉन (चेहरे का भाव) 5 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण व उद्देश्य

प्रतिभागी अपने चेहरे और शरीर से इमॉटिकॉन (चेहरे का भाव)/मूर्ति बनाकर यह दर्शाने का प्रयास करेंगे कि उन्होंने रणनीतियों पर सत्रों में जो सीखा है, उसके बारे में वे क्या महसूस करते हैं. अगर आपके पास समय न हो तो आप यह अभ्यास छोड़ भी सकते हैं.

अभ्यास का संचालन कैसे करें

सभी से खड़े होने को कहें. उनसे एक ऐसा शब्द सोचने को कहें जो बताता हो कि युक्तियों के सत्र में उन्होंने जो कुछ सोचा उसके बारे में वे कैसा महसूस करते हैं. उनसे कहें कि वे अपने चेहरे और शरीर को ऐसा इमॉटिकॉन (चेहरे का भाव) या मूर्ति बना दें जो उस एहसास को दिखाता हो.

जब सब लोग अपना-अपना इमॉटिकॉन (चेहरे का भाव) बना चुकें तब गोले में घूम कर हर एक से वह शब्द बोलने को कहें जो उसने सोचा था.

अभ्यास व सत्र का समापन कैसे करें

जब सब लोग बोल चुकें तब सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों प्रकार की अनुभूतियों का स्वागत करें, जैसे, नई जानकारी से भावविह्वल हो जाना या FORB को बढ़ावा देने के काम में आने वाली संभावित कठिनाईयों के कारण भयभीत हो जाना.

जोर देकर कहें कि सत्र से हमें बहुत सी नई बातें सीखने को मिलीं हैं और हमनें कई रणनीतियों पर विचार किया है. परन्तु एक महत्वपूर्ण बात यह है कि हर व्यक्ति या संस्था के लिए सब कुछ कर पाना न तो संभव है और ना ही रणनीति की दृष्टि से उचित है. हमें अनेक व्यक्तियों और संस्थाओं की ज़रुरत है जो एक-दूसरे के पूरक के रूप में काम करें.

इन सभी रणनीतियों को देखने का उद्देश्य यह है कि हम उन उपायों की पहचान करें जो हमारे लिए संभव और रणनीतिक रूप से उपयुक्त हैं-इस आधार पर कि हम कौन हैं और हमारा संदर्भ कैसा है. अंतिम दो सत्रों में हम कार्य योजना के विकास के दौरान उपयोग के लिए समस्याएँ और कार्रवाही के विचार चुनेंगे.

कोई भी व्यक्ति सब कुछ नहीं कर सकता - पर हम सभी कुछ कर सकते हैं और हम सभी के छोटे-छोटे कुछ मिलकर बदलाव ला सकते हैं.

स्रोत

रणनीतियों पर चर्चा: न्यू टैक्टिक्स इन ह्यूमन राइट्स प्रोजेक्ट के युक्तियाँ मॉडल के एक अनुकूलन पर आधारित मूल प्रस्तुति और अभ्यास. www.newtactics.org

सत्र 8

हमारी बदलाव की यात्रा

सत्र अवलोकन

सत्र 8-9 परस्पर जुड़े हुए हैं, उनके सीखने के उद्देश्य और सीखने की प्रक्रिया एक हैं. इन सत्रों में प्रतिभागी पिछले दो सत्रों में प्राप्त जानकारियों एवं कार्रवाही के विचार का उपयोग करते हुए एक कार्य योजना विकसित करते हैं जो बदलाव की ओर चाक्षुष यात्रा के स्वरुप में है.

प्रतिभागी उन समस्याओं की पहचान करते हैं जिन पर वे काम करना चाहते हैं, और उन्हें उस समस्या को अधिक ठोस रूप देने की प्रक्रिया से मार्गदर्शन दिया जाता है - जैसे कि लक्ष्य विकसित करना, अन्य संबंधित पक्षों की पहचान करना और उनसे कैसे संबंध बनाए जाएँ, रणनीतियाँ और कार्रवाइयाँ चुनना, संदेश तैयार करना और जोखिमों का मूल्यांकन करना.

उपलब्ध समय को देखते हुए, उद्देश्य एक संपूर्ण कार्य योजना तैयार करना नहीं बल्कि कार्य योजना बनाने के कौशल को सीखना और उसका अभ्यास करना है. विकसित की जाने वाली कार्य योजना, वास्तविक योजनाएं हो सकतीं हैं जिनका प्रतिभागी भविष्य में उपयोग करने का इरादा रखते हैं या वे केवल 'अभ्यास' योजनाएं हो सकतीं है जो उन्हें ऐसे कौशल उपलब्ध करवाएं जिनका प्रयोग वे बदलाव की किसी भी प्रक्रिया, जिसका वे हिस्सा हों, में कर सकते हैं.

सीखने के उद्देश्य

यह सत्र कार्य योजना बनाने के कौशलों के विकास पर केन्द्रित है.

सत्र 8 एवं 9 की समाप्ति तक, प्रतिभागी निम्न में सक्षम होंगें:

- समुदाय में FORB को बढ़ावा देने के लिए सरल कार्य योजनाओं का विकास
- ऐसे ठोस कदमों के बारे में बताना जो वे FORB और अन्य अधिकारों को बढ़ावा देने के लिए व्यक्तिगत रूप से उठा सकते हैं
- FORB और अन्य अधिकारों को बढ़ावा देने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त करना.

जहाँ प्रासंगिक हो, प्रतिभागी:

- प्रशिक्षण के बाद अपनी कार्य योजनाओं को कार्यान्वित करेंगे.

टिप्पणी

हमारे सभी मानव अधिकार आपस में जुड़े हुए हैं. आम तौर पर, FORB के उल्लंघनों में अन्य अधिकारों, जैसे महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा के अधिकार, रोज़गार या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार, के उल्लंघन भी शामिल होते हैं. इसका यह अर्थ है कि FORB को बढ़ावा देने के लिए हमें किसी और अधिकार पर (भी) फ़ोकस करना पड़ सकता है.

इस और अगले सत्र के दौरान जब सहभागी समस्याएँ चुन रहे हों और कार्य योजनाएँ विकसित कर रहे हों तब इस बात पर प्रकाश डालने की कोशिश करें.

सत्र की अंतर्वस्तु और समय

आरंभिक अभ्यास: मेरी तारीफ़ करें प्रतिभागियों को यह स्मरण दिलाता है कि समूह में और बदलाव लाने में सभी की प्रशंसात्मक भूमिकाएं हैं.	5 मिनट
पूर्ण अभ्यास: समस्या क्या है? प्रतिभागी कार्य योजना विकसित करने के लिए सीमित संख्या में समस्याओं की पहचान करेंगे.	52 मिनट
ऊर्जावान: बदलाव लाएं तेज, मजेदार और शारीरिक - प्रतिभागी झुक कर फुसफुसाने से लेकर कूदते और चिल्लाते हुए कहते हैं 'बदलाव लाओ'.	5 मिनट
प्रस्तुति: हमारी बदलाव की यात्रा यह एक महत्वपूर्ण इनपुट है जो यात्रा के बिम्ब का प्रयोग करते हुए कार्य योजना विकसित करने की प्रक्रिया का वर्णन करता है.	10 मिनट
सामूहिक अभ्यास: हमारी बदलाव की यात्रा पहले से सीखी हुई प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए प्रतिभागी एक चाक्षुष कार्य योजना विकसित करते हैं.	45 मिनट
अंतिम टिप्पणियां	3 मिनट
कुल समय	**2 घंटे**

तैयारी करें

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप सत्र की तैयारी करें. याद रखें - आपको अपने समूह की बेहतर समझ है! आपके समूह की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार सत्र के किसी भी तत्व को अनुकूलित और परिवर्तित करने के लिए आपका स्वागत है.

इस सत्र के लिए संसाधन

पृष्ठ 16 पर सूचीबद्ध प्रत्येक सत्र के लिए मानक संसाधनों के अतिरिक्त, इस सत्र को संचालित करने के लिए आपको निम्नलिखित संसाधनों की आवश्यकता होगी:

- 'हमारी बदलाव की यात्रा' हैंडआउट - हर प्रतिभागी हेतु एक.
- सत्र 5 में तैयार की गई 'हमारे नगर का FORB मानचित्र' फ्लिप चार्ट शीट.
- सत्र 6-7 की पांचों 'कार्रवाही के विचार' फ्लिप चार्ट शीटें.
- सभी रणनीतियों के पोस्टर.

इस सत्र के **सहायक संसाधन** यहाँ हैं.

कक्ष तैयार करना

इस सत्र के लिए यह एक अच्छा विचार होगा कि प्रारंभ में कुर्सियों को एक घेरे में लगाई जाएं. हमारे 'हमारी बदलाव की यात्रा' सामूहिक कार्य अभ्यास के लिए, हर समूह हेतु एक बड़ी मेज़ और कुर्सियाँ लगा देना अच्छा रहेगा. सत्र से पहले ही मेज़ों पर खाली फ्लिप चार्ट शीट, कलम और 'हमारी बदलाव की यात्रा' हैंडआउट रख दें.

'FORB मानचित्र', सभी 'कार्रवाही के विचार' फ्लिप चार्ट शीटों और रणनीतियों के पोस्टरों को सन्दर्भ सामग्री के रूप में उपयोग करने के लिए दीवारों पर लगा दें.

‘हमारी बदलाव की यात्रा’

“एक मज़ेदार सत्र! सहभागियों ने अपने बदलाव की यात्रा मैप्स तैयार करने का आनंद लिया. उन सभी के पास इस बारे में ठोस विचार थे कि पाठ्यक्रम पूरा होने के बाद वे बदलाव लाने के लिए क्या करना चाहते हैं.”
हिदाया दूदी, सुविधादाता, तंज़ानिया

“कार्य योजना बनाने के सत्रों में जो गतिविधियाँ थीं वे सहभागियों को उनके कौशलों को और धारदार बनाने में मदद करती हैं - फलस्वरूप वे चेंजमेकर्स के रूप में और अधिक प्रभावी बनेंगे.”
हम्माम हद्दाद, सुविधादाता, जॉर्डन

“सहभागियों ने तय किया कि वे एक समूह बनाएँगे जो समर्थन करने, जागरुकता फैलाने और लोगों को एकजुट करने के ज़रिए शहर में FORB को बढ़ावा देने के लिए साथ काम करना जारी रखेगा.”
उकोहा न्वोबिया, सुविधादाता, नाइजीरिया

विस्तृत सत्र योजना

1. आरंभिक अभ्यास: मेरी तारीफ़ करें 5 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण
प्रतिभागी गोले में अपने उलटे हाथ पर खड़े व्यक्ति की प्रशंसा में एक-एक बात कहते जाते हैं.

उद्देश्य
समूह में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा लाई गई विशिष्ट योग्यताओं और कौशलों को उजागर करना और इस बात पर ज़ोर देना कि कार्य योजना विकसित करने की प्रक्रिया में सभी की भागीदारी महत्वपूर्ण होगी.

अभ्यास का परिचय कैसे दें
एक गोले में बैठें. सभी का स्वागत करें और समूह को बताएं कि हम सत्र की शुरुआत एक-दूसरे की तारीफ़ करके करेंगे!

अभ्यास का संचालन कैसे करें
हर व्यक्ति अपनी बाएं ओर खड़े व्यक्ति को देखें और उसके कोई ऐसे गुण के बारे में सोचें जो समूह के काम का होगा - जैसे अच्छे विचार, अनुभव या मजाहिया स्वभाव.

गोले में आगे बढ़ते जाईये. हर व्यक्ति अपने बाएं तरफ खड़े व्यक्ति की तरफ मुड़ेगा और उस व्यक्ति के समूह को अनूठे योगदान के बारे में एक या दो शब्द कहेगा.

अभ्यास का समापन कैसे करें
समूह से कहें कि इतना अच्छा होने के लिए वे खुद का तालियों से अभिनंदन करें! निम्न बिंदुओं पर चर्चा करें:

- हममें से हरेक में अनूठे गुण होते हैं - हम एक-दूसरे को पूरा करते हैं और हर किसी का योगदान महत्वपूर्ण है.
- ऐसे समुदायों जहाँ मानव अधिकार का सम्मान होता हो, के निर्माण में भी यही बात लागू होती है - हम तब सर्वाधिक प्रभावी होते हैं जब हम साथ मिलकर काम करते हैं. हर किसी का योगदान, चाहे वह कितना भी छोटा हो, महत्वपूर्ण है क्योंकि हम सभी के छोटे-छोटे योगदान साथ मिलकर बदलाव की दिशा में संवेग का निर्माण करते हैं.
- इस और अगले सत्र में हम कार्य योजना बनाएंगे. आईये हम सब मिल कर यह सुनिश्चित करें कि इसमें हम सब अपना-अपना अनूठा योगदान दें!

2. विचार-विमर्श अभ्यास: समस्या क्या है 52 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण व उद्देश्य
इस अभ्यास में सहभागी वे ठोस समस्याएँ चुनते हैं जिनके लिए वे कार्य योजना विकसित करना चाहते हैं. इसमें प्रयुक्त क्रियापद्धति यह सुनिश्चित करती है कि हर व्यक्ति प्रक्रिया में योगदान दे.

संसाधन

- पिछले सत्र से पाँच 'कार्रवाही के विचार' फ्लिप चार्ट शीटें.
- हमारे शहर के फ्लिप चार्ट शीट में FORB मानचित्र.
- फ्लिप चार्ट और पेन.

पूर्व तैयारी

तय करें कि 'हमारी बदलाव की यात्रा' अभ्यास में आप कार्य योजनाएँ बनाने वाले कितने समूह रखेंगे (पेज 137 देखें). आपको हर समूह में 4-8 सहभागी चाहिए होंगे. (अगले सत्र में) वापस रिपोर्ट करने हेतु समय की सीमित उपलब्धता को देखते हुए, कोशिश करें कि समूह तीन से अधिक न हों.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 2 मिनट

सबसे कहें कि वे FORB मानचित्र/कार्रवाही के विचार फ्लिप चार्ट शीटों के पास इकठ्ठा हों और उन्हें ये बातें समझाएं:

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य हमें हमारे स्थानीय समुदायों में चेंजमेकर्स बनने में मदद करना रहा है. हमारे अंतिम दो सत्रों में हम ऐसी कार्य योजनाएँ विकसित करने जा रहे हैं जिन्हें समूह हमारे समुदाय में किसी समस्या से निपटने के लिए उपयोग कर सकते हैं. प्रश्न है कि कौनसी समस्याएँ?

हमने 'हमारे शहर का FORB मैप' अभ्यास में धर्म या आस्था की आजादी से संबंधित समस्याएँ पहचानी थीं. और उनके आधार पर, हमने कार्रवाही के विचारों पर सोच-विचार करके हमारे पसंदीदा कार्रवाही के विचार चुने हैं. इनमें से प्रत्येक विचार किसी ऐसी चीज़ से संबंधित है जिसे हम एक समस्या मानते हैं.

इस अभ्यास में हम, हमने जो FORB समस्याएँ पहचानी थीं उनमें से वे समस्याएँ चुनेंगे जिनके लिए हम कार्य योजनाएँ बनाएँगे. बेशक, ऐसी कई अन्य मानव अधिकार समस्याएँ हैं जिनसे निपटना महत्वपूर्ण है. हम आज धर्म या आस्था की आजादी पर फ़ोकस कर रहे हैं, पर आप जो कौशल सीख रहे हैं उनका उपयोग समुदाय में मौजूद किसी भी प्रकार की समस्या के लिए कार्य योजना विकसित करने में हो सकता है.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 50 मिनट

- **सोचें** (5 मिनट)
  प्रतिभागियों से कहें कि वे 'कार्रवाही के विचार' और विशेषकर 'हमारी पसंदीदा कार्रवाही के विचार' फ्लिप चार्ट शीटों को देखते हुए अपने मन में इन प्रश्नों पर विचार करें:
  - हमारी कार्रवाही के विचार किन समस्याओं से निपटने का प्रयास हैं?
  - इनमें से किन समस्याओं से निपटना सबसे महत्वपूर्ण है?
  - किन समस्याओं के सन्दर्भ में हम कुछ बदल सकते हैं?

- **जोड़ी बनाएँ** (10 मिनट)
  सहभागियों से कहें कि वे जोड़ी बनाएँ और निम्नलिखित कार्य को समझाएँ:
  अपनी जोड़ियों में से, एक समस्या चुनें जिसके बारे में आपको लगता है कि हमें आज के लिए कार्य योजना बनानी चाहिए, जो इस बात पर आधारित हो कि आपके विचार क्या महत्वपूर्ण हैं और हम किसमें बदलाव ला सकते हैं. समस्या को परिभाषित करने में अधिकतम संभव ठोस और विशिष्ट रहें. जैसे, 'असहिष्णुता' एक समस्या है यह कहने की बजाए आप कह सकते हैं कि:
  - स्थानीय स्कूलों में अल्पसंख्यक बच्चों के साथ दादागिरी की जा रही है, या
  - स्थानीय धार्मिक या राजनैतिक नेता या स्थानीय मीडिया नफरत भरी बातें कह रहे हैं.

  यह कहने की बजाय कि अल्पसंख्यक (या सभी) महिलाएं असुरक्षित या कमज़ोर हैं, आप कह सकते हैं कि:
  - (अल्पसंख्यक) लड़कियों में स्कूल छोड़ने की दर ऊंची है,
  - महिलाओं, विशेषकर अल्पसंख्यक महिलाओं, के साथ सड़कों पर उत्पीड़न किया जाता है, या
  - या लड़कियों की कम उम्र में जबरदस्ती शादी कर दी जाती है.

  और सरकार द्वारा भेदभाव कहने की बजाय आप कह सकते हैं कि:
  - स्थानीय पुलिस अल्पसंख्यक समुदायों के लोगों के विरुद्ध अपराधों की जांच ठीक से नहीं करती, या
  - फलां समुदाय को अपना धार्मिक संस्थान बनाने की अनुमति नहीं मिल रही है.

सुझाव! इन उदाहरणों को आपके सन्दर्भों में प्रासंगिक बनाने के लिए उनमें उचित बदलाव कर लें!

- **साझा करें** (10 मिनट)
  हर जोड़ी से कहें कि वह उसके द्वारा चुनी गई समस्या को ***एक वाक्य में बताये***. फ्लिप चार्ट शीट या वाइटबोर्ड की बायीं साइड पर समस्याओं की सूची लिखें. दायीं ओर जगह छोड़ें जहाँ लोग उन समस्याओं के आगे क्रॉस का निशान लगाएँगे जिनके लिए वे वोट करना चाहते हैं.

- **वोट करें और चुनें** (20 मिनट)
  सभी से कहें कि वे फ्लिप चार्ट पर उन दो समस्याओं की बगल में क्रॉस का निशान लगाएँ जिनके लिए, उनके व्यक्तिगत विचार में, समूह को कार्य योजनाएँ विकसित करनी चाहिए. परिणामों पर समूह में चर्चा करें और साथ मिलकर ऐसी अधिकतम तीन समस्याएँ चुनें जिनके लिए कार्य योजनाएँ लिखनी हैं (यदि आपके समूह में 12 से कम सदस्य हैं तो तीन से कम, क्योंकि आपको हर समस्या के लिए न्यूनतम चार सहभागी चाहिए होंगे).
  यह जोर देकर कहें कि भले ही आपने जिस समस्या के आगे क्रॉस का निशान लगाया था वह न चुनी गई है परन्तु आज हम कार्य योजना बनाने का जो कौशल यहाँ सीखेंगे, उसका प्रयोग आप भविष्य में आपके द्वारा चुनी गई समस्या के सन्दर्भ में कर सकते हैं.

- **समूहों में बांटे** (5 मिनट)
  पूरे समूह को एक गोले में खड़े होने के लिए कहें. गोले में एक तरफ से शुरू करते हुए, प्रतिभागियों को एक से लेकर जितने कार्य योजना समूह आप बनाने वाले हैं, उतने तक गिनें (उदाहरण के लिए 1 से 3 तक, अगर आप तीन समूह बनाने वालें हैं).
  हर समूह को एक समस्या आवंटित कर दें और प्रतिभागियों से कहें कि सत्र में आगे चलकर उनका समूह उस विशिष्ट समस्या के सुलझाव के लिए कार्य योजना बनाएगा.
  अगर किसी प्रतिभागी की यह तीव्र इच्छा हो कि वो उसे आवंटित समूह के अलावा किसी और समूह का सदस्य बनना चाहते है (शायद इसलिए क्योंकि उसे उस समस्या की कुछ विशेष जानकारी है) तो देखें कि क्या उस समूह का कोई सदस्य अपनी जगह बदलने को तैयार है.

3. ऊर्जावान: बदलाव लाएं 5 मिनट

पूर्ण अभ्यास

विवरण व उद्देश्य
उर्जा का स्तर बढ़ाने के लिए शारीरिक अभ्यास.

अभ्यास का संचालन कैसे करें
समूह के सदस्य एक गोले में खड़े होकर जितने नीचे झुक सकते हैं, झुक जाएं (यह हर व्यक्ति की व्यक्तिगत क्षमता पर निर्भर करेगा). सबसे कहें कि वे "बदलाव लाओ: ब-द-ला-व!" ये शब्द सब के साथ फुसफुसाते हुए कहें. फिर वे ये शब्द दोहराते जाएं - हर बार थोड़ी ऊंची आवाज़ में और थोडा ऊपर उठकर. इस तरह, आवाज़ की तीव्रता बढ़ती जाएगी और समूह खड़ा होता जायेगा. अंत में सब लोग जितना ऊंचा कूद सकें उतना कूदते हुए जोर-जोर से चिल्लाएंगे: "बदलाव लाओ: ब-द-ला-व!".

सुझाव! उदाहरण बनकर अगुआई करें - जैसे-जैसे गेम आगे बढ़े, और अधिक प्रबल व प्रचंड होते जाएँ!

4. प्रस्तुति: हमारी बदलाव की यात्रा 10 मिनट

प्रस्तुति

विवरण व उद्देश्य
इस प्रस्तुतिकरण का उद्देश्य कार्य योजना बनाने के कौशल का विकास करना है. यह एक यात्रा की योजना बनाने के बिम्ब का प्रयोग करते हुए, कार्य योजना बनाने की प्रक्रिया और इसके लिए इस्तेमाल किये जाने वाले उन औजारों से परिचित करवाता है, जिनका प्रयोग प्रतिभागी नीचे वर्णित अभ्यास में करेंगे.

संसाधन

- प्रस्तुति की स्क्रिप्ट इस गाइड के पेज 140 पर है.
- यह स्क्रिप्ट सत्र की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 3-24 से मैच करता है और इन स्लाइड्स हेतु वक्ता की टिप्पणियों में शामिल है.
- इस स्क्रिप्ट का संपादन-योग्य संस्करण, सत्र के लिए दिए गए संसाधनों में उपलब्ध है.

पूर्व तैयारी
पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप तैयारी करें. स्क्रिप्ट और पावरपॉइंट स्लाइडों को पढ़ें और अगर चाहें तो उन्हें अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए उनमें बदलाव करें (या स्लाइडों के महत्वपूर्ण बिन्दुओं की फ्लिप चार्ट शीट बनाएं) और स्लाइडों/फ्लिप चार्ट शीट के साथ प्रस्तुतिकरण देने का अभ्यास करें.

सुझाव! लोगों से कहें कि वे आपका प्रस्तुतिकरण पूर्ण होने तक प्रश्न/टिप्पणियां न करें.

5. समूह कार्य: हमारी बदलाव की यात्रा 45 मिनट

सामूहिक अभ्यास

विवरण व उद्देश्य

यह अभ्यास इस सत्र के शेष समय और अगले सत्र की शुरुआत तक चलेगा. इसमें, समूह पिछले प्रस्तुतिकरण में वर्णित कार्य योजना औजार के अनुरूप, कार्य योजना विकसित करेंगे. यह आपके समूह की प्रकृति पर निर्भर है कि ये वास्तविक कार्य योजना होगी, जिसे समूह कार्यान्वित करना चाहेगा या ऐसी योजना का एक नमूना होगा, जिसका उपयोग योजना बनाने के कौशल को सीखने के लिए किया जायेगा.

समूह अपनी कार्य योजनाओं का प्रारूप तैयार कर उसे एक चाक्षुष 'यात्रा' के रूप में फ्लिप चार्ट शीटों पर लिखेंगे.

संसाधन

- हैंडआउटहैंडआउट 'हमारी बदलाव की यात्रा' हैंडआउट - हर प्रतिभागी हेतु एक.
- फ्लिप चार्ट, फ्लिप चार्ट पेन, साधारण कलम.

पूर्व तैयारी

दो फ्लिप चार्ट शीट के कम लम्बे सिरों को टेप से जोड़ कर एक लम्बा कागज़ बना लें. हर समूह के लिए एक ऐसा कागज़ होना चाहिए.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 5 मिनट

निम्नांकित को समझाते हुए स्लाइड 24 दुबारा प्रदर्शित करें:

इस सत्र में पहले हमने समस्याओं का चयन किया और फिर सभी प्रतिभागियों को अलग-अलग समूहों में विभाजित किया गया. अब प्रत्येक समूह, अपनी समस्या से निपटने के लिए कार्य योजना विकसित करेगा. इसके लिखे 'हमारी बदलाव की यात्रा' मॉडल का प्रयोग किया जायेगा, जिसके बारे में हमने प्रस्तुतिकरण में जाना है.

ये कार्य योजनाएं वास्तविक योजनाएं हो सकती हैं, जिन्हें हम प्रशिक्षण के बाद क्रियान्वित करना चाहते हैं, या अभ्यास कार्य योजनाएं हो सकती हैं जो हमें कार्य योजना कौशल विकसित करने में मदद करती हैं, जिन्हें हम बाद में उपयोग में ला सकते हैं.

प्रत्येक समूह के लिए निर्धारित टेबल पर आपको एक लम्बी फ्लिप चार्ट शीट मिलेगी जिस पर आप अपनी बदलाव की यात्रा का प्रारूप तैयार कर उसे लिख सकते हैं. आपको 'हमारी बदलाव की यात्रा' का एक नमूना भी मिलेगा जो आपकी सहायता के लिए है और जिसे एक हैंडआउट के रूप में आप अपने साथ अपने घर भी ले जा सकते हैं.

आपका काम है बदलाव की यात्रा मॉडल के विभिन्न तत्वों का उपयोग करते हुए अपने समूह की समस्या से निपटने के लिए फ्लिप चार्ट शीटों पर कार्य योजना तैयार करना. आप यह काम इस सत्र के लिए निर्धारित समय में से बचे समय और अगले सत्र के पहले भाग में कर सकते हैं - कुल मिलकर यह समयावधि करीब एक घंटा है.

इसे समझाते हुए स्लाइड 25 दुबारा प्रदर्शित करिए:

अपनी कार्य योजना बनाने के लिए आपको निम्न चरणों से गुज़ारना होगा:

- तय करना कि चेंजमेकर कौन होगा: किन व्यक्तियों का समूह या कौन-सी संस्था योजना को कार्यान्वित करेगी?
- उस मुख्य समस्या को लिखना जिस पर आपके समूह को काम करना है.
- उन दृष्टिकोणों, व्यवहारों या नियमों की स्पष्ट पहचान करना जिनमें आप बदलाव चाहते हैं.
- अपनी समस्या के सुलझाव के लिए लक्ष्य का निर्धारण.
- दृष्टिकोणों, व्यवहारों और नियमों में बदलावों की पहचान करें.
- इससे कौन-से अन्य 'व्यक्ति' सम्बद्ध हैं - प्रभावित व्यक्ति, संगठनों या प्राधिकारियों जो समस्या का भाग हैं या वे जो बदलाव लाने में सक्षम हैं.

- अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप जिन युक्तियों का प्रयोग करेंगे और जो मुख्य गतिविधियां करेंगे, उन्हें चुनें और कार्य योजना में जोड़ें.
- ऐसे कुछ व्यावहारिक क़दमों की पहचान करें जो इन गतिविधियों के लिए आवश्यक हैं. परन्तु आज इस पर बहुत समय खर्च न करें.
- विभिन्न सम्बद्ध व्यक्तियों के लिए आपके क्या सन्देश हैं. वे कौन-से तर्क हैं जो उन्हें समझाने के लिए दिए जा सकते हैं?
- और अंत में इस पर विचार करें कि इस राह पर चलने में आपको किन जोखिमों का सामना करना पड़ेगा.

आपको यह सब इसी क्रम में करने की ज़रुरत नहीं है परन्तु शायद यह विवरण आपके लिए मददगार होगा!

निम्न बातों पर जोर दें:
प्रत्येक प्रश्न पर विचार करने में काफी समय लगाया जा सकता है परन्तु इस अभ्यास का उद्देश्य कार्य योजना का मूल ढांचा तैयार करना है - एक रूपरेखा बनाना है. अगर हम उसे भविष्य में कार्यान्वित करने का निर्णय करते हैं तो उसे पर और सोच-विचार कर उसे विकसित किया जा सकता है.

हर भाग पर लगभग 8 मिनट खर्चने का लक्ष्य रखें! याद रखें कि यह एक रफ़ योजना के लिए सोच-विचार है! अपने स्वतः स्फूर्त विचारों और आइडिया को लिख लें और चीज़ों को सावधानी से सूत्रबद्ध करने में समय न लगाएँ - रफ़ ढंग से सूत्रबद्ध किया गया एक वाक्य या कुछ बुलेट पॉइंट काफ़ी हैं.

और उन कार्रवाही के विचारों को न भूलें जो फ्लिप चार्ट्स पर हैं! आप उनमें से शायद एक या दो को अपनी योजना में उपयोग कर सकते हैं.

अभ्यास का संचालन कैसे करें 40 मिनट
सभी को काम शुरू करने के लिए उनके समूहों में भेज दें. एक-एक समूह के पास जाकर चेक करें कि उन्हें समझ आ गया हो कि उन्हें क्या करना है.

समय का ध्यान रखें! 10 मिनट बाद लोगों को अगले प्रश्न पर बढ़ने की याद दिलाएं. इसके बाद निश्चित अंतराल से उन्हें फिर याद दिलाते रहें.

समूहों पर नज़र रखकर यह चेक करते रहें कि वे विषय पर और पटरी पर बने रहें, अपनी ओर से जितना प्रोत्साहन और सुझाव दे सकते हों, दें. यदि कोई समूह किसी ऐसे प्रश्न में अटका हो जिसमें आप मदद नहीं कर सकते, तो यह सुझाव दें कि वे कार्य योजना बनाने की प्रक्रिया के अगले चरण पर चले जाएँ और उस प्रश्न पर बाद में लौटें.

6. अंतिम टिप्पणियां 3 मिनट

संक्षिप्त वार्ता

सत्र के लिए निधारित समय समाप्त हो जाने के बाद, सभी समूहों को उनके परिश्रम के लिए धन्यवाद दें और उन्हें बताएं कि वे अगले सत्र में भी बदलाव की यात्रा की अपनी कार्य योजना पर काम करेंगें. अभी से लेकर अगले सत्र की शुरुआत तक उन्हें अपनी कार्य योजना के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करें. उनसे कहें कि अगर उनके दिमाग में कोई नई बात आती है तो वे उसे लिख लें और उसे अगले सत्र में लायें.

प्रस्तुति स्क्रिप्ट

हमारी बदलाव की यात्रा - कार्य योजना के निर्माण हेतु चाक्षुष औजार

सत्र 8 की प्रस्तुति के लिए यह स्क्रिप्ट सत्र पावरपॉइंट की स्लाइड 3-24 द्वारा सचित्र है.

कार्य योजना क्या है और क्यों महत्वपूर्ण है?

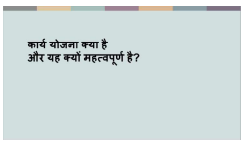

कार्य योजना क्या है और क्यों महत्वपूर्ण है? कार्य योजना एक ऐसी योजना है जिसमें हम यह निर्धारित करते हैं कि हम अपने वर्तमान स्थान से उस स्थान पर कैसे जाएँगे जहाँ हम जाना चाहते हैं.

यदि हम लंबी यात्रा पर जा रहे हैं, तो अच्छा होगा कि हमारे पास एक नक्शा और एक योजना हो ताकि हम यह तय कर सकें कि हम अपनी मंजिल तक कैसे जाएंगे. शायद हम बस स्टाप तक पैदल जाएंगे, बस पकड़ेंगे, फिर ट्रेन और अंत में अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए एक कार किराए पर लेंगे! एक नक्शे और एक योजना के बिना, शायद हम अपनी मंजिल तक पहुंच ही न सकें या वहां पहुंचने में हमें अधिक समय लगे.

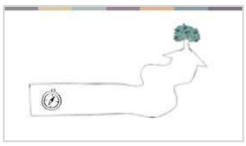

कार्य योजना भी एक नक्शे और यात्रा की योजना की तरह है- वह उन कदमों को रेखांकित करती है जो हमें मंजिल तक पहुंचने के लिए उठाने होंगे और सोच-समझकर व रणनीति बनाकर कार्य करने में हमारी सहायता करती है.

हम सभी कार्य योजनाएं बनाते हैं. कभी-कभी वे बहुत सरल होती हैं - लगभग स्वाभाविक और हम उन्हें अपने दिमाग में रख सकते हैं. लेकिन जटिल समस्याओं, ऐसे कार्यों जो हमने पहले न किये हों और सामूहिक रूप से किए जाने वाले कार्यो के लिए हमें सावधानी से योजना बनानी पड़ती है और उसे लिखना पड़ता है ताकि वह प्रत्येक व्यक्ति को याद रहे.

इस प्रस्तुतिकरण के शेष भाग में हम सीखेंगे कि 'हमारी बदलाव की यात्रा' नामक एक साधारण चाक्षुष औजार का उपयोग कर कार्य योजना कैसे तैयार की जा सकती है.

यात्री

जब हम बदलाव की यात्रा के लिए कार्य योजना बनाते हैं तो पहला सवाल यह उठता है कि हम कौन हैं?

वे यात्री कौन हैं जो बदलाव हेतु यात्रा पर जा रहे हैं? जैसे कुछ यात्री पैदल चलते हैं, अन्य वाहन या विमान का उपयोग करते हैं; उसी तरह व्यक्तियों, समूहों या संस्थाओं के रूप में हमें अलग-अलग प्रकार के अवसर मिलते हैं, हमारी ताकत और कमजोरियां अलग-अलग होती हैं और हम अलग-अलग तरह के जोखिमों का सामना करते हैं. 'हम कौन हैं?' पूछकर शुरुआत करें. इस प्रश्न से शुरूआत करने पर हम इन बातों पर ध्यान दे पाते हैं.

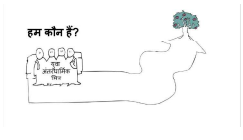

आईए हम एक काल्पनिक बदलाव की यात्रा का सृजन करें और मानें कि हम अपने नगर के विभिन्न आस्था समुदायों के लोगों के युवा मित्र हैं.

हमारा प्रारंभिक बिंदु

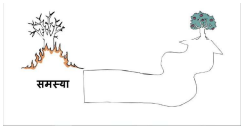

जब हम किसी यात्रा की योजना बनाते हैं तो जो पहली बात हमें मालूम होनी चाहिए वह है हमारा प्रारंभिक बिंदु. बदलाव की यात्रा एक समस्या से प्रारंभ होती है और हम उसे परिभाषित कर इसकी शुरूआत करते हैं. हम जितनी विशिष्टता से अपनी समस्या को परिभाषित कर सकेंगे, उतना ही यह निर्धारित करना आसान होगा कि बदलाव कैसे लाया जाए.

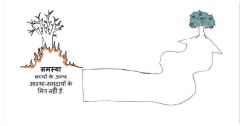

अतः यह कहने की बजाए कि 'असहिष्णुता' एक समस्या है हम कह सकते हैं कि "बच्चों के मित्रों में अन्य आस्था-समुदायों के सदस्य नहीं होते." यह असहिष्णुता के जारी रहने की वजह भी है और नतीजा भी.

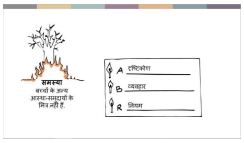

इस तरह की समस्याओं के उत्पन्न होने में विभिन्न अंतर्निहित कारणों का योगदान होता है. ये अंतर्निहित कारण हो सकते हैं:

- लोगों का समस्यात्मक रवैया,
- समस्यात्मक व्यवहार - लोगों का आचरण
- समस्यात्मक कानून, नियम या नीतियां.

ये रवैये, व्यवहार एवं नियम मिलकर समस्या उत्पन्न करते हैं. तो हमने जिस समस्या की पहचान की है, उससे संबंधित किन विशिष्ट रवैयों, व्यवहारों एवं नियमों में हम बदलाव चाहते हैं?

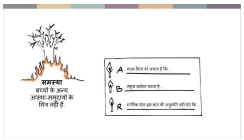

हमारे उदाहरण के संबंध में हम कह सकते हैं कि "बच्चों के अन्य समुदायों के मित्र होने के प्रति अभिभावकों का नकारात्मक रवैया होता है" या "स्कूल विभिन्न आस्था समुदायों के बच्चों द्वारा एक-दूसरे को डराने-धमकाने की घटनाओं को नजरअंदाज करता है" या "स्थानीय आस्था समुदाय का एक नेता कहता है कि विभिन्न समुदायों के बच्चों के बीच मित्रता की अनुमति नहीं होनी चाहिए." यही वे रवैये, व्यवहार एवं नियम हैं जो हमारी समस्या के उत्पन्न होने में योगदान देते हैं.

हमारी मंजिल

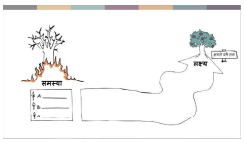

जब हम बदलाव लाने की यात्रा पर निकलें, तो यह जानना महत्वपूर्ण है कि हमारी मंज़िल कहाँ है! अपनी मंज़िल तय करना थोड़ा कठिन होता है. हम सभी शांति, न्याय और शून्य-भेदभाव तक पहुँचना चाहते हैं! लेकिन हमें इस बारे में ठोस और वास्तविकतावादी होना होगा कि एक समय-सीमा विशेष के भीतर हम क्या और कितना हासिल कर सकते हैं.

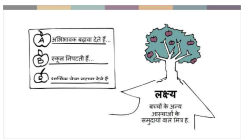

जैसे, संभव है कि हमारा लक्ष्य हो कि 'बच्चे अन्य आस्था समुदायों के बच्चों से दोस्ती करें'. और इस लक्ष्य के लिए, हम इस बारे में सोच सकते हैं कि हम पुराने और खराब रवैयों, व्यवहारों या नियमों की जगह कौनसे नए विशिष्ट रवैये, व्यवहार या नियम देखना चाहते हैं.

जैसे: 'अभिभावक बच्चों के अन्य आस्था समुदाय के मित्र होने को बढ़ावा देते हैं या 'स्कूल डराने-धमकाने की घटनाओं में सक्रियता से हस्तक्षेप करते हैं' या 'आस्था समुदायों के नेता विभिन्न समुदायों के लोगों के बीच मित्रता को बढ़ावा देते हैं'.

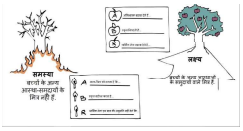

हम यह पाते हैं कि हमारी समस्या और लक्ष्य एक दूसरे के दर्पण प्रतिबिम्बों की तरह हैं. समस्या और लक्ष्य हमारी बदलाव की यात्रा के ढांचे को परिभाषित करते हैं. बदलाव की प्रक्रिया कहाँ से प्रारंभ होगी और हम उसे किस दिशा में अग्रसर होते देखना चाहते हैं?

रास्ते में हमें मिलने वाले लोग

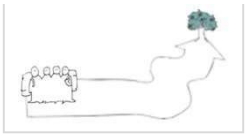

एक लंबी यात्रा में हमें बहुत से लोग मिल सकते हैं - हमारे सहयात्री जो उसी दिशा में जा रहे हों, हमारे टिकिट चैक करने वाले अधिकारी या वे लोग जो हमारे मार्ग में बाधा डालेंगे जिससे हमें अपनी यात्रा रोकनी पड़ेगी या अपना मार्ग बदलना पड़ेगा. तो, हमारी यात्रा के दौरान हमें कौन लोग मिलेंगे?

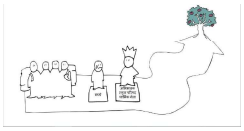

इसमें निम्नलिखित शामिल होंगे:

- वे लोग जो समस्या से प्रभावित हैं (हमारे मामले में बच्चे)
- ऐसे लोग जिनके पास समस्या के बारे में कुछ कर सकने की शक्ति है (जैसे स्कूल बोर्ड और स्टाफ़, माता-पिता और धार्मिक नेता).

ये लोग भी मिल सकते हैं:

- सहयात्री, वे लोग जिनके हमसे सांझे लक्ष्य हों और जो रास्ते में हमारी मदद कर सकते हैं. हमारे उदाहरण में स्थानीय अन्तर-आस्था समिति हमारी सहयोगी हो सकती है.
- या वे लोग जो हमारे लक्ष्य के खिलाफ हैं और हमारा रास्ता रोक सकते हैं. संभवतः हमारे समुदाय का एक असहिष्णु सोशल मीडिया प्रभावक.

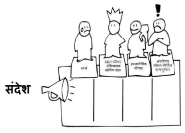

कार्य योजना को लिखने के दौरान यह विचार करना बेहतर होगा कि ये व्यक्ति, संस्थाएं एवं संगठन कौन हो सकते हैं ताकि हम अपनी रणनीति एवं योजना निर्धारित करते समय उन्हें ध्यान में रख सकें. परिवर्तन लाने में कौन हमारी मदद कर सकता है? किसे राजी करना हमारे लिए जरूरी होगा - और क्या करने के लिए? और कौन बदलाव लाने में बाधाएं खड़ी कर सकता है?

रास्ता चुनना

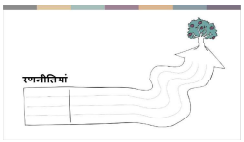

बिंदु अ से बिंदु ब तक जाने के कई रास्ते हो सकते हैं - कई मार्ग और कई साधन. तो हम कौन-सा रास्ता चुनेंगे?

हमारा रास्ता इस बात से निर्धारित होगा कि हम किन रणनीतियों का इस्तेमाल कर रहे हैं. स्मरण रहे कि हमारे पास चुनने के लिए 15 अलग-अलग रणनीतियां हैं - जागरूकता उत्पन्न करने से लेकर समर्थन और उल्लंघनों के दस्तावेजीकरण तक. हम इन रणनीतियों के उपयोग के लिए बहुत सी कार्रवाही के विचार के बारे में जानते हैं! यहां आप उनका इस्तेमाल कर सकते हैं!

जैसे, क्या हम बच्चों की मानसिकता में बदलाव के लिए एक अन्तर्धार्मिक फुटबाल टीम बना सकते हैं, या क्या डराने-धमकाने की घटनाओं का दस्तावेजीकरण कर स्कूल परिषद से कार्यवाही करने की मांग कर सकते हैं? या क्या शिक्षक सकारात्मक संबंधों को प्रोत्साहन दें, इस उद्धेश्य से विविधता को बढ़ावा देने एवं कक्षा में गरिमा तथा सम्मान सुनिश्चित करने का कार्य सर्वोत्तम ढंग से करने वाले शिक्षक के लिए एक पुरस्कार की स्थापना कर सकते हैं? या आस्था समूहों के नेताओं को अंतर-आस्था मित्रताओं को बढ़ावा देने के लिए तैयार कर सकते हैं? या इन सभी के मेल से बनी कार्ययोजना को क्रियान्वित कर सकते हैं?

ऐसी कई अलग-अलग चीजें हैं जिन्हें हम कर सकते हैं. हम इन सब को तो नहीं कर सकते किंतु सफलता प्राप्त करने के लिए हमें एक से अधिक चीज करने की <u>ज़रूरत</u> पड़ सकती है. जैसे, एक फुटबाल टीम बनाने का प्रयास व्यर्थ होगा होगा यदि आस्था समुदायों के महत्वपूर्ण नेता इसका विरोध करें और कोई भी आगे आने की हिम्मत न जुटा पाए. कार्य योजना की सफलता हेतु प्रायः कई अलग-अलग परंतु पूरक रणनीतियों को अपनाना पड़ता है.

यात्रा के कदम

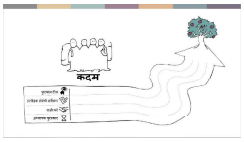

यह तय करने के बाद कि हमें किन रणनीतियों का उपयोग करना है हम इस पर विचार करते हैं कि इनका उपयोग कैसे किया जाए. हमें इसके लिए कौन-से ठोस कदम उठाने होंगे? हमारे द्वारा चयनियत प्रत्येक रणनीति के संबंध में कौन, कब और क्या करेगा? हम व्यावहारिक तौर पर फुटबाल टीम कैसे तैयार करेंगे और कैसे उसे बढ़ावा देंगे? या हम सर्वेक्षण कैसे करेंगे? विभिन्न आस्था समूहों के किस नेता से कौन बात करेगा?

संदेश

और जब हम लोगों से बात करें, तो हमें इस बारे में सोचना होगा कि हम क्या कहने जा रहे हैं. किस प्रकार की जानकारी या तर्क संभावित दोस्तों को हमारे साथ आने पर राज़ी कर लेंगे या लोगों को उनके रवैये या व्यवहार बदलने पर राज़ी कर लेंगे? क्या चीज़ शक्तिधारकों को कदम उठाने पर राज़ी करेगी? और, क्या हमारे संदेश को इस तरह गढ़ने के तरीके हैं ताकि हम विरोध से बच सकें?

उदाहरण के लिए, संभवतः विभिन्न समुदायों के बीच संबंध उनके बच्चों के लिए भविष्य में किस प्रकार लाभप्रद होगा, इस संबंध में उन्हें आश्वस्त करने के लिए व्यावहारिक जानकारी भी देनी होगी जैसे उनके बच्चे यदि फुटबाल टीम में शामिल होते हैं तो उन्हें पूरी सुरक्षा मिलेगी और उनकी अच्छी देखभाल की जाएगी. स्थानीय अन्तर्धार्मिक परिषद् की रूचि यह सुनने में होगी कि हम विभिन्न समुदायों के वयस्कों को किस प्रकार फुटबाल टीम की अगुवाई करने के लिए राजी करेंगे. और, स्कूल बोर्ड को शायद यह सुनकर प्रोत्साहन महसूस हो कि कैसे धौंस-विरोधी नीति होने से स्कूल की साख बढ़ाने में मदद मिल सकती है.

बाधाएं एवं जोखिम

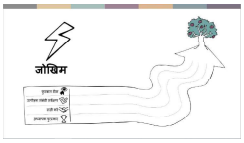

यह सच है कि किसी भी लंबी और कठिन यात्रा पर यात्रियों का सामना बाधाओं, खतरों और तूफ़ानों से हो सकता है और मंज़िल तक पहुँचने के लिए उन्हें इन सबसे बचना होता है या उन्हें पार करना होता है. बदलाव की सभी प्रक्रियाओं में बाधाएँ और जोखिम होते ही हैं. इसलिए अगर हम पहले से आगे की सोचें, अधिकतम संभव सुरक्षित रास्ता चुनें और सामने आ सकने वाली मुश्किल परिस्थितियों को कैसे संभालेंगे इसकी योजना तैयार रखें तो हमारी यात्रा आसान हो सकती है.

जो कार्य हम करना चाहते हैं, उन्हें करने में हमें किन बाधाओं और जोखिमों का सामना करना पड़ सकता है? क्या इनमें से कुछ कार्य बहुत जोखिम भरे हैं और क्या जोखिम को कम करने के कोई उपाय हैं?

उदाहरण के लिए: कुछ संदर्भों में हो सकता है कि स्थानीय रेडियो स्टेशन के माध्यम से अंतर-आस्था फुटबाल टीम को बढ़ावा देने से असहिष्णु समूहों का ध्यान इस ओर जाए और वे संभवतः इसका विरोध करें. हम शायद इस मामले में बिना प्रचार के कार्य प्रारंभ कर धीरे-धीरे समुदाय का समर्थन हासिल करना चाहें.

निष्कर्ष

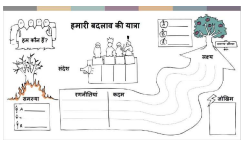

हम कार्य योजना बनाने की प्रक्रिया से गुजरे. हमारी बदलाव की यात्रा के संबंध में हमने निम्न चीज़ों को पहचाना:

- हमारा प्रारंभिक बिन्दु - समस्या
- हमारी मंज़िल - हमारा लक्ष्य
- रास्ते में हमें जो लोग मिलेंगे - मित्र, विरोधी और वे लोग जिन पर हम कोई प्रभाव डालना चाहते हैं.
- मार्ग - वे रणनीतियां जिनका हम उपयोग करेंगे और वे ठोस कदम जो हमें आगे ले जाएंगें.
- हमने अपने संदेश के बारे में भी विचार किया और उन जोखिमों के बारे में भी जिनका सामना हमें संभवतः रास्ते में करना पड़े.

इस प्रक्रिया का उपयोग किसी भी प्रकार की रणनीति के क्रियान्वयन की साधारण या जटिल कार्य योजना बनाने के लिए किया जा सकता है जिसका आप उपयोग करना चाहते हैं.

तो अब समय है कि आप स्वयं प्रयास करें - किसी ऐसी समस्या के संबंध में, जिसमें आप हस्तक्षेप करना चाहते हैं, अपनी स्वयं की बदलाव की यात्रा की कार्य योजना बनाएं!

सत्र 9

हमारी बदलाव की यात्रा (जारी)

सत्र अवलोकन

कार्य योजना विकसित करने की जो प्रक्रिया सत्र 8 में प्रारंभ हुई थी वह सत्र 9 में भी जारी रहेगी. यह इस पाठ्यक्रम का अंतिम सत्र है एवं इसका समापन एक मूल्यांकन अभ्यास एवं जश्न से होगा.

सत्र 8 एवं 9 परस्पर जुड़े हुए हैं, उनके सीखने के उद्देश्य और सीखने की प्रक्रिया एक हैं. कृपया इस सत्र के सीखने के उद्देश्यों के लिए सत्र 8 की सत्र योजना देखें.

सत्र की अंतर्वस्तु और समय

सत्र 9 को लगभग 2 घंटे 30 मिनट के एक अधिक लंबे सत्र के रूप में डिज़ाइन किया गया है. हालाँकि, सत्र की अवधि और उसके विभिन्न घटकों के लिए उपलब्ध समय उन समूहों की संख्या पर निर्भर है जिन्हें वापस समग्र चर्चा में लौटकर रिपोर्ट करना है. यदि आपके पास तीन से अधिक समूह हैं तो आपको अधिक लंबे सत्र की ज़रूरत होगी. यदि आपके पास तीन से कम समूह हैं तो आप 2 घंटे 30 मिनट से कम समय का उपयोग कर सकते हैं.

अंतिम 30 मिनट एक मूल्यांकन अभ्यास और एक जश्न को मिलाकर बने हैं.

सामूहिक अभ्यास: हमारी बदलाव की यात्रा (जारी) प्रतिभागी सत्र 8 में प्रारंभ किए गए कार्य योजना विकसित करने के कार्य को जारी रखेंगे.	30 मिनट न्यूनतम
पूर्ण चर्चा: हमारी बदलाव की यात्रा - प्रस्तुतिकरण एवं फीडबैक समूह अपनी कार्य योजनाएं प्रस्तुत करते हैं एवं उन पर चर्चा करते हैं.	प्रति समूह न्यूनतम 10-20 मिनट
ऊर्जावान: चेंजमेकर मूर्तियाँ समूह के सदस्य एक साथ मिलकर अपने शरीर से ऐसी मानव प्रतिमा बनाते हैं जो उनकी कार्य योजना का प्रतिनिधित्व करती हो.	5 मिनट
पूर्ण चर्चा: हमारी आगे की यात्रा? प्रतिभागी इस बात पर चर्चा करते हैं कि पाठ्यक्रम पूर्ण होने के पश्चात वे व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर क्या कार्यवाही करना चाहेंगे.	25 मिनट न्यूनतम
मूल्यांकन अभ्यास: दिमाग, दिल, हाथ प्रतिभागी बताते हैं कि उन्होंने पाठ्यक्रम से क्या सीखा और वे यहाँ से अपने साथ क्या ले जा रहे हैं.	20 मिनट
जश्न पाठ्यक्रम के दौरान प्राप्त ज्ञान, सीखे गए व्यवहार, कौशलों एवं निर्मित संबंधों का उत्सव मनाईए.	10 मिनट
कुल समय	**2 घंटे 30 मिनट**

तैयारी करें

पृष्ठ 15 पर दिए गए मार्गदर्शन, 'प्रत्येक सत्र की तैयारी कैसे करें' के अनुरूप सत्र की तैयारी करें. याद रखें - आपको अपने समूह की बेहतर समझ है! आपके समूह की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार सत्र के किसी भी तत्व को अनुकूलित और परिवर्तित करने के लिए आपका स्वागत है.

सत्र का समय तय करें

इस सत्र के लिए, आपको यह तय करना होगा कि समूह कार्य और पूर्ण चर्चा के लिए कितना समय निर्धारित किया जाए. इनके लिए उपलब्ध समय इस बात पर निर्भर है कि कितने समूहों को अपनी-अपनी कार्य योजनाएँ प्रस्तुत करनी हैं.

इस सत्र के लिए संसाधन

पृष्ठ 16 पर सूचीबद्ध सभी सत्रों के लिए मानक संसाधनों के अतिरिक्त, इस सत्र को सत्र योजना के अनुरूप संचालित करने हेतु आपको निम्न संसाधनों की आवश्यकता होगी:

- प्रत्येक समूह की 'हमारी बदलाव की यात्रा' फ्लिप चार्ट शीट सत्र 8 की.
- सत्र 5 में तैयार की गई 'हमारे नगर का FORB मानचित्र' फ्लिप चार्ट शीट.
- सत्र 6-7 की पांचों 'कार्रवाही के विचार' फ्लिप चार्ट शीटें.
- सभी रणनीतियों के पोस्टर.

इस सत्र के **सहायक संसाधन** यहाँ हैं.

कक्ष तैयार करना

इस सत्र में समूह वही रहेंगे जो सत्र 8 की समाप्ति के समय थे. कुर्सियां एवं मेजें तदानुसार लगाएं.

पिछले सत्र की प्रत्येक समूह की 'हमारी बदलाव की यात्रा' अभ्यास की फ्लिप चार्ट शीट, उनकी मेजों पर कुछ कलमों एवं पोस्ट-इट नोट्स के साथ रखें.

'FORB मानचित्र' एवं 'कार्रवाही के विचार' फ्लिप चार्ट शीट एवं रणनीति संबंधी पोस्टर्स दीवार पर संदर्भ सामग्री के रूप में लगाएं.

'दिमाग, दिल, हाथ'

विस्तृत सत्र योजना

याद रखें:
आपको तय करना होगा कि समूह कार्य एवं पूर्ण चर्चा हेतु कितना समय निर्धारित किया जाए!

1. समूह कार्य: हमारी बदलाव की यात्रा (जारी) न्यूनतम 30 मिनट

सामूहिक अभ्यास

संसाधन

पिछले सत्र में समूहों द्वारा तैयार की गईं 'हमारी बदलाव की यात्रा' फ्लिप चार्ट शीट्स, फ्लिप चार्ट पेन, साधारण कलम एवं पोस्ट-इट नोट्स.

अभ्यास का परिचय कैसे दें
पाठ्यक्रम के अंतिम सत्र में आप सभी का स्वागत है. उन्हें यह कहकर प्रोत्साहित करें कि वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं.

सहभागियों को पिछले सत्र से उनके कार्य योजना बनाने वाले समूहों में वापस जाकर उनकी 'बदलाव की यात्रा' का काम जारी रखने के लिए बुलाएँ. यदि समूहों ने अब तक युक्तियों और क्रिया चरणों पर फ़ोकस नहीं किया है तो उन्हें अब ऐसा करने को प्रोत्साहित करें. समूहों को बताएँ कि उनके पास कितना समय है.

2. पूर्ण चर्चा: हमारी बदलाव की यात्रा - प्रस्तुतिकरण एवं फीडबैक 15 - 20 मिनट / समूह

समग्र चर्चा

विवरण
यह 'हमारी बदलाव की यात्रा' अभ्यास का अंतिम चरण है, जिसमें समूह अपनी कार्य योजना प्रस्तुत करते हैं एवं फीडबैक प्राप्त करते हैं.

टिप्पणी

अगर कोई समूह बहुत छोटा है और सभी ने मिलकर एक ही योजना पर कार्य किया है तो प्रस्तुतिकरण के चरण को छोड़ दें और 'अभ्यास का संचालन कैसे करें' के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों के माध्यम से समापन चर्चा करें.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 1 मिनट
यह बताएं कि प्रत्येक समूह को अपनी 'बदलाव की यात्रा' शेष समूहों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए 5 मिनट मिलेंगे, जिसके बाद इस योजना पर चर्चा होगी.
यह स्पष्ट कर दें कि इस चर्चा का लक्ष्य एक-दूसरे को सहारा, प्रोत्साहन और सहायता देना है तथा साथ मिलकर हमारे विचारों का विकास करना है. यह चर्चा यह देखने की प्रतिस्पर्धा नहीं है कि किसकी कार्य योजना सर्वोत्तम है - हममें से किसी के भी पास परफ़ेक्ट योजना तैयार करने का समय नहीं रहा है!

अभ्यास का संचालन कैसे करें
हर ग्रुप को बारी-बारी से प्रस्तुति देने (5 मिनट) और फ़ीडबैक लेने (अधिकतम 15 मिनट) के लिए बुलाएँ. फ़ीडबैक चर्चा की अगुआई के लिए इन प्रश्नों का उपयोग करें:

- आपको इस कार्य योजना के बारे में क्या पसंद आया?
- क्या आपके पास योजना को और बेहतर बनाने के कुछ सुझाव हैं? जैसे, अतिरिक्त लोग साथ काम कर सकते थे या अन्य युक्तियों का उपयोग किया जा सकता था.
- क्या कोई रणनीति/कार्यवाही योजना आपको अप्रभावी, अव्यावहारिक या बहुत खतरनाक लग रही है?
- क्या आपको लगता है कि इन रणनीतियों/ कार्य योजनाओं के जरिए रवैयों, व्यवहार या नियमों में बदलाव का लक्ष्य प्राप्त हो सकेगा या हम उस लक्ष्य की ओर कदम बढ़ा सकेंगे?

समय सीमा का पालन कड़ाई से करें और यह सुनिश्चित करें कि प्रत्येक समूह को प्रस्तुतिकरण एवं फीडबैक हेतु पर्याप्त समय मिले.

अभ्यास का समापन कैसे करें 2 मिनट

प्रतिभागियों को उनके उत्कृष्ट कार्य एवं योगदान के लिए बधाई दें. जोर देकर कहें कि वे अपनी कार्य योजनाओं पर अमल करने का इरादा रखते हों या न रखते हों, उन्होंने कार्य योजना तैयार करने के बारे में बहुत कुछ सीखा है और वे इसका इस्तेमाल उन सभी प्रकार की परिवर्तनकारी प्रक्रियाओं में कर सकते हैं जिनसे भविष्य में वे संबद्ध हों.

3. ऊर्जावान: चेंजमेकर मूर्तियाँ 5 मिनट

सुझाव! यदि पिछले अभ्यास के दौरान समूह थका हुआ नजर आ रहा हो, तो यह ऊर्जावान पहले कर लें - समूहों के प्रस्तुतिकरण के बीच.

उद्देश्य

इस लम्बे और कठिन सत्र में उर्जा के स्तर को बढ़ाना.

अभ्यास का संचालन कैसे करें

प्रतिभागियों को ये निर्देश दें एवं नीचे दी गई प्रक्रिया का अनुसरण करें:

अपने कार्य योजना बनाने वाले समूह में, अपने शरीरों से एक सहयोगी मानव मूर्ति बनाएँ जो आपकी कार्य योजना दिखाती हो. आपके पास 4 मिनट हैं. समय पूरा हो जाने पर मैं ताली बजाऊँगा/गी - और हर किसी को वहीं-का-वहीं जड़ हो जाना चाहिए. उसके बाद हम एक-दूसरे की मूर्तियाँ देखेंगे और तालियों से अभिनंदन करेंगे!

4. पूर्ण चर्चा: हमारी आगे की यात्रा? न्यूनतम 25 मिनट

समग्र चर्चा

विवरण

इस पूर्ण चर्चा के साथ पाठ्यक्रम समाप्त होगा. यह चर्चा इस पर केन्द्रित है कि पाठयक्रम पूर्ण होने के बाद प्रतिभागी धर्म या आस्था की आजादी को बढ़ावा देने के लिए क्या करना चाहेंगे.

अभ्यास का परिचय कैसे दें

निम्न बातें समझाएं:

हम साथ मिलकर हमारे पाठ्यक्रम के अंत पर आ पहुँचे हैं. पाठ्यक्रम ने धर्म या आस्था की आजादी के अधिकार पर फ़ोकस किया है.

हमने हमारी पहचानों, हमारे विशेषाधिकार और प्रतिकूलता पर सोच-विचार किया है. हमने मानव अधिकारों, धर्म या आस्था की आजादी तथा अधिकारों के उल्लंघन के बारे में सीखा है. हमने अलग-अलग तरह की उन ढेरों युक्तियों के बारे में जाना है जिनका उपयोग मानव अधिकार को बढ़ावा देने में किया जा सकता है, और हमने 'बदलाव की यात्राएँ' बनाने का - हमारी कार्य योजनाएँ बनाने का - अभ्यास किया है.

तो हम यहां से कहाँ जाना चाहते हैं - व्यक्ति के तौर पर और समूह के तौर पर? हम चेंजमेकर बनने की दिशा में कैसे आगे बढ़ना चाहते हैं?

अभ्यास का संचालन कैसे करें

प्रतिभागियों को सबके लिए खुले विचार-विमर्श में निम्न प्रश्नों का उत्तर देने के लिए आमंत्रित करें.

- हमने जो सीखा उसके आधार पर अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में, एक व्यक्ति के रूप में, क्या ऐसी कोई चीजें हैं जिन्हें हम अलग ढंग से करना चाहेंगे?
- क्या एक समूह के रूप में हम अपने कार्रवाही के विचार/योजनाओं पर कार्य करके उन पर अमल करना चाहेंगे? किन सुझावों/योजनाओं पर? क्या कोई इससे जुड़ना चाहेगा? यदि हां तो हमारा अगला कदम क्या होना चाहिए?
- क्या हम कार्रवाही के विचार को अन्य चैनलों के माध्यम से आगे ले जाना चाहेंगे जिनसे हम सीधे तौर पर जुड़े हों जैसे हमारा आस्था आधारित समुदाय, हमारा कार्यस्थल या महिला समूह?
- क्या कोई ऐसे संगठन या समूह हैं जिनमें हम शामिल नहीं हैं पर जिनसे हम बात कर सकते हैं और उन्हें कदम उठाने को प्रोत्साहित कर सकते हैं? कौन और क्या?

प्रत्येक प्रश्न पर चर्चा को चार फ्लिप चार्ट पर नोट लिखकर दस्तावेजित करें, जिसका शीर्षक इस प्रकार हो:

- वे चीज़ें जो मैं करना चाहता/ती हूँ.
- वे चीज़ें जो हम इस समूह में करना चाहते हैं.
- वे कार्य जो हम दूसरे समूहों/ संस्थाओं के माध्यम से करना चाहेंगे.
- वे कार्य जिन्हें करने के लिए हम दूसरों को प्रोत्साहित करना चाहेंगें.

यदि फ्लिप चार्टस में कुछ अतिव्यापन हो तो चिंतित न हों - मुद्दों का वर्गीकरण महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि उन विभिन्न विकल्पों पर विचार करना महत्वपूर्ण है जिन्हें हम अगले कदम उठाने के लिए चुन सकते हैं.

चर्चा में, उल्लेख करें कि शोध से पता चलता है कि बदलाव सबसे आसानी से व्यक्तियों, समूहों और संगठनों के व्यापक नेटवर्क द्वारा प्राप्त किया जाता है जो एक ही लक्ष्य की ओर प्रयास करते हैं, समन्वित तरीके से विभिन्न, पूरक प्रकार की कार्रवाई करते हैं.

5. मूल्यांकन अभ्यास: दिमाग, दिल एवं हाथ 20 मिनट

व्यक्तिगत अभ्यास

इस अत्यंत सरल व्यक्तिगत मूल्यांकन अभ्यास से प्रतिभागियों को यह बताने में मदद मिलेगी कि वे पाठ्यक्रम से क्या सीखकर जा रहे हैं.

संसाधन

- प्रत्येक प्रतिभागी के लिए एक 'सिर-दिल-हाथ' हैंडआउट का प्रिंटआउट.
- प्रति प्रतिभागी एक कलम.

अभ्यास का परिचय कैसे दें 2 मिनट

हर प्रतिभागी को एक हैंडआउट दें.

समझाएँ कि वे पाठ्यक्रम से अपने साथ व्यक्तिगत रूप से अपने घर क्या ले जा रहे हैं इस बारे में सोचने के लिए वे एक मूल्यांकन अभ्यास करने जा रहे हैं. इस बारे में स्पष्ट रहें कि क्या शीट्स को पाठ्यक्रम मूल्यांकन में आपकी मदद के लिए इकट्ठा किया जाएगा या वे शीट्स को बतौर रिमाइंडर अपने साथ घर ले जा सकते हैं. यदि आप शीट्स इकट्ठी कर रहे हैं तो यह महत्वपूर्ण है कि लोग निजी विचार लिखने से बचें!

अभ्यास का संचालन कैसे करें 18 मिनट

प्रतिभागियों से निम्नलिखित पर मौन चिंतन करने को कहें:

- इस बात पर विचार करें कि आपने ज्ञान और विचारों के संदर्भ में क्या हासिल किया है. इन्हें अपने दिमाग में अंकित कर लें.
- सोचें कि आपने अपने बारे में, अपनी भावनाओं और दृष्टिकोण के बारे में क्या नया जाना है. इन्हें अपने दिल में अंकित कर लें.
- सोचें कि कोई काम अलग ढंग से करने या कोई कदम उठाने के बारे में आपके मन में क्या विचार आये हैं. इन्हें अपने हाथों पर लिख लें.
- जितना संभव हो उतना विशिष्ट रहे. उन्हें यह करने के लिए 8 मिनट दें.

आपके समूह के आकार के अनुसार, या तो गोल घेरे के चारों ओर घूम कर प्रत्येक व्यक्ति से एक बात साझा करने को कहें या प्रतिभागियों से कहें कि वे जोड़ियों में बंट कर अपनी उत्तरों पर चर्चा करें और इनमें समानताओं और अंतरों पर विचार करें. (10 मिनट)

(वैकल्पिक संस्करण: तीन अलग-अलग फ्लिप चार्ट शीट्स पर सिर, दिल और हाथ बनाएँ. सहभागियों से कहें कि वे उन प्रश्नों के उत्तर पोस्ट-इट नोट्स पर लिखें और उन्हें फ्लिप चार्ट शीट्स पर चिपका दें. समग्र चर्चा में परिणामों पर चर्चा करें.)

6. जश्न! 10 मिनट

पाठ्यक्रम में सहभागियों को एक-दूसरे को बेहतर तरीके से जानने का मौका मिला और उन्होंने इस प्रक्रिया में अपना समय और ऊर्जा लगाई. अब समय है उन्हें धन्यवाद कहने का और पाठ्यक्रम में उनके द्वारा विकसित नए विचारों, अंतर्दृष्टियों, कौशलों और संबंधों का जश्न मनाने का!

शाबाशी देने और धन्यवाद कहने के लिए एक छोटे-से समारोह की योजना बनाएँ. आप चाहें तो कोई गीत गा सकते हैं, कुछ शब्द कह सकते हैं, प्रार्थना कर सकते हैं, साथ में स्नैक्स खा सकते हैं या नाच सकते हैं.

एक प्रमाणपत्र उपलब्ध है. अगर आप चाहें तो उसे प्रिंट कर प्रतिभागियों को दे सकते हैं.

'लोकल चेंजमेकर्स'

"चेंजमेकर बनना एक ऐसी यात्रा है जो हर किसी को करनी चाहिए."
सहभागी, नाइजीरिया

भाग C

संदर्भ सामग्री

FORB से संबंधित प्रमुख मानव अधिकार की प्रतिबद्धताएँ

मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा (Universal Declaration of Human Rights, UDHR), अनुच्छेद 18

प्रत्येक व्यक्ति को विचारों की आजादी, अंतःकरण और पन्थ की स्वतन्त्रता का अधिकार है. इस अधिकार के अन्तर्गत अपना पन्थ या आस्था बदलने और अकेले या दूसरों के साथ मिलकर तथा सार्वजनिक रूप में अथवा निजी तौर पर अपने पन्थ या विश्वास को शिक्षा, क्रिया, उपासना तथा व्यवहार के द्वारा प्रकट करने की स्वतन्त्रता है.

नागरिक एवं राजनैतिक अधिकारों संबंधी अंतरराष्ट्रीय प्रसंविदा (International Covenant on Civil and Political Rights, ICCPR), अनुच्छेद 18

1. प्रत्येक व्यक्ति को विचारों की आजादी, अंतःकरण और धर्म की आजादी का अधिकार होगा. प्रत्येक व्यक्ति को विचार, अंतरात्मा और धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार होगा. इस अधिकार में शामिल है अपनी पसंद के धर्म का पालन करने या अपनाने की स्वतंत्रता, और, अकेले या दूसरों के साथ मिलकर, सार्वजनिक रूप से अथवा निजी तौर पर, अपने धर्म या आस्था को उपासना, व्यवहार, क्रिया व शिक्षण के द्वारा प्रकट करना.
2. किसी के भी साथ ऐसी जोर-जबरदस्ती नहीं की जाएगी जिससे अपनी इच्छा के किसी धर्म या आस्था का आचरण करने या अपनाने की उसकी स्वतंत्रता बाधित हो.
3. अपने धर्म या आस्था को प्रकट करने की स्वतंत्रता पर केवल ऐसी रोकें लगाई जा सकेंगीं जो विधि द्वारा निर्धारित हों और जो सार्वजनिक सुरक्षा, व्यवस्था, स्वास्थ्य, या नैतिकता अथवा अन्य व्यक्तियों के मूल अधिकारों और स्वतंत्रताओं की रक्षा की लिए आवश्यक हों.
4. जो राज्य इस प्रसंविदा में पक्ष हैं, वे यह वचन देते हैं कि वे माता-पिता, और जहाँ लागू हो, अभिवावकों, की उनकी आस्थाओं के अनुरूप उनकी संतानों का धार्मिक व नैतिक शिक्षण सुनिश्चित करने की आज़ादी का सम्मान करेंगे.

बाल अधिकार समझौता (Convention on the Rights of the Child, CRC), अनुच्छेद 14

1. जो राज्य इस समझौते में पक्ष हैं, वे बच्चों के अंतःकरण, धर्म और विचारों की आजादी के अधिकार का सम्मान करेंगे.
2. जो राज्य इस समझौते में पक्ष हैं, वे माता-पिता और जहाँ लागू हो, अभिवावकों, के इस अधिकार और उत्तरदायित्व का सम्मान करेंगे कि वे अपनी संतानों की उनकी क्षमताओं के विकास के स्तर के अनुरूप उनके अधिकारों के प्रयोग में उनका दिशानिर्देशन कर सकें.
3. अपने धर्म या आस्थाओं को प्रकट करने की स्वतंत्रता पर केवल ऐसी रोकें लगाई जा सकेंगीं जो विधि द्वारा निर्धारित हों और जो सार्वजनिक सुरक्षा, व्यवस्था, स्वास्थ्य, या नैतिकता अथवा अन्य व्यक्तियों के मूल अधिकारों और स्वतंत्रताओं की रक्षा की लिए आवश्यक हों.

टिप्पणी

मानव अधिकार घोषणाएँ राजनीतिक रूप से बाध्यकारी अंतरराष्ट्रीय वचनबद्धताएँ हैं वहीं प्रसंविदाएँ, समझौते और संधियाँ अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत कानूनन बाध्यकारी वचनबद्धताएँ हैं. मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा
अब इतनी व्यापक रूप से स्वीकार की जा चुकी है कि इसे प्रचलित अंतरराष्ट्रीय कानून के रूप में देखा जाता है.

ये भी देखें

मानव अधिकार समिति की सामान्य टिप्पणी 22, जिसमें आईसीसीपीआर के अनुच्छेद 18 की व्याख्या के संबंध में विशेषज्ञ सलाह उपलब्ध है.
https://www.equalrightstrust.org/ertdocumentbank/general%20comment%2022.pdf

धर्म अथवा आस्था पर आधारित हर प्रकार की असहिष्णुता व भेदभाव के उन्मूलन पर संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र.
https://www.ohchr.org/en/professionalinterest/pages/religionorbelief.aspx

भेदभाव, शत्रुता अथवा हिंसा को भड़काने वाली राष्ट्रीय, नस्लीय या धार्मिक घृणा के पक्षपोषण के निषेध हेतु रबात कार्य योजना.
https://www.ohchr.org/EN/Issues/FreedomOpinion/Articles19-20/Pages/Index.aspx

धर्म या आस्था की आजादी से सम्बद्ध मानव अधिकार मानदंडो का सार-संग्रह आप संयुक्त राष्ट्र संघ मानव अधिकार उच्चायुक्त के कार्यालय की निम्न लिंक पर देख सकते हैं:
https://www.ohchr.org/EN/Issues/FreedomReligion/Pages/Standards.aspx

धर्म या आस्था की आजादी मामलों पर संयुक्त राष्ट्र के विशेष दूत के कार्य के संबंध में जानकारी आप यहाँ प्राप्त कर सकते हैं:
https://www.ohchr.org/EN/Issues/FreedomReligion/Pages/FreedomReligionIndex.aspx

और अधिक जानें

धर्म या आस्था की आजादी से आशय और कब उसे सीमित किया जा सकता है इस बारे में जानने के लिए FORB सीखने का प्लेटफार्म की आठ लघु फ़िल्में देखें.
https://www.forb-learning.org/hi/films-on-forb/

फ़िल्में

अपने देश में FORB बारे में जानकारी पाएं

जानकारी के स्रोत के चयन के संबंध में सामान्य सलाह

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम का नेतृत्व करने से पहले हमारी सलाह है कि आप अपने देश में FORB की और अधिक व्यापक रूप से मानव अधिकार की स्थिति के बारे में थोड़ा अध्ययन करें. इससे आपको यह सुनिश्चित करने में आसानी होगी कि आपके देश के राष्ट्रीय स्तर के कानूनी मुद्दों को तथा विभिन्न समूहों के अनुभवों को लर्निंग तथा चर्चाओं में शामिल किया जाए.

राष्ट्रीय स्तर पर जानकारी के स्रोतों का पता लगाने का प्रयास करें, उदाहरण के लिए स्वतंत्र एनजीओ, और इसमें इज़ाफा करने के लिए विश्वसनीय अंतर्राष्ट्रीय स्रोतों से प्राप्त जानकारी का उपयोग करें.

जब आप जानकारी तलाशें तो याद रखें कि किसी एक समूह की परिस्थिति को समझना तब तक असंभव है जब तक उसकी व्यापक परिस्थिति, जिसमें यह शामिल है कि अन्य आस्था समूह किस प्रकार प्रभावित होते हैं, को न समझ लिया जाए. ऐसा एक भी देश नहीं है जहाँ केवल एक आस्था समूह के अधिकारों का ही उल्लंघन होता है. सभी मामलों में, एक से अधिक समूह अलग-अलग तरीकों से और अलग-अलग सीमा तक प्रभावित होते हैं. इसका यह अर्थ नहीं है कि आपको किसी एक समूह पर फ़ोकस करने वाले भरोसेमंद स्रोतों को अनसुना कर देना चाहिए - बल्कि यह है कि आपको एक से अधिक समूहों के बारे में एक से अधिक स्रोतों को पढ़ना चाहिए.

समालोचनात्मक ढंग से सोचें!

जानकारी पढ़ते समय, अधिप्रचार यानी प्रोपेगैंडा और पूर्वग्रह यानी बायस के जोखिम के प्रति सतर्क रहें. कुछ सरकारें गलत जानकारी, धमकियों और दबाव का उपयोग करके मानव अधिकार निगरानी और रिपोर्टिंग को अवरुद्ध करती हैं. इसलिए, राष्ट्रीय सरकारों से उनके खुद के देश के बारे में प्राप्त जानकारी अविश्वसनीय हो सकती है.

कभी-कभी, विदेशी सरकारों या धार्मिक और नागरिक समाज संगठनों/व्यक्तियों से मिली जानकारी पूर्वग्रह से ग्रस्त या भ्रामक हो सकती है. कभी-कभी इरादतन राजनीतिक पूर्वग्रह मौजूद होता है. अक्सर, केवल किसी एक समूह पर गैर-इरादतन फ़ोकस करने से संपूर्ण स्थिति के बारे में भ्रामक धारणा बन जाती है. विभिन्न प्रकार के स्रोतों का उपयोग करें, अपने तथ्यों की भली-भांति जाँच करें और समालोचक दृष्टि से सोचें!

जानकारियों के अंतर्राष्ट्रीय स्रोत

जानकारी के कुछ मूल्यवान स्रोत यहाँ दिए जा रहे हैं. उन्हें ब्राउज़ करके अपने देश से संबंधित अनुभाग ढूँढें.

यूएस स्टेट डिपार्टमेंट - दुनिया के लगभग हर देश में धर्म या आस्था की आजादी की स्थिति पर वार्षिक रपटें.
www.state.gov/international-religious-freedom-reports

यूएस कमीशन ऑन इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम (US Commission on International Religious Freedom, USCIRF) - FORB के गंभीर उल्लंघन करने वाले देशों पर वार्षिक रपटें.
www.uscirf.gov/annual-reports

प्यु रिसर्च सेंटर - दुनिया भर में धर्म से संबंधित सरकारी प्रतिबंधों और सामाजिक शत्रुता पर डेटा.
https://www.pewresearch.org/topic/religion/religious-freedom-restrictions/

माइनॉरिटी राइट्स ग्रुप इंटरनेशनल - अल्पसंख्यकों और देशज समुदायों के बारे में जानकारी की राष्ट्र-वार डायरेक्टरी.
https://minorityrights.org/directory

धर्म या आस्था की आजादी के मामलों पर संयुक्त राष्ट्र संघ के विशेष दूत की विषयवार व देशों के यात्रा पर रपटें.
https://www.ohchr.org/en/issues/freedomreligion/pages/freedomreligionindex.aspx

फोरम 18 - मध्य एशिया, दक्षिणी काकेशस, रूस, बेलारूस, क्रीमिया और तुर्की में FORB उल्लंघनों की समीक्षा व विश्लेषण.
www.forum18.org

OSCE क्षेत्र (यूरोप, काकेशस, मध्य एशिया, उत्तरी अमरीका) में धार्मिक पहचान पर आधारित और नफरत-जनित अपराधों पर रपटें.
OSCE - ODIHR | घृणा अपराध रिपोर्टिंग

विशिष्ट आस्था समूहों पर केन्द्रित रपटें
एंटी-सेमीटिजम वर्ल्डवाइड - कैंटर केंद्र की वार्षिक रपटें.
https://cst.tau.ac.il/annual-reports-on-worldwide-antisemitism/

धर्म या आस्था पर आधारित भेदभाव और असहिष्णुता के उन्मूलन के लिए इस्लामोफोबिया/ मुस्लिम विरोध का प्रतिकार: धर्म या आस्था की आजादी के मामलों पर संयुक्त राष्ट्र संघ के विशेष दूत की रपट 2021.
https://www.ohchr.org/en/documents/ahrc4630-countering-islamophobiaanti-muslim-hatred-eliminate-discrimination-and

विचारों की आजादी रपट - ह्यूमनिस्ट इंटरनेशनल की वार्षिक रपट.
https://fot.humanists.international/

विश्व में अहमदियों का उत्पीड़न - अहमदियों के अधिकारों के लिए काम करने वाले NGO इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स कमेटी की संयुक्त राष्ट्र संघ को संबोधित रपट.
https://ihs.smc.global/wp-content/uploads/documents/Report-Persecution-of-Ahmadis-Worldwide.pdf

यहोवा के साक्षियों के विश्वव्यापी उत्पीड़न पर USCIRF की रपट.
https://www.uscirf.gov/publication/issue-update-global-persecution-jehovahs-witnesses

वर्ल्ड वाच लिस्ट - ईसाईयों के उत्पीड़न पर ओपन डोर्स की वार्षिक रपट.
https://www.opendoorsuk.org/persecution/world-watch-list/

FORB सहित प्रजातंत्र व मानव अधिकार पर
अलग-अलग स्तर पर व्यापक नज़र डालने वाले स्रोत
IDEA इंटरनेशनल दुनिया के सभी देशों में लोकतंत्र, जिसमें धर्म या आस्था की आजादी शामिल है, की अवस्था पर नज़र रखती है. अपने देश का डेटा देखें.
https://www.idea.int/democracytracker/

सिविकस (CIVICUS) नागरिक समाज कार्यवाहियों संबंधी प्रतिबंधों पर नज़र रखती है - जिसमें अभिव्यक्ति, एकत्रित होने और संगठन बनाने की स्वतंत्रता, जो धर्म या आस्था की आजादी से निकट रूप से जुड़ी हुई हैं, शामिल है.
https://monitor.civicus.org/

फ्रीडम हाउस - दुनिया के 210 देशों और क्षेत्रों में लोगों की राजनैतिक अधिकारों और नागरिक स्वतंत्रताओं तक पहुँच पर रेटिंग्स और रपटें. अपने देश पर क्लिक करके उसके बारे में तथ्य और आंकड़े जानें.
https://freedomhouse.org/explore-the-map

ह्यूमन राइट्स वॉच 100 से भी अधिक देशों में मानव अधिकार की अवस्था पर एक वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित करती है.
https://www.hrw.org/previous-world-reports

एमनेस्टी इंटरनेशनल की विभिन्न देशों पर रपटों में कम या अधिक विस्तार से वहां धर्म या आस्था की आजादी पर सामग्री उपलब्ध है.
www.amnesty.org/en/countries/

सीखते रहें: अन्य स्रोत और ऑनलाइन पाठ्यक्रम

FORB सीखने का प्लेटफार्म
forb-learning.org

FORB Learning Platform

FORB के बारे में जानें

FORB सीखने का प्लेटफार्म और NORFORB सदस्यों पर आपके ज्ञान को और गहरा करने के लिए अनेक संसाधन व पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं.
forb-learning.org

संसाधनों में शामिल हैं:

- कई फिल्में जो FORB, न्याय तक पहुँच, धार्मिक साक्षरता और संदर्भ विश्लेषण के औजारों का परिचय देती हैं.
- मांग करने पर उपलब्ध FORB पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम.
- मांग करने पर उपलब्ध FORB और लिंग पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम.
- एक ऑनलाइन ऑन डिमांड पाठ्यक्रम घृणास्पद भाषण से निपटना.
- और विभिन्न विषयों जैसे FORB और लिंग व FORB व सिकुड़ते हुए नागरिक स्पेस पर रपटें.

अपने FORB सुविधा प्रदान करने के कौशल का विकास करें

FORB सीखने का प्लेटफार्म स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम के साथ-साथ यह भी पेश करता है:

- FORB सुविधादाता टूलकिट - FORB के विषय पर मानव अधिकार शिक्षण प्रदान करने में लगे किसी भी व्यक्ति द्वारा उपयोग के लिए अभ्यासों का एक टूलकिट. (2023 के वसंत में प्रकाशित होगी)
- FORB प्रशिक्षकों/सुविधादाताओं हेतु 10 सप्ताह का ऑनलाइन सुविधा प्रदत्त पाठ्यक्रम, जिसके प्रतिभागियों को हर सप्ताह लगभग 6 घंटे काम करना होगा (स्थान सीमित हैं).
- नेटवर्किंग करने के अवसर - नए संसाधनों और पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी प्राप्त करने और नेटवर्किंग कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए हमारे FORB सुविधादाताओं और प्रशिक्षकों के नेटवर्क में शामिल हों.

रणनीतियों और उनके प्रयोग के बारे में और जानें

यहाँ अन्य प्रदाताओं द्वारा उपलब्ध करवाई जाने वाली चुनिन्दा निशुल्क शैक्षणिक सामग्री व ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की लिंक दी गईं हैं.

आपातकालीन रणनीतियां: निवारक उपाय, रोकें और बचाएं, सहायता मांगें और सचेत करें
मानव अधिकार के लिए मौजूद आसन्न खतरों से निपटने के लिए आपातकालीन रणनीतियों का उपयोग किया जाता है. निम्नलिखित संसाधन इन युक्तियों के उपयोग में आपकी मदद कर सकते हैं.

ऑनलाइन पाठ्यक्रम

नफरत फैलाने वाली ऑनलाइन सामग्री को समझना और उसका प्रतिकार करना
यूरोप में घृणा अपराध और घृणास्पद भाषण से निपटने पर लक्षित एक शैक्षिक पहल फ़ेसिंगफ़ैक्ट्स (FacingFacts) की ओर से ऑन-डिमांड पाठ्यक्रम. लर्निंग का अधिकांश भाग विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों पर लागू होता है. ऑफ़र किए गए अन्य पाठ्यक्रम भी देखें, जैसे, 'अंडरस्टैंडिंग एंड आइडेंटिफ़ाइंग एंटी-सेमिटिक हेट क्राइम्स' (सेमाटिक-विरोधी घृणा अपराधों को समझना और पहचानना).

टैकलिंग हेट स्पीच (घृणास्पद भाषण से निपटना)
FORB सीखने का प्लेटफार्म की ओर से एक पाठ्यक्रम जिसे आपको आपकी परिस्थिति में घृणास्पद भाषणों की पहचान करने, उनका विश्लेषण करने तथा उनसे निपटने में सक्षम बनाने वाले ज्ञान, कौशलों और साधनों से लैस करने के लिए डिज़ाइन किया गया है.

संसाधन

स्ट्रीट हैरेसमेंट (सड़कों पर उत्पीड़न)
सड़कों पर होने वाला उत्पीड़न सभी महिलाओं को प्रभावित करता है. अल्पसंख्यक समुदायों की महिलाएँ घृणा-प्रेरित उत्पीड़न और/या यौन उत्पीड़न के प्रति विशेष रूप से असुरक्षित हो सकती हैं. पीड़ित या मूकदर्शक के रूप में प्रतिक्रिया कैसे दें इस बारे में विचार और रणनीतियाँ यहाँ हैं.

बदलाव की रणनीतियां: अभियान, समर्थन, प्रोत्साहन व अवहेलना
समर्थन और प्रचार अभियान बदलाव लाने की मुख्य युक्तियाँ हैं. निम्नलिखित संसाधनों और पाठ्यक्रमों के ज़रिए इन युक्तियों के उपयोग पर मार्गदर्शन पाएँ.

ऑनलाइन पाठ्यक्रम

समर्थन से जुड़े मूलभूत तत्व
टीअरफण्ड का मांग पर उपलब्ध ऑनलाइन पाठ्यक्रम. इस लिंक पर अपने प्रोफाइल बनाएं और पाठ्यक्रमों की सूची में 'समर्थन से जुड़े मूलभूत तत्व' को ढूँढें.

ACT एडवोकेसी अकादमी
ACT अलाइंस द्वारा प्रदत्त ऑनलाइन ऑन-डिमांड पाठ्यक्रम. पाठ्यक्रम एक्सेस करने के लिए Fabo.org पर प्रोफ़ाइल बनाएँ.

गैर-हिंसक कार्रवाई और नागरिक प्रतिरोध
संयुक्त राज्य अमेरिका शांति संस्थान की ओर से ऑनलाइन पाठ्यक्रम

संसाधन

समर्थन टूलकिट - जो बदलाव आप चाहते हैं वह स्वयं बनें
अफ्रीका प्लेटफार्म फॉर सोशल प्रोटेक्शन एंड द कामनवेल्थ फाउंडेशन द्वारा निर्मित.

समर्थन टूलकिट - ए रूट्स गाइड
टिअरफण्ड द्वारा निर्मित.

समर्थन: ए गाइड फॉर स्माल एंड डायस्पोरा आर्गेनाइजेशन्स
INTRAC द्वारा निर्मित.

गेम ऑन - ए प्रैक्टिकल गाइड टू कैंपेनिंग
विगवाम एवं फाइनपी द्वारा निर्मित.

निर्माण की रणनीतियां: जागरूकता, लोगों को जोड़ना, कौशल और नेटवर्क्स
निर्माण की रणनीतियों के अंतर्गत आता है जन जागरूकता के ज़रिये और ऐसे लोगों को जोड़कर, जो सभी प्रकार की रणनीतियों के प्रयोग के लिए ज़रूरी कौशलों से लैस हों, बदलाव के लिए दीर्घकालिक नींव तैयार करना.

ऑनलाइन पाठ्यक्रम

पॉडकास्ट व विडियो का निर्माण और ऑनलाइन सुरक्षा
एडवोकेसी असेंबली की वेबसाइट पर आपको कम अवधि के अनेक निशुल्क पाठ्यक्रम उपलब्ध हो सकते हैं जो आपको अपने व्यावहारिक कौशलों की एक श्रृंखला का विकास करने में सहायता कर सकते हैं.

अंतर-आस्था संवाद
KAIICID द्वारा अंतर-आस्था संवाद की क्रियाविधियों पर अनेक ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाए गए हैं.

शांति की स्थापना और उससे ज़्यादा
संयुक्त राज्य अमेरिका शांति संस्थान की ओर से ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की श्रृंखला
https://www.usip.org/academy/catalog/religious-engagement-peacebuilding-common-ground-approach
https://www.usip.org/academy/catalog/introduction-religion-and-peacebuilding

जो आप मानते हैं, उसी को जीयें,
उन लीडर्स और इन्फ़्लुएंसर्स के लिए एक वर्कशॉप जो जानना चाहते हैं कि अपने कार्यस्थल और समुदायों में समावेशन, विविधता तथा आस्था की आजादी को बढ़ावा कैसे दिया जाए.

संसाधन

द इंटरफेथ वीक टूलकिट
समुदाय-आधारित अंतर-धार्मिक गतिविधियों के आयोजन हेतु क्रियात्मक मार्गनिर्देशिका - इंटरफेथ नेटवर्क द्वारा यूके के लिए प्रकाशित.

द फेथ फॉर राइट्स टूलकिट
मानव अधिकार शिक्षा पर माड्यूल्स का एक सेट जो फेथ्स फॉर राइट्स फ्रेमवर्क की 18 वचनबद्धताओं और धर्म, आस्था और मानव अधिकारों के बीच के अंतर्संबंधों की पड़ताल करता है.

शिक्षकों और युवा कार्यकर्ताओं के लिए ऑनलाइन हेट स्पीच टूलकिट
सेलमा ऑनलाइन टूलकिट में बच्चों और युवाओं के बीच ऑनलाइन नफरत फैलाने वाली बातों के मुद्दे पर काम कर रहे अध्यापकों और अन्यों के लिए अनुकूलन करने योग्य संसाधन उपलब्ध करवाती है.

एकाधिकतावाद को बढ़ावा देने के विषय पर ऑनलाइन अध्यापक प्रशिक्षण
एक मिश्रित लर्निंग पाठ्यक्रम जो अध्यापकों को उनकी कक्षाओं में एकाधिकतावाद और समावेशी समुदायों को बढ़ावा देने का प्रशिक्षण देता है. हार्डवायर्ड ग्लोबल द्वारा अंग्रेज़ी और अरबी में प्रदत्त.
ईमेल: info@hardwiredglobal.org

रिलीजन्स फ़ॉर पीस की ओर से धर्मशास्त्रीय संसाधन
अब्राहिमी यहूदी, ईसाई और इस्लामी धर्म नागरिकता, अंतःकरण, धर्म, आस्था या विचारों की आजादी तथा संवेदनशील समुदायों की सुरक्षा के समर्थन में एकजुट हैं.

उपचारात्मक रणनीतियां: दस्तावेजीकरण करें, याद करें, न्याय और मुआवजा मांगें, भौतिक एवं मनोसामाजिक सहायता उपलब्ध करवाएं

उपचारात्मक रणनीतियों का प्रयोग उल्लंघनों से प्रभावित व्यक्तियों और समुदायों की देखभाल करने और उन्हें न्याय दिलवाने के लिए किया जाता है.

ऑनलाइन पाठ्यक्रम

मानवाधिकार के उल्लंघन का दस्तावेजीकरण

एडवोकेसी असेंबली की वेबसाइट में दस्तावेजीकरण कौशल का विकास करने के लिए लघु अवधि के अनेक निशुल्क पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं. इन पाठ्यक्रमों में शामिल हैं:

- साक्ष्यों का उपयोग करते हुए मानव अधिकारों के उल्लंघनों का दस्तावेजीकरण एवं रिपोर्टिंग.
- विडियो साक्ष्यों को एकत्रित करना, सम्हालना व साझा करना.

समुदाय आधारित मनोसामाजिक सहायता (COMMUNITY BASED PSYCHOSOCIAL SUPPORT, CBPS)

CBPS (समुदाय आधारित मनोसामाजिक सहायता) विषय में एक तीन मॉड्यूल वाला, ऑनलाइन ऑन-डिमांड पाठ्यक्रम आपको बुनियादी बातें सीखने में मदद देगा. चर्च ऑफ़ स्वीडन द्वारा (एक्ट अलाइंस के लिए) निर्मित.

अभ्यासों की अनुक्रमणिका

सामान्य अभ्यास

अभ्यास	उद्देश्य	पृष्ठ
वाक्य पूरा करें	प्रतिभागियों का परिचय - प्रतिभागियों के पाठ्यक्रम में भाग लेने के उद्देश्यों और वजहों पर केन्द्रित	35
बताईये आप क्या सोच रहे हैं	प्रतिभागियों का परिचय - प्रतिभागियों के बीच की समानताओं को उजागर करता है	36
टोकरी आगे बढाएं	आधारभूत नियम अभ्यास	36
मेरी तारीफ़ करें	प्रतिभागियों के पूरक योगदानों को समूह में उजागर करता है	135
सब कुछ बताएं	प्रतिभागियों को पूर्व सत्रों में जो उन्होंने जाना उसकी याद दिलाने का आरंभिक अभ्यास	49
अच्छाईयों का जाल	हमारे समुदायों की अच्छाइयों पर प्रकाश डालता है	99
सभी लोग कुर्सियां बदलें	समानताओं को उजागर करने वाला ऊर्जावान	71
चलें और रुकें	ऊर्जावान	103
सिर से पंजे तक	ऊर्जावान	130
बदलाव लाएं	ऊर्जावान	137
चेंजमेकर मूर्तियाँ	ऊर्जावान	147
इमॉटिकॉन (चेहरे का भाव)	जो कुछ उन्होंने सीखा है, उसके बारे में प्रतिभागी क्या महसूस करते हैं, इस पर केन्द्रित समापन अभ्यास	131
दिमाग, दिल, हाथ	मूल्यांकन अभ्यास	148

मानव अधिकार, भेदभाव और सामाजिक पहचानों की मोटे तौर पर पड़ताल

अभ्यास	उद्देश्य	पृष्ठ
ज़िन्दगी का सूप और मानव अधिकार गैलरी	अभ्यासों का युग्म जो मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा को प्रतिभागियों की अनुभव-जन्य आवश्यकताओं से जोड़ता है	37, 38
सौभाग्य पात्र	विशेषाधिकारों और प्रतिकूलताओं और एकजुटता के लाभों पर केन्द्रित	68
आगे की ओर एक कदम	प्रतिभागियों की उनके सन्दर्भों में सामाजिक-आर्थिक प्रतिकूलताओं और विभिन्न वर्गों के बीच भेदभाव को समझने में मदद करना	69
हमारी सामाजिक पहचानें	प्रतिभागियों की उनसे भिन्न धार्मिक/आस्था-आधारित पहचान वाले लोगों के बीच समानताओं की पहचान करने में मदद करता है	72

FORB (धर्म या आस्था की आजादी) की विशेष रूप से पड़ताल करने वाले अभ्यास

अभ्यास	उद्देश्य	पृष्ठ
एक समय की बात है	प्रतिभागियों की इस मुद्दे पर विचार करने में मदद करता है कि जिन चीज़ों की FORB रक्षा करता है, वे उनके लिए कितनी मूल्यवान हैं	50
मेरी रोजमर्रा की जिंदगी में FORB	प्रतिभागियों की यह समझने में सहायता करता है कि वे अपने रोजमर्रा के जीवन में FORB का उपयोग कैसे कर सकते हैं	52
दो मिनट अवधि के FORB पर लघु नाटक	FORB के उल्लंघनों की पहचान करने के कौशल का विकास करता है	82
हमारे नगर का FORB मानचित्र	दो भागों वाला अभ्यास जो प्रतिभागियों को FORB संदर्भ विश्लेषण तैयार करने में मदद करता है	101, 104

मानव अधिकारों को बढ़ावा देने और कार्य योजना बनाने के तरीकों पर केन्द्रित अभ्यास

अभ्यास	उद्देश्य	पेज(पेजेस)
चेंजमेकर कहानियों पर समूह चर्चा	प्रेरित करता है एवं कार्यवाहियों पर चर्चा के लिए ज़मीन तैयार करता है	114
मूकदर्शक एवं उपचारक	प्रतिभागियों की ऐसे कारकों की पहचान करने में मदद करता है जो उन्हें मूकदर्शक बने रहने की बजाय कार्यवाही करने में सक्षम बनाते हैं	114
मैं कौन हूँ?	प्रतिभागियों की उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है जिनमें वे कार्यवाही कर सकते हैं	116
आपातकालीन रणनीतियों पर चर्चा	सत्र 6 के रणनीतियों पर प्रस्तुतिकरण से सम्बद्ध सामूहिक चर्चा	118
रणनीतियों पर चर्चा	मानव अधिकारों को बढ़ावा देने की रणनीतियों के आधार पर कार्रवाही के विचार पर मंथन	129
समस्या क्या है?	कार्य योजना विकसित करने के लिए समस्याओं का चयन करने में प्रतिभागियों की मदद करता है	135
हमारी बदलाव की यात्रा	चाक्षुष कार्य योजना बनाने का अभ्यास	138, 146
हमारी आगे की यात्रा?	अगले क़दमों की पहचान करने में प्रतिभागियों की मदद करता है	147

बहुत से लोग उनके देश में धर्म या आस्था की आजादी के अधिकार के उल्लंघनों के बारे में और उनके समुदाय में अंतरधार्मिक तनावों के बारे में चिंतित हैं पर वे इस बारे में निश्चित नहीं हैं कि बदलाव कैसे लाया जाए.

स्थानीय चेंजमेकर्स पाठ्यक्रम नौ दो घंटे की कार्यशालाओं की एक श्रृंखला है, जिसे वयस्कों और युवाओं के जमीनी स्तर के समूहों को सशक्त बनाने के लिए तैयार किया गया है, ताकि वे अपने समुदाय में सभी के लिए धर्म या आस्था की आजादी को बढ़ावा देने के बारे में सीख सकें और सक्रिय हो सकें.

इस सुविधादाता गाइड में और सहायक संसाधनों में आपको सत्र योजनाएँ, प्रस्तुतियों की स्क्रिप्ट्स, पावरपॉइंट प्रस्तुतियाँ, कहानियाँ, पोस्टर्स और गेम कार्ड्स मिलेंगे - यानी हर वह चीज़ जो आपको पाठ्यक्रम संचालन के लिए चाहिए. हमें आशा है कि ये संसाधन आपको आप जहाँ हैं वहीं से चेंजमेकिंग प्रक्रिया की तेज़ शुरुआत करने में मदद देंगे.

forb-learning.org

THE LOCAL
CHANGEMAKERS
COURSE

Nordic Ecumenical Network on Freedom of Religion or Belief
NORFORB

FORB Learning Platform

धर्म या आस्था की आजादी सीखने का प्लेटफार्म, जो NORFORB परियोजना का एक हिस्सा है, द्वारा निर्मित.
© SMC Faith in Development 2022, www.smc.global, NORFORB नेटवर्क की ओर से.
लेखक: कैथरीन कैश | ग्राफिक डिज़ाइन और आइकन्स: KSB डिज़ाइन/क्रिस्टीना स्कोलिन-बोर्ग और ईवा-मरी वॉडमैन
चित्र: टोबी न्यूसम | पावरपॉइंट चित्र: ग्रे ज़ैरओ
हिंदी अनुवाद: राजकुमार पीटर, Transperfect, Schumacher Centre
ISBN: 978-91-85141-37-1 | संपर्क: info@forb-learning.org | वेबसाइट: www.forb-learning.org